आर्यभाषा पुस्तकालय
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी
में उपलब्ध

हस्तलिखित
संस्कृत-ग्रंथ-सूची

प्रथम खंड

हस्तलिखित
संस्कृत-ग्रंथ-सूची

सपादकमडल

सुधाकर पाडेय करुणापति त्रिपाठी

मोहनलाल तिवारी

सहायक सपादक

विश्वनाथ त्रिपाठी



नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

प्रकाशक
नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

प्रथम संस्करण
सं० २०३१
११०० प्रतियाँ

मूल्य—७५-००



मुद्रक
शम्भुनाथ वाजपेयी
नागरी मुद्रण, वाराणसी

प्रकाशकीय

नागरीप्रचारिणी सभा ने अपनी स्थापना के साथ ही न केवल हिंदी साहित्य एवं देवनागरी लिपि के प्रचार प्रसार के लिये उद्योग आरंभ किया, अपितु ऐसे गुरु गंभीर आयोजन भी आरंभ किए जिनके कारण हिंदी साहित्य का अभ्युदय और विकास मात्र ही नहीं हुआ प्रत्युत उसके विकास की वह दृढ़ वैज्ञानिक भित्ति निर्मित हुई जिसके बल पर हिंदी का साहित्य दिनोत्तर समृद्ध होता चला आ रहा है। देश की परंपरा से प्राप्त हिंदी साहित्य की अतुल संपदा अनिश्चित राजनीति की स्थिति के कारण या तो नष्टभ्रष्ट हो चुकी थी या बेठनों में पड़ी पड़ी एकांत धरती में गड़े धन की भाँति निरर्थक कालोन्मुख हो रही थी। सन् १८९४ ई० में हिंदी पुस्तकों की खोज की दिशा में सभा ने सक्रिय चरण उठाए। तब से आज तक सभा यह कार्य करती चली आ रही है। सभा के इस यज्ञ में विभिन्न अवसरों पर प्रांतीय एवं केंद्रीय सरकारों ने समयोचित सहायता देकर सभा के कार्य को आगे बढ़ाया है।

इतनी लंबी अवधि के बीच हिंदी ग्रंथों की खोज करते समय सभा को बहुत से अलभ्य संस्कृत ग्रंथों की भी उपलब्धि होती रही। संस्कृत के ये हस्तलिखित ग्रंथ अत्यंत ही उपादेय एवं साहित्यान्वेषण के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं। सभा बहुत दिनों से इनकी सूची प्रकाशित करना चाहती थी किंतु धनाभाव के कारण सभा का संकल्प बहुत दिनों तक अधूरा पड़ा रहा। अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस कार्य के लिये केंद्रीय सरकार ने अनुदान देकर सभा के संकल्प को मूर्त रूप दिया है। एतदर्थ सभा सरकार के प्रति आभार प्रकट करती है एवं भविष्य के लिये और सहयोग की आकांक्षा रखती है। संस्कृत ग्रंथों की सूची का यह प्रथम खंड प्रकाशित करते हुए हम अत्यंत प्रसन्नता हो रही है और आशा है, हम शीघ्र ही इसका द्वितीय खंड भी प्रकाशित कर सकेंगे।

रथयात्रा,
सं० २०३१ वि०

सुधाकर पांडेय...

करुणापति त्रिपाठी
प्रकाशन मंत्री,
ना० प्र० सभा, काशी

भूमिका

नागरीप्रचारिणी सभा ने हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज का काम सन् १९०० से आरंभ किया और तब से लेकर अद्यावधि यह कार्य होता रहा तथा समय समय पर उनके विवरण प्रकाशित होते रहे है। इन विवरणों के प्रकाशन से अनेक अज्ञात लेखकों और ज्ञात लेखको के अज्ञात ग्रंथों का परिचय हिंदी जगत् को प्राप्त हो सका जिससे अनवरत प्रवहमान साहित्यधारा की विस्तृति और उसकी गंभीरता एवं अतल-स्पर्शिता का आकलन करने मे अकल्पनीय सहायता हुई है। किसी भी भाषा और साहित्य की परंपरा एवं इतिहास के ज्ञान के क्षेत्र मे प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज और उनके विवरणों का प्रकाशन कितना महत्वपूर्ण है, यह सभी जानते हैं।

आज देश के विभिन्न भागों मे जो भाषाएँ प्रचलित हैं, वे संस्कृत से जायमान हैं अतः यह सर्वमान्य है कि संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। प्रचुरतम एवं विशाल ज्ञाननिधि का संचय, जो समयसीमा को दृष्टि को लाँघ गया है, किसी भी भाषा या उसके साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों मे उपजीव्य एवं मूलाधार के रूप मे प्रतिष्ठित है। व्याकरण, दर्शन, ज्योतिष, योग, निरुक्त कोशग्रंथ आदि तथा साहित्य के विविध अंग--छंद, अलंकार, लक्षण ग्रंथ, रूपक आदि सभी क्षेत्रों मे संस्कृत की यह प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रूप से प्रथित है। संस्कृत भाषा मे निबद्ध इस ज्ञानराशि के प्रति यूरोपियन विद्वान् पहले से ही अभिमुख थे। परंपरा से प्राप्त यह संपदा राजनीतिक अस्थिरता एवं काल के प्रवाह मे पड़कर व्यर्थ ही धरित्री मे गड़ी हुई संपत्ति की तरह वेष्टन मे लिपटी हुई शनै. शनै. नष्ट होती जा रही थी और उसके प्रसार की ओर से जनवर्ग, खासकर शिक्षित वर्ग, आँख मूँदे पड़ा था। अंग्रेजी शासन इस ओर १९वीं शती से ही प्रयत्नशील था। देश मे अंग्रेजी शासन की पूर्ण स्थापना के अनंतर सन् १८६८ ई० से तत्कालीन सरकार द्वारा संस्कृत साहित्य के ग्रंथो की व्यापक पैमाने पर दशव्यापी खोज आरंभ हुई। रायल एशियाटिक सोसायटी, बंगाल और बंबई तथा मद्रास की प्रेसीडेंसी सरकारों ने इस कार्य मे अग्रणीयता प्राप्त की। अनेक शोध संस्थाओं और विद्वानो द्वारा भी खोज मे उपलब्ध ग्रंथो के संरक्षण तथा प्रकाशन की स्थायी व्यवस्था की गई। इस प्रकार के प्रयत्नों से प्राप्त ग्रंथो के विवरण के प्रकाशन से संस्कृत साहित्य के अनेक अज्ञात लेखकों और उनकी रचनाओं की तथा ज्ञात लेखकों के अनेक अज्ञात ग्रंथों की जानकारी जिज्ञासुओं और शोधकर्ताओं को प्राप्त हुई तथा अनेक अज्ञात ग्रंथों के प्रकाशन से संस्कृत साहित्य की श्रीवृद्धि हुई। इस संबंध मे रायल एशियाटिक सोसायटी की तत्कालीन सेवाएँ अभिनंदनीय हैं।

हिंदी के क्षेत्र मे कार्यरत होते हुए भी नागरीप्रचारिणी सभा का ध्यान इस ओर पहले से ही था। सभा से हिंदी ग्रंथो के प्रकाशन के क्रम मे प्रकाशित संस्कृत साहित्य का इतिहास और अन्य ग्रंथो का प्रकाशन भी इसी दृष्टि से किया गया। सभा के आग्रह से

ही सस्कृत ग्रथो की खोज मे प्राप्त होनेवाले हिंदी के ग्रथो की सूची और विवरण का सर्वप्रथम प्रकाशन एशियाटिक सोसायटी, बगाल ने किया जिसमे सन् १८९५ की खोज मे प्राप्त ६०० हिंदी ग्रथो की सूची और विवरण सकलित है। इसके अनतर सोसायटी ने यह कार्य (हिंदी ग्रथो की सूची का प्रकाशन) समाप्त कर दिया।

हिंदी के हस्तलिखित ग्रथो की खोज म देश के विभिन्न अचलो म कार्यरत सभा के कार्यकर्ताओ को सस्कृत के भी ग्रथ उसी प्रकार प्राप्त होते रहे जिस प्रकार एशियाटिक सोसायटी, बगाल को सस्कृत ग्रथो की खोज म हिंदी के ग्रथ प्राप्त हुए थे। इस प्रकार सस्कृत के प्राचीन हस्तलेखो का सभा के पास एक अच्छा और अनेक विषय के ग्रथो का सकलन हो गया। इनकी सुरक्षा और जानकारी के लिये हिंदी के हस्तलेखो के विवरण की तरह इनका भी सपादन और प्रकाशन आवश्यक था। सभा की प्रार्थना पर केंद्रीय सरकार ने विचार किया और इसके सपादन और प्रकाशन के लिये अनुदान देने की स्वीकृति दी। सरकार द्वारा प्राप्त इस अनुदान से नागरीप्रचारिणी सभा इसके सपादन और प्रकाशन की ओर अभिमुख हुई तथा उसके कर्मठ कार्यकर्ताओ ने सरकार द्वारा प्राप्त निर्देश के अनुसार इसका विवरण तैयार किया। इन ग्रथो की कुल सख्या लगभग नौ हजार है, जिन्हें १८ विषयश्रेणियो म रखा गया है। इनमे साहित्य एव साहित्यशास्त्र की सभी विधाओ के अतिरिक्त सगीत, नीतिशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्विद्या, आचार, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, उपनिषद्, कोश ग्रथ, पाकशास्त्र, पशुचिकित्सा, कामशास्त्र, तत्र, मत्र, यत्र, रसायन, इतिहास, पुराण, रत्नपरीक्षा, वास्तुविद्या आदि विषयो के भी महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रथो के विवरण उपलब्ध हो सके हैं। सरकार द्वारा प्राप्त विवरण निर्देशिका के अनुसार इनके विवरण कार्डों पर तैयार किए गए, जिनमे (१) विषय एव क्रमसख्या, (२) पुस्तकालय की आगतसख्या या सग्रहविशेष की सख्या, (३) ग्रथनाम, (४) ग्रथकार, (५) टीकाकार, (६) ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है, (७) लिपि, (८) पत्रो या पृष्ठो का आकार, (९) पत्रसख्या, (१०) प्रति पृष्ठ म पक्तिसख्या और (११) प्रति पक्ति म अक्षरसख्या, (१२) क्या ग्रथ पूर्ण है, अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण, (१३) अवस्था और प्राचीनता, तथा (१४) अन्य आवश्यक विवरण शीर्षक से सकलन किया गया है। इस कार्य के करने म सभा के निम्नांकित कार्यकर्ताओ सर्वश्री शिवशकर मिश्र, डा० प्रेमीराम मिश्र, मयानाल मिश्र, पारसनाथ पाडेय, बृजकुमार मिश्र, माधवप्रसाद शुक्ल, महानद तिवारी, प्रेमनारायण पाडेय, आदि का तत्पर सहयोग और श्रम प्रशसनीय रहा है अत ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं। अपने काम के प्रति इन लोगो की निष्ठापूर्ण लगन प्रशस्य है।

कार्डों के तैयार हो जाने पर इसके सयोजन और सपादन के निमित्त श्रीधीरजि त्रिपाठी जी से सहयोगार्थ अनुरोध किया गया। उन्होंने इसे स्वीकार किया और दो चार दिन आए भी पर अत म वे इससे एकदम विरत हो गए।

सस्कृत के प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो के विवरण का यह प्रथम खड है जिसमे विभिन्न विषयो के लगभग २,९०० ग्रथो का विवरण आ सका है जो पूर्वोक्त विधि से सकलित है।

इसमे आयुर्वेद के १८८, उपनिषद् के १५८, कर्मकांड के १,१७१, कोश के ११३, गीता के २०४, तथा ज्योतिष के ४८६ ग्रथो का विवरण प्रकाशित है। इसका द्वितीय खड भी प्रकाशन के क्रम मे है। अतिम खड मे परिशिष्ट मे उन ग्रथो का विशिष्ट विवरण दिया जायगा जो सपादनक्रम मे विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। ऐसे ग्रथ पुष्पचिह्नाकित (*) हैं।

सस्कृत के प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो का विवरण तैयार करते समय प्राकृत और अपभ्रश के भी अनेक ग्रथ प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार के ग्रथ हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो का विवरण तैयार करते हुए भी पाए जा रहे हैं। इन प्राकृत और अपभ्रश के ग्रथो का भी विवरण तैयार कराए जाने पर अनेक महत्व के ग्रथ प्रकाश मे आ सकेंगे।

सुधाकर पांडेय
प्रधान मत्री,
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी



विषयनिर्देश

—०—

संस्कृत-ग्रंथ-सूची

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या [illegible] की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
आयुर्वेद						
✓ १	७२४१	अंजन	अग्निवेश		दे० का०	दे०
✓ २	३८१३	अजीर्ण मंजरी	श्री—?		दे० का०	दे०
३	३६६	अपामार्जन			दे० का०	दे०
✓ ४	६५१७	अर्क चिकित्सा	रावण (लंकानाथ)		दे० का०	दे०
✓ ५	३७२४	अश्वचिकित्सा	नकुल		दे० का०	दे०
✓ ६	३३६९	अश्वचिकित्सा	नकुल		दे० का०	दे०
✓ ७	६५६७	अष्टांग हृदय	वाग्भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२ ७ × ९ २ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री मदजन समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
१९ ४ × ८ ७ सें० मी०	■ (१–८)	७	२७	पू०	संवत्—१८४०	इति श्री व्यासिराज परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री विरचित प्रजीर्णमंजरा-समाप्त ॥ शुभमस्तु । संवत् १८४० भाद्रपदकृष्ण एकादस्यां शनिदिन ॥ लिपित भगलसैन ॥
२१ × १० सें० मी०	१२ (१–१२)	९	२४	अपू०	प्राचीन	
२५ ६ × ११ १ सें०मी०	१८ (१–१८)	११	४३	अपू०	प्राचीन	इति लवानथ वृनार्क चिकित्सा वार्तापथ्यविधान चतुर्थशतकम् × × ॥
२५ ७ × १२ २ सें०मी०	१२ (१–१२)	९	२७	अपू०	प्राचीन	इति नकुलकृते अश्वचिकित्सित लक्षण नामाध्याय षष्ठ ॥ (पत्र संख्या ६) × × ×
२४ ५ × ११ ८ सें० मी०	११ (१३ २३)	९	२६	अपू०	संवत—१८२७	इति श्री नकुलकृते अश्वचिकित्सितविपाध्यायश्चतुर्दश समाप्त ॥ शुभमवतु ॥ श्रीरस्तु ॥ लिखितमजीवणनाव रावी मध्ये'''मिति चैत्र शुक्ल ५ संवत् १८२७ शाके १६९२ ''
२३ ३ × ९ ८ सें० मी०	४३ (१–४३)	१०	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री वाग्भट्ट विरचितायामष्टांगहृदय संहितायां तृतीयेनिदानस्थान वातव्याधि निदानाध्याय पंचदश ॥ (पत्र स ४१)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रन्थ संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८	४३८	• अष्टांग हृदय	वाग्भट्ट		दे० का०	दे०
९	२१	अष्टांग हृदय संहिता			दे० का०	दे०
✓ १०	८८१	अष्टांग हृदय संहिता (संस्कृतटीका) (१) तृतीयस्थान (२) चतुर्थस्थान (३) चतुर्थस्थान (४) षष्ठस्थान (५) औषधिप्रकरण (६) क्षाराग्निकर्म (७) क्षाराग्निकर्म	वाग्भट्ट	अरुणदत्त	दे० का०	दे०
✓ ११	४१३५	आतंक दर्पण	वाचस्पति वैद्य	वैद्यवाचस्पति	दे० का०	दे०
१२	५१६५	आतंक दर्पण	वैद्य वाचस्पति		दे० का०	दे०
✓ १३	७३२२	आतंकदर्पण (निदान व्याख्या)			दे० का०	दे०
✓ १४	१२६७	आतंकदर्पणनिदान (संस्कृत टीका सहित)	वाचस्पति मिश्र		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ ५ × १० ७ से० मी०	३८३ (१-११५, ११७-२४०, २४३ ३४१, ३४५-३८६)	११	३५	अपू०	प्राचीन सवत्— १७६७	मुनिरसऋषिचन्द्रे १७६७ वत्सरे शुक्ले शितदशमिशशाके नाथनाम्नाद्विजेन॥ सपदिचपठनार्थं वाग्भटोऽल्लेखिरम्यलवण पुरमुषित्वा श्री हरे सूनुनाय ॥ नालाकित यत्प्रतिपत्रमध्ये वृद्धेविरोधादयथान्य दापात् ॥ सद्भिर्विशोध्यक्षपयाशनाये प्रायण हग्भ्रान्तिमतिर्लिलिखा ॥
३२ × १५ से० मी०	१६(२–२१)	१४	५१	अपू०	प्राचीन	
३१ × १५ से० मी०	१४८७ (६५,३४२ ६४,२२३, ४६१,१५१, १२१ प्रति अध्याय क्रमश)	६	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री वैद्यपति सिंहगुप्तसूनो वाग्भट कृतावष्टागहृदय संहितायां सूत्रस्थाने-क्षाराग्निकर्मविधिर्नाम त्रिंशाध्याय श्री विश्वेश्वरार्पणमस्तु ॥ शुभ ॥ भवतु ॥
२४ ७ × १० ७ से० मी०	३६ (२४–३६, ४३, ८१— १००)	१३	३७	अपू०	प्राचीन	इति वैद्य वाचस्पति कृते आतकदर्पणे गृहिणीनिदानव्याख्यान ॥ (पत्र संख्या ३७)
३४ ६ × १८ से० मी०	७१(१–७१)	१३	५८	अपू०	प्राचीन	इति माधवनिदाने कृतौ वैद्य वाचस्पति कृते आतकदर्पणे अतिसारे द्वितीय (पृ० १८)
२६ १ × १० ८ से० मी०	६६ (१–६६)	६	३४	पू०	प्राचीन स० १६१४ (शाके १७७९	इत्यातकदर्पणे निदान व्याख्यायां विष निदान संपूर्णसमाप्ता ॥ सवत् १६१४ शके १७७९ मासोत्तमे मासे भाद्रमासे शुभे शुक्र पक्षे तिथौ चतुर्थ्यां भानु-वासरे हस्त नक्षत्रे तदिन गोविंदात्मज चीरजीव × × × × × ×
२४ ५ × १० ५ से० मी०	४४ (१–४४)	१४	४२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५	३७९१	आतङ्कदर्पणनिदान	माधवाचार्य ?		दे० का०	दे०
१६	७८६६	आतंकदर्पणनिदान-सटीक			दे० का०	दे०
१७	३८३				दे० का०	दे०
✓ १८	७०	आयुर्वेदप्रकाश	माधव उपाध्याय		दे० का०	दे०
✓ १९	६५८७	आयुर्वेदमहोदधि	सुषेण		दे० का०	दे०
२०	५६४	आयुर्वेदशतश्लोकयानिघट	श्री विमल		दे० का०	दे०
✓ २१	१३६४	औषधिकल्प			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ब	स	द	९	१०	११
२४.५×१२.६ से० मी०	२४ (१–२४)	१३	३८	अपू०	प्राचीन	
२६.६×११.४ से० मी०	११२ (१—११२)	१४	३६	अपू०	प्राचीन	इत्यातङ्कदर्पणे निदानव्याख्यायामश्मरी निदानम ॥ (पृ० १११)
२४.५×१०.५ से० मी०	८(२–७, ९–१०)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२३.८×१४.४ से० मी०	प० सं० १६ (१–१६)	१३	३५	पू०	प्राचीन सं०१८४२	इति सौराष्ट्रदेशोद्भवसारस्वतकुलावतम उपाध्याय माधव विरचिते आयुर्वेदप्रकाशे पाकावली नामाध्याय सपूर्णम ॥ समाप्तम् ॥ शुभमवतु ॥ सवत १८४२ शके १७०७ पौषकृतम् मदवासरे ॥ समाप्तम् ॥
२०.३×९.७ से० मी०	४२ (१–४२)	१३	२८	अपू०	प्राचीन	इति आयुर्वेदमहोदधौ सुखेण कृते पानीय वर्ग ॥ (पत्रसंख्या—६)
२५.१×१०.४ से० मी०	प० सं० १२ (१–१२)	१०	३२	पू०	प्राचीन सं०१७३५	इति श्री त्रिमल्ल कवि विरचिते आयुर्वेदशतश्लोक्या निघट समाप्त ॥''' सवत १७३५'' वैशाषमासे वृद्धवासरे सप्तम्या ग्रंथ समाप्त ''' ॥
२३.८×१०.२ से० मी०	८० (२–६८, ७०–८२)	७	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रन्थ संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	पत्र किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
✓ २२	७५३६	योगविचार			दे० का०	दे०
✓ २३	७०३५	कालज्ञान			दे० का०	दे०
✓ २४	६२६५	कालज्ञान वैद्यक			दे० का०	दे०
२५	४०६	कष्टावली	रुद्र		दे० का०	दे०
२६	४४०	* गुणरत्नमाला	भावमिश्र		दे० का०	दे०
२७	५३८७	चतुर्यन			दे० का०	दे०
✓ २८	६२१५	चिकित्साप्रणयनम्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३ ६ × ८.७ से० मी०	[illegible]	८	३५	अपू०	प्राचीन	
२६ ७ × १० ५ से० मी०	७ (१–७)	[illegible]	२८	अपू०	प्राचीन	
२४ ३ × ६.४ से० मी०	२० (१–२०)	८	३८	पू०	स०१९२४	इति अभिन्यास कालज्ञान वैद्यके नाम ग्रंथ समाप्त ॥ श्री भैरव योगेश्वरी प्रसन्नास्तु ॥ समत् १९२४ ॥ पौष कृष्ण ३० ॥ गुरु वासरे ॥ वाराणश्या ॥ इद पुस्तक रामचद्र विन्न गणेश भट्ट हर्डीकर इत्युपनामक ॥
२७ ५ × १२ ५ से० मी०	३	११	३२	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीश्री श्रीरुद्र कृतकष्टावली सपूर्ण ॥ करे कर पीटके वैद्य प्रायते श्वेताम्र भाजनें अस्त्वस्येवट पत्रेच भूक्ता चद्रा यणमाचरेत ॥१॥ श्री ल ल ढ ट
२३ २ × ९ ५ से० मी०	७४ (८३-८५, ८८-८९, ९१-११०, ११२-१४३, १४६-१६२, १६४)	९	३१	अपू०	प्राचीन स०१६४६	इति श्रीमन्मिश्रलटकनतनय श्री मिश्रभाव विरचिता गुणरत्नमाला सपूर्णा ॥ सवत् १६४६ समये चैत्रसुदि चतुर्थीरवौ ॥
१९ १ × ११ ८ से० मी०	२ (१–२)	१३	३०	पू०	प्राचीन	अर्थ चतुष्क ॥ (प्रारम)
१९ ६ × ११ से० मी०	७ (१—७)	८	२७	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्म वैवर्त्तपुराणे ब्रह्मखडे मालवोविष्णुसवादे चिकित्सा प्रणयण पन्दशोध्याय: ॥

क्रमाव और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६	३५८१	चिकित्सासार सग्रह	वंगसेन		दे० का०	दे०
✓ ३०	१६३०	चूर्णविधि ?			दे० का०	दे०
✓ ३१	१८३७	ज्वरनिदान चिकित्सा	गोविंद प्रकाश		दे० का०	दे०
३२	७७३०	द्रव्यगुण शतश्लोकी	तिमल्ल भट्ट		दे० का०	दे०
३३	५१४६	द्रव्यतत्व चद्रिका	लक्ष्मण पडित		दे० का०	दे०
३४	५४४३	द्विशतश्लोकी	ठाकुर		दे० का०	दे०
३५	२२३०	द्विशति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१ ६ × १७ सें०	प० स० ५१ (२-५१)	१७	४७	अपू०	प्राचीन	इति श्री वगसेन कृते चिकित्सा सार सग्रहे द्रव्यस्य भावाभावौ समाप्त ॥ (पृ० ४३)
२५ × ६.५ सें० मी०	प० स० १७	८	३१	अपू०	प्राचीन	
१४ ३ × १० २ सें० मी०	११ (५-१५)	६	१७	अपू०	प्राचीन	इति गोविंद प्रकाश ज्वरनिदान चिकित्सा सपूर्णं ॥ देवीसहाय ।
२४ ८ × १० ७ सें० मी०	११ (१-११)	६	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री त्रिमल्लभट्ट विरचिताया द्रव्य गुण शतश्लोकी समाप्ता ॥शुभमस्तु॥
२३ ७ × ११ सें०मी०	३२ (१-३२)	१३	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री मदब्रह्मज्ञानि वशावतस दत्तसुरिसुत लक्ष्मणपडित विरचिता द्रव्यतत्व चद्रिका समाप्तिमगमत् ॥ शुभ भूयात् ॥
२६ ५ × १० ८ सें० मी०	१४ (१-१४)	१०	३३	पू०	प्राचीन सवत– १८६८	गुणग्रामाभिरामैश्च पूजितेन मनस्विना श्री ठाकुरेण रचिता द्विशतीपूर्ण तामियात् ? इति श्री द्विशती समाप्ता सवत १८६८
२७ × ११ सें० मी०	२१	६	३०	पू०	सवत– १६५०	इति द्वीसति सपूर्णं • सम्मत् १६५० फालगुण सुदि १२ वार आदित्यवार पठिनवपरा शुभ भूयात् ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६	२३५७	द्विशती	ठाकुर		दे० का०	दे०
३७	६५८२	धन्वंतरि निघंटु			दे० का०	दे०
३८	७५२१	नाडीपरीक्षा			दे० का०	दे०
३९	७५२६	नाडीपरीक्षा			दे० का०	दे०
४०	७८५५	नाडीविज्ञान			दे० का०	दे०
४१	२७२	निघंटु			दे० का०	दे०
४२	४१८७	निघंटु			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१ × ११ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	४३	पू०	संवत् १९२९	श्रीठाकुरेणरचिता द्विशती पूर्णतामियात ॥ ग्रहयुग्मनवेंदौ च फाल्गुने कृष्ण पक्षके षष्ठ्याभौमेयुते साध्ये स्यामलालेन लेखितम् ॥
२१ × ८.५ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	३१	अपू०	प्राचीन	इति धन्वंतरीये निघंटौ द्रव्यगण समुच्चय ॥ (पत्र स० ८)
२७.१ × ११.१ सें० मी०	२ १–२	६	३०	पू०	प्राचीन (जीर्ण शीर्ण)	इति नाडी परीक्षा समाप्ता ॥
३६.१ × १०.२ सें० मी०	१	७	२३	पू०	प्राचीन (जीर्ण शीर्ण)	इति नाडी परीक्षा ॥
२७.२ × ११.१ सें० मी०	११६ २–११७	१७	३८	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११.१ सें० मी०	१३ (९६, ९६–१०२, १०४–१०५, १०७-१०९)	७	३५	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
२७.६ × ११.८ सें० मी०	८ (१–८)	५	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
✓ ४३	१३२२	निघंटु (ज्वर निदान)			दे० का०	दे०
४४	४६४४	निदान			दे० का०	दे०
४५	२७५४	निदानप्रदीप	नागनाथ		दे० का०	दे०
४६	२०	निदानमाला	वाचस्पति		दे० का०	दे०
✓ ४७	३७६०	निदानांजन	अग्निवेश		दे० का०	दे०
✓ ४८	६५६६	नेत्रप्रसादन कर्म			दे० का०	दे०
✓ ४९	५३०९	पाकावली			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति गख्या और प्रति पक्ति में अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	६	१०	११
२७ १४ × ११ ४ सैं० मी०	४ (१—४)	१३	४०	अपू०	प्राचीन	
३० ५ × ११ १ सैं० मी०	५० (८–५७)	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
२५.५ × ११ ७ सैं० मी०	२४ (१–२४)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	
२६ × १५.५ सैं० मी०	२६ (१-३, ५–२७	१२	३२	अपू०	प्राचीन	
२५ ६ × १२ ४ सैं० मी०	११ (३–१३)	११	३८	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीमदनिवेशविरचित निदानाजनं सपूर्णम् श्रीराधाकृष्णाभ्या नम ॥
१३.१ × ६ ३ सैं० मी०	६ (१–६)	६	३५	पू०	प्राचीन	इवत्कर्पूर सयुक्त स्मृत नेत्रप्रसादन ॥ नेत्र प्रसादिनो रस त्रिया ॥
२०.५ × १० ६ सैं० मी०	४० (२–४१)	६	२६	अपू०	स० १८८१	इति पाचावली समाप्त जेष्ठ वदि ११ सवत् १८८१ शाके १७४६ मन्मथ नाम सवत्सरे लिखित प० श्रीभट्ट प्यारेलालेन

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०	६५६६	पाकावली			दे० का०	दे०
५१	६७४३	पाकावली			दे० का०	दे०
५२	२१३१	पाकावलि			दे० का०	दे०
५३	३०००/३	पिप्पली वर्धमान			दे० का०	दे०
५४	४२७६	पूतनाविधान			दे० का०	दे०
५५	४०१५	पूतनाविधान			दे० का०	दे०
५६	४७४७	पूतनाविधान	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का प्राकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१५×६८ सें० मी०	१३ (१–४, ६–१४)	८	२४	अपू०	प्राचीन	अथ पाकाद्विकारः ॥ (प्रारंभ)
३३१×. ११५ सें० मी०	५ ६–८, १०–११	८	४४	अपू०	प्राचीन	
२७+११५ सें० मी०	७ (१–७)	६	३६	पू०	प्राचीन	इति पाकावलि संपूर्ण ॥
१७२× ११८ सें० मी०	३	१२	२४	अपू०	प्राचीन	
१६८× १२४ सें० मी०	१४	११	३३	अपू०	सं० १६३७	इति श्री पूतनाविधान माली स्कद पुराणोक्त मामिनी पीड़ाशमन विधान संपूर्ण ॥ लिखित मिश्र सागरदत्त हरसीऽर्थं सम्हलमाह्य ग्रामे मिति वैशाष सुदि १० बुधवार १६३७ शुभं श्रीकृष्णा नम शुभ ॥
२३५× १५४ सें० मी०	१०सं० ११ (१–११)	१०	२६	पू०	प्राचीन सं० १६१४)	इति श्री पूतनाविधान समाप्तं संवत् १६१४ चैत्र वदि तृतीयायां धनोराज्य नगरे छत्रस्थानान वैद्य स्थान द्विज-दास ‥ ‥॥
२४३× १२७ सें० मी०	८ १–८	११	३६	पू०	प्राचीन	इति बमसागर मत कृते शांति रत्नाकरे पूतनाविधान समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
✓ ५७	१३१२	पूतनाविधान (बालचिकित्सा)			दे० का०	दे०
५८	७०६५	प्रकाशचक्र निघटु	द्विज वोपदेव		दे० का०	दे०
५९	१३३४	बाल चिकित्सा			दे० का०	दे०
६०	१३६५	बाल चिकित्सा			दे० का०	दे०
६१	३६००	बालचिकित्सा पूतनाविधान	राजसिंह		दे० का०	दे०
६२	६५६५	बाल तंत्र	कल्याण		दे० का०	दे०
✓ ६३	८३४	बालरोग चिकित्सा	श्रीवर्दिमिश्र		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१२× १०८ सें० मी०	९ (१-९)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
३२४×१३ सें० मी०	६ १-६	६	४५	पू०	प्राचीन	वाग्भट्कृते प्रभृते प्रकाश षष्ठे निघटुममन द्विजवापदव १७६ श्रीमा रामानुजाय नम × × × ॥
१६×१३५ सें० मी०	६	१६	१६	पू०	संवत्-१६२५	इति श्री स्वागिस्या ज्ञाने पद्र स्वामी कार्तिवय उमासवाद बाल चिकित्सा पुस्तक द्वादश वर्ष पर्यन्त वर्ति उपाय समाप्तम् ॥ श्रा० कृ० द्वि० २ संवत् १६२५ ॥
२४१× ११२ सें० मी०	६(१-६)	६	३१	अपू०	प्राचीन	
१२४×७६ सें० मी०	२४ (१-२४)	८	१६	पू०	संवत्—१६३०	इति श्री महाराजाधिराज श्रीरावणिय कृतो स्वर्धार्मिया नाम्नि ग्रंथेन बाल चिकित्सा पूतनाविधान समाप्त ... - सं० १६३० लिपत प० श्रीराठव हजारीलाल ग्रामित मरहुनी श्री कृष्णाय न ॥
२२×१०६ सें० मी०	३ (१-३)	१६	४६	अपू०	प्राचीन	इति कल्याणेन कृते बाल तन्त्रे माधारण कल्याणेय कथा नाम द्वितीय पटल ॥ (पत्रसंख्या २)
०२२७× १०६ सें० मी०	२१ (१,६-२२ २४-२६)	८	३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४	३५	भावप्रकाश	भावमिश्र		दे० का०	दे०
६५	५८२०	भावप्रकाश (माध्यम खंड)			दे० का०	दे०
६६	५८३६	भानप्रकाशनिघंटु			दे० का०	दे०
✗ ६७	"	भिषक् चक्र चित्तोत्सव	हंसराज		दे० का०	दे०
✓ ६८	१४५०	भिषक चक्र चित्तोत्सव	हंसराज		दे० का०	दे०
६९	३६२४	भिषक चक्र चित्तोत्सव	हंसराज		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ स	८ द	९	१०	११
२८.७ × १३.१ सें० मी०	९० से० १२८ (३-११, २५-२६, २८, ३२-३३, ३८, ४०-४१, ४४, ४६, ४७-५७, ५९-६०, ६५-७४, ७७-७८, ८१-८२, ८४-८५, ८९-९७, ९९-१०५, ११९-१२४, १२७-१३१, १३४-१३६, १३८-१४३, १४७, १५०, १५२-१५३, १५७-१५८, १६६, १६८-१७०, १७२, १७४-१८९, १९७-२१०, २१२-२१३, २२८-२२९)	१२	३४	अपू०	प्राचीन	
२३.९ × १३.१ सें० मी०	१९ (१-१९)	९	३३	अपू०	प्राचीन	
२७.६ × ११.६ सें० मी०	१९ (१-२, २-६, ११-१७, १९)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२०.५ × १३.५ सें० मी०	६३	२१	१६	पू०	वि०सं० १९०६	
२८.५ × १६.१ सें० मी०	४ (२-५)	१२	३३	अपू०	प्राचीन	
२३.४ × १०.३ सें० मी०	५६ (१-५६)	१०	३५	पू०	संवत्-१९००	इति श्रीभिषकचक्र चित्तोत्सवे हंसराज कृते वैद्यशास्त्रे सप्तदशोध्याय १७ समाप्त । लिषितमिदपुस्तक संवत् १९०० भाद्रशुक्ल ११ चंद्रवासरे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७०	१०६३	मदनविनोद निघटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७१	७२६	मदनविनोद निघटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७२	४७६७	मदनविनोद निघटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७३	४८८४	मदनविनोद निघटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७४	६७४४	मदनविनोद निघटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७५	७०५६/३	मदन विनोद निघटु	मदनपाल		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१×१६.३ सें० मी०	८१ (१–८५–८५	१३	२८	अपू०	संवत् १९४७	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघटौ प्रशस्ति वर्गश्चतुर्दश १४ ॥ चैत्रे मासेशिते पक्षेमध्याह्ने शुभ्र वासरे चतुदश्या लिखित फकीरीचद्रेण पुस्तक शुभदायक स० ११४७ वि० चै० सु० १४ दीन शुक्रवार वहेडिमध्ये सेवग रामात्मज श्री लक्ष्मणाय नम ॥
२७.८× १०.८ सें० मी०	५६(११ १२, ३२ ६२, ८२-८५, ८७-९७)	९	३४	अपू०	प्राचीन	
२८.८× ११.२ सें० मी०	७ (१–२४, २६–७१)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघटौ कृती नवर्ग एकदश ११ ॥ (पत्र, संख्या–६२)
२६.८×११ सें० मी०	५२ (७, ६–१७ २६ ६७)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघटौ प्रशस्तिवर्गाश्चतुर्दश समाप्त ॥१४॥ वाचस्पति पितुरुदार सुविधा वाचस्पतेश्चरणपकज··· इति मदन विनोद समाप्त ॥
३२.१× १२.६ सें० मी०	४२ ४०–८१, ८३	९	३७	अपू०	प्राचीन संवत– १८९०	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघटौ प्रशस्ति वर्गं श्चतुर्दशम समाप्त श्री शुभमस्तु फाल्गुणेमासि कृष्णपक्षे पचम्या भृगुवासरेक स० १८९० के साल श्रीकृष्णच द्रम्मरम्भजामि ॥
१२.४×१६ सें० मी०	८६	१२	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघटौ मिश्र वर्गस्त्रयोदश समाप्त २३ रिति निघटसपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७६	२२३२	मदनविनोद निघंटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७७	७७३७	मदनविनोद निघंटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७८	५२३१	मधुकोश (माधवनिदान की टीका) मू० ग्रंथ माधव मिश्र	विजयरक्षित		दे० का०	दे०
७९	५७३२	मधुकोश	विजयरक्षित		दे० का०	दे०
८०	६३३०	माधवनिदान	माधव मिश्र		दे० का०	दे०
८१	६०३१	माधवनिदान	माधव मिश्र		दे० का०	दे०
✓ ८२	६६८३	माधवनिदान (ज्वर प्रकरण) ('मधुकोश बध' संस्कृतटीका)	माधव मिश्र		दे० का०	दे०

पत्ता या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण ? तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२७ ५ × १४ सें० मी०	१३	१६	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोद निघटौ मिश्रा वर्गास्त्रयोदश ॥ शुभ भूयात ॥
२६ ४ × १० सें० मी०	१९ (३८–५७)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति मदनपालविरचिते मदनविनोदे निघटौ कृतान्नवर्ग एकादश × × ॥ (पृ० ५७)
२८ × १३ ५ सें० मी०	४ (१–४)	१३	३८	अपू०	प्राचीन	ततदग्रथ तदथो व्याख्या कुसुम रस· लेश माहृत्य भ्रमरेणैव मया य व्याख्या मधुकोष आरब्ध ॥ उपयुक्तमिहानु· क्तनिदानमायवेन यत् ॥ अथ व्याख्या प्रसगेन मया तदपि लिख्यते ॥ (पत्र संख्या–१ पंक्ति स०–६)
२५ ६ × १० ८ सें० मी०	३४	६	३२	अपू०	(जीर्ण) प्राचीन	आरोग्य शालीय वैद्यक महोपाध्याय श्री विजय रक्षित कृते मधवाये ज्वर निदान समाप्तिमगमत ॥ (पृ० ६३)
२४ ७ × १० २ सें० मी०	४८ (१–४८)	८	२७	अपू०	प्राचीन	
२६ × ११ ८ सें० मी०	७ (१–७)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	
२४ × १० ४ सें० मी०	१९ (१–१९)	१२	४१	पू०	प्राचीन	तेनोज्वलाविवृति रत्पधिया हिताय सव· ध्यते विबुध माधव सग्रहस्य । विज्ञाय तार्किक वरैकविचार वैद्य वैयस्य गुणवशा मधुकोश वद्य ॥ ८ ॥··· (पत्रसंख्या–२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८३	६६८६	माधवनिदान	माधव		दे० का०	दे०
८४	६६५	माधवनिदान	माधवाचार्य		दे० का०	दे०
८५	३७५९	माधवनिदान	माधव		दे० का०	दे०
८६	३७९०	माधवनिदान (प्रातकदर्पणनिदान व्याख्या)	माधवाचार्य	वाचस्पति	दे० का०	दे०
८७	३१८१	माधवनिदान	माधव		दे० का०	दे०
८८	१०४६	माधवनिदान	माधवाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ब	स	द	६	१०	११
२५ × १० से० मी०	९२ (१–९२)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
३३.३ × १३.५ से० मी०	११४	१०	४०	पू०	संवत्—१९४२	इति श्री माधवाचार्यं विरचितो रुग्विनिश्चय समाप्तम् ॥ संवत् १९४२ शाके शालिवाहनस्य १८०७ मास १३ पक्ष २६ मिती अश्विन वदि प्रतपदा १ शुक्रवासरान्वितायां इदं पुस्तक लिखित फकीरचंद सेवगरामात्मज वहेडि· मध्य शुक्ल सुच्चशोकेशोचनिती श्रुवनस्वाय परोपकार्थं। शुभ मंगल· मस्तु ॥ मंगल ददातु ॥
२४ × १०.५ से० मी०	१२२ (१–४१, ४३–११२ ११५–१२५)	८	३२	अपू०	संवत्—१८७४	इति श्री वैद्यराजकवि माधवविरचिते रुग्विनिश्चय संपूर्ण इतिमाधवनिदान समाप्त ग्रंथपरिमाण २२०० संवत् १८७४ वैशाख कृष्ण १२ खौ वाच्य- कर्तायिदाव्यस्तोलेखकोगणनायक ।
२३.८ × ११.१ से० मी०	६९	१३	३८	अपू०	प्राचीन	इत्यातकदर्पणे वाचस्पति कृताया माधवे निदान व्याख्याया भग्नव्रण निदान (पत्रसंख्या ११५)
२२.७ × १०.२ से० मी०	४६ (१–४६)	११	३३	पू०	प्राचीन	माधव कविनारचित स्मुखहेतोस्समस्त "इति श्री माधवाभिधान द्रव्य- गुण समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ सिद्धे- श्वर्य्यनम ॥ ' ....
३६.१ × १४.५ से० मी०	प०सं०४४ (६–४०, ४३, ४६, ४८–५०, ५३–५५)	११	४६	अपू०	प्राचीन संवत्—१९१२	इनि श्री माधवकृत निदान स्थान समाप्त ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८६	१८०४	माधवनिदान			दे० का०	दे०
९०	१४७	मालावति सवाद	गंगाधरभट्ट		दे० का०	दे०
✓ ९१	७२७७	मुद्गरकूटविवरण	माधव	नागेश	दे० का०	दे०
✓ ९२	६५९३	मूत्र परीक्षा			दे० का०	दे०
९३	६५९४	मूत्रपरीक्षादि			दे० का०	दे०
९४	६५८	मूत्रपरीक्षा			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त मान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३५८ × १२४ सें० मी०	प०स० ६० (१–६०)	६	३४	अपू०	प्राचीन	
१६१ × १०२ सें० मी०	६ (१ ६)	१०	२१	पू० सं० १६३६	प्राचीन	इति मानावति विराग सवादे समाप्तौ य ।। सवत १६३६ शके १८०१ वैशाख वद्य २ गुरौ तद्दिने पुस्तक समाप्त ।। नाखरेत्युपनामक नारायणभट्टात्मज गगाधर भट्टन लिखित मूख हस्त न दातव्य एव वदति पुस्तक ।।
२१८ × १०७ सें० मी०	३ १—३	१६	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री माधवविरचिता मुदगरकूटस्स माप्तिमगमत ।। इति श्रीमद्भिषग कृष्ण पडितात्मज भिषड नागश पडित विरचित मुदगरकूट विवरणम ।।
१६६ × १०६ सें० मी०	३ (१ –३)	११	२८	पू०	प्राचीन सं० १७८८	इति श्री मूत्र परीक्षा समाप्ता ।। सवत १७८८ वर्षे शाके १६५३ प्रवत्तमाने आश्विन शुद्ध १ भौम वासरे रावल–शीवदत्त पुत्र शभु रामण पुस्तक परोपकारे अपन करु छथी ।। व्यास उदे कृष्णस्य अवरगाबादे प्राप्तमिद ।
१४ × १०४ सें० मी०	४ (१–२ ४–५)	१५	१२	अपू०	प्राचीन सं० १८८८	इति मत्र परीक्षा समाप्त सवत १८८८ श्रा० ६ शा १७५५३ श्रावण वदी ८ भौम लि०
३४ × १३ सें० मी०	२	१२	४०	पू०	सवत— १६४०	मूत्र परिक्षासमाप्तम् स० १६४० मिती चत्र सुदि १

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९५	७९२	मूत्रपरीक्षा	सरजीतसिंह		दे० का०	दे०
९६	७६४	योग तरंगिणी			दे० का०	दे०
९७	५०१२	योग चिंतामणि			दे० का०	दे०
९८	४५६४	योग चिंतामणि			दे० का०	दे०
९९	३६५६	योग चिंतामणि	हर्षकीर्ति सूरि		दे० का०	दे०
१००	७१९२	योगरत्नमालाविवृत्ति	नागार्जुन		दे० का०	दे०
१०१	२४८	योगशत (टी०)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	९	१०	११
२७ ३ × १२ १ सें० मी०	२ (१, ५)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति मूत्र परीक्षा लक्षणानि शुभम् लिखित सरजीत सिंह ब्राह्मणेन शुभम् ।
२५ + १० ५ सें० मी०	४८ (२–३, ५–६, ८–१५, १७–१८, २०–५०, ७१–७३)	६	३५	अपू०	प्राचीन	
३०·५ + १२ ३ सें० मी०	२ (१०७–१०८)	८	३३	अपू०	प्राचीन	
३०·७ + १२ ६ सें० मी०	२२ (८५–१०६)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
३१ + १२ ४ सें० मी०	५५ (१–१४, १६–४७, ७५–८३)	८	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमत्तपागच्छीयत योगक्षीय श्री हर्ष कीर्तिसूरि संकलिते श्री योग चिंतामणौ वैद्यक संग्रहे गुटिकाधिकारो नाम तृतीयोध्याय । पृ० ४७
२३ ५ + १० ६ सें० मी०	२४ १–२४	११	३३	अपू०	प्राचीन	
२१५ + ९ ५ सें० मी०	१८ (१–१८)	१३	२७	पू०	प्राचीन सं० १८२३	इति श्री योगशत समाप्तम् । सं० १८२३ वर्षे भाद्रमासे शुक्ल पक्षेतिथौ ५ पचम्यागुभदिने लेप कथा चक्रयोजंयत्ति ।

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३० × ११ ५ सें० मी०	९ (१–९)	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
२६'५ × ९ ६ सें० मी०	७ (१–७)	७		पू०	प्राचीन	इति योग शतक समाप्त ॥……… …………
२२ × १० सें० मी०	८ (१–८)	८	२६	पू०	प्राचीन सवत्— १८७०	इति श्री जगदीशात्मज वदिमिश्र विरचितं जोग सुधा निधौ प्रथमादि दिवस मास वर्ष समुदाय कृतभेदन भिन्नाना पूतना ग्रहणचिकित्सा नामपंचकलास समाप्त… ॥ संवत् १८७०
२७ × १२ सें० मी०	९५ (१–९२, ९४–९६)	९	६३	अपू०	प्राचीन	विदु नामय सुभिषजामुदेरस पद्धति सपय्यते · पृ १)
२३ ४ × ९'४ सें० मी०	७ १–७	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२५ ७ × १० ८ सें० मी०	२४ ३०–३४, ३६–५५	७	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री शालिनाथ विरचिता रसमंजरी वाल ज्ञान कथन नाम दशमोध्याय समाप्तोयो ग्रंथ ।
२४ ४ + ९ ६ सें० मी०	४ १–४	९	३३	अपू०	प्राचीन	
२६ ६ + ११ ४ सें० मी०	१४ (११–२५)	८	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री पंडित वैद्यनाथ पुत्र शालिनाथ विरचित रसमंजरी उरी उपरसशोधन मारण सत्वापातनमणि मारण कथननाम तृतीयोध्याय ॥ पृ० १२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
आयुर्वेद						
११०	७१०७	रसमंजरी	शालिनाथ		दे० का०	दे०
१११	१०४२	रसमंजरी	शालिनाथ		दे० का०	दे०
११२	४२८८	रस रत्न समुच्चय			दे० का०	दे०
११३	६२१८	रसरत्नाकर	नित्यनाथ सिद्ध		दे० का०	दे०
११४	७५१२	रसरत्नाकर	नित्यनाथ		दे० का०	दे०
११५	५२	रसरत्नाकर	नित्यनाथ सिद्ध		दे० का०	दे०
११६	११६२	रसलक्षण			दे० का०	दे०

पन्ना या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ स	८ द	९	१०	११
२४.५ × ११ सें० मी०	८ (१-२, ४-७, ९-१०)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री रसमजर्या रस जारण मारणादि कथन नाम द्वितीयोध्याय ॥ (पत्रसंख्या ७)
२५.५ × १२.५ सें० मी०	४२ (१-७, १०-११, १३-४५)	७	२८	अपू०	प्राचीन	
२६.४ × ११.१ सें० मी०	३१ (१-१३, १६-३३)	१२	३६	अपू०	प्राचीन	इति रसरत्न समुच्चये षोडशोध्याय ॥ (पत्र स० ३०) × × ×
२६.७ × ११.६ सें०मी०	११२ (१-११२)	११	४८	अपू०	प्राचीन	इति श्री पार्वती पुत्र श्री नित्यनाथसिद्ध विरचिते रसरत्नाकरे रसायनखंडे वीर्यस्तंभनादिस्त्री द्रावण सन्मानव मोपदेश ॥६॥
१२.८ × १०.८ सें०मी०	४७ (१-४७)	८	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री पार्वती पुत्र श्री नित्यनाथ विरचिते रस रत्नाकरे सिद्ध खंडे प्रथो दशो पदेश × × । (पत्रसंख्या ३६)
३५ × १८ सें० मी०	४६	१५	५२	पू०	संवत १७२८	रसरत्नाकरमंत्र खंड पूर्ण
२७ × १२.५ सें० मी०	६	६	२२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११७	७१०३	रसायनकल्प			दे० का०	दे०
११८	६६८२	रसायन क्रिया (काकचंडीश्वर मते)			दे० का०	दे०
११९	४२६५	*रसिकविनोद	गोपालदास		दे० का०	दे०
१२०	७२२१	रोगचिकित्सा-औषधिप्रकरण			दे० का०	दे०
१२१	६६२३	रोगचिकित्सा ?			दे० का०	दे०
१२२	४१६१	रोगावली (हिंदी सटीक)			दे० का०	दे०
१२३	४२६२	*वीरसिंहावलोक (कर्मविपाक)	वीरसिंह देव		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.७ × १०.५ सें० मी०	११ (१-११)	८	२०	अपू०	प्राचीन	
१६.५ × ८.५ सें० मी०	४१ (१-४१)	७	१७	अपू०	प्राचीन	
२७.८ × ११.२ सें० मी०	प०सं० ४५ (१-२, ७-८, १४-२३, २५-२८, ३४-३८, ४३, ५१, ५३, ५६-६१, ६८, ७४, ७६, ८२, ८६-८७, ६० ६२, ६५, ६८, १०६, १०६, ११२, १५५, १५८)	१०	३४	अपू०	प्राचीन संवत्—१७६७	इति श्री मेहरा वंशावतंस श्री स्वामिदासात्मज गोपालदास विरचितोरसिक विनोद नाम्नाग्रंथोय परिसमाप्तः ॥ श्री शुभमस्तु मांगल्य ददातु। संवत् १७५८ वर्षे पौष वदि पंचमी ५ गुरुवासरे × × × × ॥
२८.१ × १०.१ सें० मी०	१३	१०	३५	अपू०	प्राचीन	
२५.१ × ६.८ सें० मी०	३ (१, ४-५)	१४	४०	अपू०	प्राचीन	
२६.२ × १२ सें० मी०	५ (१-५)	६	४२	पू०	प्राचीन	दक्षिणाश्वस्वशक्तित इत्युक्त तदन्तर इत्यमाह १ इति महार्णवे ॥
२४.६ × १० सें० मी०	६५	८	२६	अपू०	प्राचीन सं०१५४४	इति श्री तोमरवंशावतंस—॥ वीरसिंहदेव विरचिते ग्रंथो वीरसिंहावलोके ज्योतिशास्त्र कर्मविपाकायुर्वेदोक्त प्रयोगे ······ . ··· ···संवत् १५४४ समय भाद्रसुदि २ चंद्रवासरे। प्रवेहुकालयीनमरेगुलुस्तान बहलोल शाहिराज्ये। सीमूरसाहिवादेमादमशान राज्य प्रवर्तते ।········ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२४	६५८६	वैद्यक			दे० का०	दे०
१२५	३५७६	वैद्यक ?			दे० का०	दे०
✓ १२६	६११	वैद्यकग्रंथ			दे० का०	दे०
१२७	३३०३	वैद्यकशास्त्र	हंसराज		दे० का०	दे०
१२८	७५३३	वैद्यकसंदोह			दे० का०	दे०
१२९	६६८४	वैद्यकसंदोह			दे० का०	दे०
✓ १३०	७०६१	वैद्यकसार	शंकर		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२०८×१६४ से० मी०	१६ (१–१६)	८	३४	अपू०	प्राचीन	॥ अथ वैद्यक ॥ (प्रारभ)
२५५×१२५ से० मी०	५(१–५	६	१६	पू०	प्राचीन	
११६×११२ से० मी०	प० सं० ३६ (१,३–११, ४५–६२, ६४–७५)	६	२७	अपू०	प्राचीन	
२३·५×१०६ से० मी०	प० सं० १७ (१–१७)	७	२२	अपू०	प्राचीन	
२४६×६६ से० मी०	७	७	२०	अपू०	प्राचीन	
१७२×८८ से० मी०	७ (१–७)	५	१७	अपू०	प्राचीन	
१५७×८३ से० मी०	२० (१–२०)	७	१७	पू०	प्राचीन सं० १८६१	इति वैद्यकसारे भवरादये पचमोध्याय ग्रथ सख्या ६५० हस्ताक्षरभाऊविठल ब्रह्माण पुरकर कुलकर्णि प्रगण जाहानाबादमौजे गोण समत १८६१ कार्तिक शुध्य १२—

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३१	३२९३	वैद्यचन्द्रोदय	वाग्भट		दे० का०	दे०
१३२	४२३६	वैद्यकसारसंग्रह	हर्षकीर्ति		दे० का०	दे०
१३३	४३९३	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१३४	१३५८	वैद्यजीवन (सटीक)	लोलिंबराज	गोस्वामी-हरिनाथ	दे० का०	दे०
✓ १३५	१६०७	वैद्यजीवन (संस्कृत टीका सहित)	लोलिंबराज	हरिनाथ शर्मा	दे० का०	दे०
१३६	११२६	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१३७	२४००	वैद्यजीवन (सटीक)	लोलिम्बराज	भगीरथ	दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूरा है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२ ५ × ११ १ सें० मी०	प० स० ११ (१–३, ५–१२)	९	२९	अपू०	प्राचीन सं० १८६८	इति श्री वैद्य वाग्भटोक्त विरिचिताया वैद्य चन्द्रोदय नाम ग्रंथो पाडशाध्याय ॥ सवतु १८६८ साके १७३३ ॥
२५ ८ × १६ ९ सें० मी०	३६ (३६–६१)	२३	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री योगचिंतामणौ वैद्यक सारसंग्रहे तैलाधिकार षष्ठोध्याय समाप्त ॥ ६ (पत्रसंख्या–४३)
२३'१ × १० ५ सें० मी०	प० स० २३ १–२३	९	३०	पू०	प्राचीन सं० १९२३	इति श्रीमद्दिवाकर मुनुना लोलिंबराज कवि विरचिते वैदय-जीवन समाप्त। × × × समत १९२३ ॥ शाके १७८८ ॥ बहूधाय नाम संवत्सरे उत्तरायणे ···· ॥
२३ ८ × १० ९ सें० मी०	३० (१–२ ४–३१)	१३	४९	पू०	सं० १८९१	इति श्रीमद्दिवाकर मूनु लोलिम्मराज विरचिते मन्मरोग प्रतीकारा नाम पंचमो विलास ॥ ०॥ सम्वत १८९१ मिति फाल्गुन शुक्ल पक्ष नवम्या रविवासर अहिच्छत्रनगर रघुवरमिश्रस्य लिपिनमिदम् शुभभूयात।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३८	३७९६	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१३९	६५८४	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१४०	७१८६	वैद्यजीवन (सटीक)	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१४१	५७४१/२	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१४२	७७७३	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१४३	७२६४	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१४४	७१२८	वैद्यजीवन दीपिका	लोलिंबराज	रुद्रभट्ट	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ १ × १२ २ सें० मी०	प० सं० १६ (१–१६)	९	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री वैद्यजीवने ज्वर प्रतिकारोनाम प्रथमो विलासः । (पत्र सं० ६)
१५ ८ × ९ २ सें० मी०	३१ (३–३४)	९	२२	अपू०	प्राचीन	इति मद्दिवाकर सूनु लोलिमराज विरचिते वैद्य जीवने ज्वर प्रकरणनाम प्रथमोल्लास ॥ १ ॥ (पत्र सं० १३)
३४ ८ × १३ २ सें० मी०	३३ (१–३३)	११	४५	पू०	प्राचीन सं०१९२२	इति श्री वैद्य लोलिमराज विरचिते वैद्यजीवनेरसविधिर्नाम पचमोविलास ५ सवत् १९२२ कार्तिके शुक्ल पक्षे पचम्या भौमवासरे ततदीने रामभक्तेन लोलिमराज लिख्यते समाप्त शुभ भूयात् ॥ × ×
१८ १ × १३ ६ सें० मी०	२३	१७	१८	अपू०	प्राचीन सं०१८५८	इति श्री श्रीमद्दिवाकर पंडित सूनु लाल लोलिबराज विरचिते वैद्यजीवण समाप्त सुभमस्तु मिद पुस्तक लिखा श्री त्रिपाठीनदलालेन पहरौंधी ग्रामे सवत् १८५८ रामचद्रायनम ।
२० × १५ सें० मी०	३२ (१–३२)	१४	१३	पू०	प्राचीन सं०१८६७	इति श्री लोलिबराजविरचिते वैद्य जीवने सकलरोग प्रतिकारो नाम पचमो विलास । इति वैद्य जीवन समाप्तम् ॥ शुभमभूयात् सवत् ॥ १८६७ ॥
२३ ६ × ९ ५ सें० मी०	२९ (१–२९)	७	३०	पू०	प्राचीन सं०१७२९	इति श्री श्रीमदिवाकर पंडित सूनु लाल लोलिबराज विरचिते वैद्यजीवन समाप्त ॥ सवत् १७२९ समय जेठ वदि १२ मगल + + +
१६ २ × १० २ सें० मी०	८ (१–८)	१८	१३	पू०	प्राचीन	

प्रभाव और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
✓ १४५	६४८७	वैद्य दर्पण (हिंदी टीका)			दे० का०	दे०
✓ १४६	६२६२	वैद्यभास्करोदय सटीक	धन्वंतरि	विष्णुगिरि	दे० का०	दे०
१४७	२०८९	वैद्यमनोत्सव	वंशीधर मिश्र		दे० का०	दे०
१४८	२६	वैद्यमनोत्सव	वंशीधर		दे० का०	दे०
✓ १४९	३२४२	वैद्यरत्न	शिवानंद भट्ट		दे० का०	दे०
१५०	४५३६/२	वैद्यामृत	मोरेश्वर भट्ट		दे० का०	दे०
१५१	६५१६	वैद्यामृत	मोरेश्वर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१.९ × १५.५ सें० मी०	२५ (१–१२, १४–२६)	११	३८	अपू०	प्राचीन	श्रीमते रामानुजाय नमः नमस्कृत्य गणेशान महेशान महेश्वरी वैद्यदर्पण-माचष्टे वैद्यानाहितकाम्यया। (प्रारंभ)
२०.४ × ८.३ सें० मी०	१५८ (३–१६०)	७	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री वैद्यभास्करादये धन्वतरिकृत विरचित भाष्य विरचितायां नामरोग व्याधिजन्य उत्पत्तिज्ञान अनुक्रमणिका नाम कथन चतुर्विंशति परिछेद २४ शुभमस्तु ॥
२६.५ × १४ सें० मी०	१७ (३, ५ ७, ९, १०, १४, १६, १७ २०, २२, २३, ३१ (३७, ३८)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमन्मिश्र यशोधर विरचिते वद्य-मनात्सवे नाडापरीक्षा मूत्रपरिक्षा पित्त कफवातकाय निदान साध्यासा।
३० × १३ सें० मी०	म०सं०३०	६	३४	पू०	प्राचीन सं०१९१६	सवत् १९१६ वैशापमासे कृष्णपक्षे प्रतिपदा भौमवासरे लिपि कृत ... ...श्रीमस्तु शुभमस्तु दासरथे रामकृष्ण।
२३ × १०.३ सें० मी०	४१ (३–४३)	११	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री गोस्वामि शिवानंदभट्ट विर-चिते वैद्यरत्न समाप्त शुभभूयात् ॥
२७ × ११.५ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	४१	पू०	सवत्–१८४२	इति श्रीमदहमदानगरस्थितमाणिक-भट्ट वैद्यात्मज मारेश्वरविरचिते चतुर्ग-लकार याधववरोपनामकरघुनाथसूनु-नामवालो शकरेणलिखितमल ॥ सवत् १८४२ षाषाढ शुद्धपंचम्यामिदो ॥
२४.२ × १०.२ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	३५	पू०	प्राचीन सवत्–१८८६	इति श्रीमदहमदानगरस्थित माणिक भट्ट वैद्यात्मज मारेश्वर विरचिते वैद्यामृत चतुर्गलकार. समाप्त ॥ सवत् १८८६ मिति माघ शुद ४ बुधवासर जयरामेन लिखित ॥ कवीश्वरापनाम्ना ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५२	६५८३	वैद्यावतंस	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
✓ १५३	७५३०	व्याधि ज्ञान			दे० का०	दे०
✓ १५४	६५६८	(द्रव्य गुणागुण) शतश्लोकी	विमल्ल भट्ट		दे० का०	दे०
१५५	३२६४	शतश्लोकी	विमल्ल कवि		दे० का०	दे०
१५६	६५४१	शतश्लोकी टीका (द्रव्यदीपिका)	विमल्ल भट्ट	कृष्णदत्त	दे० का०	दे०
१५७	७०५६/३	शतश्लोकी निघंटु	विमल्ल		दे० का०	दे०
✓ १५८	६६००	शारीरस (अष्टांग हृदय)	वाग्भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८×७७ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	१८	पू०	प्राचीन	......रचयति चरकादीन् वीक्ष्य वैद्यावतम कवि कुल सुलतानो लाल लोलिंव राज ॥ २ ॥...... (पत्र सं० १)
२२५× १०४ सें० मी०	६	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२२५×६ सें० मी०	११ (१–११)	११	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री त्रिमल्ल विरचिता गुणा० गुण शतश्लोकी समाप्ता ॥ ..
२३२×१३ सें० मी०	प०सं०१० (१–२, ८–१५)	१०	३२	अपू०	प्राचीन संवत् १९२५	इति श्री त्रिमल्ल कवि विरचिता शतश्लोकी समाप्ता शुभ संवत् १९२५ फाल्गुन कृष्ण १० शनौ ॥
३४५× १२६ सें० मी०	१३ १,१–१२	६	४०	पू०	प्राचीन संवत् १९०५	इति श्री त्रिमल्ल भट्ट कृता शतश्लोकी टीका समाप्त शुभ भूयात् संवत् १९०५ के–कार्तिक ६ बु० ।
२२४×१६ सें० मी०	५ (१–५)	१३	३३	अपू०	प्राचीन	......अथ श्री त्रिमल्लकविकृत शतश्लोकी निघंटु प्रारंभ ॥ .. (आदि)
२२×५ ६७ सें० मी०	१५ (७,१२–२५)	६	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री शारीरस्थाने मर्म विभागो-नाम चतुर्थोऽध्याय ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
√ १५६	७५६८	शार्ङ्गधर संहिता			दे० कृ०	दे०
√ १६०	७४६२	शार्ङ्गधर व्याख्या	शार्ङ्गधर	सुखराम	दे० का०	दे०
१६१	७८२७	शार्ङ्गधर संहिता (व्याख्या) टीका	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१६२	७७०७	शार्ङ्गधर टीका	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१६३	६०३४	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१६४	५६६२	शार्ङ्गधर संहिता (पूर्व एव मध्यम खड)	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१६५	६८७०	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	६	द	६	१०	११
३४×१ ३.१ सें० मी०	२ (१–२)	१३	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री शार्ङ्गधरे० स्नेहपानाध्याय ॥ (पत्र–सं० २)
२७×११ ५ सें० मी०	६०	६	३१	अपू०	प्राचीन (शके १७७६)	इति शार्ङ्गधर व्याख्याया दृष्टि प्रसादन कल्पनाध्याय । सवत् १–शके १७७६ मासोतम मासे भाद्रपद मासे शुभे कृष्ण पक्षे तिथौ द्वितीयाया भृगुवासरे तदिन उपनाम ज्योसी गोविंदात्मज चीरंजीव रामेश्वर गौडरीमा सुभस्था नेन लिखित ॥
२६ ६×११ ३ सें० मी०	८ १ ६, ८-६	११	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री शार्ङ्गधर व्याख्याया पुटपाक कल्पना (पत्र सं० ३)
२७×११·४ सें० मी०	१८ १-३, ३–१७	१३	३६	अपू०	प्राचीन	
२८×१२ २ सें० मी०	५६	७	४०	अपू०	प्राचीन	
३३ ५×१३ सें० मी०	६२ (१–६२)	८	३०	पू०	प्राचीन सं० १६११	इति श्री दामोदर सूनुना।शार्ङ्गधर विरचिताया चिकित्सा स्थाने मध्यम खड समाप्त शुभमस्तु मिति पौष सुदि द्वादसी रवौ की सवत १६०११ के साल
२३ ८×१३ ·२ सें० मी०	११७	१०	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनो शार्ङ्गधरेण विरचिता सहिताया चिकित्सा स्थाने यूर्णा जनवति सकल्पनाध्याय समाप्त ॥ शुभमस्तु सर्वजगताम् ॥ श्री राधा कृष्णाभ्या नम ॥शुभम्॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रागत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	६५१६	शार्ङ्गधरसहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१६७	१०५५	शार्ङ्गधरसहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१६८	१०१६	शार्ङ्गधरसहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१६९	३०१२	शार्ङ्गधरसहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७०	३७९७	शार्ङ्गधरसहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७१	३७००	शार्ङ्गधरसहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७२	६४६	शार्ङ्गधरसहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या	और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ × ११·३ सें० मी०	३६ १–३६	१०	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनूनाशार्ङ्गधरेण विरचितायां संहितायां सूत्र स्थाने परिभाषाय. प्रथमः + + + (पृ० ५)
२८·७ × ११ सें० मी०	१६० १–२, ४–२५, २७–११३, ११५–१६२, १६४–१६८, १७१–१८२, १८४–१९१, १९३–१९८	९	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदरसुनुना शार्ङ्गधरेण विरचितायांसंहितायांश्चिकित्सास्थाने लेपादिविधिरध्यायः ॥ (पत्र संख्या १८९) + + +
२२·६ × १४·७ सें० मी०	प० सं० २९	१०	२५	अपू०	प्राचीन	
२५ × १२ सें० मी०	प० सं० ५९ (१–४०, ४४–६२)	१३	२६	अपू०	प्राचीन सं० १९१८	इति श्री दामोदर सूनो शार्ङ्गधरस्य विरचितायां संहितायां चिकित्सास्थाने-रसकल्पनाध्यायः समाप्तः ॥ इति मध्यमखंड समाप्तः संवत् १९१८'''॥
२५·२ × ११·९ सें० मी०	प० सं० २१ (१–२१)	११	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनुना शार्ङ्गधरेण विरचितायां संहितायांनिदाने रोगगणना सख्याध्य. इति पूर्व खंडः समाप्तः ॥
३० × १५·७ सें० मी०	प० सं० ६ (२–६)	१४	३५	अपू०	प्राचीन	
२८ × ११ सें० मी०	१५७ १, ३–१२, १२–३५-३५-११३, ११३–१३९, १४१–१५५	८	३१	अपू०	प्राचीन सं० १७६६	इति श्री दामोदर सूनू श्री शार्ङ्गधरेण विरचितायां संहितायां चिकित्सास्थाने-नवप्रशादनकर्म विधिरध्यायः ॥ शुभ-मस्तु लेयक पाठयो. श्रीरस्तु संवत् १७७९ वरषे वंशाष कृष्ण पचम्य चद्रवासरे [illegible] पुस्तकं लिखित शुभ मस्तु ॥०॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७३	४५३	शार्ङ्गधर संहिता मध्य खंड	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७४	१४४	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७५	३१	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७६	४३१३	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७७	१८६०	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७८	१४४६	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७९	१०६१	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	१०	१०	१०
२६×११ से० मी०	६६	१०	०३	पू०	प्राचीन सं० १८७२	इति श्री शार्ङ्गधरस्यसंहितायांचिकित्सा स्थाने रस कल्पनाध्यायः ।। इति मध्यम खंड समाप्त. ।। शुभमस्तु ।। अथ शुभ संवत्सरे अस्मिन् श्री नृपति विक्रमादित्य राज्य सं० १८७२ वर्षे चैत्र शुदिदशमी १० बुध वासरे लिख तमिदं लक्ष्मण चदवे वडवाला शुभ ।।
२५.५× १०.५ से० मी०	४६ (२-४७)	६	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनुनाशार्ङ्ग धरेण विरचितायां अवलेह कल्पनाध्यायः ८।।
३०×१३.५ से० मी०	४६ (३-३५, ६१-६४, ७४, ८४-८४, ८६, ९२-९४)	११	३४	अपू०	प्राचीन	
३४.३× १३.१ से० मी०	५३	११	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनुनाशार्ङ्गधरेण विरचितायां संहितायां चिकित्सा स्थाने कषादि कल्पनाध्याय × × ×।। (पृ० १२)
२७.५× ११.३ से० मी०	३५ (१-७, १०-३७	८	२८	अपू०	प्राचीन	
२१.४× १४.२ से० मी०	२७ (१-२७)	११	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनो शार्ङ्गधर विरचितायां संहितायां दारस्थाने योग गणनाध्यायः ।।
२१.५× १४.७ से० मी०	६६ (७-४०, ४२-६६ ७२-६५)	१०	२४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८०	१०८१	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१८१	१०७७	शार्ङ्गधर संहिता (रसकल्पना विधि-रध्याय)	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१८२	१०५०	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१८३	४५	शालिहोत्र (तुरग-प्रशंसा प्रकरण)	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१८४	७७७०	शिलाजतु शोधन (शिलाजीत शोधन)			दे० का०	दे०
१८५	५१६०	शूलज्वर चिकित्सा			दे० का०	दे०
१८६	५७३७	षड्ऋतु पथ्य			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६.५×१४ से० मी०	८८	१२	४०	पू०	सं १८६६	इति श्री दामोदर सूनो शार्ङ्गधरेण विरचिताया संहिताया चिकित्सा स्थाने नेत्र प्रसादन कर्म अध्याय: द्वात्रिंशदाख्य समाप्त सं० १८६६ मासोत्तमे माघ मासे शुक्ल पक्ष शुभ तिथौ सप्तम्या उपरांत अष्टम्या चंद्रवारान्विताया पुस्तग लिखित हेतरामज वहेडी मध्ये शुभमस्तु, मंगल ददातु ॥
३२.१×१८.२ से० मी०	७१ (१-७१)	६	३४	पू०	प्राचीन सं १६३२	इति श्री दामोदर सूनुना शार्ङ्गधरेण विरचिताया संहिताया चिकित्सा स्थाने रस कल्पनाविधिरध्याय चतुर्दश १४ इति श्री मध्यम खंड समाप्तम् ॥ लि० सवत १६२२ भाद्रपद कृष्णा प्रतिपदाया भौम वा० ॥
२८.५×१४.३ से० मी०	८० (१-८०)	१३	३७	पू०	सं १८८८	इति श्री दामोदर सूनुनाशार्ङ्गधरेण विरचितायांचिकित्सास्थाने नेत्र प्रसादन मर्म्माणिस्थान समाप्त ॥ अथ संवत्सरेऽस्मिन श्री नृपति विक्रमादित्य राजे संवत् १८८८ वर्षे वैशाखसुदी ४ चोथ वार शनि ॥... ... ... श्रीराम श्रीराम
२४.५×११.४ से० मी०	६	११	३५	पू०	प्राचीन	इति शार्ङ्गधर विरचिताया पद्धत्यां तुरगप्रशंसा ।
१३.६×८.४ से० मी०	४ (१-४)	६	२२	पू०	प्राचीन	इति शिलाजतुन शोधन विधि ॥
२१.१×१३.८ से० मी०	१	२५	३६	अपू०	प्राचीन	
२३.१×८.६ से० मी०	११ (१-११)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति षड्ऋतुपथ्य वर्णन ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८७	६४३७	षट्ऋतुवर्णन	त्रिमल्लवैद्य		दे० का०	दे०
१८८	६५८५	हृदय दीपक			दे० का०	दे०
उपनिषद्						
१	६३२७	अथर्वणवेदोपनिषद्			दे० का०	दे०
२	१३२१	अथर्वणीयउपनिषद्			दे० का०	दे०
३	१५२५/१६	अथर्वशिखोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
४	७१४६	अथर्वशिखोपनिषद् दीपिका (टीका)		श्री शंकरानंद	दे० का०	दे०
५	१५२५/१६	अथर्वशिरोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	९	१०	११
१३४× १२८ सें० मी०	२ १-२		४०	पू०	प्राचीन	इति विमल्लवैद्य विरचित षट्ऋतु वर्णन संपूर्ण शुभमस्तु मंगलम ॥
१५७×६८ सें० मी०	२१ (१-२१)	११	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री हृदयदीपके त्रिपाद्वर्ग ॥२॥ (पत्रसंख्या ५)
१६५× १०२ सें० मी०	६ (१-६)	८	१७	पू०	प्राचीन सं० १६३२	इत्यथर्वण वेदोपनिषत्समाप्तम् ॥ श्री रामायनम ॥ सं० १६३२।
२३७× ११२३ सें० मी०	प०स०८६	११	३०	अपू०	प्राचीन	
२३२× १२७ सें० मी०	३१ (२३-२५३)	१२	४६	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वशिखोपनिषद्दीपिका ७ ॥
२५५× १०६ सें० मी०	१६ (१-१६)	१४	४३	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्यानंदपाद पूज्यपादशिष्यस्य श्री शंकरानंद भागवत कृतिरथर्वशिखोपनिषद्दीपिका समाप्ता।
३२२× १५७ सें० मी०	११ (१२-२२)	१२	४६	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वशिरउपनिषद्दीपिका ६ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६	१५२५/१६	अमृतबिन्दूपनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
७	७७१७	अल्लोपनिषद्	अबुलफज़ल		दे० का०	दे०
८	१५२५/१६	आत्मोपनिषद (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
९	३७४७	आरण्यक			दे० का०	दे०
१०	२०३४	ईशावास्यभाष्य	शंकर भगवान		दे० का०	दे०
११	१३७६	ईशावास्योपनिषद्			दे० का०	दे०
१२	२८६०/३	ईशावास्योपनिषद्			दे० का०	दे०
१३	३११६	ईशावास्योपनिषद्			दे० का०	दे०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है।	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४	१९८६/२२	ईशावास्योपनिषद्			दे० का०	दे०
१५	१०६४	ईशावास्योपनिषद् शांकरभाष्य		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
१६	११७९	उपनिषद्मुपचार दीपिका	वेंकटनाथ		दे० का०	दे०
१७	७१६५	उपनिषद्संग्रह			दे० का०	दे०
१८	१६०६	उपनिषद्संग्रह			दे० का०	दे०
१९	६१६	उपनिषद्संग्रह			दे० का०	दे०
२०	१६६६	उपनिषद्सार संग्रह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६.२×१४.१ सें० मी०	१०१२	१५	४६	पू०	प्राचीन	इति ईशावास्य उपनिषद समाप्त ।
२५+१०.८ सें० मी	१४ (१-१४)	६	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य बयगोविंदभगवत्पूज्यपादशिष्य शंकर० भगवन् कृता ईशावास्यभाष्यसमाप्त श्री ब्रह्मार्पणमस्तु । •••
२८.८+१८.२ सें० मी०	प० स०	१८	२६	पू०	प्राचीन	
३३.६+१३.५ सें० मी०	१० १-१०	११	६०	अपू०	प्राचीन	
१६+६ सें० मी०	१४ (१-१४)	१०	२३	पू०	प्राचीन	तेजस्विनावधितमस्तु माविद्विषावहै ॥ ओम् ॥ शांति ॥ शांति ॥ शांति ॥
२१.२+१० सें० मी०	५६	६	२६	पू०	सं० १८५६	समत १८५६ प्रमाथिनाम संवत्सरे मार्गशिषमासे शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां तिथौ मंदवासरेलिखित ॥
२८+११.८ सें० मी०	२३	११	४७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१	१३६७	ऐतरेयोपनिषद्			दे० का०	दे०
२२	३६३१	ऐतरेयोपनिषद्			दे० का०	दे०
२३	३४१५	ऐतरेयोपनिषद्			दे० का०	दे०
२४	११३१	ऐतरेयोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
२५	६३५	ऐतरेयोपनिषद् भाष्य-टिप्पणी	ज्ञानामृतयति		दे० का०	दे०
२६	२९६२	ऐतरेयोपनिषद् सटीक			दे० का०	दे०
२७	२८६० ३	कठोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	अ	ब	९	१०	११
१६.५×८ से० मी०	६	६	२६	अपू०	प्राचीन	इति एतरेयोपनिषत्समाप्तम् ॥
१६.७×७.६ से० मी०	प०सं०५ (१–५)	७	३१	अपू०	प्राचीन	
१६.४× १०.२ से० मी०	१० (१–१०)	७	१५	पू०	प्राचीन	
२५.५× १०.५ से० मी०	७ (१–७)	८	२८	पू०	प्राचीन	ॐ शांति शांति शांति ॥
२१.६×८.८ से० मी०	१३ (१–१३)	१३	३८	पू०	प्राचीन सं० १७३५	इति श्री मदुत्तमामृत पूज्यपादशिष्यस्य ज्ञानामृतयते कृतौ श्रीमदैतरेयोपनिषद्भाष्यटिप्पणे प्रथमारण्यक संपूर्णं ॥ सं० १७३५ वि० संवत्सरे आश्विन शुद्ध ७ गुरुवार ॥ कृष्णदत्त पुत्रस्य पुस्तकं नारायणात्मज शिवरामस्य ॥
२३.१× १५.८ से० मी०	प०सं०८	१६	६२	अपू०	प्राचीन	
२३.३× १०.१ से० मी०	प०सं०६ (५–१३)	९	२६	पू०	प्राचीन	इति कठवल्ल्युपनिषद संपूर्ण समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८	८९३	कठोपनिषद्			दे० का०	दे०
२९	२४२५	कठोपनिषद् भाष्य (टीका सहित)			दे० का०	दे०
३०	१०९४	कठोपनिषद् (शाबर भाष्य)		शङ्कराचार्य	दे० का०	दे०
३१	१५७८/६	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३२	१९००	कालाग्नि रुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३३	३४३५	कालाग्नि रुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३४	३५४१	कालाग्नि रुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है ता वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ ३ × १० ६सें०मी०	१४ (१–१४)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
३१ ४ × १६ २सें०मी०	प०स०२८ (१–२४)	१८	५२	पू०	प्राचीन	इति श्री शकरस्य काठकोपनिषद भाष्य टीका समाप्ता ।
२५ ३ × १०˙८सें०मी०	५३ (१–५३)	९	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविंदभगवत पूज्यपाद शिष्यस्यपरमहस परिव्राज कार्यस्य श्री मंछकर भगवत् रतौ काठकभाष्ये द्वितीयाध्याय स्तृतीया वल्ली ॥ सापष्ठी वल्लै समाप्ता ॥
३४ × १७ ४ सें० मी०	१	१६	६०	अपू०	प्राचीन	
१३ × ९ ५ सें० मी०	२	९	२१	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे कालाग्निरुद्रोपनिषत् ममाप्ता ॥ शिवमस्तु ॥ श्री ॥
१५ ९ × १० ९सें०मी०	प०स०१० (१–६, ९ १२)	७	२२	अपू०	प्राचीन (स १८२४)	इनि श्री नंदिकेश्वर पुराणे कालाग्निरुद्रोपनिपत्सपूरणम् ॥ फागुलसुदि सवतु १८२४ पटनार्थं ··· ।
२२ ५ × १० सें० मी०	प०स०१० (१–१०)	६	२१	पू०	प्राचीन	इतो श्री नंदिके स्वरपुराणोक्त कालाग्निरुद्रोपनिषद सपुरण ॥ कल्याणमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५	३३७५	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३६	४६४८	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३७	४५८१	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			४ दे० का०	दे०
३८	६६६७	कालाग्निरुद्रोपनिषद			दे० का०	दे०
३९	५७६६	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
४०	६१०७	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
४१	१२८७	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२०×११५ से० मी०	७ (१–७)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री नंदिकेश्वर पुराणोक्त श्री कालाग्निरुद्रोपनिषत् अपूर्ण समाप्तम्।
२७१×१३७ से० मी०	१	८	२८	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे कालाग्निरुद्रोपनिषत्समाप्ता राम।
१६१×८६ से० मी०	४ (१–४)	७	१६	पू०	प्राचीन	तत्सदिति कालाग्निरुद्रोपनिषत्समाप्ता ॥
१७×१०३ से० मी०	७ (१–१)	७	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री नदिकेश्वर पुराणोक्त कालाग्निरुद्रोपनिषत्समाप्तम् ॥''' ''
२१×१०२ से० मी०	१० (१–१०)	७	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री नदकेश्वरपालयोक्त श्री कग्नि रुद्रोपनिषद्य समाप्ता ॥ शुभय ''''''
१६६×११७ से० मी०	६ (१–६)	१०	२६	पू०	सं०१८८२	इति श्री नदकेसर पुराणोक्त कालाग्निरुद्रोपनिषत्शुभमस्तु सवत् १८८२ एकातोढ २ ॥
११·८×७६ से० मी०	प० सं० १७ (२–१७, २१	६	१२	अपू०	प्राचीन सं०१८२८	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२	२८९० / ३	केनोपनिषद्			दे० का०	दे०
४३	४५७८	केनोपनिषद्			दे० का०	दे०
४४	१०६५	केनोपनिषद (शांकर भाष्य)			दे० का०	दे०
४५	१५७८ / ६	कैवल्योपनिषद्			दे० का०	दे०
४६	७७७२	कैवल्कोपनिषद्			दे० का०	दे०
४७	३२२४	कैवरयोपनिषद्			दे० का०	दे०
४८	४२६६	कैवल्योपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२३ ३ × १० १ सें० मी०	१०	२१		अपू०	प्राचीन	इति — सामवेदीयानां केनोपनिषदे नवमाऽध्याय ॥
१२६ × ११ सें० मी०	७ (१–७)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति जैमिनी शाखा सामवेदोक्त केनोपनिषत्समाप्त ॥
२५ × १० ७ सें० मी०	२२ (१–२२)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविंदभगवत्पूज्यपादशिष्य-परमहंस परिव्राजकस्यश्रीशंकरभगवत कृतौपदभाष्य समाप्त ॥ केनभाष्य-समाप्त श्री ब्रम्हार्पणमस्तु ॥
३४ × १७ ४ सें० मी०	१	१६	६०	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे कैवल्योपनिषत्समाप्ता ॥
१६ २ × १० सें०मी०	६ (१–६)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री कैवल्योपनिषद संपूर्णम् ॥
१३ × ८ २ सें०मी०	१० (१–१०)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति कैवल्योपनिषद्विवरण वेदांत शास्त्रोक्त। श्री गजाननार्पण मस्तु। श्री विश्वेश्वरार्पणमस्तु मस्तु।
१८ ४ × १० ८ सें० मी०	७ (१–७)	७	१५	पू०	शाके—१७३६	इति कैवल्यउपनिषत् ॥ सम्यक्ज्ञानी सदायोगी संसारमनुवर्त्तते ॥ परपुरुषेछ या नारी भर्तारमनुवर्त्तते ॥ शक १७३६ भाद्रपद आश्विन शुद्ध सप्तमी तद्दिने समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६	३४१४	कैवल्योपनिषद्			दे० का०	दे०
५०	४५८८	कैवल्योपनिषद्			दे० का०	दे०
५१	१९८६/२२	कैवल्योपनिषद् (संस्कृत टीका)		विद्यारण्य	दे० का०	दे०
५२	५२४६	कैवल्योपनिषद (सटीक)			दे० का०	दे०
५३	१५२५/१९	क्षुरिकोपनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
५४	१३७४	गरुडउपनिषद्			दे० का०	दे०
५५	१५७८/६	गरुडोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१७ × ६ से० मी०	३ (१–३)	६	३०	पू०	प्राचीन	इति कैवल्योपनिषत्समाप्ता । शाति ······ ।
१८·२ × १३ से० मी०	१३ (१–१३)	१४	३०	पू०	प्राचीन	एतत्कैवल्योपनिषदोज्ञानफलस्य परब्रह्म रूपत्वात् केवल पाठस्य वक्ष्यमाण फलान्याहे······ (पत्रसख्या–१३, पक्ति सख्या ६ से)
२६·२ × १४·१ से० मी०	१३	२५३ कुलपक्तिसख्या	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री अथर्वणवेदकैवल्योपनिषद्-दीपिका ।। श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीविद्यारण्य कृतासमाप्तः ।।
२८.५ × १३.६ से० मी०	१३	१३	३७	पू०	स०१८७०	इतिकैवल्योपनिषद्दीपिका समाप्ता ।। सवत् १८७० मार्गशिरमासे कृष्णै-एकादश्या गुरुवासरान्वितायां लिखित-मिदलक्ष्मणाभिधानेन प्रात्मपठनार्थः शुभमस्तु ।।······
३२·२ × १५·७ से० मी०	४१/२ (३–८)	१२	४६	पू०	प्राचीन	इति क्षुरिकोपनिषद्दीपिकासमाप्त चतुर्था ४ ।।
२० × ६५ से० मी०	६	२५	२६	पू०	प्राचीन	इति गरुड्डुपनिषद् सपूर्ण ।।
३४ × १७·४ से० मी०	१	१६	६०	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वबेदे गारुडोपनिषदीपिका समाप्ता ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३	१६६२	गोपाल सत-तापनीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
६४	४३७४	गोपीचन्दनोपनिषद्			दे० का०	दे०
६५	३८६४	चाक्षुपोपनिषद्			दे० का०	दे०
६६	१५२५/१६	चूलिकोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
६७	१४६५	छांदोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
६८	२८६१	छांदोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
६९	३१२६	छांदोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६.३ × १०.७ सें० मी०	२१ (१–२१)	६	१७	पू०	प्राचीन सं०१७६८	इति गोपालतायाउपनीमत् समाप्तः ॥ संवत् १७६८ नापोशद्वदिःखौ लीखितं गयचोलितीर्थेय राम राघवराम धोलकिया । कल्याणमस्तु । शुभंव भवतु ॥
१५.८ × ८.६ सें० मी०	प० सं० ५ (१–५)	६	२७	पू०	प्राचीन सं०१८७३	इति अथर्वनवेदगोपी चदनोपनिपत्सपूर्णं सुभमस्तु मगलं ददासुभंभूयात संवत् १८७३ मार्ग कृष्ण १४ चंद्रवासरे लिपयं श्रीज्योतिपरमसुप ॥
१८.४ × ११.७ सें० मी०	२ (१–२)	६	२५	पू०	सं०१९३४	इति श्री चाक्षुपोपनिपत्समाप्ताम् श्री संवत् १९३४ ।
३२.१ × १५.७ सें० मी०	३३/२ (८३/२–११)	११	४८	पू०	प्राचीन	इति चूलिकोपनिपद्दीपिका ५ ॥
१६.५ × ८ सें० मी०	११	११	२६	अपू०	प्राचीन	इति छंदोग्येपष्ट प्रपाठकस्समाप्त. ॥
२३.३ × १०.४ सें० मी०	प० सं० ११ (१–११)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति छादोग्यस्यसप्तमः प्रपाठकः ॥ श्री सच्चिदानदार्पणमस्तु ॥···
२८.५ × ११.७ सें० मी०	६१ (१–६१)	८	४०	पू०	सं०१९०६	इति छादोग्यउपनिपद् ब्राह्मण संपूर्णं । समाप्तं ॥ शुभमवतु ॥ संवत् १९०६ शाके १७७१ मार्गसीर्ष मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ···श्री वेदपुरागायनमः ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६	३३६०	छांदोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
७०	३०७२	छांदोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
७१	१६५१	छांदोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
७२	४६१	छांदोग्योपनिषत् प्रकाशिका			दे० का०	दे०
७३	७६५	छांदोग्योपनिषद् (ब्राह्मण)			दे० का०	दे०
७४	१५७८/६	जाबालीउपनिषद्			दे० का०	दे०
७५	७३००	जाबाल्योपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·५ × १६ से० मी०	५६ (१–५६)	१२	६०	पू०		इति छांदोग्योपनिषदष्टमोध्याय
२३२ × १०५ से० मी०	६	८	३१	पू०	प्राचीन	इति छांदोग्योपष्ठोध्याय · ॥ इति छांदोग्यो पष्टम प्रपाठक ॥ शांति पाठ ॐ ··· ··· ··· × × ×
३०.५ × १३.४ से० मी०	२७ ४५ ७१,६५	१३	४३	अपू०	प्राचीन	
३०२ × १३१ से० मी०	५०से० ८५	१३	५२	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × ११ से० मी०	५५ (१–४५, ६६–७५)	८	३५	अपू०	प्राचीन	इति सामवेदस्य छान्दोग्यो उपनिषद् ब्रह्मण समाप्त ॥
३४ × १७४ से० मी०	४	१६	६०	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदेजाबालोपनिषत्समाप्ता ॥
२७ × १२ से० मी०	२ (१–२)	१०	४६	पू०	प्राचीन	इति जाबालोपनिषत्समाप्त ॥ श्री सर्वविद्यानिधान कवीन्द्राचार्य्य सरस्वतीना जाबालोपनिषत् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७७	४५७७	तुरीयातीतोवधूतोपनिषद्			दे० का०	दे०
७८	१५२५/१९	तेजोबिन्दूपनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायणः	दे० का०	दे०
७९	६१३	तैत्तिरीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
८०	१२५७	तैत्तिरीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
८१	१०२३	तैत्तिरीयोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
८२	१०६८	तैत्तिरीयोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
८३	१०६६	तैत्तिरीयोपनिषद् (शाकरभाष्य)		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
८४	३४९३	दत्तात्रेयउपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ ५ × ११ ४ से० मी०	२ (१–२)	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति तुरीयातीतावधूतोऽपनिषत्समाप्ता ॥ ......
३२·५ × १५ ७ से० मी०	१३ ६३–६४	१३	४४	पू०	प्राचीन	इति तेजोबिंदूपनिषत्दीपिका २१ ॥
२५·३ × १० ६ से० मी०	१५ (१–१५)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
१९·५ × ८ से० मी०	१४	६	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री तैत्तिरियोपनिषदि तृतीयप्रपाठकः ॥
२५ १ × १० ६ से० मी०	प०सं०३६ (१–३६)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	इतियमेवयषोनायामस्यावल्यां ब्रह्म, विद्योपनिषत्समर्पाप्योविधाम .. ... समाप्ता नदवल्ली।
२५ ३ × १० ५ से० मी०	२५ (१–२५)	६	३२	पू०	प्राचीन	इति श्रीभाष्यं समाप्तं श्रीब्रह्मार्पणमस्तु ॥
२५ २ × १०·७ से० मी०	१० (१–१०)	६	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविंदभगवत्पूज्यपाद शिष्यस्य परमहंस परिव्राजकाचार्यस्य श्री शंकरभगवत्पादकृतौ तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्य विवरणं समाप्तं ॥ श्रीब्रह्मार्पणमस्तु
२४ × १४ ५ से० मी०	४ (१–४)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री दत्तात्रेयोपनिषद् यदधंश-वेदोक्त समाप्तमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रापत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५	१५२५/१६	ध्यानबिन्दूपनिषद् (सस्कृत टकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
८६	१५२५/१६	नादबिंदूपनिषद (सस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
८७	३१७/२	नारायण उपनिषद्			दे० का०	दे०
८८	३४१३	नारायणोपनिषद्			दे० का०	दे०
८९	४५७६	निरालम्बोपनिषद्			दे० का०	दे०
९०	१८५४	निरालम्बोपनिषद्			दे० का०	दे०
९१	१५२५/१६	नीलरुद्रोपनिषद् (सस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२ २ × १५ ७ सें० मी०	‹ ५॥ (५८–६२॥)	१३	४९	पू०	प्राचीन	इतिध्यानविंदूपनिषद्दीपिका ।
३२ २ × १० ४ सें० मी०	२॥ (४७–४९)	१२	४८	पू०	प्राचीन	इतिनादविंदूपनिषद्दीपिका सपूर्णं ।
१२ २ × ११ २ सें० मी०	११ (१–११)	७	११	पू०	प्राचीन संवत् १९३५	इत्यथर्ववेदे अथर्व नारायणोपनिषत्समाप्तम् लिपिकृत देवीदत्त ज्योतिर्विदा । सं० १९३५ माघ कृष्ण १ तिथौ ।
१८ × ८ ५ से० मी०	३ (१–३)	६	३२	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदनारायणोपनिषत्सपूर्णं शुभमस्तु ॥
१७ ६ × ११ ५ सें०मी०	४ (१–४)	११	२०	पू०	प्राचीन	इति निरालबोपनिषद । समाप्त ॥
१९ × १० स० मी०	५	६	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री अथर्वण वेदोक्त गिरालम्बोपनिषद् समाप्त ॥
३२ २ × १५ ७ से० मी०	२॥ (४५–४६॥)	११	४९	पू०	प्राचीन	इतिनीलरुद्रोपनिषद्दीपिका सपूर्णम् १६

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२	१३४८	नृसिंहोत्तर तापिनी उपनिषद् दीपिका (१–६) खंड			दे० का०	दे०
६३	२१५५	नेत्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
६४	२५३६	बृहदारण्यक			दे० का०	दे०
६५	२६	बृहदारण्यक षष्ठोध्याय			दे० का०	दे०
६६	१०५६	बृहदारण्यक उपनिषद्			दे० का०	दे०
६७	३४४३	बृहदारण्यकोपनिषद्			दे० का०	दे०
६८	७०५६	बृहदारण्यकोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२ × १५.५ सें० मी०	५१ (१–५१)	१२	४६	पू०	प्राचीन सं० १८६४	इति श्री नृसिंहोत्तर तापिनी दीपिका समाप्त शुभमस्तु सं० १८६४ मी भादो सुदी इग्यार गुरुवार ॥
१६.८ × १२.२ सें० मी०	प०सं० १	१०	१६	अपू०	प्राचीन	
३४.६ × १३.५ सें० मी०	प०सं० ३६ (१–३६)	११	४७	पू०	प्राचीन	बृहदारण्यक चतुर्दश काड······ संहितायां चत्वारिंशोऽध्याय ॥
२०.२ × ८.४ सें० मी०	प०सं० २४	७	२६	पू०	प्राचीन	इति बृहदारण्यके पंचमोऽध्याय समाप्तः शुभमस्तु ॥
२३ × ६.८ सें० मी०	५५	६	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री बृहदारण्यकोपनिषत्समाप्ता ॥ सर्वात्मने नम ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥
२०.५ × ९.५ सें० मी०	प०सं० १९ (१–१९)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति बृहदारण्यके उपनिषत्पादे चतुर्थोध्याय ॥··· ··तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ॥
३१.७ × १५.६ सें० मी०	८ (४६–५३)	१५	५१	अपू०	प्राचीन	···बृहदारण्यकोपनिषदि पष्ठोध्याय ॥ (पत्र-संख्या-५२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
९९	३६५	वृहदारण्यकोपनिषद्			दे० का०	दे०
१००	३४०८	वृहदारण्यकोपनिषद्			दे० का०	दे०
१०१	३६०१	वृहदारण्यकोपनिषद् (टीका)		शकराचार्य	दे० का०	दे०
१०२	३७३०	वृहदारण्यकोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
१०३	३६५४	वृहदारण्यकोपनिषद् (सस्कृत टीका)*		भगवदानद-ज्ञान	दे० का०	दे०
१०४	२५३८	वृहदारण्यकोपनिषद् (सभाष्य)		शकराचार्य	दे० का०	दे०
१०५	१५२५/१६	ब्रम्हविदूपनिषद् (सस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६.५ × १०.५ सें० मी०	२७(१५१–१७२ २०१–२०२,२६२–२६४)	७	३८	अपू०	प्राचीन	
१०.५ × ७.३ सें० मी०	५७(१–४३, ४६–५६)	६	१६	अपू०	प्राचीन	यजु शाखिय बृहदारण्यउपनिश ॥ समाप्त ॥
२६.५ × ११ सें० मी०	४६(१–४६)	११	४४	अपू०	प्राचीन	श्री गोविंदभगवत्पाद शिष्यस्यपरमहंस परिव्राजकाचायस्य श्रीशंकरभगवत कृताया बृहदारण्यकटीकायां चतुर्थोध्याय समाप्त ॥ शुभभवतु ॥
२८.३ × १२.५ सें० मी०	२२	१७	५२	अपू०	प्राचीन	
२८.८ × १०.१ सें० मी०	६५(१–६५)	१०	५१	पू०	संवत १६४१	इति श्री परिव्राजक शुद्धानंद पूज्यपाद शिष्य भगवदानंद ज्ञान कृताया बृहदारण्यकभाष्यटीकाया अष्टमोध्याय ॥ संवत १६४१ वर्षे आषाढ शुदि २ रवौउदीच्य ज्ञातीयनुपाध्याकेशवेनलेखितमिदं पुस्तक जयतु श्रीशुभमस्तु
३५ × १३.५ सें० मी०	३२७	१२	५७	अपू०	प्राचीन	इति श्रीगोविंद भगवत्पूज्य पादशिष्यस्य परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीशंकर भगवत कृताया बृहदारण्यक वृत्तौ अष्टमोध्याय समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ संवत १७४७ समये
३२.२ × १५.७ सें० मी०	१२ (५०–५१)	११	५१	अपू०	प्राचीन	इति ब्रम्हबिंदु उपनिषद्दीपिका अष्टादशी १८

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की क्रमगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६	१५२५/१६	ब्रह्मविद्योपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१०७	१५२५/१६	ब्रह्मोपनिषद्		नारायण	दे० का०	दे०
१०८	३८४४	ब्रह्मोपनिषद्			दे० का०	दे०
१०९	६२६	भावनोपनिषद्भाष्य		भास्कर	दे० का०	दे०
११०	१५२५/१६	महोपनिषद (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१११	१७००	माण्डूकोपनिषद्		श्री शंकरानंद	दे० का०	दे०
११२	७२२४	माण्डूकोपनिषद्भाष्य (गौडपाद भाष्य)		भगवदानंद ज्ञान	दे० का०	दे०

पत्ता या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
३२.२ × १५.७ सें० मी०	२ (२–३)	११	४३	अपू०	प्राचीन	इति ब्रह्मविद्योपनिषद्दीपिका तृतीयोपनिषत् ३ ॥
३२.२ × सें० मी०	७ (३५-४१)	११	४८	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मोपनिषद्दीपिका १० ॥
१६.५ × ११ सें० मी०	२ (१–२)	११	३२	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मोपनिषत्सभाष्य ॥
२७ × १२.४ सें० मी०	१४	१०	३६	पू०	सं० १६७५	इति भावनाभाष्य समाप्त ॥ सं० १६७५ स्य वैशाखेऽधवलेदले नवम्यां चद्रवासरे समाप्तिमगात् ॥
३३.२ × १५.७ सें० मी०	३ (३२-३४)	१३	४०	पू०	प्राचीन	इति महोपनिषद्दीपिका समाप्ता ६।
१६.५ × ८ सें० मी०	५	७	२५	पू०	प्राचीन	इति माडूक्योपनिषद् समाप्त ॥
२५.४ × १३.२ सें० मी०	३० (१–३०)	१६	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री गुद्धानद पूज्यपाद शिष्य भगवदानदज्ञान विरचिताया गौडपाद भाष्य टीकायां प्रथम प्रकरण समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रह विशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३	७६३६	माडूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११४	३८१२/२	माडूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११५	३४२५	माडूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११६	३५५१	माडूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११७	२८६२/३	माडूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११८	३४१८	मुडकोपनिषद्			दे० का०	दे०
११९	२८६२/३	मुडकोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२४ ५ × १२ ४ सें० मी०	७ (४–१७,११)	११	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री माडूक्योपनिषद्गौडपाद व्याख्याने वैतथ्याख्य द्वितीय प्रकरण समाप्त ॥
१६ ५ × ११ २ सें० मी०	१	११	३६	पू०	प्राचीन	हरि ॐ तत्सत् माडूक्योपनिषत्समाप्त ॥ [नोट : इसके नीचे शकराचार्य कृत 'कौपीन पचम' स्तोत्र भी है]
१५ ८ × ११ ५ सें० मी०	८ (१-८)	६	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री माडूक्योपनिषत्पूर्ण ॥
१५ × ८ ८ सें० मी०	३ (१–३)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति माडूक्योपनिषत्समाप्त ॥
२३ × १० २ सें० मी०	प० सं० २३	७	२७	पू०	प्राचीन	इति माडूक्योपनिषत्समाप्तम् । पूर्ववत् शाति कुर्यात् ॥
१६ × १० सें० मी०	७ (१–७)	११	२६	पू०	प्राचीन	मुडकोपनिषत्समाप्ता ॥
२३ × १० २ सें० मी०	प० सं० ६३	६	२६	पू०	प्राचीन	इति मुण्डकोपनिषत्समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२०	६५६	मुण्डकोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२१	११०२	मुण्डकोपनिषद् (शंकरभाष्य)		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
१२२	११००	मैत्रायण्युपनिषद्			दे० का०	दे०
१२३	१५७८/६	परमहंसोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२४	६५५	पूर्वतापिन्युपनिषद्			दे० का०	दे०
१२५	३८४२/३	प्रश्नोत्तर मालिका (प्रश्नोपनिषद)	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१२६	१४५४	प्रश्नोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.५ × १०.५ सें० मी०	८	८	२७	पू०	प्राचीन	
२५.२ × १०.८ सें० मी०	४४ (१–४४)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविंदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य परमहंस परिव्राजकाचार्यस्य श्रीमच्छंकर-भगवत कृतावाथर्वण मु डकोपनिषद्वि-वरण समाप्त ॥ श्री ब्रह्मार्पणमस्तु ॥
२८.६ × ११ सें० मी०	प० सं० १७ (१–१६, १९)	८	२८	अपू०	प्राचीन	इति मैत्रायण्युपनिपदि सप्तम प्रपा-ठक ॥ लिखितमिद श्री मन्महादेव कवींद्रसरस्वत्या ॥
३४ × १७.४ सें० मी०	६	६	६३	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वेदे परमहंसोपनिषत्समाप्ता ॥
१७.५ × ८ सें० मी०	७	७	२८	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वण रहस्ये पूर्वतापनियोपनिषद्-समाप्त ॥ शुभ ॥
१४.५ × ९.५ सें० मी०	२ (१–२)	१३	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचिते प्रश्नो-त्तर मालिकारत्न संपूर्णम् ॥
२५.३ × १०.७ सें० मी०	प० सं० ६ (१–६)	८	२६	पू०	प्राचीन	प्रश्नोपनिषत्समाप्ता ॥ ...स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ॐ शांति ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२७	३४१६	प्रश्नोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२८	२८६२/३	प्रश्नोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२९	१०००	प्रश्नोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
१३०	१५२५/१९	प्राणाग्निहोत्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३१	६१३०	प्राणाग्निहोत्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३२	१५२५/१९	योगतत्वोपनिषद (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१३३	१५२५/१९	योगशिखोपनिषद (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१९×७८ सें० मी०	२१(१–२१)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति प्रश्नोपनिषत्समाप्त ॥
(२३×१०२) सें० मी०	प० सं० ७ (१–७)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति प्रश्नोपनिषत्संपूर्णम समाप्तम् श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥ शुभमस्तु ॥
२५२×१०५ सें० मी०	प० सं० ३२ (१–३२)	६	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री शकर भगवन कृतौ अथर्वणोपनिषत्प्रश्न भाष्य विवरण समाप्त ॥ ** *** द्वितिया सोमवासरे ॥
३२२×१५७ सें० मी०	३½ (४२–४४)	१३	४६	पू०	प्राचीन	इतिप्राणाग्निहोत्रोपनिषदसमाप्ता ११
२२×१८५ सें० मी०	४ (१–४)	[illegible]	२१	पू०	प्राचीन सं० १९०३	इति श्री प्राणाग्निहोत्रोपनिषत्समाप्ता सपूर्ण ११ मीती माघ कृष्ण १३ त्रियोदश्या भृगो सवत १९०३ लीपी कृत गोपालेन नसीराबाद की छावणी मध्ये ** *
३२ २×१५७ सें० मी०	(६७–६८)२	१२	४७	पू०	प्राचीन	इतियोगतत्वोपनिषद्दीपिकासमाप्ता २१
३२२×१५७ सें० मी०	२(६५–६६)	१२	४८	पू०	प्राचीन	इति योगशिखोपनिषद्दीपिकासमाप्ता २२

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३४	४१४०	रामतापनीउपनिषद्			दे० का०	दे०
१३५	७५०२	रामतापनीयोपनिषद् (पूर्व एवं उत्तर)			दे० का०	दे०
१३६	५६२४	रामतापिनीउपनिषद			दे० का०	दे०
१३७	४३३० / २	राममन्त्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३८	६१२७	रामोत्तरतापनीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३९	१४०८	रामोत्तरतापनीयोपनिषद (प्रदीपिका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१४०	५३६०	रामोत्तरतापिन्युपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४×१०·६ से० मी०	पृ०सं०१८ (१–३, ३–१७)	७	२७	पू०	प्राचीन सं० १९०६	इति सप्तचत्वारिंशन्मंत्रैर्नित्य देवं स्तौति तस्य देव प्रीतो भवति स्वात्मानदर्शयतितस्माद्यएतैर्मंत्रैर्नित्य देव स्तौति स्देव पश्यति सोमृतत्वं गछति इत्यथर्वणे रहस्येऽश्रीरामस्योत्तरतापनीयोपनिपत्समाप्तं चैत्र सुदि ५ गुरुवासरे सवत् १९०६ ॥ शुभ ॥
२३×९·५ सें० मी०	११ (३–१३)	[illegible]	२६	अपू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदेरामपूर्वतापनीयमुपनिपत्समाप्ता ॥ (पत्र स० ९)
२१·५×१०·१ सें० मी०	१३ (१–१३)	९	२७	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वणे रामोपनिषदुत्तरतापनीयं नाम संपूर्णं ॥
१३.३×१०·६ सें० मी०	२ (१—२)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री अथर्वणरहस्ये श्री राम मंत्रोपनिषत्समाप्त. ॥
१४·८×१०·२ सें० मी०	२९ (१–२९)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति इत्यथर्वण वेदे श्री रामोत्तर तापनीयोपनीपत्समाप्ता ॥
३१७×१५६ सें० मी०	प०सं०२५ (१–१४, १६–२६)	१०	४६	अपू०	प्राचीन	नारायणेनरचिता श्रुति मात्रोपजीविना । अस्पष्ट पदवाक्याना रामोत्तर प्रदीपिका ॥ इतिरामोत्तरतापिनीयोपनिषत्समाप्ता ॥
२७×११ सें० मी०	८ (२–४, ६–१०)	९	४४	अपू०	सं० १७५६	इत्यथर्ववेदे रामोत्तरतापिनीयमुपनिपत्समाप्ता शुभमस्तु संवत् १७५६ के फाल्गुन शुक्ल ३ तृतीयाया रविवासरे .... ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४१	४३३० / २	रामोपनिषद्			मि० का०	दे०
१४२	२७५६	रुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१४३	५५०७	वज्रसूचिकोपनिषद्			दे० का०	दे०
१४४	३२६०	वज्रसूचिकोपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१४५	२३४१	वज्रसूचिकोपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१४६	२१६	वज्र सूची उपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१४७	२८७३	वज्र(वध्र)सूची उपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ घ	ब	ग	द	९	१०	११
१५·३ × १० ६ सें० मी०	१	७	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री सामवेदे श्री रामोपनिषद सम्पूर्णं शुभभूयात् ॥ श्रीमत रामानुजाय नम ॥
२१ × ८·५ सें० मी०	६	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री नदिकेश्वर पुराणोत कालाग्नि रुद्रोपनिषत् सपूर्णम् ॥
१५ ३ × ६ सें० मी०	६ (४, ७-१४)	७	१६	अपू०	सं० १९१८	इति श्री वज्रसूचिकोपनिषद्विभागो नामोपनिषद समाप्त शुभभूयात सवत् १९१८ शाके १७८३ कार्तिक शुक्ल. १२··············· ।
१८ ५ × ११ ८ सें० मी०	प०सं०८ (१-८)	१०	२१	पू०	प्राचीन सं० १९०६	इति श्री मत्सकराचार्य विरचित वज्र-सूची उपनिषतसमाप्त शुभमस्तु श्री सम्वत् १९०६ शाके १७७१ फाल्गुन सुदर १२ ।
२५ ३ × १४ सें० मी०	६	६	२०	पू०	स० १९१४	इति श्री शकराचार्य विरचितायां उप-निषत्सुबोधिन्या वज्र सूची समाप्ता चैत्रे मासे सितपक्षे त्रयोदश्यां भृगु वासरे लिप्तह्यमासहायेन श्री शकर प्रसादत सवत् १९१४ सुजान द्वारे लिखित मौनी सरस्वतीपठनार्थं ॥
१५ × ११ ३ सें० मी०	८ (१-८)	११	१७	पू०	प्राचीन सं०१८५५	इति श्री वज्र सूची उपनिषतसमाप्ता सं० १८५५।
२४ २ × ११ २ सें० मी०	प० सं० ५ (१-५)	१०	३१	पू०	प्राचीन (सं०१८८२)	इति श्री मत्सकराचार्य विरचित वज्र वज्र सूची उपनिषत समाप्ता ॥ सवत् १८८२ तत्र शाके १७४७ तिथौ···॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४८	१६६६	वाजसनेयसंहितो-पनिषद्		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
१४६	१४१०	वासुदेवोपनिषद्-दीपिका			दे० का०	दे०
१५०	६६८	वेदांतमतविश्रामतो-पनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१५१	८६१	षोडशोपनिषत्			दे० का०	दे०
१५२	१५२५/१६	सन्यासोपनिषद् (संस्कृतटीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१५३	१२७८/६	सर्वोपनिषत्सार			दे० का०	दे०
१५४	१६२७	सूर्योपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ घ	९	स	द	६	१०	११
२२.५ × १२.३ सें० मी०	६ (१–६)	१८	५४	अपू०	प्राचीन सं० १८७६	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीगोविंद भगवत्पूज्यपाद शिष्य " " शंकर भगवत कृतौ वाजसनेय संहितोपनिषद् भाष्य संपूर्णम् संवत् १८७६ ॥
३३.४ × १७.३ सें० मी०	३ (३१–३३)	१२	६१	अपू०	प्राचीन	इति वासुदेवोपनिषद्दीपिका समाप्ता ॥
२०.१ × ११.२ सें० मी०	११ (३–१३)	१०	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचित वेदान्त मंत्रविश्रामतोपनिषद्समाप्त ॥
२१.५ × ६.१ सें० मी०	४४ (२–४५)	११	२७	अपू०	प्राचीन	इति षोडशोपनिषत् ॥१६॥
३२.२ × १५.७ सें० मी०	१३ (६६–८१)	१५	५१	पू०	प्राचीन	इति सन्यासोपनिषद्दीपिका समाप्ता ॥
३४ × १७.४ सें० मी०	३	१६	६०	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे सर्वोपनिषत्सारस्समाप्ता ॥
१२.८ × ७.६ सें० मी०	२	८	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री सूर्योपनिषत्समाप्तम् शुभम् ॥

क्रमाव और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५५	६३७/२	सूर्योपनिषद्			दे० का०	दे०
१५६	७१६४	सूर्योपनिषद्			मि० का०	दे०
१५७	२२६०	स्वरूपोपनिषत् प्रकरण			दे० का०	दे०
१५८	१९८६/२२	स्वरूपोपनिषद्			दे० का०	दे०
कर्मकां १	२४६७	अग करन्यास			दे० का०	दे०
२	३७७५	अतेष्टि पद्धति	भट्ट नारायण		दे० का०	दे०
३	३७७६	अतेष्टि पद्धति	भट्ट नारायण		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
(२६ २× ११ १) सें० मी०	१	६	३३	पू०	प्राचीन (सं०१६१०)	इति सूर्योपनिषत्समाप्त सं० १६१० श्रावण मासे कृष्ण पक्ष श्री श्री श्री०
१० १× ६ ३ सें० मी०	५ १–५	८	१५	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदोसूर्योपनिषत् ॥
२२ ८× १२ ४ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री स्वरुपोपनिषत् प्रकरण सपूर्णम् ॥
२६ २× १४ १ सें० मी०	१	२०	५०	पू०	प्राचीन	इतिस्वरूपोपनिषदप्रकर्णसपूर्णसमाप्त
१७×६ ५ सें० मी०	४	[illegible]	१८	पू०	प्राचीन	इति अगन्यास करन्यास सपूर्ण ॥
२३ २× ६ ५ सें० मी०	२५ (१–२५)	६	४७	अपू०	प्राचीन	
२३ ४× ६ ५ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	५४	पू०	सं० १८१३	इती श्री मद्विद्वन्मुकुट माणिक्य हीरी कुर श्री मद्रामेश्वर भट्ट सूनना श्रीमद्भट्ट नारायण कृते प्रयोगरत्ने और्ध्वदेहिक पद्धति समाप्तेय सवत्''' १८१३ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ जिस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४	३२७८	अत्येष्टि			दे० का०	दे०
५	३६५७	अतेष्ठी			दे० का०	दे०
६	१५४	अत्येष्टि			दे० का०	दे०
७	७६५७	अत्येष्टि			दे० का०	दे०
८	६७४२	अत्येष्टि			दे० का०	दे०
९	४९६९	अत्येष्टि (दशगात्रपिंडदान विधि)			दे० का०	दे०
१०	५५	अत्येष्टिकर्म			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७×१३ सें० मी०	१८ (१–१८)	१०	२५	अपू०	प्राचीन	
२६.१×१२ सें० मी०	४९ (१–२०, २२–५०)	९	२६	अपू०	प्राचीन	
३१.४×१२.६ सें० मी०	४५ (१–३४,३६–४१,४३–४७)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	
१६.३×१०.२ सें० मी०	१८ (१–१८)	१३	१४	अपू०	प्राचीन	
२४.२×१०.४ सें० मी०	४ (४९–५०, ५३–५४)	८	३३	अपू०	प्राचीन	
२८×१३.१ सें० मी०	२० (१–७, १०–२२)	६	३६	अपू०	प्राचीन	
१६.५×११.२ सें० मी०	३४ (१२–२६, २९–४६, ४८)	८	१३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११	३४९२	प्रत्येष्टि कर्म			दे० का०	दे०
१२	१३८७	प्रत्येष्टी कर्म			दे० का०	दे०
१३	२७०	अत्येष्टिकर्म	ईश्वरीदत्त		दे० का०	दे०
१४	७६६	प्रत्येष्ट कर्म पद्धति			दे० का०	दे०
१५	३२१०	प्रत्येष्टि कर्म विधि			दे० का०	दे०
१६	२६२	अन्त्येष्टि कर्म विधि			दे० का०	दे०
१७	३१२३	अन्त्येष्टि कर्म विपाक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२०.५ × १४ सें० मी०	४८	२२	१९	अपू०	प्राचीन	
२१.२ × ११ सें० मी०	१८	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
२६.६ × ११.३ सें० मी०	६३ (१–६३)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	
(२६.२ × ११.५) सें० मी०	१४ (१–१४)	६	३६	अपू०	प्राचीन	
२१ × १४ सें०मी०	३ (१–३)	१२	२८	अपू०	प्राचीन	
२२.५ × १५.१ सें०मी०	२० (१–२०)	१३	२३	पू०		
(१४.३ × ६.१ सें० मी०	१०	१३	१२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८	५५६४	अन्त्येष्टि पद्धति	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
१९	२१७०	अन्त्येष्टि विधि			दे० का०	दे०
२०	१७६	अग्रयष्टि पद्धति*			दे० का०	दे०
२१	१८४५	अविकास्थापन विधि			दे० का०	दे०
२२	५५३२	अविकास्थापन			दे० का०	दे०
२३	५०५४/१५	अम्बुघट श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
२४	६६६९	अग्निमुख प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५×१०.६ सें० मी०	७४	६	२८	अपू०	प्राचीन सं०१८४६	इत्यौर्ध्वदेहिक पद्धति समाप्त शुभभूयात " " संवत् १८४६ माघ शुदि चतुर्थी भौमवासरे तद्दिने समाप्त ॥
२६.८×१३.३ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	४०	पू०	प्राचीन सं०१६२१	इति सपिंडीकरणकर्म संपूर्णं ॥ " " संवत १६२१ पुस्तग लिपि कृत मंगल भूयात् ......॥
२७.५×१०.६ सें० मी०	७१ (१–२८, २८–७०)	१०	४३	पू०	प्राचीन	॥ श्री ॥ अथयष्टि पद्धतौ मित्रदेविष्टि ॥ समाप्ता ॥
१४.५×६.८ सें० मी०	५ (१–५)	११	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री अविकास्थापन संपूर्णं लिखित कन्हैयालाल स्वात्मपठनार्थ शुभमस्तु "
२७.७×१०.२ सें० मी०	५ (१–५)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री अविकास्थापन संपूर्ण लिखित पुस्तग मीश्रमहताबस्वात्मपठनार्थं शुभमस्तु ॥
१६×७.८ सें० मी०	२	८	२१	अपू०	प्राचीन	
१७.४×१०.५ सें० मी०	११ (१–११)	१७	३०	पू०	सं०१८६४	संवत १८६४ कार्तिके मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदश्या तिथौ भृगुवासरे तद्दिने थी सखी " ॥

क्रमाव और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५	६४६१	अग्निष्टोम			दे० का०	दे०
२६	६२२०	अग्निष्टोम	क्षीपगाविद		दे० का०	दे०
२७	६७५०	अग्निष्टोम			दे० का०	दे०
२८	६४६४	अग्निष्टोम (आछावाक प्रयोग)			दे० का०	दे०
२९	६७४८	अग्निष्टोम (सप्तहौत्र प्रयोग)			दे० का०	दे०
३०	६७०७	अग्निष्टोमहौत्र			दे० का०	दे०
३१	६५२३	अग्निष्टोमेछावाक प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२.६×९.४ सें० मी०	९ (१-९)	८	३३	पू०	प्राचीन सं० १७८०	॥ अग्निष्टोम समाप्त ॥ संवत् १७८० माघ शुद्ध १९ मामावारे लिखित ॥ इति श्री जोवनेकर गोपीनाथन लिखित
२३×१०.४ सें० मी०		१२	३५	पू०	प्राचीन सं० १८१०	श्रयमोविंद कृत प्रयोगोग्निष्टोम समाप्ता ॥ श्री वेद पुरुषापणमस्तु ॥ संवत् १८१० सार्वनितामसंवत्सर श्रावण शुद्ध १ भनो तद्दिने काश्या ✕ ✕ ✕
२४.७×११.५ सें० मी०	५ (१-५)	११	२९	पू०	प्राचीन शके १६६३	इति ज्योतिष्टोमाग्निष्टोमे पोतृत्व प्रयोग ॥ इद पुस्तक कान्हु शर्मणः ॥ शके १६६३ दुमतौ श्रावणाधिक द्वितीयायां भानौ लिखित ॥
२४.७× ११.६ सें० मी०	१८ (१-१८)	९	३२	पू०	प्राचीन सं० १८१४	अग्निष्टोमादि अप्तोर्यामात अछावाकस्य शस्त्रक्लृप्ति समाप्ता। संवत् १८१४ कार्तिक कृष्ण १ भृगौ समाप्त। पुस्तकमिदं राम हृदोपनामक विश्वनाथभट्टात्मज नीलकंठभट्टेन लिखापित ...
२३.६× १०.४ सें० मी०	११९ (१-११९)	९	२९	पू०	प्राचीन शक १७३८	इत्यग्निष्टोम सप्तहौत्र प्रयोग समाप्त ॥ शके १७३८ वर्षे धातृ नामाब्दे भाद्रपद वद्य ८ ॥
२३.३×९.७ सें० मी०	५५ (१-५५)	११	३६	पू०	सं० १८७२	इत्यग्निष्टोम हौत्र समाप्त ॥ संवत् १८७२ मिती आश्विनशुद्ध २ सौम्य वासरे तद्दिने काश्याराजधान्या कवीश्वरेत्युपनामक महादेव भट्टात्मज लक्ष्मीनाथेन लिखितं ॥
२१.७×८.५ सें० मी०	४ (१-४)	९	२९	पू०	प्राचीन	इत्यग्निष्टोमेछावाक प्रयोग ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२	६७१२	अग्निहोत्र प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
३३	६६०४	अग्निहोत्र			दे० का०	दे०
३४	६५२५	आग्रयण होत्र प्रयोग			दे० का०	दे०
३५	६८३७	अग्निहोत्रप्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
३६	६७०२	अग्निहोत्र होम			दे० का०	दे०
३७	६७१३	अग्निहोत्र होम		शबराचार्य	दे० का०	दे०
३८	६८२६	अछावाक प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठ का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
६ ग	७	८	८	९	१०	११
२३.६×१०.४ सँ० मी०	४० (१-४०)	११	३३	पू०	सं०१८७८	समाप्तमिदं अग्निहोत्र प्रायश्चित्त ॥ × × संवत् १८७८ नंदन नाम संवत्सर उदगयने वसंत ऋतौ वैशाख शुद्ध ६ नवम्यां तद्दिने कवीश्वरोपनामक सखारामेण लिखितं ॥ + + +
२०×१२.२ सँ० मी०	५ (१-५)	८	१६	पू०	प्राचीन सं०१६१७	इति श्री अग्निहोत्र संपूर्णम् शुभमस्तु संवत् १६१७ ॥
२१.४×९ सँ० मी०	२ (१-२)	७	३१	पू०	प्राचीन	अथाग्रयण होत्र प्रयोग समाप्त ॥
२०.२×८.३ सँ० मी०	१५ (१-१५)	६	२८	अपू०	प्राचीन	
२१.४×७.५ सँ० मी०	८ (१-८)	६	५०	पू०	प्राचीन	
२३.३×१०.१ सँ० मी०	५ (१-५)	११	३७	पू०	सं०१८११	इत्याग्रायणहोत्र प्रयोग समाप्त ॥ पुस्तकमिदं रामहृदोपनामक विश्वनाथभट्टात्मज नीलकंठेन लिखापितम् संवत् १८११ कार्तिक शुद्ध पंचम्यां समाप्त ॥
२३.५×१०.१ सँ० मी०	६ (१-६)	११	३०	पू०	प्राचीन	अप्यात्यग्निष्टोमे अच्छावाक प्रयोग समाप्त ॥

ग्रमाक और विषय	पुस्तकालय की ग्रागत सख्या वा सग्रहविक्षेप की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६	५२३३ / २	ग्रजपा गायत्री			दे० का०	दे०
४०	१६६३	ग्रजपा गायत्री जप विधि			दे० का०	दे०
४१	५४४	ग्रजपा जाप (मानस पूजा)			दे० का०	दे०
४२	६८३६	ग्रतिपवित्रेष्टिहोत्र			दे० का०	दे०
४३	६७०१	ग्रधानहोत्र (ग्रश्वारमहोत्र)			दे० का०	दे०
४४	३६२८	ग्रनतपूजा			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५ ५×१० ३ सें० मी०	५ (१–५)	८	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री वसिष्ट संहितायां अजपा विधि समाप्तम् शुभमस्तु
१४ ५×६ सें० मी०	३	६	१८	अपू०	प्रा०	
१६×१० ५ सें० मी०	७	६	२०	पू०	प्राचीन	इति अजपा विधि सम्पूर्ण समाप्तम् यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ?
२० ५×७ ६ सें० मी०	८ १–८	७	२७	पू०	प्राचीन सं० १८७७	इत्यतिपवित्रेष्टिभरद्वाजसूत्रोक्त समाप्ता ॥ संवत १८७७ भाद्रपदकृष्ण ३ मंदवासरे लक्ष्मीनाथ ववीश्वरेण लिखित ॥शुभ॥
२० ५×८ ७ सें० मी०	४(१–४)	११	३६	पू०	सं० १७८७	अश्वारंभणीयाहौत्र समाप्त ॥ इदं पुस्तकं रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकंठस्य संवत १७८७ श्री।
२३ ७×१० ४ सें० मी०	प० सं० ॥	१२	३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५	१८७	अनंतपूजा			दे० का०	दे०
४६	४७०५	अनंतोद्यापन			दे० का०	दे०
४७	७४३६	अनुवाक्			दे० का०	दे०
४८	६७६१	अपाधा अनुवित्ती होत्र			दे० का०	दे०
४९	१६०४/४	अभिषेक			दे० का०	दे०
५०	३००६	अर्क विवाह			दे० का०	दे०
५१	५११८	अर्क विवाह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या	और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या	क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ म	ब	स	द	१०	१०	१०
२२×११ सें० मी०	२२ (१-२२)	८	१९	पू०	प्राचीन	इति अनत पूजन सपूर्ण ॥
३४४× १३ ३ सें० मी०	१२ (१-१२)	१०	४६	पू०	प्राचीन	इति भविष्योत्तर पुराणे अनतोद्यापन समाप्त ॥
१७×८'६ सें० मी०	७	८	७	अपू०	प्राचीन (सं०१९२३)	इति सर्वानुवाक सख्या समाप्त × × × × सवत् १९२३ मार्ग शु० १० सो०
२२ १×८'५ सें० मी०	२ (१-२)	१०	३८	पू०	प्राचीन	इत्यपाद्या मनुवित्तीना होर्त ॥
१३ ६×७ ६ सें० मी०	४(१-४)	५	१७	अपू०	प्राचीन	
२८ ५×९ ३ सें० मी०	५ (१-५)	७	३५	पू०	प्राचीन	इत्यर्क विवाह समाप्त
२४ ६× १० ६ सें० मी०	५ १, ५,	६	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२	४३६२	अशौचविचार			दे० का०	दे०
५३	६७०३	अश्वमेध हौत्र प्रयोग			दे० का०	दे०
५४	६७०५	अश्वमेध हौत्र प्रयोग (आश्वलायन सूत्रानुसार अश्वमेध हौत्र प्रयोग)			दे० का०	दे०
५५	४१६४	अष्टका श्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
५६	५६४६	अष्टप्रयोग			दे० का०	दे०
५७	६५०३	आग्नीध्रप्रयोग			दे० का०	दे०
५८	५५५६	आतुर सन्यास पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का ग्राकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ म पक्ति सख्या ग्रौर प्रति पक्ति मे ग्रक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? ग्रपूर्ण है तो वर्तमान ग्रश का विवरण	ग्रवस्था ग्रौर प्राचीनता	ग्रन्य ग्रावश्यक विवरण
८ ग्र	ब	स	द	६	१०	११
२५८×११४ सें० मी०	२६	६	३६	ग्रपू०	प्राचीन	
२२६×६७ सें० मी०	६७(१–६७)	१०	३८	पू०	सं० १७६५ प्राचीन	इत्यश्वमेध हौत्र पद्धती प्रथम मुख्यागोतमस्तोम ॥ इद पुस्तक रामहृदस्योपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकठस्य ॥ सवत् १७६५''' ।
२२६×६७ सें० मी०	१२७ (१–१२७)	१०	४१	ग्रपू०	प्राचीन	इत्यश्वमेधस्याश्वलायन सूत्रानुसारेण-हौत्र प्रयोग समाप्त ॥
२१×६५ सें० मी०	८(१–८)	६	४०	पू०	प्राचीन	इति ।
२५३×६६ सें० मी०	४ (१–४)	८	३७	ग्रपू०	प्राचीन	
२३×८७ सें० मी०	६(१–६)	७	३५	पू०	सं०१८१६	सवत् १८१६ वर्षे मार्गशिर शुद्ध तृतीया॰ मद वासरे ॥
१५७×५८ सें० मी०	३ (१–३)	६	२८	पू०	प्राचीन	ग्रातुर सन्यास पद्धति समाप्ता ॥ शुभमवतु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५९	७३५०	आतुरसन्यास विधि			दे० का०	दे०
६०	१९८६/२२	आत्मपूजा	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६१	६५०९	आधान होत्र			दे० का०	दे०
६२	६५३१	आधान होत्र			दे० का०	दे०
६३	६५६८	आपस्तंब सूत्रोक्त सध्यावदन प्रयोग			मि० का०	दे०
६४	२९४१	आपस्तंब सूत्र मंत्र प्रश्न			दे० का०	दे०
६५	६८३४	आपस्तंबसध्यावदन पद्धति (भाष्य)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण।	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४६×६६ सें० मी०	२ (१-२)	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति सयास विधि समाप्त ॥
२६२× १४१ सें० मी०	१½	१५	४८	पू०	प्राचीन	इति शंकराचार्य आत्मपूजासंपूर्ण ॥
२१३×८७ सें० मी०	१३ (१-१३)	६	३५	पू०	प्राचीन	अथ आधान होत्र लिख्यते ॥ (आरंभ)
१६८×८४ सें० मी०	३ (१-३)	६	२७	पू०	प्राचीन	इति आधान होत्र समाप्त ॥
११३×११ सें० मी०	१४ (१-१४)	११	३०	पू०	सं० १६५१	इत्यापस्तम्ब सूत्रोक्त सन्ध्यावंदन प्रयोग श्री सीताराम चं द्रार्पणमस्तु ॥ श्री संवत १६५१ शाके १८१६ पराभवनाम संवत्सरे दक्षिणायणे शरदृतौ अश्विने मासे कृष्णपक्षे "।
२६५×११ सें० मी०	प० सं० २८ (१-२८)	८	३६	पू०	प्राचीन	शके १७ विक्रम नाम संवत्सरे दक्षणायने वर्षा ऋतु भाद्रपद मासे शुक्ल पक्षे अष्टम्या तिथौ वासर भानुवासरे पुस्तक समाप्त ॥
२१२× १०६ सें० मी०	६	११	२३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६	६५६६	आपस्तंबोक्त मध्यावदन प्रयोग			दे० का०	दे०
६७	३५५४	आभ्युदय श्राद्ध			दे० का०	दे०
६८	५६०४	आरामप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
६९	४४२१	आरामप्रतिष्ठाविधान			दे० का०	दे०
७०	४४५०	आरामोत्सर्ग पद्धति			दे० का०	दे०
७१	६७०८	आश्वलायनश्रौतसूत्र पूर्वषटक प्रयोग दीपिका	मचनाचार्य		दे० का०	दे०
७२	६७१०	आश्वलायन सूत्र प्रयोग दीपिका	मचनाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१४×११३ सें० मी०	१० (१–१०)	११	२४	पू०	आधुनिक	
२३८×१५ सें० मी०	७ (१–३, ५,७,९)			अपू०	सं०१८८९	आम्युदंक श्राद्ध समाप्त संवत् १८८९ जेष्ठ वदि २ बुधवासरे पत्र नव ॥
३२४×१४७ सें० मी०	६ (१–६)	१३	४२	पू०	जीर्ण सं०१६२५	लिखत मुरलिधर म० १६२५
२२×१२ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२२	अपू०	प्राचीन	अथायतस्कृत्यसमात्पूर्त्तारामाप्रतिष्ठा विधान लिख्यते। (प्रारम्भ) × × ×
२७४×११७ सें० मी०	११ (१–११)	■	३२	पू०	प्राचीन	इति आरामोत्सर्ग पद्धति समाप्ता ॥ विधान पारिजाते ॥ ··· · ··· · · ··· इद पुस्तक बालाजी महाराष्ट्रस्य लिखित स्वार्थपरार्थ
२३४×१०१ सें० मी०	९९(१–७ १–९२)	३३	४१	अपू०	प्राचीन	
२३६×१०६ सें० मी०	७०(९३–१७३)	११	३५	अपू०	प्राचीन	इति मचनाचार्य विरचितायां आश्वलायन सूत्र प्रयोग दीपिकायां षष्ठोध्याय समाप्त ॥

...ाक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या या मग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३	६७५७	म्राश्वलायन सूक्त			दे० का०	दे०
७४	२८६६	ग्रासुरी विधि			दे० का०	दे०
७५	६७११	आहिताग्निमरणविधि			दे० का०	दे०
७६	१०६६	आह्निक कर्म विधि	क्षेमकर मिश्र		दे० का०	दे०
७७	२३८१	आह्निक कर्म विधि			दे० का०	दे०
७८	१०६५	आह्निक तरग	नद पडित		दे० का०	दे०
७९	१०६७	आह्निक निर्णय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१२·५ × १०.४ सें० मी०	३० (१–३०)	१२	३६	पू०	प्राचीन	इति आश्वलायन सूक्तानि ॥
१७·३ × १०·८ सें० मी०	१५(१–१५)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति आतुरी विधि समाप्त. ॥ शुभ ॥
२३·३ × १०·२ सें० मी०	२१(१–२१)	११	२६	पू०	प्राचीन	इत्यापस्तवाहिताग्ने. संस्कार विशेषः ॥
१८ × ११·८ सें० मी०	८ (१–८)	८	३६	पू०	सं० १६२१	इतिश्रीक्षेमकरमिश्र विरचित संक्षिप्ताह्निक कर्म विधि ॥ माघासितैकादश्यां चन्द्रे लिखितश्चगणेश दत्तशुकेन शुक्लेन? ॥ संवत् १६२१ श्रीरामोजयति ··· ···
१६·७ × १०५ सें० मी०	१०(१–१०)	६	२०	अपू०	प्राचीन	
२६·८ × ११ ५ सें० मी०	८५ (१–८५)	१०	४६	पू०	प्राचीन	इतिश्रीधर्माधिकारिकुल ॐ कमलमार्तंड नदपंडितकृतेस्मृतिसंधावाह्निकतरंग समाप्तिमगात् ॥ श्री कृष्णभजेत् ॥
२२·५ × ६·५ सें० मी०	२५(१–२५)	१०	३७	पू०	प्राचीन	उक्तं बालमया स्वयं स्वरचितं यद्याज्ञवल्क्यादिभि।श्रोक्तं स्वन्हिक निर्णये तदखिलस्पष्टं परज्ञप्त्वये···श्री सांवसदाशिवार्पणमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८०	६७६	याज्ञिक मूल पद्धति	रघुनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
८१	६४२०	उग्ररथ शाति			मि० का०	दे०
८२	६६०६	उत्सर्जनोपाकरण प्रयोग (श्रावणी)			दे० का०	दे०
८३	६४२८	उदकशाति प्रयोग			दे० का०	दे०
८४	६८७	उद्यापन विधि			दे० का०	दे०
८५	४८३४	उपनयन पद्धति			दे० का०	दे०
८६	६४७	उपनयन पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ घ	ब	म	ट	६	१०	११
२२ × ६·२ सें० मी०	१६ (१–१६)	१०	३८	पू०	प्राचीन	रघुनाथेन विद्वर्यभट्टमाधवसूनुना ॥ कृता निबंधात्प्रेशाऽशुसमूलाऽप्राह्निक पद्धतिः ॥१॥ ....
१६·३ × ७·६ सें० मी०	५ (१–५)	११	२५	पू०	आधुनिक सं०१६६५	इति शौनकोक्तोपरय शान्तिः ॥ सं० १६६५ शाके १८३० माघ कृष्ण द्विती- याया शुक्रवारेऽर्द्ध पुस्तक वेतालोपाह्व श्रीनाथेन आरभ्य च समापितम् ॥
२२·७ × ८·६ सें० मी०	८ (१–८)	१०	४७	पू०	प्राचीन	इत्युत्सर्जनोपाकरण प्रयोगः ॥
२३·३ × ६·१ सें० मी०	२१ (१–२१)	१०	४८	पू०	सं०१७८३	इत्युदक शांतिः समाप्ता ॥ सं० १७८३ नल नाम संवत्सरे माघ शुक्ल १५ बुध वासरे लद्दिने ··· ··· ··· ।
१४ × ६·५ सें० मी०	६	१४	२५	पू०	प्राचीन	
३१ × ११·७ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	४८	पू०	सं०१८८३	इति व्रतबंध समाप्त ॥ सं०१८८३ ॥
२३ × १२·७ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	२८	पू०	सं०१६११	इति श्री उपनयनपद्धति समाप्तम् सं० १६११ ज्येष्ठ शुक्लादशम्याभूमीवासरे लिखितं जुहारारामेण ··· ··· श्री ॥

क्रमाव और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८७	१६८४	उपनयनवेदारम			दे० का०	दे०
८८	४८०	उपनयन संस्कार			दे० का०	दे०
८९	२३५७	उपनयन सस्कार			दे० का०	दे०
९०	१९००	उपनयन सस्कार (सटीक)			दे० का०	दे०
९१	२२१५	उपनयन सस्कार विधि			दे० का०	दे०
९२	२३०	उपाकर्म			दि० का०	दे०
९३	११६७	उपाकर्म प्रमाण	गंगाधर भट्ट		दे० का०	दे०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९४	१४६६	उपाकर्म प्रयोग			दे० का०	दे०
९५	१६७१	ऋषितर्पण			दे० का०	दे०
९६	१८९४	ऋषितर्पण			दे० का०	दे०
९७	५८६४	ऋषिपचमी व्रत पूजा			दे० का०	दे०
९८	३७१७	ऋषिमंडल			दे० का०	दे०
९९	३४६३	एकादशाह श्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
१००	५८८	एकादशाह्निक कर्म			दे० का०	दे०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०१	१६४१	एकादशी व्रत उद्यापन			दे० का०	दे०
१०२	७८४	एकादशाह श्राद्ध-प्रयोग (सपिंडन पद्धति)			दे० का०	दे०
१०३	६९०८	एकाह्निक चातुर्मास्य प्रयोग			दे० का०	दे०
१०४	६००१	ऐकाह्निक चातुर्मास प्रयोग			दे० का०	दे०
१०५	५१८२	एकोदिष्ट			दे० का०	दे०
१०६	५०५४ १५	एकोदिष्ट प्रयोग			दे० का०	दे०
१०७	५०५४/१५	एकोदिष्ट श्राद्ध विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०.८×१९.१ सें० मी०	६	११	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तरपुराणे एकादशी वृत (व्रत) उद्यापन समाप्त ॥
२७.५×१५ सें० मी०	२१	१०	३४	पू०	स०१९०२	इति श्राद्धविवेके सपिंडन पद्धति समाप्तम स० १९०२
२२.५×९.२ सें० मी०	६(१–६)	१०	४०	पू०	प्राचीन	अथैकाहिक चातुर्मास्य प्रयोग (प्रारंभ)
२१.८×८.४ सें० मी०	५(१–५)	११	४१	पू०	प्राचीन	सतिष्ठत एकाहिक चातुर्मास्य प्रयोग ॥ समाप्त ॥
१८.८×११.३ सें० मी०	४(१–४)	१६	२६	पू०	प्राचीन	इति समाप्तोय (अथैकोद्दिष्ट प्रारंभ)
१६×७.८ सें० मी०	१	८	२४	अपू०	प्राचीन	अथसाम्वत्सरिकैकोदिष्ट प्रयोग (प्रारंभ)
१६×७.८ सें० मी०	७½	६	२१	पू०	प्राचीन	एकोदिष्ट श्राद्ध समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०८	४६०५	एकोदिष्ट श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
१०९	५६५८	और्ध्वदैहिककृत्य	रामप्रसाद मिश्र		दे० का०	दे०
११०	७२४७	और्ध्वदैहिक पद्धति	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
१११	३७२३	और्ध्वदेहिक सपिंडीकरण प्रयोग पद्धति	भट्टनारायण		दे० का०	दे०
११२	६५६४	कन्या रजस्वला शांति			दे० का०	दे०
११३	३७११	कपिलधारातिर्थ विधि			दे० का०	दे०
११४	१६६१	कपिला निवास			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३.×१० ६ सें० मी०	१८ (१–१८)	६	१६	पू०	सं०१६३६	इति एकादिष्ट श्राद्धम् श्रीरामचद्रायनम. श्री कृष्णार्पणमस्तु सवत १६३६ श्री साके ७६६ मिती मार्गसिर वदि ८ भौमवारकु लिपि कृत ॥ राम ॥···
२६ ५ × १२ सें० मी०	१४ (८२–८३, ६५–६६)	११	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमद्राम प्रसाद मिश्र विरचिते प्रपत्ति भूषणे श्री परमेश्वर चरण युगले द्वीपर मधुकराशयाना परमैकान्तिकाना- मौर्ध्वदेहिक कृत्यानि स्मृति समाप्तानि शुभमस्तु ।
२२ ४ × ६ ७ सें० मी०	४२ १–१६,२२–२४,२७–२८, ३१–४८	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भट्ट रामश्वर सूरि सूनु नारायण भट्टेन कृताया मौर्ध्वदेहिक पद्धतौ मरणविधानानि । समाप्ता चेय पद्धति ॥
२४ २ × १० ४ सें० मी०	७० (१–७०)	८	३४	पू०	स०१८७३	इति श्री भट्टरामश्वर सूरिसूनु भट्टनारायण कृतायामौर्ध्वदहिक पद्धत्यामरणविधा- नानि श्रीसवत स० १८७३॥ शुभमस्तु
१६ १ × ८ ६ सें० मी०	२(१–२)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति पितृग्रहे कन्या रजस्वला शांति ॥
११ ५ × ८ ५ सें० मी०	३(१–३)	१०	१८	पू०	प्राचीन	इति कपिलधारा तिर्थ विधि समाप्त ॥
२० ५ × ८ ८ सें० मी०	४(१–४)	८	२४	पू०	प्राचीन स०१८३३	इनि श्री कपिला निवास सपुर्न समाप्त ॥ स०१८३३ साके १६६८ फागुन सुदि षष्टो ६ रवौ पुस्तक सपुर्नलिखित प० श्री मिश्र उमेद भितरीयार्थे ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११५	३५२०	कर्मकाड			दे० का०	दे०
११६	३५६६	कर्मकाड कौमुदी			दे० का०	दे०
११७	४०६६	कर्मकाड पद्धति			मि० का०	दे०
११८	२६१६	कर्मकाडविधि			दे० का०	दे०
११९	३७४३	कर्म कौमुदी			दे० का०	दे०
१२०	३४५३	कर्म कौमुदी	कृष्णदत्त		दे० का०	दे०
१२१	२४६०	कर्म कौमुदी	कृष्णदत्त		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१.५ × १०.४ सें० मी०	७ (२-७)	६	२५	अपू०	प्राचीन	
३१ × १४.३ सें० मी०	७ (३८,४१-४६)	१४	५१	अपू०	प्राचीन	
१६.३ × १२.७ सें० मी०	३ (१-३)	११	२४	पू०	प्राचीन	इत्यन्वय ॥ नन्दलालेन लिखित अयं श्लोक ॥
२१.३ × ११ सें० मी०	१३	८	२८	अपू०	प्राचीन	
३१.४ × १४ सें० मी०	३६ (१-३६)	१४	५७	अपू०	प्राचीन	इति कर्म कौमुद्या नाम धर्म पद्धति । (प० सं० २१)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२२	१५४४	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२३	४००६	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२४	४४७६	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२५	४४२९	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२६	४६५२	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२७	५२६०	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२८	५९६१	कर्मविपाक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२६ × १०.७ सें० मी०	७४ (२–४, ६–१६, २१–७८)	६	२३	अपू०	प्राचीन	
३१ × १४ सें० मी०	२१ (२–२२)	१४	५०	अपू०	सं० १८६३	इति धर्म विपाक ग्रंथ संपूर्णम् संवत् १८६३ माघाइ कृष्ण चतुर्दश्या १४ भौम दिने लिखित मिद पुस्तक तत्र भारद्वाज गोत्रे मिश्र लक्ष्मणदासतत्सुत मिश्र मुरलीधरः ॥
२४.१ × १०.८ सें० मी०	२४ (१–२४)	१३	४१	पू०	प्राचीन	इती श्री धर्मविपाके ब्रह्मानारद संवादे चतुर्दशोध्याय. ॥ (पत्र संख्या २३)
३०.६ × १४.८ सें० मी०	८ (१–३, ५–६)	१३	४२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२९	४३५०	कर्म विपाक(चतुर्थचरण)			दे० का०	दे०
१३०	६६४	कर्म विपाक कथन			दे० का०	दे०
१३१	४६२१/३	कलश प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
१३२	५८४३	कलशस्थापन			दे० का०	दे०
१३३	१५६८	कलशस्थापन			दे० का०	दे०
१३४	३६३४	कलशस्थापनविधि			दे० का०	दे०
१३५	६४२६	काक मैथुन दर्शन-शांति विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
(३३२×१९७) सें० मी०	५८ (१–३,३,४,४,५,५–५५)	१४	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री कर्म विपाके सहितायां पार्वती हर सवादे रेवति नक्षत्रे चतुर्थ चरणे ब्रह्माड पुराणे पितृकामोत्तरे सनत्कुमार मारकडयप्रपरणात्तरेकर्म विपाक सहितायां नारद अम्बरीष प्रत्युत्तरेभालिन्यादि नक्षत्रं ॥
३०×१४५ सें० मी०	४	१२		पू०	सं०१९०९	इति श्री महाभारतेऽखिले कर्मविपाक कथन ॥ ॐ तत्सत् स०१९०९ लिखत मुरलीधर ॥
१६×१०७ सें० मी०	४	९	१७	पू०	प्राचीन	इति कलस प्रतिष्ठा ॥
१९×११ सें० मी०	२ (१–२)	१०	२१	अपू०	प्राचीन	
१३×९८ सें० मी०	८	९	१८	पू०	सं०१९०९	स० १९०९ बैशाख मासे कृष्ण पक्षे ११ गुरुवासरे लिखत कन्हैया ॥
१५×११६ सें० मी०	४	१२	१५	पू०	प्राचीन	इति कलशस्थापन विधि समाप्ता शुभमस्तु ॥ श्री दैव्यैनम ॥
२२४×९३ सें० मी०	१	९	४५	पू०	प्राचीन	इति काक मैथुन शाति ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३६	६४२२	काक स्पर्श शान्ति			दे० का०	दे०
१३७	४७५६	कात्यायन त्रिकण्डिका सूत्र (स्नानसूत्र)	कात्यायन		दे० का०	दे०
१३८	२३६/१२	कात्यायनी तर्पण			दे० का०	दे०
१३९	२११८	कात्यायनी तर्पण विधि			दे० का०	दे०
१४०	५१२२	कात्यायनी शान्ति	कात्यायन		दे० का०	दे०
१४१	३२८६/२	कात्यायनी शान्ति			दे० का०	दे०
१४२	८०५	कात्यायनी शान्ति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०×७७ सें० मी०	६	७	३१	पू०	प्राचीन	इति कास्य सर्व शान्तिः ॥
२४·६× १०·२ सें० मी०	३ (१–३)	८	३३	पू०	प्राचीन सं० १८४७	इति कात्यायन त्रिकण्डिका सूत्रं समाप्तं संवत् १८४७ माघ कृष्णाष्टम्या लिखित श्री भट्टविश्वभरस्यात्मजेचन्द्र-शेखरेण वाराणस्याम् ॥··· ···
१६×१०·५ सें० मी०	५	१५	१४	पू०	प्राचीन	इति कावीय तर्पण प्रयोगः ॥
१७·७× १०·७ सें० मी०	३	११	२२	पू०	सं० १९४४	इति कात्यायनी तर्पण विधि समाप्तं संवत् १९४४ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४३	२२२२	कात्यायनी शांति			दे० का०	दे०
१४४	२२६६	कात्यायनी शांति	कात्यायन ऋषि		दे० का०	दे०
१४५	२२१६	कत्यायनी शांति			दे० का०	दे०
१४६	७४७१/२	कात्यायनी शांति प्रयोग			दे० का०	दे०
१४७	६३७५	काम्यवृषोत्सर्ग प्रयोग	रामकृष्ण भट्ट		दे० का०	दे०
१४८	१४८१	कारिकारत्न			दे० का०	दे०
१४९	६४७१	कारीरिष्टि होत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ ३ × १६.७ सें० मी०	१३ (१–१३)	१३	१८	अपू०	प्राचीन	
१७ ३ × ११ सें० मी०	१७ (१–१४, १४–१६)	[illegible]	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री कात्यायन ऋषि विरचिता कात्यायनी शांति. संपूर्णम् ॥ ··· ···
२५.५ × १०.८ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	२८	पू०	प्राचीन	इतिकात्यायनी शांति समाप्ता॥ शुभंभूयात्
२१ × १६.५ सें० मी०	१३ (१–१३)	१४	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री कात्यायनी शान्ति समाप्ता ।
२१.७ × ६.३ सें० मी०	८ (१–८)	१०	३६	पू०	स०१७४४	इति भट्ट रामेश्वर सुत भट्टनारायणात्मज भट्ट रामकृष्ण कृत शौनक मतेन काम्य वृषोत्सर्गः । प्रयोग ॥ संवत् १७४४ कार्तिक १३ लिखितमिद कृष्णेन ॥
२५.४ × ८.४ सें० मी०	२६ (१–२२, २५–३१)	६	४७	अपू०	प्राचीन	
२०.५ × १० सें० मी०	२ (१–२)	११	३१	पू०	प्राचीन सं०१७८८	लिखित मिद रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकंठेन सं० १७८८ मिति भाद्रपद कृ० ११ भौमे मथुरा ग्रामे समाप्तम् ॥ ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५०	७४११	कार्तवीर्य दीपदानपद्धति	कमलाकर		दे० का०	दे०
१५१	५७७५	कार्तवीर्यार्जुनदीपदान			दे० का०	दे०
१५२	५५३४	कार्तिकोद्यापनविधि			दे० का०	दे०
१५३	६१६/२	कालीपूजापद्धति			दे० का०	दे०
१५४	४०१६	कुंड प्रकाशिका	राम	रामवाजपेयी	दे० का०	दे०
१५५	१६५६	कुंडमंडपकारिका	रामचंद्र		दे० का०	दे०
१५६	७३३६	कुंडमंडपसिद्धि सटीक		विट्ठलदीक्षित	दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२७×११.५ सें० मी०	८ १, ३–४, ७–८ १०, १२–१३	९	३२	अपू०	प्राचीन	
२४.५×७.४ सें० मी०	१० (१–१०)	६	३८	पू०	प्राचीन	
२२.७×८.६ सें० मी०	१० (३–१२)	७	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे कार्तिको-द्यापन विधि समाप्त शुभमस्तु ।।
२३.५×१०.६ सें० मी०	२ (८–९)	९	३२	अपू०	प्राचीन	
२२×७.७ सें०मी०	४२ (१–४२)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री नैमिष निवासि रामरचिता कुड प्रकाशिका रामवाजपेय टीका समाप्ता ।।
२८.५×१२ सें०मी०	१२ (१–२०)	१३	३३	अपू०	प्राचीन	
*२६×११ सें० मी०	३५ (१–३५)	११	४२	पू०	प्राचीन सं० १९१७	इति श्री मत्सगमनेरस्थ विटठल दीक्षित विरचिता स्व कृत मडप कुड सिद्धि व्याख्या समाप्तेति शिव सवत १९१७ पौषशुक्ल १० तद्दिने समाप्ताय ग्रंथ स्वाय पराथ च श्री रामापणमस्तु ।।

*(सं०पू० १९)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५७	५७३०	कुडमडपसिद्धि			दे० का०	दे०
१५८	५४७६	कुडमडपसिद्धि	विट्ठल दीक्षित		मि० का०	दे०
१५९	५२८३	कुडमडपादिनिर्माणविधि			दे० का०	दे०
१६०	७३२१	कुडमार्तण्ड			दे० का०	दे०
१६१	६७५६	कुंडमार्तण्ड			दे० का०	दे०
१६२	१०७३	कुंडरत्नाकर टीका		विश्वनाथ द्विवेदी	दे० का०	दे०
१६३	६५१३	कुडलेष्टि होत प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
३१२×१५ सें० मी०	११ (१–११)	१४	४५	अपू०	प्राचीन	
२१७× १०४ सें० मी०	५ (२–५)	११	४०	अपू०	प्राचीन सं०१८३०	इति श्रीमज्योतिविंश विट्ठल दीक्षित विरचिता कुड मडपसिद्धि × × संवत् १८३० समये कार्तिक शुक्ल १४ चतुर्दश्या पुस्तक लिखित आत्मा-राम भट्टेन महाराष्ट्रेण ॥ शुभमस्तु ॥
२१७×१० सें० मी०	६ (१–६)	८	३२	अपू०	प्राचीन	अथ कुडमडपाद्युपयुक्त भूसमत्व साधन माह ॥ (पत्र सं० ४)
२७×११५ सें० मी०	७ (१–७)	११	३८	पू०	प्राचीन	इति कुडमार्तण्ड संपूर्ण ॥
२०६× १०१ सें० मी०	६ (१–६)	१२	४६	पू०	सं०१८२०	इति श्री कुडमार्तंड समाप्त ॥ संवत् १८२० पौष मासि बकुल पक्षे शिव तिथौ भौम सदा शिवन लिखितं ॥
२५५×११ सें० मी०	५४ (२–५५)	११	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री मग्रकल मतसकल विद्याविशारद श्री श्रीपति दीवदि द्विवेदी सुनु विश्वनाथ द्विवेदी कृता स्वकृता कुड रत्नाकर टीका समाप्ता ॥ शुभभवतु ॥
२०६×८७ सें० मी०	३ (१–३)	६	२८	पू०	प्राचीन	इत्याश्वनायनानुसारी कुडलेष्टि होत्र प्रयोग ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६४	८७१	कुंडविचार			दे० का०	दे०
१६५	१३७७	कुंडविधुमुहूर्तोम विधि			दे० का०	दे०
१६६	६५६६	कुंडसिद्धि व्याख्या	विट्ठल दीक्षित		दे० का०	दे०
१६७	६५६५	कुंडसिद्धि व्याख्या	विट्ठल दीक्षित		दे० का०	दे०
१६८	६५६२	कुंडसिद्धि व्याख्या	विट्ठल दीक्षित		दे० का०	दे०
१६९	६४११	कुंडाक टीका		रघुवीरदीक्षित	दे० का०	दे०
१७०	७२७०	कुंडार्क व्याख्या			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.५×१५ सें० मी०	७ (१–७)	११	४०	पू०	सं०१७५०	इति कुंडविचार समाप्त ॥ संवे १६१५ फाल्गुन सुद १ गुरौ लिखितमिदं पुस्तक आत्माराम ज्योतिर्विद्भि ॥
२१×१० सें० मी०	२	१०	३१	पू०	प्राचीन	
२३.६× १०.८ सें० मी०	२२(१–२२)	११	३८	पू०	सं०१८०६	इति सगमनेरस्य विट्ठल दीक्षीत विरचिता स्वकृत कुंडसिद्धि व्याख्या समाप्ता संवत् १८०६ मीती माघ वदी सतीमी वार शुभ दी ··· ··· ··
२३.७× १०.२ सें० मी०	३८(१–८३)	[illegible]	३३	पू०	प्राचीन	इति सगममनेरस्य विट्ठल दीक्षित विरचिता स्वकृत कुंडसिद्धि व्याख्या समाप्ता॥ + + + सं०१८०४ मिती वैशाख शुद ५ समाप्त॥
२३×६४ सें० मी०	२६(१–२६)	[illegible]	४४	पू०	सं०१८१६	इति सगमनेरस्य विट्ठल दिक्षित रचिता स्वकृत कुंडसिद्धि व्याख्या समाप्ता ॥ संवत् १८१६ ॥
२२×८४ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	३१	पू०	प्राचीन सं०१८७३	इति कुंडार्क टीका समाप्त ॥ संवत् १८७३ शा (के) १७३६ आश्विन कृष्ण ६० शनिवार ॥ विट्ठल दीक्षित सूनुना रघुनाथेन लिखित पुस्तक ··· ··· ···
२७.२× ११.५ सें० मी०	३ (१–३)	[illegible]	३२	पू०	प्राचीन	इति कुंडार्क समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७१	१००६	कुंडोद्योत			दे० का०	दे०
१७२	६४३०	कुंभ विवाह			दे० का०	दे०
१७३	६०२०	कुशकण्डिका			दे० का०	दे०
१७४	३९९२	कूपस्थापन विधि			दे० का०	दे०
१७५	६३७९	कूष्माण्ड होम			दे० का०	दे०
१७६	६५०१	कूष्माण्ड होम			मि० का०	दे०
१७७	१९०८	कूपारामादि प्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५४× १०२ सें० मी०	६ (१-६)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति कुण्डोद्योत ॥
२२५× १०३ सें० मी०	१	९	३५	पू०	सं०१८१३	इति कुंभ विवाह ॥.........संवत् १८१३ वैशाख शुद्ध ८ ॥
१७१× १२९ सें० मी०	५ (१-५)	९	२३	पू०	प्राचीन	इति कुशकंडिका संपूर्णम् ॥
२३७× १०९ सें० मी०	प० सं० ३ (१-३)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इति शरवधनम् ॥
१९१×९९ सें० मी०	१० (१-१०)	९	२९	पू०	सं०१९४९	इति कूष्माण्ड होम समाप्त ॥ श्री संवत् १९४९ श्री फागु० शु० ब० २
१३४×९९.१ सें० मी०	४ (१-४)	७	३२	पू०	प्राचीन	
३२८× १२५ सें० मी०	१३ (१-१३)	९	३८	पू०	सं० १९४०	इति दिक्पालेभ्योऽपवलिदत्वाततोदिक्पालेभ्यो नमस्कुर्यात् देवालयकूपतडागादि (तडागादि) आराम प्रतिष्ठा पुस्तकं समाप्तम् ॥ संवत् १९४० ज्येष्ट वदि एकदश्या ११ गुरुवासरे'''शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७८	४४४७	कूपारामोत्सर्ग विधि			दे० का०	दे०
१७९	७७	कृत्य रत्नावली	रामचंद्र भट्ट		दे० का०	दे०
१८०	१८२	कृत्यरत्नावली	रामचंद्र भट्ट		दे० का०	दे०
१८१	२३५	कृत्यरत्नावली	रामचंद्र भट्ट		दे० का०	दे०
१८२	५१७	कृत्यरत्नावली	रामचंद्र भट्ट		दे० का०	दे०
१८३	४७५३	कृत्यरत्नावली	रामचंद्र भट्ट		दे० का०	दे०
१८४	३५२८	कृत्यरत्नावली			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७४× ११८ सें० मी०	१० (१–४,४, ५–७,९–१०)	॥	३३	अपू०	स०१९१८	इति कूपारामोत्सर्गः समाप्त ॥ सवत् १९१८ श्रावण शुक्ल पूर्णमासी गुरुवासर इद पुस्तक रावजी मोघे
३०४× १४'१ सें० मी०	६८ (१–६८)	१३	४२	पू०	प्राचीन स०१८१७	इति श्रीमत्पदवाक्य प्रमाणाभिज्ञतत्सुदुपाख्य बालकृष्ण भट्टात्मज विट्ठल भट्टाभिधबुधवरस्तनु धर्मशास्त्र परावारीण श्रीमद्रामचन्द्रविरचिता कृत्यरत्नावली सपूर्णा ॥ श्रीरस्तुकल्याणमस्तु ॥श्री॥ सवत् १८१७ आषाढ शुक्ल ४ चतुर्थी भौमे लिखिता मिश्र नौबतराय श्री रस्ता।
(२५× १०९) सें० मी०	८७(१–२४,२८–६३,६६–९२)	१०	४१	अपू०	प्राचीन स०१७९७	इति श्री मत्पद वाक्य'''श्री प रामचंद्र भट्ट विरचिता कृत्य रत्नावली सपूर्ण ॥ स० १७९७ कार्तिक शुक्लैकादश्या समाप्त ॥ लिखितमिद पुस्तकम्''' गगारामेण ॥
(३०३× ११) सें० मी०	८(३४–४१)	१३	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्सद्विट्ठलभट्टात्मज रामचद्र विरचिता कृत्यरत्नावली समाप्त ॥
३०७×१३ सें० मी०	१२	१९	५८	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्पदवाक्यप्रमाणाभिज्ञतत्सदुपाख्य बालकृष्ण भट्टात्मज विट्ठल भट्टाभिध बुधवरसूनु धर्मशास्त्र पारावारीण श्रीमद्रामचन्द्र भट्टविरचिता कृत्य रत्नावली समाप्तिमगमत्। ६
२१६× १०२ सें० मी०	१८ २,५–२१	६	३२	अपू०	प्राचीन	इति कार्तिक कृत्य + + + ॥
२५१×६ सें० मी०	९८ (१–९८)	६	४१	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणाभिज्ञतत्सदुपाख्य बालकृष्णभट्टात्मज विट्ठल भट्टाभिध बुधवरसूनुधर्म'''श्रीमण श्रीमद्रामचद्रभट्ट विरचिताकृत्य रत्नावलीसमाप्ति मगमत्॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८५	११६३	कृशरासश्राद्ध.			दे० का०	दे०
१८६	७५६४	कृष्णविरचि अभिषेक	श्रीकृष्ण		दे० का०	दे०
१८७	७४०४	कृष्णव्रतोद्यापन			दे० का०	दे०
१८८	३१२/२	कृष्णार्चन पद्धति (न्यास)	गो० निंबार्कशरण देवाचार्य		दे० का०	दे०
१८९	५६०२	कोकिलाव्रतोद्यापनविधि			दे० का०	दे०
१९०	६३७७	क्रमप्राप्तोविवाह			दे० का०	दे०
१९१	४७१६	क्रियापद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१.५×१४ सें० मी०	५	११	३२	पू०	सं० १९३८	इति श्रीकृशराम श्राद्ध समाप्ता शुभमस्तु श्रीकृष्ण १ सवत् १९३८ मु: राजनगर लिषत प० श्री अवस्थी जान की प्रसाद जूकी जाये ता' जै राधे कृष्ण पहुच्चे ॥
१७.२×८.६ सें० मी०	२ (१–२)	११	२२	पू०	प्राचीन सं० १८६२	इति श्रीकृष्णविरचितभिषेको समाप्त शुभ भूयात् ॥………
३४×१३ सें० मी०	६ (९–१४)	६	४६	अपू०	प्राचीन	इति भविष्योत्तरे श्रीकृष्णयुधिष्ठर सवादे श्रीकृष्ण व्रतोद्यापन ॥
२१.५×१५ सें० मी०	२८	७	१७	अपू०	प्राचीन	
१३.२×७.७ सें० मी०	११ (१–६, ९–१०, १४–१६)	७	२८	अपू०	प्राचीन	एतत्सर्व प्रभोक्त्य पोषि [illegible]नमान- रेत् ॥ व्रतस्यास्यप्रभावेण वंध्य नेवजायते ॥ इति उद्यापन विधि ॥
१९.८×१०.२ सें० मी०	२४ (१–२४)	१०	२७	पू०	शके १६५६	शके १६५६ आनंदनाम संवत्सरे अश्विन शुद्ध सप्तम्या समाप्त ॥……… (मुख पृष्ठ)
२७.६×११.२ सें० मी०	२५ (१–३, ५–६, १२–२५, २६–३०, ३३–३५, ४१)	६	३२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६२	१२५१/२	क्षौरविधि			दे० का०	दे०
१६३	५७६४	गयापूजा			दे० का०	दे०
१६४	६००७	गयास्नानपूजनविधि			मि० का०	दे०
१६५	२२४०	गणपतिपूजा			दे० का०	दे०
१६६	३३८३	गणपतिपूजा			दे० का०	दे०
१६६	३३८४	गणपतिपूजाविधि			दे० का०	दे०
१६७	५१६६	गणहोमविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१२.३ × ७.८ सें० मी०	७ (१–७)	७	११	पू०	प्राचीन	इति क्षौर विधि ॥
१४.६ × १०.८ सें० मी०	२	१३	१७	अपू०	प्राचीन	
१५.६ × १२.१ सें० मी०	१४ (१–१४)	७	१६	पू०	प्राचीन (सं०१६४३)	इति गंगापूजन विधि समाप्त ॥ राम वेदांक चद्राब्दे आश्विने × × × × शुभ भूयात् ॥ द्विजेरिते इति पाठ ॥
२१.१ × ८.३ सें० मी०	६ (१–६)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति पूजनम् ॥
३१.४ × १२.३ सें० मी०	२ (१–२)	१२	४४	पू०	प्राचीन	इति गणपति अद्य ब्राह्मणाय इमां दक्षिणा दास्ये इति संकल्प······ ॥
१५.६ × १०.२ सें० मी०	६ (१–६)	१०	२१	पू०	प्राचीन	इति पूजा समाप्त ॥
२३.८ × ८.४ सें० मी०	६ (१३–१८)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति बोधायन प्रोक्तो गणहोम-विधि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रागत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९९	२३६२/२	गणेश चतुर्थीपूजाविधि			दे० का०	दे०
२००	२४३४/२	गणेशपूजन			दे० का०	दे०
२०१	४११६	गणेशपूजन			दे० का०	दे०
२०२	६३५०	गणेशपूजन विधि			दे० का०	दे०
२०३	७५३१	गणेशपूजा			मि० का०	दे०
२०४	३१४	गणेशपूजाविधान			मि० का०	दे०
२०५	३४२७	गणेशपूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८	८	९	१०	११
१२ × ९.७ सें० मी०	१२	६	११	अपू०	प्राचीन	इति श्री गणेश जू की पूजा विधि सपूर्णं शुभ भवति मंगलं ददात् ॥
२५.८ × ११.२ सें० मी०	१३	११	३४	पू०	प्राचीन	इति गणेश पूजन समाप्तम् ।
१७.१ × ११.२ सें० मी०	८	७	१७	अपू०	प्राचीन	नया कृत पूजनेन यथाज्ञानाज्ञानोपपन्ने भगवान्सर्वात्मा श्रीसिद्धिवुद्धि सहित महागणपति प्रियतां ॥ (अंत)
१६ × १२ सें० मी०	६ (१–६)	९	१२	०	प्राचीन	इति श्री गनेस जू की पूजन संपुरनं सुम भवतु मगलं ददात् ॥
२१.८ × ९.७ सें० मी०	६ (१–६)	६	२१	पू०	प्राचीन	
१९.५ × १०.५ सें० मी०	६ (१–६)	८	१९	पू०	प्राचीन सं० १९१८	ॐ गनेस जी सुभं मस्तु जयाप्रततया लिपतंममदोपां न दियते। सं० १९१८ अस्वनत्रितीया ३ शुक्ल चद्रवार। गौरीदत्त……
१९ × १० सें० मी०	७ (१–७)	१२	२५	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०६	६६२१	गयाकार्यानुष्ठान पद्धति			दे० का०	दे०
२०७	७६६२	गयापद्धति			दे० का०	दे०
२०८	४७२१	गर्भाधान			दे० का०	दे०
२०९	३७७४	गर्भाधान आदि संस्कार-विधि			दे० का०	दे०
२१०	६४४०	गर्भाधान संस्कार	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
२११	७६२०	गायत्री			दे० का०	दे०
२१२	२२४१	तुर्विंशति गायत्री जपम्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति सख्या और प्रतिपंक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१७ १ × ६ ६ सें० मी०	१८	११	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्रामेश्वर भट्टात्मज नारायण भट्ट *विरचिते त्रिस्थलीसेतौ गया-* प्रकरण गया कार्यानुष्ठान पद्धति ॥ तीथ कर्त्तव्य सदेह + + + ॥
२० ८ × ६ ७ सें० मी०	१८ (१-१८)	१०	३६	पू०	प्राचीन स०१८७३	इति गया विधि प्रकीर्ण विस्तार ग्रथानुक्रमणिका ॥ ।सवत् १८७३ ।
२७ ७ × ११ सें० मी०	२ (१-२)	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२२ ८ × १२ ४ सें० मी०	१० (१६-२८)	८	२०	अपू०	प्राचीन	
२२ × ८ ७ सें० मी०	१६ (१-१६)	११	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री विद्वन्मुकुटमाणिक्य श्री मद्रामेश्वर भट्ट सुत नारायण भट्ट विरचिते प्रयोग रत्नेस्तज्ज्येष्ठ सुत रामकृष्णो ••दुष्ट रजो दशन शा ति ॥
१६ ८ × ११ ५ सें० मी०	१६ (१-२, ५ १८)	७	१४	अपू०	प्राचीन	
३३ २ × ६ २ सें० मी०	१	३८	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री चतुर्विंशति गायत्रि समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१३	४६३४	गायत्रीकल्प			दे० का०	दे०
२१४	१७४३	गायत्रीकल्प			दे० का०	दे०
२१५	३८१६	गायत्री जपविधि			मि० का०	दे०
२१६	१५०२/३	गायत्री तर्पण			दे० का०	दे०
२१७	७६४१	गायत्रीन्यास ध्यानपूजा			दे० का०	दे०
२१८	६२४	गायत्री पद्धति			दे० का०	दे०
२१९	१५५०	गायत्री पुरश्चरण प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२.२×११.१ सें० मी०	६ (२, ६–१३)	११	१९	अपू०	प्राचीन सं०१८३४	इति श्री ब्रह्म ऋषि॰ वसिष्ट याज्ञवल्क्य प्रश्ने गायत्री कल्प सपूर्णं ॥ स०१८३४ वर्षे जेष्ट मासे कृष्ण पक्षे ७ गुरुवासरे॥
२७×१०.८ सें० मी०	३ (३३–३५)	≡	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीगायत्री कल्प सपूर्णम् ॥
१४.२×११ सें० मी०	४ (१–४)	६	१७	पू०	आधुनिक	
१४×१० सें० मी०	≡	≡	१२	पू०	प्राचीन	इति तर्पण समाप्त ।
२३.५×८.७ सें० मी०	१० १–१०	६	२६	पू०	प्राचीन	
१६×६.५ सें० मी०	७	७	२१	अपू०	प्राचीन	
२०×८.४ सें० मी०	६	११	३३	पू०	प्राचीन	इति श्रीभट्ट शंकरात्मजभट्ट शाव कृत गायत्री पुरश्चरणप्रयोगः ॥···

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२०	७०५८	गायत्री प्रयोग			दे० का०	दे०
२२१	२००६	गायत्री विधान			दे० का०	दे०
२२२	३५६४	गायत्री विश्वामित्रकल्प			दे० का०	दे०
२२३	६८६५	गायस्तूत प्रयोग			दे० का०	दे०
२२४	२७०४	गुरु दीक्षा ?			दे० का०	दे०
२२५	३०६३	गुह्यकाल्यापुजा पद्धति			दे० का०	दे०
२२६	३६२३	गृहदान प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.५ × १६.२ सें० मी०	६	१४	३३	अपू०	प्राचीन	
१७.६ × ११.३ सें० मी०	१	८	२२	अपू०	प्राचीन	
१७.५ × ६.४ सें० मी०	८	८	३२	अपू०	प्राचीन	
२३.५ × १०.१ सें० मी०	५ (१-५)	११	३१	पू०	प्राचीन	इति ज्योतिष्टोमेग्रावस्तुत् प्रयोग. समाप्त ॥
१६ × ७ सें० मी०	४ (१-४)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति सकल्प्य कृत मन्न चल मन्न धानुसथाय सात्विक त्याग कृत्वा द्वयमुच्चार्य श्री मनारायण चरणारविंदयो सर्वदेश सर्व कालस " ॥
२५.१ × ८.४ सें० मी०	५ (१-५)	६	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री गुह्यकाल्या पूजा पद्धति सपूर्ण ॥ नम श्रीगुह्यावार्य ॥
२३.५ × १० सें० मी०	२	८	३६	पू०	प्राचीन सं० १८१२	इनि गृहदान विधि सपूर्ण श्रीरर्पणमस्तु ॥ सवत् १८१२ आषाढ शुद्ध ५ समाप्तम् ॥ पुस्तकमिमिद रामग्रहकर विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकठभट्टेन लिखापित स्वाथ परार्थं च। श्री साव शिव प्रसन्नोस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२७	६३०	गृह दीपक			दे० का०	दे०
२२८	१६२५	गृहप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
२२६	५२३२	गृह प्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
२३०	४५३८	गृहस्थ रत्नाकर			दे० का०	दे०
२३१	७२६६	गृहारम्भ शिलान्यास विधि			दे० का०	दे०
२३२	१०३१	गृह्यसार	वोपण भट्ट		दे० का०	दे०
२३३	५४१३	गृह्यसूत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७.३×११.५ सें० मी०	१०(१–१०)	१०	३५	पू०	प्राचीन स०१९२१	इति गृहदीपक समाप्तम् । स० १९२१ शाके १७८६ श्रावन मासे कृष्ण पक्षे अमावस्या भुमौ वाशरे लिपित्वा दोउन्हरामशपट्ठाऽर्थस्य तस्वे ।
३०×१३ सें० मी०	३ (१, २ अज्ञात)	६	४०	अपू०		
२६.४×१०.३ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	४१	पू०	प्राचीन स०१९२३	इति गृहप्रतिष्ठा विधि ॥ सवासरे १९२३
२६.५×११.२ सें० मी०	१५० (१–४८,४८, ४९–१४९)	८	४४	अपू०	प्राचीन	इति गृहस्थरत्नाकरे दातृनिरूपण तरंग ॥ पृ० (३५)
२८.१×१०.८ सें० मी०	४(१–४)	६	३१	पू०	प्राचीन स०१९१३	इति गृहारंभ शिलान्यास्य विधि समाप्त श्रीरस्तु स० १९१३ चैत्र सुदि १५रवौ ॥
२३×८.६ सें० मी०	४४ (२५–६८)	[illegible]	२८	अपू०	स०१७३५	इति श्रीमहोपाध्याय श्रीमद्रदाध्रवोवपण-भट्ट विदुषा विरचिता गृहासार समाप्त ॥ स० १७३५ आषाढ कृष्ण द्वादस्या दश-पुत्ररघुनाथेन स्वार्थं परोपकारार्थं च लिखितोगृहसार समाप्त ॥
२४.२×१०.५ सें० मी०	२८ १–२३,२३–२७	७	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३४	५८३३	गोकुलाष्टमी पूजा			दे० का०	दे०
२३५	६६३२	गोतमस्तोमादि	रघुनाथ		दे० का०	दे०
२३६	७२४८	गोत्रावली			दे० का०	दे०
२३७	४७३२	गोत्रोच्चार			दे० का०	दे०
२३८	६३४१	गोदान			दे० का०	दे०
२३९	७७०६	गोदान			दे० का०	दे०
२४०	४२३८	गोदान			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पष्ठ मे पक्तिसख्या ग्रौर प्रति पक्ति मे ग्रक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रश का विवरण	ग्रवस्था ग्रौर प्राचीनता	ग्रन्य ग्रावश्यक विवरण
८ ग्र	ब	स	द	६	१०	११
२४ ५ × १० ७ सें० मी०	४ (१–४)	७	१८	पू०	प्राचीन	गोकुलाष्टमि पूजा समाप्त ॥
२३ १ × ६ ४ सें० मी०	२४ (१–२४)	८	२६	पू०	प्राचीन सं०१८०५	इति श्री मदयाचितोपनामकरुद्र भट्ट सुते नरयुनाथेन एपा पद्धतिविरचिता ॥ शुभमस्तु ॥ सवत १८०५ मिति पौपवदि द्वितीया पुस्तकमिद राम हृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकठस्य ॥
२३ ८ × ६ ५ सें० मी०	१० (१–१०)	८	३५	ग्रपू०	प्राचीन	
२३ ८ × १० ४ सें० मी०	६ (२–७)	८	२६	ग्रपू०	प्राचीन	इति गोत्राउचार समाप्तम ॥
२३ ३ × ६ ८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति गोदान प्रशसा० ॥
२३ ३ × ६ ८ सें० मी०	७	११	३८	ग्रपू०	प्राचीन	
१३ × ८ सें० मी०	१४ (२–१६)	७	१३	ग्रपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४१	३८६५	गोदानपद्धति			दे० का०	दे०
२४२	३०४६/६	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४३	२३५४	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४४	२०००	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४५	२१५८	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४६	६०२१	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४७	१३६०	गोदान विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवशक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२० ७ × ६ ३ सें० मी०	५ (१–५)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति गोप्रदान पद्धति समाप्ता ॥
(१६ ७ × १३ १ सें० मी०	३३	१६	१७	पू०	प्राचीन स० १८८५	इति गोदान पद्धति सपूर्ण ॥ स०१८८५ ॥
२५ २ × ११ २ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२४	पू०	(कृमिभ् क्षित) स०१६१५	इति स०१६१५ तत्रमासे महामागल्यमासे पौषमासे शुक्लपक्षे द्वादस्या १२ आदित्य वासरान्विताया लिख्यत मिश्र प्रभूलाल पठनार्थ१ इति गोदान विधि समाप्तम्॥ राम–राम
२८ × १३ ३ सें० मी०	७ (१–७)	१०	३१	पू०	प्राचीन (जीर्ण) स० १६४४	इति श्री नारदपुराणे गोदान विधि समाप्त । स० १६४६ मासोत्तम मासे भाद्रपद मासे कृष्ण पक्ष शुभतिथी द्वितीयाम्
१६ ३ × १२ ३ सें० मी०	४ (७–१०)	११	१६	अपू०	प्राचीन	
२७ ८ × ११ ६ सें० मी०	४ (१–४)	८	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे प्रयाग माहात्म्ये गोदान विधि निरूपण षट् पचाश त्तमोध्याय ॥
१२ ३ × ८ सें० मी०	४	८	१५	पू०	प्राचीन	इति सक्षेपेण गोदानविधि

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४८	२८८४	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४९	३८८१	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२५०	७६२३	गोदान (सूक्ष्म) विधि			दे० का०	दे०
२५१	४३३७/८	गोद्वार			दे० का०	दे०
२५२	७५८५	पूजाविधि गोपालकृष्ण			दे० का०	दे०
२५३	२५६७	गोपाल गायत्री मगन्यास			दे० का०	दे०
२५४	६३६२	गोप्रसव शांति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३×१० सें० मी०	६ (१–६)	१०	३४	अपू०	जीर्ण प्राचीन सं०१७८१ शाके १६४६	इति साधारण''''''॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७८१ साके १६४६ माघवदि दसम्या
१५.७×१५ सें० मी०	८	११	१५	अपू०	प्राचीन	
३१.५×११.७ सें० मी०	४ (१–४)	७	४२	पू०	प्राचीन	इति सूक्ष्म विधि समाप्ता ''''
१६×१३.३ सें० मी०	२ (३५-३६)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति गर्डत्यारणी (?) गरुत्यारणि ? समाप्ता ॥
१७×१० सें० मी०	८	८	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री गोपालकृष्ण पूजा समाप्त ॥
२०×१०.५ सें० मी०	३ (१–३)	६	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री गोपाल मायत्री पच अगन्यास. सपूर्ण '''
१६.३×६ सें० मी०	१	७	४५	पू०	प्राचीन	इत्यद्भुत सागरे भारदोक्ता सीद्घार्क यो प्रसव शांति ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५५	७२७३	गोमुखप्रसव			दे० का०	दे०
२५६	४३३२	गोमुख प्रसव विधि			दे० का०	दे०
२५७	६४२३	गोमुख प्रसव शांति			दे० का०	दे०
२५८	६४३४	गोमुख प्रसव शांति प्रयोग			दे० का०	दे०
२५९	४७११	गोमुख शांति			मि० का०	दे०
२६०	७१९४	गौतमी पद्धति			दे० का०	दे०
२६१	२७३	ग्रहमख पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५×६३ सें० मी०	२ (१–२)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति गोमुख प्रसव ॥ + + +
२१×८५ सें० मी०	२ (१–२)	६	३१	पू०	सं० १७६७	इति गोमुख प्रसव विधि ॥ सं० १७७६ शार्वरीनाम्नि संवत शु० १ "
२०८×७६ सें० मी०	४ (१–४)	७	२७	पू०	प्राचीन	इति गोमुख प्रसव शांति समाप्तः ॥ श्री ॥
२२२×६ सें० मी०	६ (१–६)	७	३०	पू०	सं० १६१५	सवत् १६१५ भाद्रपदशुक्ल १२ रवि-वासरे इद पुस्तक वेतालोपनामकस्य ॥ शुभ ॥
२४३×११ सें० मी०	६ (१–६)	८	३४	पू०	सं० १६६६	इति श्री म० गोमुखप्रसव शांति समाप्ता । सं० १६६६ कार्शिकरोपा-ह्व काशिनाथ शर्मणा लिखितम् ॥
२७१×११२ सें० मी०	२८ (१–२८)	६	३४	अपू०	प्राचीन	अथ गौतमी पद्धति लिख्यते (प्रारंभ)
१७३×१०५ सें० मी०	७२	७	२२	पू०	सं० १६६६	इति ग्रहमख पद्धति समाप्त आश्विने मासे कृष्ण पक्षेतुमयायां गुरुवासरे ७ तस्मिन दिनेतु लिखित श्री गुरोश्च प्रसादत ॥ श्री रस्तु ॥ सं० ६६६६ दुर्मति नाम संवत्सरे शुभ उभयो लेखक पाठकयो ॥ लिखित इद पुस्तक पुरुषो-त्तम मिश्र । शुभ भवतु स्वार्थ परमार्थ च ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६२	५६३०	ग्रहवास्तुपूजन			दे० का०	दे०
२६३	२२१६	ग्रह शांति	कात्यायन ऋषि		दे० का०	दे०
२६४	२६८०	ग्रहशांति			दे० का०	दे०
२६५	१८४१	ग्रह शांति			दे० का०	दे०
२६६	१६२४	ग्रह शांति			दे० का०	दे०
२६७	६७	ग्रह शांति	कात्यायन ऋषि		दे० का०	दे०
२६८	४१७२ / २	ग्रहशांति विधान			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठ या आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७४ × ११५ सें० मी०	४ (१-४)	६	४३	पू०	प्राचीन	
२५८ × ११ सें० मी०	८ (१-८)	८	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रीकात्यायन ऋषि विरचिता ग्रह-शांति समाप्ता १
२२५ × ८८ सें० मी०	३	१०	३३	अपू०	प्राचीन	
१७ × १०५ सें० मी०	२७	१२	२५	पू०	प्राचीन सं०१८६०	इति नवगृह् मध्य यज्ञ समाप्त ॥ स० १८६० मागसिर सुदि ११ गुरुवारेण लिषित जोसिचनराम सूत पुत्र कालुराम पुस्कर मध्ये ॥ श्रीमस्तु ॥ कल्याणमस्तु॥
२५५ × १५ सें० मी०	१६ (१-२, ४-१७)	१२	२५	अपू०	प्राचीन	
१६ × १३२ सें० मी०	१०		१५	पू०		इति कात्यायन ऋषि विरचिता ग्रह शांति समाप्ता शुभेभूयाल्लेखक पाठकयोस्ताम्वकृपात. ॥ कृष्णाय नम ॥ राम राम
१८८ × १३८ सें० मी०	२३ (१-४, ६-२७)	११	३१	अपू०	प्राचीन	इति प्रवगर्भ समाप्त । (प० स० २७)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६९	१०२४	ग्रहशांतिविधि			दे० का०	दे०
२७०	२४३४/२	ग्रह स्थापन विधि			दे० का०	दे०
२७१	६७५२	ग्रावस्तोत्रप्रयोग			दे० का०	दे०
२७२	५०१७	घृत तुलादान प्रयोग			मि० का०	दे०
२७३	५६१७	चंडिका विधान			दे० का०	दे०
२७४	५२५१	चंडी जप विधि			दे० का०	दे०
२७५	६३०	चंडीविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२४.३ × १५ सें० मी०	६ (१–६)	११	२५	पू०	प्राचीन (सं०१८६०)	इति श्री ग्रहशांति विधि समाप्तम् शुभ भूयात् ॥ सं० १८६० चैत्रशुदि १५ गुरुदिने'''श्री श्री (सी)ताराणायनम ॥
२५.८ × ११.२ सें० मी०	(१½)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति कात्यायन ऋषि विरचिते ग्रहास्थापन विधान समाप्त ॥
२४ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	६	३७	पू०	प्राचीन	इति ग्राव स्तोत्र प्रयोग' ॥
१६.५ × ६.३ सें० मी०	१	१५	३७	अपू०	आधुनिक	
२४.४ × १०.५ सें० मी०	११(१–१०,१३)	[illegible]	३१	अपू०	प्राचीन	इति चण्डिका विधान सपूर्ण ॥
२२ × १०.२ सें० मी०	५ (१–५)	११	३६	अपू०	प्राचीन	अथ चंडी जपविधि ॥ (प्रारम्भ) × × ×
२४.४ × ७.६ सें० मी०	[illegible] (१–६)	८	३८	पू०	प्राचीन	इति चंडी विधि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२७६	२४३७	चंडीस्तोत्र प्रयोग विधि	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०
२७७	२२५७	चंडीस्तोत्र प्रयोग विधि	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०
२७८	६४४६	चतुर्थीव्रत चन्द्रार्घ्यं			दे० का०	दे०
२७९	१५०७	चतुष्टय संप्रदाय पूजा पद्धति			दे० का०	दे०
२८०	७२०१	चलाचलप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
२८१	७१८३	चवरी			दे० का०	दे०
२८२	६४९९	चातुर्मास			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ ५ × ११ सें० मी०	२५	६	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री मदुपाध्यायोपनाम शिव भट्ट सुत सतीगभज नागोजी भट्ट कृते मारकण्डेय पुराणान्तर्गत सप्तसत्यारव्य चंडीस्तोत्र व्याख्याने चंडीस्तोत्र प्रयोग विधि समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥
१८ ८ × १६ १ सें० मी०	प० सं० ३३ (२–१६ १८–३५)	१३	४०	अपू०	प्राचीन सं० १६३२	इति श्री मदुपाध्यायोपनाम शिवभट्ट सुत सतीगभज नागोजी भट्ट कृते मार्कंडेय पुराणांतर संवत् १६३२
१३ ६ × ८ २ सें० मी०	३ (१–३)	५	१३	पू०	प्राचीन	इति चन्द्राख्य ४ वृत ॥
१८ × ६ ७ सें० मी०	७ (५–११)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
२५ ८ × ११ २ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	२८	पू०	सं० १६१५	इति चलाचल प्रतिष्ठा विधि संवत् १६१५ पौषमास सितेपक्ष त्रयोदश्यां प्राद्रवेतया शोभारामेण लेखस्यात्
२६ ३ × १५ ८ सें० मी०	१४ (१–११, १३–१५)	१३	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाब्रह्मपुराणे कर्मकांडे विवाह विधि चतुर्थोध्याय + + सं० १६०३ मध्ये गढमध्ये + + ॥
२२ ५ × ६ ५ सें० मी०	५३ (१–१३, १५–५४)	१२	४८	अपू०	प्राचीन	इति हौत्र पशुवधश्चातुर्मास्यानां । (पत्र सं० ५४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८३	१२०६	चातुर्मास्यविधि			दे० का०	दे०
२८४	६७०६	चातुर्मास्यहोत्र			दे० का०	दे०
२८५	५१४२	चित्रगुप्त पूजा विधि			दे० का०	दे०
२८६	७०८८	चूडाकरण			दे० का०	दे०
२८७	६६७०	चौलप्रयोग			दे० का०	दे०
२८८	६१२३	जनमारी शांति			दे० का०	दे०
२८९	६२५४	जप			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२२ × १३ सें० मी०	६ (१–६)	७	२३	पू०		इति चातुर्मास्य विधि· सपूर्ण शुभ भूयात् ।
२२ × ६ ५ सें० मी०	८ (१–८)	१०	३१	पू०	प्राचीन	
१६ ७ × ६ ८ सें० मी०	११ (१३ १३-२२)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
२२ १ × ११·६ सें० मी०	६ १–६	६	२२	पू०	प्राचीन	इति षडावश्यक पुस्तक समाप्तम् चैत्र मासे सिते पक्षे + + + + +
२२ ४ × ७ ७ सें० मी०	७ (१–७)	६	३८	पू०	प्राचीन	
१७ २ × ७ ५ सें० मी०	४	८	२१	पू०	प्राचीन	इति विधानमालायां पर्व प्रोक्ता जनमारी शांति समाप्तं ... ...
२१ ८ × १० ६ सें० मी०	२	७	२६	अपू०	प्राचीन	

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६०	४८१६	जपविनियोग			दे० का०	दे०
२६१	१६१३	जल सामग्री			दे० का०	दे०
२६२	३७२१	जलाशयकूपोत्सर्ग			दे० का०	दे०
२६३	१३०६	जलाशय चत्वर प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
२६४	५६४५	जलाशयारामोत्सग मयूख	नीलकठ भट्ट		दे० का०	दे०
२६५	२५१०	जलाश्रयोत्सर्ग	नीलकठ भट्ट		दे० का०	दे०
२६६	४४४६	जलाशयोत्सग विधि	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	९	१०	११
१७ × १० ७ सें० मी०	३	१०	१६	अपू०	प्राचीन	
१६ × ११ सें० मी०	१	७	२०	अपू०	प्राचीन	
(२७ ६ × १५ १) सें० मी०	२५ (१–२५)	१२	२६	पू०	प्राचीन सं०१८६६	इति जलाशय कूपोत्सर्गं समाप्त संवत् १८६६ मासानामुत्तमे फल्गुने मासि कृष्णेपक्षे एकादश्या शनिवासरे लिखित मिद पुस्तक लक्ष्मी नारायणेन ··· ॥
१६ ३ × ६ २ सें० मी०	३७ (१–३७)	६	२०	पू०	प्राचीन सं०१६०७	इत्यारामाभोजलाशय चरवर प्रतिष्ठा-समाप्ता । श्री कृष्णायनम सं०१६०७ शाके १७७२ मासोत्तमासे ज्येष्ठ कृष्ण ३० चद्रवासरे लिपि कृत मिश्र हाल चद्र राम पुत्र । श्री कृष्ण ।
२३ ४ × ११ सें०मी०	१३ (३–१५)	१४	३८	अपू०	म०१६०६	इति श्री मीमासक भट्ट सकरात्मज भट्ट नीलकण्ठ कृते भास्करे जलाशयारामोत्सर्ग मयूख समाप्त ॥ ·· १६०६ चैत्रे शुक्ले तरे शुभे ·· ··
२६ ३ × १५ २ सें०मी०	२७ (१–२७)	१३	३५	पू०	प्राचीन सं०१६१८	इति श्रीमीमासक भट्ट शकरात्मज भट्ट श्रीनीलकंठ कृत भास्करे जलाशयारामोत्सर्गमयूखग्रंथ श्लोक्या १०० शुभमस्तु कार्तिक सुदि १५ मर स० १६१८ म
२७ × १२ सें० मी०	८६ (१–८६)	■	३७	पू०	सं०१६१७	इति श्रीभट्ट रामकर सूरिसुत नारायण भट्ट कृते जलाशयारामविधोत्सर्ग विधि पद्धति ॥ संवत १६१६ मोम पौष शुक्ल १० स्वार्थ परोपकारार्थं च ॥
(सं०मू० २४)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२९७	५०५३	जलोत्सर्ग			दे० का०	दे०
२९८	४६०२	जलोत्सर्ग			दे० का०	दे०
२९९	६४१७	जातकर्म पद्धति			दे० का०	दे०
३००	६४१८	जीर्णोद्धार			दे० का०	दे०
३०१	६३६८	जीर्णोद्धार प्रयोग			दे० का०	दे०
३०२	६३७१	जीर्णोद्धार विधि			दे० का०	दे०
३०३	६११८	जीवश्राद्ध पद्धति	गौरी भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.१ × ११ सें० मी०	३ १–३	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२८.५ × १२.२ सें० मी०	३ १–३	८	३८	अपू०	प्राचीन	
२२.४ × ९ सें० मी०	६ (१–६)	७	३२	पू०	प्राचीन	इति आतकर्म पद्धति ॥
२१.५ × ८.४ सें० मी०	४ (१–४)	९	२७	पू०	प्राचीन	इति जीर्णोद्धार निर्णयसिंधोक्तेन विधि समाप्तिमगमत् ॥
१४ × ७.९ सें० मी०	१ (१–२)	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति जीर्णोद्धार प्रयोग समाप्त ॥
२१.८ × १०.१ सें० मी०	४ (१–४)	१०	४०	पू०	प्राचीन	इति रघुनाथ सूरि सूनु त्रिविक्रम रचितायां प्रतिष्ठापद्धतौ जीर्णोद्धार विधि॰ ॥
२४.३ × ११.३ सें० मी०	१४ (१–४४)	७	३३	पू०	सं०१९५८ (हस्तलिखित)	सं०१९५८ माघ शुक्ल १० सोमे लिखित गणपति पुरोहितेन ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रागत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०४	५७२८	जेष्ठानक्षत्र जनन शांति			दे० का०	दे०
३०५	५०५४/१५	ज्वरशांति प्रयोग			दे० का०	दे०
३०६	६२८६	तडागादि प्रतिष्ठाप्रयोग		(–)	मि० का०	दे०
३०७	५४५८	तर्पण			दे० का०	दे०
३०८	६२१८	तर्पण			दे० का०	दे०
३०९	७७८२	तर्पण			दे० का०	दे०
३१०	४०७३	तर्पण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२४ × ८·७ सें० मी०	३ (२–४)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इति ज्येष्ठा नक्षत्र जनन शांति ॥
१६ × ७·८ सें० मी०	४	८	२५	पू०	प्राचीन	इति ज्वर शांति ॥
२४·४ × १०·७ सें० मी०	८ (१–८)	१०	३६	पू०	प्राचीन	बाज बाहादुर चन्द्रनिर्मिते कौस्तुभेनृपति धर्मगोचरे शौनकोक्तविधिनेयमीरिता सज्जालाशयतरुत्सृजे कृति ॥
२६ × ९·५ सें० मी०	५	८	३४	अपू०	प्राचीन	
६८ × १९·५ सें० मी०	१ (खर्रा)	६३	१४	अपू०	प्राचीन	
११ × १०·२ सें० मी०	८ (१–८)	११	१३	पू०	प्राचीन	
१४ × ८·७ सें० मी०	प०सं०७ (२–८)	६	१६	अपू०	प्राचीन सं० १८९७	इति तपन संपूर्ण संवत् १८९७ साके १७६२ आषाढ वदि ६ बुधवासरे तादिन प्रति संपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
३११	११९९	तर्पण			दे० का०	दे०
३१२	४५०४	तर्पण			दे० का०	दे०
३१३	२८७७	तर्पण			दे० का०	दे०
३१४	७००४/२	तर्पण प्रयोग			दे० का०	दे०
३१५	१३३३	तर्पण प्रयोग			दे० का०	दे०
३१६	५७१	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३१७	६०७	तर्पण विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२४ ४ × १० ६ सें० मी०	४ (१–४)	८	३०	अपू०	प्राचीन सं० १६३८	
२७ ३ × ६ ७ सें० मी०	८ (१–८)	६	४०	पू०	सं० १६३३	इति तर्प्पणाम्सम्पूर्णम् ॥ जपानतर कात्यायन ॥ " ' संवत् १६३३ माघ शुक्ल वसन्त पचम्या······ ॥
१७ ३ × १० ६ सें० मी०	३ (१–३)	११	२५	पू०	प्राचीन	इति तर्पन सपूर्णं"·····दिनाकर ॥
१२ २ × ८ २ सें० मी०	१४ (१–१४)	५	१५	पू०	प्राचीन	इति सूर्य्यायार्जलिदद्यात् शुभम् ॥
१७ ५ × १३ सें० मी०	५	११	२३	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधे पुस्तक मिद गगादत्त ब्रह्मचारिण पाठार्थम् लिखित जयानन्देन शुकदेवाश्रमे प्रतिप्रत्तिथो भौमवासरे शुभम् ॥
१६ ८ × १४ ३ सें० मी०	४ (१–४)	११	१६	पू०	प्राचीन	इति तर्पण समाप्तम् ॥१॥
१२ ८ × १० सें० मी०	६ (१–६)	७	१३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३१८	६००९	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३१९	५३२१	तर्प्पण विधि			दे० का०	दे०
३२०	५१२६	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२१	५२२६/४	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२२	५२६६/२	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२३	७७९/२	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२४	७५४	तर्पण विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१३.३ × ६.४ सें० मी०	५ १–५	८	१५	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधिसमाप्त ॥
३० × १३.६ सें० मी०	८ (१–८)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	
७५.५ × ११.२ सें० मी०	१ (खर्रा)	७६	१७	पू०	प्राचीन	इति तर्पण समाप्तम् ···
१६.५ × ११.२ सें० मी०	५ (१–५)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति तर्पण समाप्तम् ॥
१६ × ८ सें० मी०	२ (३–४)	६	२६	अपू०	प्राचीन	
१५.४ × १०.६ सें० मी०	१६ (२–१७)	१०	६	अपू०	प्राचीन सं०१६४०	इति तर्पण विधि सं० १६४० भाद्र शु० ७ शनिवारे मध्यान्हात् घटिका न्यून··· ···पठेत् ॥ अच्युतायनम गोविंदायनम. शुभ भूयात् ।
२६ × १०.५ सें० मी०	■	८	३५	पू०	प्राचीन सं०१६०६	इति श्री तर्पण विधि संपूर्ण शुभमस्तु शुभसंवत्सरा १६०६ शाके १७७१ वर्के शुक्ल प्रतिपदा भृगु वासरे लेखिराम-दिहल विप्रेण परोपकारार्थ हेतवे ।

(सं० पु० २५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२५	३५८५	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३२६	२२८६	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३२७	३६६२	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३२८	४०६५	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३२९	४२२०	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३३०	१५७३	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३३१	१६२६/३	तीर्थमुखश्राद्ध			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३१×१३७ सें० मी०	८ (१–८)	८	१८	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधि ··· ॥
७५६×५०८ सें० मी०	१	६३	१३	पू०	प्राचीन सं०१६०४	इति तर्प्पण विधि सपूर्णम् स० १६०४॥ ब्रह्मादय ···
२३४×६५ सें० मी०	१	३३	१६	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधि ॥
१५७×७६ सें० मी०	४ (१–४)	६	२३	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधि· शुभमस्तु
२७×११२ सें० मी०	२ (१–२)	११	४०	पू०	प्राचीन	इति नारद पचरात्रे तर्पण विधिः ॥
३१×११५ सें० मी०	११ (१–५, ५८–६३)	११	४५	अपू०	प्राचीन	
२१४×१३१ सें० मी०	८ (१–८)	६	१६	पू०	प्राचीन सं०१६००	इति तीर्थमुख श्राद्ध विधि समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ फागुन शुक्ला बुधवासरे संवत् १६०० ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३२	२९७७	तीर्थविधि			मि० का०	दे०
३३३	१७७५	तीर्थश्राद्ध			दे० का०	दे०
३३४	६०७४	तीर्थश्राद्ध			दे० का०	दे०
३३५	३३००	तीर्थश्राद्ध			दे० का०	दे०
३३६	७९८	तीर्थश्राद्ध			दे० का०	दे०
३३७	१३६६	तीर्थश्राद्ध निर्णय	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
३३८	१८४८	तीर्थश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३९	२२३९	तीर्थश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
३४०	२६०१/२	तीर्थश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
३४१	२२४३	तीर्थश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
३४२	६७४	तिलकमुद्राधारण विधान			दे० का०	दे०
३४३	१५८१	तुलसीप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
३४४	१६२९/३	तुलसीविवाह			दे० का०	दे०
३४५	७०४३/३	तुलसीविवाह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	९	१०	११
२१.४×१०.७ सें० मी०	८ (१–८)	८	२८	पू०	प्राचीन	इति तीर्थ श्राद्ध विधि: ॥
२१×११.५ सें० मी०	६	८	१६	पू०	सं०१९३६	इति श्री तिर्थ श्राद्ध विधि समाप्तम् ॥ लिषत प० बकुलसहाय ॥ ? ॥
१८×११.८ सें० मी०	४ (१–४)	१३	१६	पू०	प्राचीन	दक्षिणा पात्र सनल्प तीर्थ श्राद्धस्य विधि । अर्घेंगा वाहन चैव द्विजागुष्ट-निवेशन ॥ विकर तृप्ति प्रश्न च तीर्थ-श्राद्धेषु वर्जयेत् ॥२॥
१५×१० सें० मी०	५	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री वाराह पुराणे चातुर्मास महात्म्ये धरणी वराह सवादे श्री भगवान-वराहोक्त तिलक मुद्रा धारण विधान नाम पचमोध्याय ॥ श्री कृष्णार्पण-मस्तु ॥ शुभ भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥ *श्री कृष्ण ॥*
२७.५×१२.८ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	२६	पू०	सं०१८८१	इति तुलसी प्रतिष्टाकर्मसंपूर्णं ॥ स० १८८१ ॥ तत्रवर्षे मार्गशीरशुद्विद्वादस्यां बुधवासरादिने लिखितंकिसनचंद ॥ इद पुस्तक ॥ शुभमस्तु ॥
२११×१२.६ सें० मी०	४ (६–१२)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति तुलसी विवाह समाप्त' ॥
१४.७×१३.३ सें० मी०	६	८	१४	पू०	प्राचीन सं०१८४२	इति श्री विष्णु जी भले श्री तुलसी विवाह विधि सपूर्णम् ॥ स० १८४२ वर्षे कार्तिक वदिकादशी भृगुदिने लिखित स्वामि तन सुखराम वेणीराम का पुत्र शुभमस्तु ॥ मगल ददातु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३४६	७१३६	तुलसीविवाहपूजा पद्धति			दे० का०	दे०
३४७	४६७६/२	तुलसीविवाह विधि			दे० का०	दे०
३४८	५०५४/१५	तुलादान प्रयोग			दे० का०	दे०
३४९	३८५४	तुलादान प्रयोग	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
३५०	७७९३	तुलादान विधि			दे० का०	दे०
३५१	३५०१	तुलादान विधि			दे० का०	दे०
३५२	३०४६	तुलापुरुष पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६×१०·६ सें० मी०	१६ १–१६	८	३२	अपू०	प्राचीन	अथ तुलसी विवाह पूजा प्रारंभ × × × (प्रारंभ)
१५·८×६·५ सें० मी०	१४ १–१४	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति भविष्योत्तर पुराणे कार्त्तिकोद्यापन तुलसी विवाह विधिः ॥
१६×७·८ सें० मी०	५	७	२०	अपू०	प्राचीन	अथ तुलादान प्रयोगः ॥ (प्रारंभ)
२३·५×११ सें० मी०	३ (१–३)	६	२७	पू०	प्राचीन	इति कमलाकर भट्ट कृत तुलादान प्रयोगः समाप्तिमगमत् ॥ श्री ॥ भारद्वाज वैजनाथात्मज धुंडराजस्य
२५·६×११·३ सें० मी०	३ १–३	७	३२	पू०	प्राचीन	
२३·२×१०·३ सें० मी०	७	८	२५	अपू०	प्राचीन	
१७·५×६·३ सें० मी०	८ (१–८)	६	२७	पू०	प्राचीन सं०१७५६	इति तुलापुरुष पद्धति समाप्तः ॥ सं० १७५६ समये श्रावणशुक्लपौर्णमास्याकाशीक्षेत्रे लिखित तुलापुरुष दान प्रयोगः समाप्तः ॥
(सु ७०२६)	–	–		—		

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५३	३८९४	तुलाप्रयोग			दे० का०	दे०
३५४	३१७३	त्रिकडिका			दे० का०	दे०
३५५	७२५४	त्रिकालसध्या			दे० का०	दे०
३५६	६०६७	त्रिकाल सध्या			दे० का०	दे०
३५७	६४२४	त्रिपाद पचक शाति			दे० का०	दे०
३५८	७०३	त्रिपिंडी श्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
३५९	३७०६	त्रिपिंडी श्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति में अक्षर सख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२२.१×६.५ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३३	पू०	प्राचीन स०१८१२	इति तुला प्रयोग समाप्त ॥ स०१८१२ आषाढ शुद्ध पौर्णमास्या समाप्तम् ॥ पुस्तकमिद रामह्रदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकठ भट्टेन निरूपितम् स्वार्थं परार्थं च ॥
२३×१०.५ सें० मी०	३ (१–३)	६	२७	पू०	प्राचीन स०१८६७	इति खिकाडिका साम्प्रतम्। इति श्री कात्यायन प्रणीत स्नान सूत्र समाप्तं॥ लिखित वेणी राम दिक्षितस्य ॥ स० १८६७ भाद्रपदवद्य भानुवासरे॥... "
१७.६×११.७ सें० मी०	१८ १–१८	७	१६	पू०	प्राचीन स०१६६१	इति त्रीकाल सध्या सपूर्णम् ॥ लिखित स० १६६१ ॥
१६.७×८.३ सें० मी०	७ (२–८)	७	१८	अपू०	प्राचीन स०१६०४	इति श्री त्रिकाल सध्या समाप्त सपूर्णम् ॥ मिति हुती ज्येष्ठ सुदि ३ भौम सवत् १६०४ . ।
१६.८×८ सें० मी०	४ (१–४)	६	३१	पू०	प्राचीन	त्रिपादपचक शान्तिः समाप्ता ॥
२२.६×११.७ सें० मी०	६ (१–६)	१०	२६	पू०	प्राचीन	प्रेतपाक च शूद्रान्नन कुर्यद्विस्वदेवक समाप्त ॥
१८.५×६.४ सें० मी०	४ (१–४)	१४	३२	पू०	प्राचीन स०१८०६	इति गरुडोक्त त्रिपिंडी श्राद्ध प्रयोग . ... । स० १८०६ मार्गशीर्ष वद्यो १४ इद्रौ लिखितमिदम्।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६०	३७१०	त्रिपिंडी श्राद्ध विधान			दे० का०	दे०
३६१	३८८०	त्रिवेणी स्नान विधि			दे० का०	दे०
३६२	४७९६	त्रिसुपर्णा			मि० का०	दे०
३६३	३३१७	दत्तक			दे० का०	दे०
३६४	७२८६	दत्तिम पुत्र ग्रहण विधि			दे० का०	दे०
३६५	६६६०	दर्श पद्धति			दे० का०	दे०
३६६	६५१०	दर्श पूर्णमास विहार-कारिका विवरण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०×९ सें० मी०	६ (१-६)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	
१५८×१५७ सें० मी०	६	१५	१८	अपू०	प्राचीन	
२१२×१०३ सें० मी०	५ (१-५)	११	२१	पू०	आधुनिक	त्रिसुपर्णमयाचित ब्राह्मणाय दद्यात्। ब्रह्महत्या वा एते घ्नति। ये ब्राह्मणा स्त्रिसुपर्णं पठति। ते सोम प्राप्नुवन्ति॥ (पत्र सख्या-१, पंक्ति सख्या-४, ५)
२३८×१०१ सें० मी०	२८ (१-२८)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति दण्डक सम्पूर्णम्॥
२८९×१०६ सें० मी०	३ (१-३)	९	३५	पू०	प्राचीन सं०१६१२	इति दत्तिमपुत्रविधिः समाप्ता सवत् १६१२ चै० वदी १२॥
२२८×४७ सें० मी०	३४ (१-३४)	१०	३२	पू०	प्राचीन	आपस्तबोक्त रीत्यंपाकारीत्य धर्म-पद्धति॥ ......
२२×८९ सें० मी०	७ (१-७)	११	३५	पू०	प्राचीन	

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६७	६५००	दर्श पौर्णमास होम ?			दे० का०	दे०
३६८	७७२३	दर्शपौर्णमासो व्याख्या			दे० का०	दे०
३६९	४१४५	दशगात्र			दे० का०	दे०
३७०	४६२१/३	दशगात्र			दे० का०	दे०
३७१	४८८१	दशगात्रएकादशाह श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
३७२	२४०५	दशगात्र पिंडदान विधि			दे० का०	दे०
३७३	२२९२	दशगात्र विधान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	९	१०	११
२३.५×९.२ सें० मी०	३ (१–३)	८	३३	पू०	प्राचीन	
२३.१×१०.४ सें० मी०	१७ (१–१७)	९	३०	अपू०	प्राचीन	
१६.३×१०.३ सें० मी०	४ (१–४)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति दशगात्र विधिः समाप्त ॥
१६×१०.७ सें० मी०	७ (१–७)	८	१८	पू०	प्राचीन सं०१८२८	इति दसगात्र संपूरण लिषितनरसिंघ दा सुकल संवत् १८२८ मिति असाढ ··
२८.८×१०.२ सें० मी०	१५ (१–१५)	९	२८	पू०	प्राचीन सं०१८६४	ब्योरो दसगात्र की सामग्री को ॥ (पत्र सं० १) इति अस्थि संचयन श्राद्ध विधि संपूर्ण ॥ (पत्र सं० ४) इति एकादशगत्र विधि संपूर्ण ॥१॥ संवत् १८६४ जेठ कृष्ण ६ बुधदिने इष्ट लिषत ब्राह्मणभगनुकरणमध्ये ॥
२९.१×१३.६ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	३३	पू०	प्राचीन सं०१९१३	···· संवत् १९१३ माघ कृष्ण ७ वार शनिवार शुभमस्तु भूयात् " ॥
२३×१०.७ सें० मी०	१५ (१–१५)	८	२५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७४	४२५	दर्शपिंडीकरणपद्धति			दे० का०	दे०
३७५	३७२७	दानचंद्रिका			दे० का०	दे०
३७६	७८०६	दानचंद्रिका			दे० का०	दे०
३७७	४६८६	दानप्रार्थनावली			दे० का०	दे०
३७८	१६३२	दानमयूख			दे० का०	दे०
३७९	६२४९	दानविधि			दे० का०	दे०
३८०	६२४९	दानविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.८×९ सें० मी०	९ (१–९)	१३	४०	पू०	प्राचीन सं०१८१२	इति सपिंडीकरण पद्धति समाप्त लिखत मिश्र नौवतराय सं०१८१२ ।
२४.५×१०.५ सें० मी०	१५९ (१–१५९) ४ (सूचीपत्र)	७	३९	पू०	सं०१८५८	इति दान चंद्रिका समाप्ता ॥.......... यादृश पुस्तक दृष्ट्वा तादृश लिखितं मया ॥ यदि शुद्धमशुद्धवा ममदोषोन लिप्यते ॥ सं० १८५८ ॥ भतग सन्तान सवत्सर माघ शुध सात दिने समाप्ते ॥
१५.७×८.६ सें० मी०	६ (९–१०, १२–१५)	९	१८	अपू०	प्राचीन	
२६.५×११.५ सें० मी०	५ (१–५)	१०	५०	पू०	प्राचीन (खंडित)	श्रीखंडागुरु कर्पूर कस्तूरी कुंकुमान्वित विलेपन प्रयच्छामि सौख्यमस्तु सदा मम ॥
(२६.६×१६.६) सें० मी०	११ (२–१२)	१४	२९	अपू०	प्राचीन	
१७×८ सें० मी०	१० (१–१०)	८	२२	पू०	प्राचीन	इति दशदान स्तोत्र ॥
२२×९.४ सें० मी०	७	१०	४०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८१	५०५४/१५	दानविधि			दे० का०	दे०
३८२	५०५४/१५	दानविधि			दे० का०	दे०
३८३	८७५	दानविधि			दे० का०	दे०
३८४	८२२	दानविधि			दे० का०	दे०
३८५	७८७२	दानविधि			दे० का०	दे०
३८६	२२८७	दान सिद्धांत मणि	चंडेश्वर		दे० का०	दे०
३८७	१५३५	दानम्योत्तर पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६×७·८ सें० मी०	६	८	२४	अपू०	प्राचीन	
१६×७८ सें० मी०	१०३	९	२६	अपू०	प्राचीन	
२७×१२ ३ सें० मी०	२२६ (१३२–२३०, २३५–२६४, २६८–३६६ ३७०)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
१८५×१२ सें० मी०	९ (५–१३)	१०	२०	अपू०	प्राचीन	
१४६×७८ सें० मी०	२	५	१५	अपू०	प्राचीन	
३४५×१३७ सें० मी०	१८ (३–२०)	१२	४१	अपू०	प्राचीन	
३२×१२६ सें० मी०	५ (७–११)	१४	५२	अपू०	प्राचीन सं०१६१७	इति श्री दालभ्योत्तर पद्धति संपूर्ण ··· ······ संवत् १६१७ फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८८	७०६	दाह पद्धति			दे० का०	दे०
३८९	३१६७	दाहप्रयोग			दे० का०	दे०
३९०	३११	दाहविधि	विश्वनाथ		दे० का०	दे०
३९१	६९३२	दिव्य प्रयोग			दे० का०	दे०
३९२	३५७४	दीक्षाविधान			दे० का०	दे०
३९३	१४१५	दीपमालाकृत्य			मि० का०	दे०
३९४	४२३७	दीप श्राद्ध			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ ५ × ८ सें० मी०	२०	६	२२	पू०	प्राचीन	
२१ × ६ ४ सें० मी०	२ (१–२)	१७	४७	पू०	प्राचीन सं०१७५७	इति अहिताग्नेराश्वलायनोक्तमार्गेण दाह प्रयोग ·· · ··· ·········· ··· ·········· ···स० १७५७ पौष सुद ७ रवौ
३३ × १२ ५ सें० मी०	१७ (१–१७)	११	४५	पू०	प्राचीन	इति विश्वनाथ कृति सपूर्णं शुभमस्तु ॥
२३ ६ × ११·२ सें० मी०	४ (१–४)	६	२४	पू०	प्राचीन	इति दिव श्येनय समाप्ता ॥
१७ ३ × ६ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२६	पू०	प्राचीन	इति दीक्षाविधान सपूर्णं शुभभवति ॥
२६ ६ × १२·१ सें० मी०	२	६	३६	पू०	प्राचीन	शुभ इति
२० ३ × १०·८ सें० मी०	२ (१–२)	१२	२७	पू०	प्राचीन सं०१८२४	इति दोप श्राद्ध प्रयोग ॥ सं०१८२४॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३९५	४०७६	दीपश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
३९६	२६६८	दुर्गा जंत्र विधि			दे० का०	दे०
३९७	१२६१	दुर्गापाठ विधि			दे० का०	दे०
३९८	६५६	दुर्गा पूजा			दे० का०	दे०
३९९	२८७०	दुर्गा पूजा			दे० का०	दे०
४००	१२००	दुर्गापूजा विधि			दे० का०	दे०
४०१	२०१०	दुर्गापूजा विधि			दे० का०	दे०

पत्ता या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५.१×९.६ सें० मी०	२	१०	२४	अपू०	प्राचीन	
१३.३×९.२ सें० मी०	२ (१-२)	७	२२	अपू०	प्राचीन	
१८.८×९.५ सें० मी०	४	७	२५	पू०	प्राचीन	इति दुर्गापाठ विधि समाप्तिमगात् ॥
१५×८ सें० मी०	३६ (१-३६)	५	२१	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
२२.८×८.६ सें० मी०	१	७	४०	अपू०	प्राचीन	
२१.८×८.५ सें० मी०	६	६	३४	अपू०	प्राचीन	
२१×१५ सें० मी०	२३	१३	३०	अपू०	प्राचीन	

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४०२	१६४२	दुर्गाप्रतिष्ठान विधि			दे० का०	दे०
४०३	५६६८	दुर्गाहवन पद्धति			दे० का०	दे०
४०४	१६११	दुर्गार्चन विधि			दे० का०	दे०
४०५	३७७०	दुर्गोत्सव पूजा			दे० का०	दे०
४०६	३२६१	दुर्गोत्सव पूजा पद्धति			दे० का०	दे०
४०७	६३६३	दुष्ट रजोदशन शांति			दे० का०	दे०
४०८	५१५२	दुष्ट रजोदर्शन शांति			दे० का०	दे०

पत्ता या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६.२×१२.६ सें० मी०	[illegible]	११	३१	पू०	प्राचीन	इति दुर्गा गायत्री ॥ अथपूजाप्रोहकोणेषु ॐ गणेशायनम ॥ ....
११.६×११.६ सें० मी०	११ (४-७,१०, २६-३१)	६	१६	अपू०	सं०१६२४	इति दुर्गा हवन पद्धति समाप्तम् शुभमस्तु सं० १६२४ मास फाल्गुण कृष्ण ६ वासर गुरु ... ।
१६×१४.८ सें० मी०	५ (१-५)	११	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्री सूरि श्री पति जं कृष्ण विरचिता भगवति पद्म पुष्पांजलि स्तव समाप्तम् । स० ३६ सु० ११ भौ० ॥
२१.८×११.२ सें० मी०	१० (१-१०)	१०	४३	अपू०	प्राचीन	
२७.६×११.६ सें० मी०	४३ (८-५०)	६	३६	अपू०	प्राचीन सं०१८७६	इति श्री शारदीय नवरात्रि प्रतिपदारभ्य विजय दशमी पर्यंत श्री दुर्गोत्सवादि चंडी पूजन पद्धति विधि संपूर्ण समाप्त शुभ भवतु मंगल ददातु श्री सं०१८७६ शाके १७४४ श्रावणे मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ४ चंद्रवासरे ।
१६.२×८.२ सें० मी०	६	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति दुष्ट रजोदर्शन शांति समाप्त ॥ शुभ भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥
२४.४×१०.४ सें० मी०	८	११	३७	अपू०	प्राचीन सं०१८०६	इदं दुष्टरजोदर्शन शांति समाप्ता ॥ इदं पुस्तक चंद्रभट्टस्य ॥ सं० १८०६ शाके १६७० कार्तिक व ८ समाप्त ॥

(सं०सू० २८)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४०६	७४१०	देव प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
४१०	१६४५	देवप्रतिष्ठा देवमूर्ति देवालय निर्माण विधि			दे० का०	दे०
४११	१४६२	देवप्रतिष्ठा प्रयोग			दे० का०	दे०
४१२	६२०६	देवयाज्ञिक क्रिया निबंध			दे० का०	दे०
४१३	१२५०	देवपूजा			दे० का०	दे०
४१४	४६४६	देवार्चन पद्धति			दे० का०	दे०
४१५	६४१६	द्वादशाब्दादूर्ध्वं मिलन शांति विधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१५·८ × १२·१ सें० मी०	५ २–६	६	१६	अपू०	प्राचीन	
२६·५ × १३ सें० मी०	२ १–३	८	३०	अपू०	प्राचीन	
१७·५ × १०·५ सें० मी०	२४	८	१७	अपू०	प्राचीन स०१८८६	इति देवप्रतिष्टा प्रयोगमल सपूर्णं नामयात् १८८६ ।
३४·७ × १३·५ सें० मी०	११० १–११०	६	४७	पू०	प्राचीन स०१६२३	इति दाहादिकर्मकर्तृ निर्णय भर्तु-श्राद्ध पचमेह्नि कुर्या रजस्वला पुत्र स्त्रिोः प्रकुर्वीत मृताह्नि शुचेर्यत ।। देवयाज्ञिक क्रिया निबध समाप्त ।। स०१६२३वै० शुक्ल १५ रवीवासरे।
२४·७ × १६·५ सें० मी०	३	१२	२२	पू०	प्राचीन	
२२·२ × ११ सें० मी०	१६ (५०–६८)	१०	३३	अपू०	प्राचीन	
१६ × ६·८ सें० मी०	१	८	३०	पू०	प्राचीन	इति द्वादशाब्दादूर्ध्वमिलन विधि ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१६	३२०२	द्वादशाह			दे० का०	दे०
४१७	२८२७/५	धनदापद्धति-			दे० का०	दे०
४१८	१४७८	धनेश्वरी पूजाविधि			दे० का०	दे०
४१९	६४६२	नक्षत्रेष्टिप्रयोग			दे० का०	दे०
४२०	१९३९	नवग्रह पूजा			दे० का०	दे०
४२१	६६०७	नवग्रह मंत्र			दे० का०	दे०
४२२	४५३७	नवग्रहमखप्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२ ८ × ९ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	३८	पू०	प्राचीन सं० १७६२	इति द्वादशाह समाप्त ॥ शिव शिवश्चरी वर्त्तु ॥"' '''संवत् १७६२ शाके १६२७ फाल्गुन कृष्ण अमावस्याया भीष्मदेवेन लिखित श्री ॥
१५ ८ × ६ २ सें० मी०	६३	७	१६	पू०	प्राचीन	इति पद्धतिग्रनदार्थ संपूर्णम् ॥
१८ × ११ ८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२०	पू०	प्राचीन सं० १६०६	इति श्री तंत्रसारे धनेश्वरी पूजाविधि समाप्त । शुभ सम्वत्सरा १६०६ शाके १७७४'''''''''
२५ × ११ ७ सें० मी०	१६ (१–१६)	१२	४६	पू०	प्राचीन (कृमि-कृन्तित)	इद पुस्तक गावल्युपनामदाद भट स्वामिक नक्षत्रेष्टि प्रयोगस्य । पत्र १६ ग्रंथ संख्या ६८४ ''''''
२४ ८ × १२ सें० मी०	८ (१–८)	८	२१	पू०	प्राचीन सं० १६२०	इति नवग्रह समाप्त शुभमस्तु '''''' संवत् १६२० मिति कार्तिक बदि ३ गुरो वासि या पुस्तक राम नवग्रहे ॥
२४ ७ × १० ५ सें० मी०	१	८	४६	पू०	प्राचीन	इति नवग्र यत्र संपूर्ण ॥
२४ १ × १३ ३ सें० मी०	३६ (१–३६)	८	२७	पू०	प्राचीन सं० १८४०	इति श्री स्थनारायणविधि नवग्रह मत्र प्रयाग समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥'''''' संवत् १८४० क नामसमय नामतौर शुक्ल पर्व १२ रविवासर विरसिंघपुर ग्राम पुस्तक लिखित मौरोग्या ॥ पद्द लिवारा धातु पठनाय ॥ रामनमः

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२३	२१४०	नवग्रहमखप्रयोग			दे० का०	दे०
४२४	४७७२	नवग्रहहोमविधि			दे० का०	दे०
४२५	४६५६	नवग्रहहोमविधि			दे० का०	दे०
४२६	६४१०	नव ग्रही होम			दे० का०	दे०
४२७	३६४६	नवरात्रविधि			दे० का०	दे०
४२८	२७७३	नवान्नेष्टि			दे० का०	दे०
४२९	३२३६	नवार्णविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२०.५×१०.५ सें० मी०	३६	६	२१	अपू०	प्राचीन सं०१७८०	
३०.३×१२.४ सें० मी०	१५ १–१५	१०	४२	पू०	प्राचीन सं०१८७७	इति श्री नवग्रह होम सर्वश विधि समाप्तम् शुभ सम्यत्सरा १८७७ साके १७४२ समयभाद्र शुक्ल २ शनिवासरे रघुवर रामेण लेखि ॥
२१.२×८.८ सें० मी०	४ (१–४)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति ग्रह होम विधि ग्रहा + + + + सं०१८६० ॥
२१.४×७.८ सें० मी०	१८ (१–१८)	८	४२	पू०	प्राचीन	
२३.६×१०.८ सें० मी०	२५ (१–२५)	६	२४	पू०	प्राचीन	इति शारद नवरात्र विधि संपूर्णा × × × × ॥
१६.६×१३.२ सें० मी०	३ (१–३)	११	२०	पू०	प्राचीन	इति नवान्येष्टि ॥
१७.२×८.६ सें० मी०	३ (१–३)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति नवार्ण विधि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३०	३०२५	नांदीमुखश्राद्ध			दे० का०	दे०
४३१	२२२१	नांदीमुखश्राद्ध			दे० का०	दे०
४३२	१६२	नांदीमुखश्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
४३३	३०३७	नांदीश्राद्ध-मातृकापूजन			मि० का०	दे०
४३४	२७५५	नागबलि विधि			दे० का०	दे०
४३५	२७६४	नारायण बलि			दे० का०	दे०
४३६	२५३७	नारायण बलि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२७ ७ × १० ३ सें० मी०	१०	७	३३	अपू०	(खडित)	
३२ × १३ १ सें० मी०	७ (१–७)	१०	४६	पू०	प्राचीन स०१८१८	श्री कृष्णायनमोनम सवत्सराष्टादश शतेषु १८ द्विनवतींवर्तमानेऽस्मिन कार्तिक कृष्णत्रयोदश्या भौमवासरे इद लिपिकृत हरिसिंहात्मजेन हरदयालु नावडोतमध्येस्वस्यपठनकर्मानुसारेणशुभ-मगलादि भूयात्न: ॥
१६ ३ × ११ ५ सें० मी०	३६ (१–३६)	१०	१८	पू०	प्राचीन स०१९१६	इति नादी मुख श्राद्धपद्धति समाप्तम् ॥
१८ × १० सें० मी०	२५ (१–२५)	८	२१	पू०	प्राचीन	इति सपूर्ण । उमाकांत दीक्षित···
२३ × १० ५ सें०मी०	११	७	२२	पू०	प्राचीन स०१९२८	इति शौनक प्रोक्त नागबलि विधान पूर्ण ॥ सवत १९२८ माघबद्य ११ चद्रवासरे । लि० लालजी दुबे अल स्वार्थ परमार्थ ॥
२३ २ × १० ५ सें०मी०	९	७	२४	पू०	प्राचीन	इति नारायण बलि समाप्त ॥
२ ५३ × १५ ७ सें० मी०	८२ (१–८२)	२०	१९	पू०	प्राचीन	इति नारायण बलि कर्म समाप्तम् श्री शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३७	४४०४	नारायणबलि			दे० का०	दे०
४३८	११०४	नारायणबलि			दे० का०	दे०
४३९	१८०५	नारायणबलि पद्धति			दे० का०	दे०
४४०	२५९	नारायणबलि पद्धति			दे० का०	दे०
४४१	१७९	नारायणबलि प्रयोग				
४४२	१२६६	नारायणविधि			दे० का०	दे०
४४३	३१५/२	नारायणबलि विधान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	९	१०	११
१६.७×११.४ सें० मी०	६	१०	२४	अपू०	प्राचीन	
१६.६×१३ सें० मी०	७६ (१–७६)	८	१८	अपू०	प्राचीन	
१६.६×१२.४ सें० मी०	५ (१–३, ७–८)	१८	२३	अपू०	प्राचीन	इति नारायणीवल (नारायणबलि) संपूर्ण शुभ ॥
२६×१७.५ सें० मी०	२४	२७	१८	पू०	सं०१६४५	इति नारायणीर्वलि पद्धति समाप्ता ॥ श्री ॥ सं० १६४५ भाद्रपद शुक्ल द्वितीयायां बहेड़ो नगरे ग्रामध्ये विश्रामे तिलक रामेण लेखित शुभ भूयात् ॥ रामकृष्ण ॥
१३.५×८.२ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	१६	पू०	प्राचीन	इति नारायण बलि प्रयोग ॥ एताव द्विस्तरावेत्तो प्रयोगशक्तौ बौधायनी ॥
२२.६×१५ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	१६	पू०	प्राचीन सं०१६२६	इति ... नारायणविधि समाप्तम् संवत् १६२६ ज्येष्ठ शुक्ला ८ ॥
१७.७×११.८ सें० मी०	१८ (१–१८)	१५	१२	पू०	प्राचीन सं०१६२१	....नारायणि बलि भार्या इति मत्येश पूजन विधि समाप्तिम् गात् लिखित पचौलिमहताव सं० १६२१ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४४	१६०८	नित्यकर्म			दे० का०	दे०
४४५	१६१२	नित्यकर्म प्रयोग			दे० का०	दे०
४४६	३२२२	नित्यपूजा-जप विधान			दे० का०	दे०
४४७	७१५७	नित्यपूजा विधि			दे० का०	दे०
४४८	३३६६	नित्यश्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
४४९	१४८८	नित्य स्नान विधि			दे० का०	दे०
४५०	५८१४	निर्णय चिंतामणि	विष्णुशर्म		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३.५ × ८.५ सें० मी०	२	१०	१६	अपू०	प्राचीन	
२६.५ × १२.७ सें० मी०	४	८	३५	अपू०	प्राचीन	
११ × ६.२ सें० मी०	४ (२–५)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति नित्य पूजादिजपविधान समाप्तं उआरमेकरहस्फपनाम्ना जनार्दनेनलिखित ॥
१४.५ × ११.३ सें० मी०	३	१४	६०	अपू०	प्राचीन	

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५१	५६६५	निर्णयसार	राघवभट्ट		दे० का०	दे०
४५२	६६०	नीलोद्वाह विधि			दे० का०	दे०
४५३	६८६४	नैष्ठिकत्व प्रयोग			दे० का०	दे०
४५४	७३४२	नैष्ठिक प्रयोग			दे० का०	दे०
४५५	२६३७/१२	न्यासतिलक	वेदांताचार्य		दे० का०	दे०
४५६	२६३७/१२	न्यासदर्पण			दे० का०	दे०
४५७	२६३७/१२	न्यासार्थमति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ × ११ सें० मी०	६ (१–६)	११	४८	पू०	प्राचीन स०१८६५	इति राघव भट्ट विरचिते निर्णयसारः समाप्त ॥ ······ सं० १८५६ शक १७२३ लिखित ······ ॥
२३ × १०.२ सें० मी०	१८ (१–१८)	१२	३४	पू०	प्राचीन	इति भगवत्य पुराणे शौनकोश्वनीलोत्सर्गविधि (१) समाप्तः ॥ शुभमवतु ॥ ···
२३.३ × १०.१ सें० मी०	६ (१–६)	११	३५	पू०	प्राचीन	इति नेष्टृत्व प्रयोग समाप्त ॥
१५.८ × ७.६ सें० मी०	१३ (१, ३–१०, १३–१६)	७	२१	अपू०	प्राचीन	अथ साख्यायनसूत्रिय नेष्टृ प्रयोगः ॥
१३.१ × ८ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री वेदांताचार्य विरचितायां न्यासतिलक संपूर्ण श्री मोरामानुजायनमः ॥
१३.१ × ८ सें० मी०	३ (१–३)	७	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री न्यासविंशति संपूर्ण ॥
१३.१ × ८ सें० मी०	१४ (४–१७)	६	१२	पू०	प्राचीन	इति न्यास विवृति संपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५८	४७६५	न्युब्जपादजनन शान्ति			दे० का०	दे०
४५९	६५७	पचक मरण विधि			दे० का०	दे०
४६०	१८६५	पचकविधान			दे० का०	दे०
४६१	१७३५	पंचकविधान			दे० का०	दे०
४६२	२०४६ / ६	पचकविधान			दे० का०	दे०
४६३	२३४५	पचकविधान			दे० का०	दे०
४६४	८००	पचकविधान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३४×१०३ सॅं० मी०	२ (१-२)	१०	१६	पू०	प्राचीन	इति नारदोक्त न्युब्जपादप्रभृति जनन शांति ॥ हे पुस्तक सदासीव भट दुधोडकरेण लिखित वाचितार्थ विजई भव ॥ शुभ भवतु ॥
३११×१५१ सॅं० मी०	२३ (१-२३)	१३	३६	पू०	प्राचीन	इति पचकर्मण विधि समाप्त ॥ लिप्यत देविसाहाय विद्यार्थी ...... नक्षत्रे योगे च शुभगाभवेत् ॥
३०८×१३४ सॅं० मी०	४ (१-४)	१२	३४	पू०	प्राचीन सं०१९०२	इति पचकविधान समाप्त ॥ सवत् १९०२ मासोतम मासे श्रावणमासे शुक्ल पक्षे शुभतिथौ दशम्या बुधवासरे ॥
१४७×१०२ सॅं० मी०	८	१०	२०	पू०	सं०१९०१	इति पचक विधान समाप्त सवत् १९०१ कार्तिक ....
१६७×११३ सॅं० मी०	१	१६	१६	अपू०	प्राचीन	
१७२×१२३ सॅं० मी०	७	६	१५	अपू०	प्राचीन	
२७६×१२५ सॅं० मी० (सं०मू०३०)	३	१२	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६५	४४६	पचक विधि			दे० का०	दे०
४६६	३५११	पंचक विधि			दे० का०	दे०
४६७	४१८९	पचक शान्ति			दे० का०	दे०
४६८	६४३५	पंचक शांति			दे० का०	दे०
४६९	७९१	पंचक शाति			दे० का०	दे०
४७०	९०२	पचकशाति विधि			दे० का०	दे०
४७१	६९७५	पचगव्य विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१×९२ सें० मी०	४ (१–४)	१४	४६	पू०	प्राचीन सं०१८१२	(क्रमिकृतित) इति ब्रह्मपुराणोक्तमस्ति इच्छाचे-त्कर्तव्य । अकृतेन दोष । इति पंचक विधि ।
१६१×९५ सें० मी०	६ (१–६)	६	२२	अपू०	प्राचीन	इति पंचक विधान समाप्त ॥ (पृ० ५)
२७८×१० सें० मी०	३ (१–३)	८	३८	पू०	प्राचीन	इति सामग्री समाप्तम् शुभमस्तु ॥
२१५×९३ सें० मी०	२ (१–२)	१०	४०	पू०	सं०१८०१	इति ब्रह्माडपुराणोक्त पंचक शांति समाप्त ॥ " ॥संवत १८०१ मासे जेष्ठासिते पक्षे द्वादशी मंदवासरे ॥ " "॥
२६५×११ सें० मी०	५ (१–५)	६	२७	अपू०	प्राचीन	
२४३×९६ सें० मी०	४ (१,३–५)	८	४३	अपू०	प्राचीन	शेष पंचकशांतिवत् ॥
२२१×१३५ सें० मी०	२ (१–२)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति पंचगव्य विधि समाप्तम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७२	५१८८	पंचगव्य विधि			दे० का०	दे०
४७३	१७६७	पंचपातकनाशन विधि			दे० का०	दे०
४७४	७८६६/४	पंचसंस्कार			दे० का०	दे०
४७५	२६५२	पंचायतन पूजा			दे० का०	दे०
४७६	४२४१	पंचीकरण	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४७७	७२३८	यतिदेह संस्कार			दे० का०	दे०
४७८	६७६३	परमहंस दीक्षाग्रहण विधि	विश्वेश्वर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८.६×१३.२ सें० मी०	१	१२	२४	पू०	प्राचीन	इति पंचगव्य विधि समाप्तम् ॥
१५×८ सें० मी०	४	८	२१	अपू०	प्राचीन	
१०.५×७.७ सें० मी०	२ (९९–१००)	७	११	अपू०	प्राचीन	इति पंचसंस्कार संपूर्ण ॥
(१५.१×१०.८) सें० मी०	१२ (१–१२)	८	१८	पू०	प्राचीन	श्री वासुदेवाय नम इति पुस्तक समाप्त ॥
२९.२×१२.८ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्यं श्रीमद्भगवद्गोविंदपादपूज्यशिष्य श्रीमच्छंकराचार्य्यं विरचित पंचीकरण संपूर्णं शुभमस्तु :
१७.६×१०.४ सें० मी०	४	११	३०	अपू०	प्राचीन	
३४.५×१३.६ सें० मी०	७६ (१–७६)	१२	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वेश्वरविरचित परमहंस दीक्षा ग्रहण विधि समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७६	३२१६	परायणक्रम विधि मूल वाक्य			दे० का०	दे०
४८०	६४२१	पर्यंकखट्वासनादि भग (अद्भुतसावार) शांति			दे० का०	दे०
४८१	६००४	पल्लीपतन शांति विधान			दे० का०	दे०
४८२	६५०७	पवित्रेष्टि			दे० का०	दे०
४८३	६४७०	पवित्रेष्टि होत्र			दे० का०	दे०
४८४	६७०६	पशुबंध प्रयोग			दे० का०	दे०
४८५	११९२	पात्रशोधन			दे० का०	१

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य ज्ञातव्य विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१८×८६ सें० मी०	२६ (१–२६)	६	३१	पू०	प्राचीन	इति परायणक्रम विधि मूलवाक्यानि ॥ समाप्तश्चायं ग्रंथ ।
१६७×७४ सें० मी०	४ (१–४)	७	२६	पू०	प्राचीन	इति अद्भुतसागरे पर्यं वत्सद्वागादि-भग शांति समाप्ता ॥······
२७१×११५ सें० मी०	२ (१–२)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री वसंतराजे गर्गोक्त पल्ली-शरटयो शांति विधान संपूर्णम् ॥
२२५×६२ सें० मी०	२ (१–२)	१०	४०	पू०	प्राचीन	प्रतिष्ठते परिवेष्टि: ॥
२२×१०२ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२६	पू०	प्राचीन	
२३ × ६५ सें० मी०	२२ (१–२२)	८	४१	पू०	प्राचीन	
२२×११–१ सें० मी०	४ (१–४)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मपात्रे शोधन संपूर्ण शुभम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४८६	४७१७	पार्थिव गणेश पूजन पद्धति			दे० का०	दे०
४८७	४३८५	पार्थिवपूजन			दे० का०	दे०
४८८	३०५०	पार्थिव (लिंग) पूजन			दे० का०	
४८९	९५००	पार्थिव पूजनविधि			दे० का०	
४९०	७३८७	पार्थिव पूजा			दे० का०	
४९१	७८२९	पार्थिवपूजा			दे० का०	
४९२	२१८४	पार्थिवपूजा			दे० का०	

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८.७ × ११.७ सें० मी०	३ (१–३)	१०	६०	पू०	प्राचीन	इति श्री गणेशपुराणे उपासनाखंडे पार्थिवगणेशपूजन पद्धति समाप्ता ॥
१७.७ × १७.७ सें० मी०	१२ (१–१२)	१४	२०	अपू०	प्राचीन	अथ पार्थिवपूजन निरुच्यते ॥ ... (प्रारम्भ) × × ×
१५.३ × ७.५ सें० मी०	४ (६,११–१३)	७	१६	अपू०	प्राचीन	
१७.२ × ७.६ सें० मी०	४	८	२६	अपू०	प्राचीन	
१४.४ × १०.४ सें० मी०	७ १–७ (शेष फुटकलपत्र)	७	१५	पू०	प्राचीन सं० १६२६	पार्थिवपूजा अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्थागतो × × समता १६२६ ×
२३.१ × ११.५ सें० मी०	१० १–१०	८	२३	अपू०	प्राचीन	
२०.५ × ११ सें० मी०	६	६	२५	अपू०	प्राचीन	इति पार्थिवपूजा समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६३	६०२६	पार्थिवपूजा			दे० का०	दे०
४६४	५४७३	पार्थिवपूजाप्रकार			दे० का०	दे०
४६५	१२५४	पार्थिवपूजाविधान			दे० का०	दे०
४६६	४६५६	पार्थिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
४६७	३४५०	पार्थिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
४६८	२०३६	पार्थिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
४६९	४८४४	पार्थिवपूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्ता या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१६×११ सें० मी०	५ (१–५)	९	१९	पू०	प्राचीन	इति पूजा कुर्यात ॥
३१२×१२ सें० मी०	८ (१–८)	१५	५०	पू०	प्राचीन	इति लिंगपुराणे पार्थिवलिंगोद्यापन संपूर्णम ॥
२२×११ सें० मी०	८ (६–१३)	१२	३८	अपू०	प्राचीन सं०१९५७	इति पार्थिवपूजाविधान समाप्तम सं० १९५७ तत्रवर्षे चैत्रमासे शुक्ले पक्ष तिथौ तृतीया ३ भृगु० दिने लिपत पाडपु स्यालमे ठोचिरनवद मध्ये ॥ शुभमस्तु मगल ददात ॥ श्री०
२१७×८८ सं० मी०	३ (१–३)	६	२७	पू०	प्राचीन सं०१८६०	इति शिवपार्थिव पुजन समाप्तम शुभस्तु ॥ इति शिवायनम ॥ सम्वत १८६० शाके १७२५ समये ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्ष द्वि ॥
१३८×७२ सें० मी०	७ (१–७)	७	१९	पू०	प्राचीन	इति पार्थिवपूजा विधि
१९६×६७ सें० मी०	७ (१–७)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति पार्थिव विधि समाप्त शुभमस्तु ॥
२३६×६४ सें० मी०	९ (२–१०)	८	३३	अपू०	प्राचीन सं०१८७०	इति श्री सकल सारोद्धार पार्थिव पूजा-विधि समाप्तम् शुभ सम्वत्सरा १८७० साके सालिवाहनस्य गतसमा १७३५ समय श्रावण + + + +

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५००	६६८	पार्थिव महापूजा			दे० का०	दे०
५०१	२६००	पार्थिव लिंग पूजन			दे० का०	दे०
५०२	५४४८	पार्थिवलिंग पूजा उद्यापन विधि			दे० का०	दे०
५०३	३३०७	पार्थिवलिंगपूजा विधि			दे० का०	दे०
५०४	५६७३	पार्थिव विधान			दे० का०	दे०
५०५	७५८७	पार्थिवार्चन विधि			दे० का०	दे०
५०६	७६३	पार्थिवेश्वर चिन्तामणि			दे० का०	दे०

पत्ता या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२×१४.५ सें० मी०	८	१४	३४	पू०	सं०१९११	इति सं० १९११ लिखित मुरलीधर श्रोतसत श्री ॥
१०×६ सें० मी०	१६	६	१३	अपू०	प्राचीन	
२१.२×१०.५ सें० मी०	१५ (१ १५)	९	३२	पू०	सं०१८२७	इति लिंगपूजा उद्यापण विधि समाप्त सिवापण संवत १८२७ शाके शोरासै १६९२ विप्रण विसतिकाया ··· ·
२१.६×१० सें० मी०	१३ (१–२ ४–१४)	९	२७	अपू०	प्राचीन सं०१८२८	इति लिंग पूजा उद्यापण विधि समाप्त सिवापण संवत १८२८–१६९३ वैशाष वदि ३ गणेस लिषत गोविंद पारम दुव ॥
१५.८×९.६ सें० मी०	८ (१–८)	८	१९	पू०	प्राचीन सं०१७८६	इति पार्थिव विधान समाप्तम् ॥ सवत् १६२१ साके १७८६ मिति माघ वदि ॥ भौमवासरे × × × × ॥
२६.३×११.३ सें० मी०	३ (१–३)	१७	४८	पू०	प्राचीन	इति पार्थिवार्चन विधि ॥
२०.६×१०.७ सें० मी०	४ (१–४)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति तर्पनम ॥ ॐ नम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रावत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०७	७०६२	पार्थिवेश्वरमन्त्र विधि			दे० का०	दे०
५०८	३३९	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०
५०९	५५५०	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०
५१०	५३२६	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०
५११	३३१६	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०
५१२	२४८६	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०
५१३	४०६१	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७८×१० सें० मी०	२ (१–२)	७	२१	अपू०	प्राचीन	
३२१×११'४ सें० मी०	६ (१–६)	७	२६	पू०	प्राचीन सं०१९५५	इति पार्वणश्राद्ध संपूर्णं शुभ संवत् सो आश्विनमासे कृष्ण पक्षे पौर्णमाया १५ रविवासरे सवत् १९५५ इद पुस्तक क्वलचद शुभमस्तु ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥१॥
२२८×१०'४ सें० मी०	२१ (१–२१)	९	२८	पू०	प्राचीन	इति पार्वणश्राद्ध संपूर्णं + + + + + + + अस्तु परिपूर्णमस्तु मार्ग शीर्ये शुक्लपक्षे तु पचम्या रविवासरे लिपत प्रयाग मध्ये तु० ग० पाठ द्विजोत्तमः ॥ स्वार्थ परार्थ शुभमस्तु ॥ संवत् १९०७ ॥
२४८+१०'९ सें० मी०	४ (१–४)	११	४६	अपू०	प्राचीन	
२३×१४३ सें० मी०	१३ (१–१३)	८	१९	अपू०	प्राचीन	इत्येका पार्वण श्राद्ध समाप्त. ।
२०२×९'२ सें० मी०	७ (२–८)	७	२४	अपू०	प्राचीन सं० १९२२	इति पार्वण श्राद्ध संपूर्ण शुभ सवत्सरे कारतिक् मासे शुक्ल पक्षे ''' सवत् १९२२ इद पुस्तक लिप्यते गौरीदत्त शुभमस्तु ओ नम शिवाय ॥
१७×१०३ सें० मी०	२१ (३–२३)	१०	२३	अपू०	प्राचीन सं०१९६७	इति पार्वण श्राद्ध सपूर्णं सवत् १९६७ भाद्र शुक्ले १० वृद्धे ''' ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५१४	१८४४	पार्वणश्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
५१५	५५०६	पार्वणश्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
५१६	६३८०	पार्वणश्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
५१७	३८६६	पार्वणश्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
५१८	६११७	पार्वणश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
५१९	६६७६	पार्वणश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
५२०	५७७६	पार्वणश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४.६×१०.३ सें० मी०	२० (१–२०)	१०	१६	पू०	प्राचीन	इति पार्वण श्राद्ध पद्धति समाप्तम ॥ " " आसाढ मासे कृष्णपक्षे शुभतिथौ ४ रविवासरे सवत् १८८६ ॥ साके १७५४॥ लिखत कन्हैया लाल ॥
२४.५×१०.७ सें० मी०	१० (१–१०)	११	३१	पू०	प्राचीन	इति पार्वण श्राद्ध सपूर्ण ।
२०.८×६.७ सें० मी०	२ (१–२)	६	२४	अपू०	प्राचीन	
२१.५×७.६ सें० मी०	१२ (१–१२)	७	३५	अपू०	प्राचीन	
२०.२×६ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति पार्वण श्राद्धविधि सपूर्ण ॥
२५×६.५ सें० मी०	६ (१–६)	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति पावण श्राद्ध विधि समाप्ता॥ × × × × ।
१६.५×१६ सें० मी०	८ (१–८)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
(सं०पू० ३२)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२१	३४२०	पार्वणश्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
५२२	५०५४/१५	पार्वण श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
५२३	४६२४	पार्वण श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
५२४	१३३२	पार्वण श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
५२५	७४८	पार्वण श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
५२६	५६६१	पिंडदानम्			दे० का०	दे०
५२७	१५०८	पिंडदानम्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·२ × १० सें० मी०	१२ (१-१२)	८	२५	पू०	प्राचीन सं० १८१५	गया श्राद्ध फलमस्तु ॥ सम्वत् १८१५ ॥ भाद्र बहुलोप पक्षातिथेपु नवमी तथा ॥ रविवार मुहूर्तामा लिखित हुनाशिस्तथा ॥
१६ × ७.८ सें० मी०	१४३	६	२४	पू०	प्राचीन सं० १८९६ शाके १७६१	इति पार्वणि श्राद्धपद्धतिः समाप्त शाके १७६१ माघ सुदि ६मीमेष ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२८	१२८२	पिंडदानम्			दे० का०×	दे०
५२९	१५५५	पिंडदान विधि			दे० का०×	दे०
५३०	७०२८	पिंडदान विधि			दे० का०	दे०
५३१	६५२८	पिंडपितृयज्ञ			दे० का०	दे०
५३२	६५३२	पिंडपितृयज्ञ			दे० का०	दे०
५३३	६५३३	पिंडपितृयज्ञ			दे० का०	दे०
५३४	६५२६	पिंडपितृयज्ञ			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ × १३ सें० मी०	२५ (१–२५)	१४	१२	अपू०	प्राचीन	
२३ × १४ सें० मी०	१८	२०	२२	अपू०	प्राचीन	
१६.२ × १३.८ सें० मी०	१५ (४–१८)	१४	१५	अपू०	प्राचीन	
२०.४ × ८.६ सें० मी०	६ (१–६)	८	२४	पू०	प्राचीन	
१५.३ × ८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति पिंडपितृयज्ञ ॥
१६.५ × ७.३ सें० मी०	२ (१–२)	८	४५	पू०	सं०१८३४	इति पिंडपितृयज्ञः समाप्त ॥ संवत् १८३४ श्रा० कृ० ३ र० ॥
२१.३ × ८ सें० मी०	३ (१–३)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति पिंडपितृयज्ञ समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५३५	२७५७	पितृकर्म			दे० का०	दे०
५३६	६४४१	पिपीलिका शांति			दे० का०	दे०
५३७	७३१२	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५३८	४२५४	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५३९	४६६०	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५४०	६६६०	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५४१	७७०४	नांदीश्राद्ध प्रयोग पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ स	८ द	९	१०	११
२७.६ × ११.८ सें० मी०	६ (१–६)	८	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री संहितायाम्पाठे पितृकर्म्म संपूर्णम् ॥
२२.४ × ९ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३०	पू०	सं० १९९९	॥ एक खण्डम् ॥ गोविंद ज्योतिर्विसुत माधवेन लिखितेयं शांति ॥ संवत् १९९९ ज्येष्ठ शुद्ध १५ बुधे ॥
२५.५ × १०.९ सें० मी०	२४ (१–२४)	६	२२	पू०	प्राचीन	
२१ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	७	२६	पू०	प्राचीन	
१२.७ × ८.३ सें० मी०	१७ (२–१०, १२–१९)	८	१८	अपू०	प्राचीन	इति पुण्याहवाचन संपूर्णं ॥.........
१६.७ × ८.७ सें० मी०	१२ (१, ३–५, १२, १५–१७ १९–२२)	७	२२	अपू०	प्राचीन	
१६.६ × ८ सें० मी०	१८ (१–१८)	७	३०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या संग्रह विशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५४२	५३९३	पुत्तलविधान			दे० का०	दे०
५४३	४३८८	पुत्तलविधान			दे० का०	दे०
५४४	७५२०	पुनराधेयप्रयोग			दे० का०	दे०
५४५	७०७७	पुनराधेयप्रयोग			दे० का०	दे०
५४६	६४१६	पुनर्लिङ्गप्रतिष्ठापन-विधि			दे० का०	दे०
५४७	४३२७	पुरश्चरण चंद्रिका	देवेन्द्राश्रम		दे० का०	दे०
५४८	५३६	पुरश्चरण चंद्रिका	देवेन्द्राश्रम		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति मात्रा और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६.५×११ सें० मी०	६ (१–६)	१०	३०	पू०	सं०१६१२	इति पुतलविधान समाप्त'''लिपित दत्तरामेण पठनार्थं सवत् १६१२
३२×१२.४ सें० मी०	७ (१–७)	१०	४२	पू०	सं०१६०६	इति पुत्तलविधानसमाप्तम सं०१६०६ लिखित पचोली महतावसिह स्वात्मपठनार्थं ॥
२३×१०.६ सें० मी०	५ (१–५)	१२	५०	पू०	प्राचीन	इत्यनतदेव कृत्पुनराधेय समाप्तमगमत् ॥
२२.८×१०.६ सें० मी०	२ (१–४)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	
२१.१×६.५ सें० मी०	१	१०	३८	पू०	प्राचीन	इति बौधायन सूत्रोक्त पुनर्लिग प्रतिष्ठापन विधि समाप्ता ॥ सदाशिवभट्ट *बवीश्वरेण लिखित पुस्तक ॥ ''*
२६.१×१०.५ सें० मी०	२७ (१–२७)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	प्रणम्य जानकीनाथ देवेंद्राश्रमधीमता क्रियतेमत्रचद्राणपुरश्चरणचंद्रिका ॥ (प्रारम्भ) × × × ×
२३.८×१० सें० मी०	४८ (२–४६)	११	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री देवेन्द्राश्रमकृतायं पुरश्चरण चन्द्रिकासमाप्त शुभमस्तु श्रीरस्तु विद्याऽस्तु श्रीगणेशदेव ''
(सं०स० ३३)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५४९	४३८३	पुण्य स्नान विधि			मि० का०	दे०
५५०	२६०८	पूजनक्रम			दे० का०	दे०
५५१	५३८४	पूजनविधि			दे० का०	दे०
५५२	४०६३	पूजापद्धति			दे० का०	दे०
५५३	२८३	पूजापद्धति			दे० का०	दे०
५५४	२६६२	पूजापद्धति			दे० का०	दे०
५५५	४६६०	पूजाप्रकार			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	९	१०	११
२५.३ × ११.३ सें० मी०	७ (१–७)	७	३२	पू०	सं०१६६६	इति पुष्य स्नान ॥ सं० १६६६ पौष कृ० रवि वासरे वाशिवरो पाह्व काशिनाथ शर्मणा लिखितम् ॥
२०.६ × १४.१ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२५	पू०	प्राचीन सं०१८१७	इति पूजनक्रम समाप्तिमगात् श्री विक्रम शताब्दात् १६१७ मिथुनार्क ति] ५ रविवासर ।
२६.८ × १२.३ सें० मी०	११ (१–११)	१२	३२	अपू०	प्राचीन	
१३.६ × ११.३ सें० मी०	१२	८	१५	अपू०	प्राचीन	
१८.५ × १२.५ सें० मी०	१० (२–११)	६	१७	अपू०	प्राचीन	
१३.५ × ८.७ सें० मी०	१३ (४–१६)	६	२३	अपू०	प्राचीन	इति पूजापद्धति पटल समाप्त ॥
२७.६ × ११.५ सें० मी०	२ (१–२)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमद्भाष्करामादगे पूजा-प्रकार ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५५६	५३५६	पूजाविधि			दे० का०	दे०
५५७	५४०५	पूजाविधि			दे० का०	दे०
५५८	५२१	पूजाविधि			दे० का०	दे०
५५९	२१४८	पूजाविधि			दे० का०	दे०
५६०	१७०५	पूतनाविधान			दे० का०	दे०
५६१	६८३८	पूर्णमासप्रायश्चित्त	महादेव		दे० का०	दे०
५६२	६४२६	पूर्तकमलाकर	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
१६·४ × १०.२ सें० मी०	६ (१–६)	८	२४	पू०	प्राचीन	इति पूजाविधि समाप्तोयम् ॥
१६.६ × १२·७ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	२१	पू०	प्राचीन	कल्पसुत्रोक्त प्रकारेण पूजा विधिः समाप्त ॥
३० × १५.८ सें० मी०	३० (१–२१, २३–३२)	१२	३६	अपू०	प्राचीन	
२४.७ × १०.३ सें० मी०	३ (१–३)	८	३८	अपू०	प्राचीन	
१६·५ × ११ सें० मी०	१०	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति पूतनाविधान मालाया स्कंद पुराणोक्त भामिनीपीडा शमन विधान सपूर्ण ॥ श्री··· ··· ··· ··· ···
२२.१ × ८.६ सें० मी०	२८ (१–२)	१३	४३	पू०	प्राचीन	इति महादेव सोमयाजि विरचिते सत्याषाढीयहिरण्यकेशिसूत्र प्रयोगरत्ने दशपूर्णमास प्रायश्चितानि समाप्तानि ॥
२२·३ × १०.३ सें० मी०	४८ (१–४८)	८	२५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमीमांसकरामकृष्णभट्टात्मज महामहोपाध्याय कमलाकर भट्टकृत ऐंद्रीमहाशांति सहित. पूर्तकमलाकरः समाप्त ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या संग्रहविशेप की सख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६३	७४	पूर्त्त कमलाकर (जलज्ञानोपाय)	कमलाकरभट्ट		दे० का०	दे०
५६४	२५४	पूर्त कमलाकर	कमलाकरभट्ट		दे० का०	दे०
५६५	६५३०	पोतृत्व प्रयोग			दे० का०	दे०
५६६	६५२७	पोतृ प्रयोग			दे० का०	दे०
५६७	६४६३	पौंडरीक हौत्र			दे० का०	दे०
५६८	६४६८	प्रजाकामनेष्टि			दे० का०	दे०
५६९	२६५५	प्रतिष्ठा कर्म			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२५.२ × ११ सें० मी०	१२१ १–१२१	११	४०	पू०	प्राचीन	इति भट्टकमलाकर कृतो जलशान्तोपाय ॥
२६.२ × ११.२ सें० मी०	१३८	११	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री मीमांसक रामकृष्ण भट्टात्मज महामहोपाध्याय कमलाकरभट्ट कृत ऐंद्री महाशांति सहितो राज्याभिषेक प्रयोगश्च पूर्त्त कमलाकर समाप्तः सं० १८९४ मिती श्रावण सुदि १० शुक्रेका का राम राम राम
२०.४ × ८.४ सें० मी०	८ (१–८)	६	२८	पू०	प्राचीन	इत्यग्निष्टोमस्य पोतृत्व प्रयोग समाप्त ।।
२१.३ × ७.८ सें० मी०	४ (१–४)	११	४२	पू०	प्राचीन (सं०१६४३)	इति सस्थाजप । वतीर्येन निष्क्रम्य ॥ सतिष्ठते ज्योतिष्टोमो ज्योतिष्टोम ॥ सवत् १६४३ श्रावण वदि ·········
२२.५ × १०.४ सें० मी०	२६ (१–२६)	१०	३१	पू०	प्राचीन (सं०१७६५)	समाप्त पौंडरीक हौतम् ॥ सवत १७६५ पौष कृष्ण १ शनौ लिखित ॥
२०.७ × १०.३ सें० मी०	२ (१–२)	६	३२	पू०	प्राचीन (सं०१७६०)	लिखितमिद रामहृदस्य नीलकंठेन सवत १७६०
२६.७ × १५.५ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३६	पू०	प्राचीन (सं०१९२५)	इति प्रतिष्टानुक्रम ॥ लिख्यते गणेश शुक्लेन मार्ग वदी ११ सवत् १९२५

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७०	२६८७	प्रतिष्ठापद्धति			दे० का०	दे०
५७१	३३२८	प्रतिष्ठामयूख	नीलकंठभट्ट		दे० का०	दे०
५७२	४४०२	प्रतिष्ठामयूख	नीलकंठभट्ट		दे० का०	दे०
५७३	१६३१	प्रतिष्ठामयूख			दे० का०	दे०
५७४	७३	प्रतिष्ठामयूख	नीलकंठभट्ट		दे० का०	दे०
५७५	६२६	प्रतिष्ठामयूख	भट्टनीलकंठ		दे० का०	दे०
५७६	६१५/३	प्रथम स्नानविधि वाजसनेयिनाम्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२५.१ × ९.२ सें० मी०	११	१०	४६	अपू०	प्राचीन	
२६ × ९.९ सें० मी०	४६ (१–४६)	९	२७	पू०	प्राचीन सं०१९२८	इति श्री मीमांसकभट्ट नीलकंठकृते भास्करे प्रतिष्ठामयूखाष्टम सम्पूर्णमिति जेष्टवदी १३ बृहस्पतिवार संवत् १९१४ ॥
१८.४ × १२.३ सें० मी०	२० (३–२९)	१२	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री शंकरभट्टात्मज भट्ट नीलकंठेन कृते भास्करे प्रतिष्ठा मयूखोष्टम ॥
२८.६ × १४.३ सें० मी०	८	१२	३८	अपू०	प्राचीन	
२७.५ × १३ सें०मी०	३१ (१–३१)	१२	४१	पू०	प्राचीन सं०१८३७	शुभ भूयात् । इति श्री सेंगर वंश-वतंस श्री महाराजाधिराज भगवन्त देवाधिष्ट मीमांसक भट्ट शंकरात्मज नीलकंठ कृते प्रतिष्ठामयूखो नवमः ॥९॥... ...संवत् १८३७ शाके... मासानांमासे फाल्गुन मासे कृष्णपक्षे शुभ... ...सरे लिखित हरकुंवरराय मंडल नगरे ॥ शुभं ॥ नीलकंठ पाठार्थं ॥ शुभं ॥
२५.८ × ११.५ सें०मी०	३०	१२	३५	पू०	प्राचीन	इतिश्रीमदिस्रराधिप वंशावतंस श्री महाराजाधिराज मीमांसक शंकर भट्टात्मज भट्टनीलकंठेन कृते भगवंत भास्कर प्रतिष्ठा मयूखोष्टम ॥
१९.३ × ११.३ सें० मी०	२ (१–२)	१४	३०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७७	३८२१	प्रदीप पद्धति			दे० का०	दे०
५७८	४१५४	प्रधानपुरुष घटस्थापन पूजा			दे० का०	दे०
५७९	९६	प्रपन्नकंठाभरण	श्रीरामप्रसाद मिश्र		दे० का०	दे०
५८०	४५९३	प्रपन्नकंठाभरण	रामप्रसाद मिश्र		दे० का०	दे०
५८१	६७८४	प्रयोगचिंतामणि	अनंत भट्ट		दे० पा०	दे०
५८२	६६६७	प्रयोगपारिजात (षोडश कर्मकांड समावर्तन-प्रयोग)			दे० का०	दे०
५८३	३६३	प्रयोग रत्न (षोडश कर्मपद्धति)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.५ × ९.८ सें० मी०	१३ (२–१४)	१०	४८	अपू०	प्राचीन	
२५.४ × १५.२ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति प्रधानपुरुष पूजा समाप्ता ॥
२१.५ × १० सें० मी०	२१० (७–२१०)	८	२७	पू०	प्राचीन सं०१८६६	समाप्तेयमानुश्रमभक्तिका ॥ संवत् १८६६ शाके १७३१ ज्येष्ठे मासि भौमवासरे नवम्या तिथौ समाप्तोऽयं ग्रंथ ॥
३६.२ × ११.५ सें० मी०	१०२ (१,१,१,१–११,१३,३०–६८,६८,६६–७१,७१,७२–७५,७७–७६,१०१–१०२,१३१,१३४,१३६,१३७,१३७,१३८–१५७,१५७,१५८–१८६,१८८–१८६)	१४	५४	अपू०	प्राचीन	श्री मदनप्रसाद मिश्र विरचिते प्रश्नघटाभरणे सर्वेश्वरमंत्रग्रहणानन्दोत्सर्वनाम षष्ठ विरचन ॥
२८.५ × ११.६ सें० मी०	१६१ (१–१६१)	११	४२	अपू०	प्राचीन	कृष्णदत्त भट्ट विरचित श्री रामचन्द्रद्वारायणं सम्प्रदाये प्रथमविरामणो वृद्धि पाद ॥ ... ... (पत्रसंख्या-१२)
२२.७ × १० सें० मी०	७ (१–८)	११	४२	पू०	सं०१७६६	संवत् १७६६ मिति भाद्रपद शुक्ल ६ नवमी बृहस्पतिवार ॥ + + +
२१.७ × १०.१ सें० मी०	४७ (२–४८)	६	३३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५८४	२२५	प्रयोगरत्न	काशी दीक्षित		दे० का०	दे०
५८५	६३७६	प्रयोगरत्न	अनंत दीक्षित		दे० का०	दे०
५८६	६६६	प्रयोगरत्न	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
५८७	४७२१	प्रयोगरत्न	काशी दीक्षित		दे० का०	दे०
५८८	७००३/२	प्राणप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
५८९	३६६१	प्राणप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
५९०	४६५	प्राणप्रतिष्ठापद्धति			दे० का०	दे०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६१	२१४५	प्राणप्रतिष्ठामंत्र			दे० का०	०
५६२	४६७८	प्रातःकालपूजाविधि			दे० का०	दे०
५६३	७७४८	प्रातःसंध्या			दे० का०	दे०
५६४	७७५३	प्रातःसंध्या			नि० का०	दे०
५६५	५८३६	प्रातःसंध्या			दे० का०	दे०
५६६	५७७६	प्रातःसंध्या			दे० का०	दे०
५६७	६१२	प्रायश्चित्तमुक्तावली	दिवाकरभट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·५ × १२·८ सें० मी०	१½	११	२३	पू०	प्राचीन	इति प्राणप्रतिष्ठा समाप्तम् ।
२४·८ × १०·५ सें० मी०	९ (१–९)	१३	५५	पू०	प्राचीन	इति प्रातःकाल पूजाविधिः ॥शुभमस्तु ॥
१४·५ × ८·४ सें० मी०	२० (१–२०)	६	१४	पू०	शाके १६५३	इति प्रातःसंध्या समाप्त ।··· शके १६५३······ ॥
१६ × १० सें० मी०	१६ (१–१६)	७	२०	पू०	आधुनिक	
१६·३ × १० सें० मी०	४ (१–४)	११	३५	पू०	प्राचीन	···संवत् १८७४ ॥शाके १७३८॥ प्रथम श्रावण सुदि ८ चंद्रे समाप्तोयं···
१६·४ × ८·४ सें० मी०	९	७	१६	अपू०	प्राचीन	
२५·३ × ११·४ सें० मी०	६	९	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री भारद्वाज महादेव भट्टात्मज दिवाकर विरचितायां प्रायश्चित मुक्तावल्यां सर्व साधारण प्रायश्चित्त प्रयोग ॥६॥

क्रमाक और विशेष	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
५९८	२३७२	प्रायश्चित्तविधि			दे० का०	दे०
५९९	७७०८	प्रासादमूर्तिप्रतिष्ठा-न्वाधान (प्रासाद नव कुडी प्रयोग)			दे० का०	दे०
६००	२८५४	प्रेतदीपिका			दे० का०	दे०
६०१	४९८९	प्रेतप्रकाशिका	उद्योतमणिमिश्र		दे० का०	दे०
६०२	३८२८	प्रेतमजरी			दे० का०	दे०
६०३	९	प्रेतमजरी			दे० का०	दे०
६०४	७०८	प्रेतमजरी			दे० का०	दे०

पत्ता या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८.१ × १०.७ सें० मी०	१६ (२-६, ८-९ १३-१६, १९-२५)	७	२९	अपू०	प्राचीन	
२३.२ × ६.४ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३३	अपू०	प्राचीन	
२६.२ × ११.८ सें० मी०	४० (१-११, १३ १३–३१, ३३–४१)	११	३८	अपू०	प्राचीन	
२६.३ × १०.८ सें० मी०	१९ (२-४,६-२२)	८	३५	अपू०	प्राचीन सं०१९१४	इति श्री मत्पण्डितद्योतमणि मिश्र कृतायां प्रेत प्रकाशिकायां निरग्नि सवत् १९१४ वैशाख सुदि ६ बुधे लिखित प श्री नायक रामगोपाल ॥
२८ × १८ सें० मी०	३१ (१–३१)	२१	१८	पू०	सं०१९३६	इति सपिंडी श्राद्ध सपूर्णम् । इति श्री प्रेत मंजरी सपूर्णम् ... ... "सवत् १९३६ मिति जेष्ठ सुदी २ वार शुक्रवार कु सपूर्ण हुई ।
२९.५ × १४ सें० मी०	२३	२३	३३	पू०	प्राचीन	
२३.३ × १०.८ सें० मी०	११	११	३१	अपू०	प्राचीन सं०१८८८	इति प्रेत मजरी समाप्ता ॥ सवत् १८८८ अधिक वैशाख शुद्ध २ गुरो लिखित स्वार्थ परार्थ ॥ शुभ

(सं०म०३५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६०५	३७४०	प्रेतमंजरी			दे० का०	दे०
६०६	२१७९	प्रेतमंजरी			दे० का०	दे०
६०७	४१०९	प्रेतमुक्तिदा पद्धति	खेमराम		दे० का०	दे०
६०८	४०००/३	बलदेवाह्निक			दे० का०	दे०
६०९	२८०१/४	बलिवैश्वदेवविधि			दे० का०	दे०
६१०	६५०४	बृहस्पतिसव होत्र			दे० का०	दे०
६११	४८७०	बौधायनोक्तविनायक-शांति				दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ घ	४	ग	८	६	१०	११
१८×१३.२ सें० मी०	३८ (४–४१)	१२	२२	अपू०	प्राचीन	
२७.८×१४.१ सें० मी०	३६ (१-१६ २१-३२ ३२-३६)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२५.५×१०.७ सें० मी०	१५ (१–१५, १५–१५)	१२	४७	अपू०	प्राचीन	श्री क्षेमरामेणाकृतेय प्रेतमुक्तिनदा समाप्ता शुभ भूयात् ॥ सवत् १८३३ शाके १६६८ मलिमासे कृष्णपक्षे रविवासरे ॥
१८.७×१५.४ सें० मी०	६ (४–६)	१३	२२	अपू०	सवत् १६१८	इति श्री हरिवंशे बलदेवाह्निक नारायण समष्टि स्परूनवन प्रारमरक्षाकरण १६४ के तत्सत् सवत् १६१८ मार्गशीर्ष शुक्ला १२ लिखितमिद पुस्तक मुरलिधर आत्मपठनार्थं ॥
१७.५×१३.५ सें० मी०	२	११	२०	अपू०	प्राचीन	
२३.३×८.५ सें० मी०	८ (१–८)	८	३३	अपू०	सं०१७८२	इति बृहस्पति सव समाप्त ॥ सवत् १७८२ मार्गशीर्ष शुद्ध ८ बुधे लिखित जय राम खेडो कामेश्वरस्य ॥
२५.५×१०.८ सें० मी०	४ (१–४)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति प्रतापनारसिंहाख्ये संस्कार प्रकाशे बोधायनानुसारीविनायक शांति प्रयोग समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६१२	१४३३	व्रतबंध			दे० का०	दे०
६१३	१४६६	ब्रह्मचर्यव्रतम् पद्धति			दे० का०	दे०
६१४	६५२४	ब्रह्मतत्वप्रयोग			दे० का०	दे०
६१५	७५८०	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
६१६	६३६४	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
६१७	६३६६	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
६१८	६३७०	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८ × ११.५ सें० मी०	१४ (१–१२, १६–१७)	८	१४	अपू०	प्राचीन	
२१.५ × १०.३ सें० मी०	२४ (२–२५)	६	२८	अपू०	प्राचीन	
२१.३ × ८.८ सें० मी०	६ (१–६)	१०	४७	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मारंभ ॥ अपश्यगोपामनि पद्यमान ॥
११.५ × ६.६ सें० मी०	५ (१–४, ६)	११	१४	अपू०	प्राचीन	अद्यमना समस्त पापक्षयार्थं देवर्षि-मुष ॥ पित्रु प्रीत्यर्थं ॥ ब्रह्मयज्ञमहं करिष्ये ॥ (पत्र–संख्या—१, प्रारंभ)
१६.५ × १०.३ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	२१	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मयज्ञदेवऋषिमनुष्यपितृ-तर्पण समाप्त ॥ शुभं भूयात् ॥ श्रीरस्तु ॥
१७.७ × ६ सें० मी०	५ (१–५)	[illegible]	१६	अपू०	प्राचीन	
१५.५ × ६.८ सें० मी०	७ (१–७)	७	१८	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की क्रमिक संख्या या ग्रन्थविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ जिस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६१९	४४७४	भागवतपूजा विधान			दे० का०	दे०
६२०	४४६०	भुवनेश्वरी शांतिः			दे० का०	दे०
६२१	४०४६	भूतशुद्धि			दे० का०	दे०
६२२	७००३/२	भूतशुद्धि			दे० का०	दे०
६२३	१२१०	भैरव दीपदान			दे० का०	दे०
६२४	७००५	भैरवपूजा पद्धति			दे० का०	दे०
६२५	२८७१	भौमपूजा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति म अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७.६ × ११.७ सें० मी०	३ (१–३)	९	५०	अपू०	प्राचीन	चिंतामणि फलप्रदा श्री भागवताभिधा सप्ताह यज्ञ नियमेन श्रवणमह करिष्ये ॥ इति सकल्प ॥''' (पत्र सख्या २)
२४.५ × १०.५ सें० मी०	८	९	३७	पू०	प्राचीन	इति भुवनेश्वरी शांति
२१.५ × ९.५ सें० मी०	२ (१–२)	८	३६	पू०	प्राचीन	इति भूतशुद्धि ॥
१२.३ × ८ सें० मी०	५ (१–५)	६	२३	पू०	आधुनिक	इति भूतशुद्धि सपूर्ण शुभमस्तु श्रीरस्तु ॥ ब्रह्मार्पण मस्तु ॥
२० × ११.५ सें० मी०	६ (५–९,११)	६	१६	अपू०	प्राचीन	•
२०.२ × १०.८ सें० मी०	१०	१०	२७	पू०	प्राचीन	इति भैरवपूजा पद्धति ।
१६.२ × ८.४ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	२२	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रह विशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२६	४४६१	भौमपूजा			दे० का०	दे०
६२७	५३८५	भौमपूजा विधि			दे० का०	दे०
६२८	१३०६	मंगलव्रत विधान			दे० का०	दे०
६२९	७४७०	मंगलव्रत विधान			दे० का०	दे०
६३०	६०३७	मंडपपूजा			दे० का०	दे०
६३१	१३५४	मंडपपूजा विधि			दे० का०	दे०
६३२	६८१	मंडपपूजा विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.५ × ८.८ सें० मी०	३ (१,४,५)	६	२४	अपू०	आधुनिक	इति भौमपूजा ।
१६.६ × ८.५ सें० मी०	१२ (१–१२)	५	२०	अपू०	प्राचीन	
३० × १३.५ सें० मी०	२	१०	३५	पू०	प्राचीन	
१६.१ × ११.२ सें० मी०	२	२१	२०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३३	७१३५	मंडलदेवतापूजन (सर्वतोभद्र-लिंगतोभद्र-देव स्थापन-पूजन)			दे० का०	दे०
६३४	३१०६	मंत्रदीक्षा			दे० का०	दे०
६३५	७१४०	मंत्रदीक्षासिद्धि विधि			दे० का०	दे०
६३६	२६६६	मंत्रपूजा होमविधि (नारद पंचरात्र)			दे० का०	दे०
६३७	३८४६	मंत्रमुक्तावली			दे० का०	दे०
६३८	७१५६	मंत्ररत्नावलीयंत्रपूजा विधि			दे० का०	दे०
६३९	५८५१	मंत्रला			दे० का०	दे०

पन्नों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२७ × ११.३ सें० मी०	६ (१–६)	७	३७	पू०	प्राचीन	इति मंडलदेवताः पूजनसंपूर्णं ॥
२१.६ × १०.८ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	२७	पू०	प्राचीन	
१५.६ × १०.६ सें० मी०	१० (१–१०)	६	१६	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११.३ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री नारद पञ्चरात्रे मंत्रपूजा होमविधि ॥
२३.५ × ११.४ सें० मी०	७ (१, ३–८)	६	३१	अपू०	प्राचीन सं० १६०६	इति श्री मंत्रमुक्तावल्यां कृष्ण नारद संवादे दीक्षाविधाने पंचमोध्याय संपूर्णं शुभमस्तु मंगलंददात् संवत् १६०६ साके १७७१ ... ॥ शेष पचकशातिवत् ॥
११.४ × ७.२ सें० मी०	३ (१–२, ११)	८	१४	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमंत्ररत्नावल्यायंत्रपूजनविधानमेकत्रिंशोल्लास + + + + +
२३.५ × १०.६ सें० मी०	४	७	२६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४०	२६६६	मलविधि			दे० का०	दे०
६४१	७८६०	मठमण्डपोत्सर्ग			दे० का०	दे०
६४२	१७५१	महादाननिर्णय	दामोदर		दे० का०	दे०
६४३	६३६०	महान्यास	माधव भट्ट		दे० का०	दे०
६४४	३६६६	महामृत्युंजय जप पद्धति			मि० का०	दे०
६४५	१५३८	महामृत्युंजय मत			दे० का०	दे०
६४६	७७३३	महामृत्युंजय जपविधि			दे० का०	[illegible]

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३.५×१० सें० मी०	४ (२–५)	८	२५	अपू०		इति मंत्र विधि समाप्त ॥
२४.५×१०.१ सें० मी०	६५ (१–६५)	८	३३	अपू०	प्राचीन	
२७.७×१०.५ सें० मी०	४८	८	४४	अपू०	प्राचीन	
१४.७×७.१ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	२६	पू०	शके१६७४	इति न्यास संपूर्णं । श्री कृष्णार्पणमस्तु शके १६७४ माघ मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदभृगुवासरे । कवीश्वरोपनामक मुकुंद भट्टस्य सूनुना माधवेन लिखितं ॥
१६.८×१०.३ सें० मी०	५ (१–५)	६	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री महामृत्युंजय पद्धतिस्समाप्ता मंत्रोयया······
१७.२×८.६ सें० मी०	३ (१–३)	५	१९	अपू०	प्राचीन	
२१.५×१०.७ सें० मी०	६ (१–६)	८	१८	पू०	प्राचीन सं०१८३०	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४७	४६६४	महालक्ष्मी पूजन			दे० का०	दे०
६४८	३१३५	महालक्ष्मीव्रत उद्यापन			दे० का०	दे०
६४९	३०३४	महालक्ष्मीव्रत-पूजन विधि			दे० का०	दे०
६५०	६८६३	महाव्रत होत प्रयोग			दे० का०	दे०
६५१	७६१	महाषष्टी पूजा			दे० का०	दे०
६५२	३२४६	महाष्टमी दुर्गोत्सव व्रत पूजा			दे० का०	दे०
६५३	६२६१	महिम्नोक्त लिंग-प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०.५ × १७.५ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	२४	पू०	स०१९७६	इति श्री लक्ष्मी जी की आरती समाप्तम् ॥ प० लालमन दास लिपि कृत स० १९७६ मिति बै० शु० ५ भौमवासरे चांदपुर निवसि ॥
२३.८ × १०.३ सें० मी०	७ (१–७)	१०	५२	पू०	प्राचीन	इति महालक्ष्मी व्रतोद्यापन समाप्त ॥
२४ × १०.४ सें० मी०	७ (१–७)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२३.४ × ९.८ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	४१	पू०	प्राचीन स०१७९१	इति आश्वलायनोक्त महाव्रत ॥ संवत् १७९१ श्रावण कृष्ण ३ चंद्रे लिखित ॥
२४.५ × १० सें० मी०	७ (२–८)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
२५.५ × ७.७ सें० मी०	१० (२–११)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति महाष्टमी दुर्गोत्सव व्रत पूजा समाप्त ॥
२५ × ११.४ सें० मी०	२५ (१–२५)	७	३३	पू०	स०१९३६	इति महिम्नात्मक लिंगप्रतिष्ठा स्थापन विधि समाप्ता । संवत् १९३६ मि०···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६५४	३८६६	महीदानविधि			दे० का०	दे०
६५५	२३२६	माघउद्यापन विधि			दे० का०	दे०
६५६	३०१६	मातृका न्यास			दे० का०	दे०
६५७	५४०६	मातृश्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
६५८	६३६६	(जगदवाया) मानस पूजा	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६५९	५९४६	मानसपूजा			दे० का०	दे०
६६०	३३४८/४६	(श्रीराम) मानसीपूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.४ × ९.७ सें० मी०	२ (१–२)	८	३१	पू०	प्राचीन	इतिमहीदानं ॥
३३ × १८.५ सें० मी०	१ (खर्रा)	६४	२३	पू०	प्राचीन सं०१८२०	इति श्री नारद ब्रह्म संवादे माघस्नापन विधि संपूर्ण समाप्त ॥ संवत् १८२० माघमासे त्रियोदशी १३ बुधदिने······ शुभमस्तु ॥ मंगल ददातु ॥
२३.५ × ८.८ सें० मी०	६ (१–६)	७	२८	पू०	प्राचीन सं०१८२८	इति केशवादि मातृकान्यास. । स्वामि-चरणारविंदयोरस्तु ॥ संवत् १८२८ शके १६९३ ज्ये०कृ०११ भृगोर्वासरे ॥ ······················
२४.८ × १०.३ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३०	पू०	सं०१९१३	इति मातृश्राद्ध समाप्तम् ॥१॥ संवत् १९१३ भाद्रपद शुक्ल पक्षे च प्रतिपचा बुधवासरे लिषित दत्त रामेण घोघडी पुर मध्ये ॥ स्वहेतवे ॥ शुभभूयात् रामायनम ।
२३.५ × १०.२ सें० मी०	६ (१–६)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री मच्छ(क)राचार्य विरचिता जगदंबाया मानसपूजा समाप्ता ॥
२४ × ११.८ सें० मी०	५ (१–५)	९	३३	पू०	प्राचीन	इत्यगस्त्य संहितायां परमरहस्ये मानसी-पूजा कथनं नाम त्रयस्त्रिंशोध्याय ३३ ······ ॥
१२.५ × ८.२ सें० मी० (सं०मु०३७)	१३ (१–१३)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री अगस्त संहितायां परमरहस्ये श्रीराम मानसीपूजाविधिपंचत्रिंशोऽध्याय: श्रीराम··· ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६१	१६१२	मानसोपचार पूजा	शंकराचार्य		मि० का०	दे०
६६२	६३४६	मालासंस्कार	चिरंजीव भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
६६३	७७६६/२	मालासंस्कार			मि० का०	दे०
६६४	२८६३	मालासंस्कार			दे० का०	दे०
६६५	३३०६	मालासंस्कार			दे० का०	दे०
६६६	६७४७	मालासंस्कार विधि			दे० का०	दे०
६६७	५७५२	मालासंस्कार विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८.२ × १५.५ सें० मी०	४ (१–४)	१५	४२	पू०	प्राचीन	इति श्रीमच्छ्री शकराचार्य कृतामानसो पचार पूजा समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
२४ × १०.५ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति चिरजी भट्टाचार्य कृते सर्वार्णवे माला सस्कार ॥
२०.८ × ११ सें० मी०	३ (१–३)	६	२३	पू०	प्राचीन	इति माला सस्कार ॥
१६.७ × ७.७ सें० मी०	५ (१–५)	८	१६	पू०	प्राचीन सं० १८३६	इति रुद्र यामले तत्रे माला सस्कार सपूर्ण सुभ मस्तु ॥ सवत् १८३६ ॥ मुकामछत्रपुर लिषित लल्लू अवस्थी ॥
२०.३ × ११.४ सें० मी०	३ (१–३)	७	१७	पू०	प्राचीन	इति माला सस्कार सपूर्ण ॥
२४.६ × १०.६ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति माला विधि समाप्ता ··· ··· ···
१८.५ × ८.२ सें० मी०	१	८	३५	पू०	प्राचीन	इत्य मालानां सस्कार्य्यं यथाशक्ति मूलमन्त्र जपेदिति ॥ मालानां सस्कार-विधि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६८	३०२९	मुण्डनसंस्कार विधि			दे० का०	दे०
६६९	६४२६	मूर्तिदान विधि			दे० का०	दे०
६७०	६४१५	मूर्तिप्रतिष्ठा	सदाशिव भट्ट		दे० का०	दे०
६७१	५८८३	मूर्तिप्रतिष्ठा विधि			मि० का०	दे०
६७२	२५०५	मूर्तिप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
६७३	४७७८	मूलशांति			दे० का०	दे०
६७४	३१०७	मूलशांति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६.७×६.५ सें० मी०	५	१२	२५	अपू०	प्राचीन	
१२.६×१०.३ सें० मी०	१	८	३६	पू०	सं०१८१३	इति मूर्तिदान विधि ॥·········संवत् १८१३ वैशाख शुद्ध ८ ॥
२२.२×६.२ सें० मी०	७ (१-७)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इत्यागमोक्ता मूर्तिप्रतिष्ठा ॥······ चलाचल प्रतिष्ठाया पुस्तकं लिखित सदा शिव भट्ट कवीश्वरेण ॥······
२८.८×१४.१ सें० मी०	१० (१-१०)	१३	३२	पू०	सं०१६५७	इति चलाचल मूर्ति प्रतिष्ठा विधि समाप्त संवत् १६५७ माघ मासे शुक्ले पक्षे शुभतियौ एकादश्या बुधवारान्वितायां लिखित···········॥
२०.६×१० सें० मी०	५ (१६-२०)	१२	५२	अपू०	प्राचीन	
३२.७×१३.४ सें० मी०	७ (१-७)	११	४६	पू०	सं०१६०६	इति श्री मूलशांति समाप्तः संवत् १६०६ ॥
२२.५×८.८ सें० मी०	२	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री सर्व शास्त्रोद्धारे मूल शांतिक समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६७५	३७३५	मूलशांति			दे० का०	दे०
६७६	३७१४	मूलशांति			दे० का०	दे०
६७७	४५२	मूलशांति			दे० का०	दे०
६७८	८२१	मूलशांति			दे० का०	दे०
६७९	२४२६	मूलशांति			दे० का०	दे०
६८०	७३२	मूलशांति कारिका	वामदेव दीक्षित		दे० का०	दे०
६८१	२८४२	मूलशांतिविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
३०.५×११.४ सें० मी०	■	११	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री मूलाद्यर्क्षे स्नान कर्म विधि लिखत मुरलिधर + + + + + ॥
२३.५×१२ सें० मी०	८ (१–८)	८	२६	पू०	प्राचीन स०१६५०	इति श्री मूल शांत विधायसपुर्नं ॥शुभ। मिती द्वितिय आषाडशुक्ल १४ गुरवासरे सवत् १६५० ॥ ··· ·· ····
२४.४×११ सें० मी०	६	११	३२	पू०	प्राचीन स०१६६६	इति मूलशांति कर्त्तव्यता ॥ ,१६६६ वरषे माधवदिदशमी बुधवासरान्विता आ सल वदरी मिश्रण आलेषि ॥१॥ शुभमस्तु ॥१॥
१६.७×६.५ सें० मी०	६ (१–६)	६	२४	पू०	प्राचीन	इति विश्वप्रकाशे मूलजनन शांत समाप्त
२०.१×११.१ सें० मी०	२१ (१–२१)	८	२१	पू०	प्राचीन स० १८६२	पुतग लिख्यत जमनादास स० १८६२ शाके १७२७ ॥
२३.१×११. सें० मी०	६ (१–६)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री दीक्षित विश्वामित्रात्मज दीक्षित कामदेव कृता मूल शांति कांडिकाया पद्धति समाप्ता ॥
२०.६×१०.६ सें० मी०	५ (१–५)	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति मूल शांति विधि समाप्त ॥ शुभमस्तु

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६८२	२०६०	मूलशांति विधि			दे० का०	दे०
६८३	२३१०	मूलशांति विधि			दे० का०	दे०
६८४	२६८६	मूलशांति विधि			दे० का०	दे०
६८५	६७१४	मृगारेष्टि प्रयोग			दे० का०	दे०
६८६	६२१२	मृगारेष्टि हौत्र			दे० का०	दे०
६८७	६५२२	मृगारेष्टि हौत्र			दे० का०	दे०
६८८	६४६६	मृगारेष्टि हौत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५.४×८.८ सें० मी०	६ (१–६)	७	१८	अपू०	प्राचीन	
१७.५×८.६ सें० मी०	१२ (३–१४)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मूलशांति विधि समाप्त श्री शिवायनम श्रीकृष्णायनम संवत् १६३५ राम······
२६.५×१२.५ सें० मी०	६	८	२५	पू०	सं०१६१५	संवत १६१५ मासोत्तमे मासे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे पुन्यतिथौ मावस्यायां शुक्रवासरान्वितायां शुक्रवासरे लिखित चंदन मिश्र सूनु हरिदीयाल मिश्रका ॥
२३.४×१० सें० मी०	६	१०	४२	पू०	सं०१७६१	इति मृगारेष्टि प्रयोग ॥ श्री लक्ष्मी-नृसिंहार्पणमस्तु ॥ संवत् १७६१ आषाढ शुद्ध १२ लिखितमिदं पुस्तक रामडोहकरोपनामक विश्वनाथ भट्टेन ॥
२१.६×८.२ सें० मी०	५ (१–५)	८	२६	पू०	प्राचीन	॥ सतिष्ठते मृगारेष्टि ॥
२१.५×८.६ सें० मी०	३ (१–३)	११	३२	पू०	प्राचीन	इति मृगारेष्टि होत्र समाप्त ॥
२१.६×१०.४ सें० मी०	७ (१–७)	६	२३	पू०	प्राचीन सं०१७८७	इति मृगारेष्टि होत्र संपूर्ण ॥ श्री ॥ संवत् १७८७ शाके १६५२ अश्विन शुक्ल पक्षे ··· ··········

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६८६	३६६८	मृतदाहविधि	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
६६०	६२८	मृत्युंजयपूजा			दे० का०	दे०
६६१	६३६६	मृत्युंजय विधान			दे० का०	दे०
६६२	३३०८	मृत्युंजयविधान			दे० का०	दे०
६६३	७३४७	मैत्रावरुण अग्निष्टोम			दे० का०	दे०
६६४	६२०५	मैत्रावरुण प्रयोग			दे० का०	दे०
६६५	६६६१	मैत्रावरुण प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्णहै ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	१०	१०	१०
२२.५ × ९.३ सें० मी०	११ (१-११)	९	३५	पू०	प्राचीन सं० १८१४	इति श्री भट्टरामेश्वर सुतनारायण भट्ट विरचितः साग्निकामाश्वलायन मृतदाह् विधि ॥ (पत्रसख्या ९) + + + पुस्तकमिद रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकटभट्टेन लिखापित स्वार्थं परार्थं च सवत् १८१४ समय आश्विन कृष्ण ७ रवौसमाप्तम् ॥···
२४.१ × १०.६ सें० मी०	७ (१-७)	९	३४	पू०	प्राचीन सं० १८८८	इति मधु रुद्रयपूजा सपूर्णमिति ओनमः शिवाय सवत १८८८ तत्रमासे ······ मम दोषा नदीयते मगल ददातु ॥
२२.८ × ९.७ सें० मी०	४ (१-४)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री मृत्युजय विधान समाप्तः ॥ सदाशिव देवताऽपर्णमस्तु ॥ सवत् १९१० के साल समये नाम मिती माघ सुदि ७ कः बुधवासरे कः समाप्त. ॥ + + +
२०.६ × १०.६ सें० मी०	१० (१-१०)	६	२६	पू०	प्राचीन स० १८७६	इति मृत्युजयविधान वसिष्ठ कल्पे ॥ आचार्ये सदा रक्षेत्मत्रेनानेन मत्रवित् ॥ राजाहि सर्वलोकस्य पिता भवति धार्मिक ॥ तस्मात्तत्पर्यत्नेन कर्म कुर्वीत शांतये ॥ श्री महादेवायनम ॥ सवत् १८७६ ॥ मार्गशीर्ष मासेशुक्लपक्षे
२२.२ × ९.६ सें० मी०	३५ (१-३५)	११	३५	अपू०	प्राचीन	
२२.६ × ८.५ सें० मी०	१५ (१-१५)	१४	३६	पू०	प्राचीन	अथानिष्टो मौमत्राथवणप्रयागो लिख्यते (प्रारभ)
२३.६ × ९.८ सें० मी०	३	७	१६	अपू०	प्राचीन (स० १७८८)	– मैत्रावरुण समाप्त ॥ इदं पुस्तकं रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकण्ठस्य सवत् १७८८ ज्येष्ठ शुक्ल ५··· ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६९६	१८६६	यज्ञपद्धति			दे० का०	दे०
६९७	४७७६	यज्ञपद्धति	रामप्रसाद प्रणीत		दे० का०	दे०
६९८	४५४९	यज्ञपद्धति			दे० का०	दे०
६९९	५८९३	यज्ञोपवीत			दे० का०	दे०
७००	६३५७	यज्ञोपवीत			दे० का०	दे०
७०१	३९२९/२	यज्ञोपवीतकरण विधि			दे० का०	दे०
७०२	२४३६	यज्ञोपवीत पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	९	१०	११
१८ ५ × ६ ५ सें० मी०	३८ (२–३७, ४३–४४)	१०	२०	अपू०	प्राचीन	जीर्ण
१६ ६ × १२ २ सें० मी०	६० (२–६०) पत्र ४२–दो	११	४०	अपू०	प्राचीन सं०१८७२	सम्वर्षे युग्म सप्ताब्ज शशि परिमित मासि माघे च शुक्ले पष्ठे चायुष्य योगे कुसुमशर तिथौ पुष्यभ चाक्क वारे ॥ श्री मद्रामप्रसाद प्रणत विरचिता श्री वशिष्ठ प्रणीतैश्छन्दो मन्त्रैर्विशिष्टा- धरवर परमा पद्धति पूर्तिमाप्ता ॥ समाप्तेयं यज्ञ पद्धतिः समस्त ॥
२५ ४ × १२ ८ सें० मी०	२७ (२–५) १४–३६)	६	३३	अपू०	प्राचीन सं०१९१७	इति श्री यज्ञ पद्धित संपूर्णम् शुभ मस्तु संवत १९१७ आषाढ शुक्ल ६ बुधवासरे ॥
२५ २ × १० ३ सें० मी०	६ (१–६)	९	४६	अपू०	प्राचीन	
१६ ६ × १० ३ सें० मी०	१५ (१–१५)	८	२१	अपू०	प्राचीन	
१३ ४ × १५ ६ सें० मी०	३	६	१४	पू०	प्राचीन	इति यज्ञोपवीत करण विधि ॥
२२ २ × १२ १ सें० मी०	११ (३–४ ८,२० २४–२५ २७ ३०–३३)			अपू०	सं० १८४६	इति यज्ञोपवीत पद्धति समाप्तः ॥ शुभमस्तु । संवत् १८४६ श्रावण कृष्ण षष्ट्या सोमवासरे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७०३	१२३६ / २	यज्ञोपवीत प्रकार			दे० का०	दे०
७०४	४१२८	यज्ञोपवीतसंस्कार पद्धति			दे० का०	दे०
७०५	३०३८	यज्ञोपवीतसंस्कार विधि			दे० का०	दे०
७०६	१००७	यतिसंस्कार विधि			दे० का०	दे०
७०७	७६६२	यतीआराधना प्रयोग			दे० का०	दे०
७०८	६६२३	योगपट्ट विधि			दे० का०	दे०
७०९	२६६६	रजोदर्शन शांति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ घ	९	म	द	९	१०	११
१५×११.५ सें० मी०	४ (१-४)	१२	१२	पू०	प्राचीन	इत्युपवीत प्रकार ॥
२२.३×१२.१ सें० मी०	१५ (५, ७-८, १०-१६, २५-२६)	११	२५	अपू०	प्राचीन	
२१.५×१०.७ सें० मी०	१२ (१-१२)	६	१०	अपू०	प्राचीन	
२३.१×१०.६ सें० मी०	११ (१-११)	११	३५	पू०	सं० १८३७	इति पति सत्कार विधि निर्णयसंग्रह ॥ श्रीरामकृष्णायनमः ॥ श्रीकृष्णायनमः संवत् १८३७ मी० मा०
२५.८× १०.७ सें० मी०	५ (१-५)	६	१०	पू०	प्राचीन	इति सतीत्व आराधना प्रयोग ॥
१८.६×८.६ सें० मी०	५ (१-५)	७	२०	पू०	प्राचीन सं० १८६३	इति योगपट्ट विधि समाप्त ॥ संवत् १८८३ शाके १७२८ मासाश्विन शुक्ल पक्षे तिथौ ५ गुरुवासरे ॥ लखि ब्राह्मण विसनागरा ॥ पंड्या ऊद्धवजीये ॥ पोथिशिवानंद स्वामिनीछ ॥
१६.६×७.७ सें० मी०	१० (१-१०)	७	२०	पू०	सं० १८२७	इति शौनकोक्त रजोदर्शन शांति ॥ संवत् १८२७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७१०	३४५६	राधाकृष्णमानसीपूजा			दे० का०	दे०
७११	३६६७	रामचद्राह्निक (संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
७१२	५७८८	रामपद्धति	रामानुज		दे० का०	दे०
७१३	५८१८	रामपद्धति	रामानुजाचार्य		दे० का०	दे०
७१४	३२०४	रामपद्धति	रामानुजाचार्य		दे० का०	दे०
७१५	६०६७	रामपद्धति			दे० का०	दे०
७१६	२१४२/६	रामपूजा प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ घ	८	ग	८	९	१०	११
१६'३ × ८'५ सें० मी०	८ (१–८)	६	२३	पू०	प्राचीन	श्रीरामाराधन मानसीपूजा सम्पूर्णम् ॥
३२'२ × १३'२ सें० मी०	३० (४-६, ८–११ १४-१६ २१,२४ ३२-३५ ३८,४१ ४४-४६)	११	५४	अपू०	प्राचीन	
२२'४ × १०'५ सें० मी०	११ (१–११)	६	२५	पू०	प्राचीन सं०१८८३	इति श्री रामानुजकृता रामपद्धति वेदोक्त० समाप्ता। शुभमस्तु अस्वन सुदि ७ सवतु १८८३··· ··· ··· ··· ॥
२७'२ × ११'६ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्रामानुजाचार्य विरचित श्री रामपद्धति वेदोक्त सपूर्णम् लिखित लक्ष्मीनाथ भट्ट तैलिंग पचद्राविड ॥ शुभभूयात् ॥ " आरोग्ये भवतु ॥
२१'८ × १०'३ सें० मी०	२१ (१–२ ४–२२)	६	२७	अपू०	सं० १८२३	इति श्री रामानुजाचार्य कृता वेदोक्तो पद्धति सपूर्णम् ॥ शुभमस्तु सवत् १८२३ मास ॥ स्रावण शुक्ल पक्षे ॥१०॥ वार ॥ रवि ॥ लिखित बरेली मध्ये ॥ चपतराय का ॥ बाग मे ॥ दासानुदास। वनदेवदास ॥·· ···
१४'७ × ६'२ सें० मी०	२६ (१–२६)	६	१७	पू०	प्राचीन	श्री रामानुजीय श्री रामपद्धति सपूर्ण ॥
१८'५ × १६ सें० मी०	४ (६–१२)	६	१६	पू०	सं०१६२३	सवत् १६२३ श्रावणे कृष्ण पक्षेतु तृतीये सौम्य वासरे लिषित जय रामेण याद दास्ती शुभ भवेत् ॥ श्री··· ···

(सं० सू०३९)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७१७	३०६६	रामपूजा विधि			दे० का०	दे०
७१८	२८३२	रामसेवा विचार			दे० का०	दे०
७१९	५३३८	रामायणपरायण विधि			दे० का०	दे०
७२०	७८६१	रामायणपूजन			दे० का०	दे०
७२१	७५६९	रामायणविधि			दे० का०	दे०
७२२	१५०३	रामार्चन			दे० का०	दे०
७२३	७५०७	रामार्चनचंद्रिका			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ घ	८	८	८	९	१०	११
२४ × ९·७ सें० मी०	२	८	३२	पू०	प्राचीन	इति रामार्चन तत्त्वतो पूजा विधिः॥
२६ × ११·२ सें० मी०	४५ (१–४५)	११	३७	पू०	प्राचीन	इति श्रीराम सेवाविचारे एकोनविंशतिध्याय॥
२७·७ × ११·१ सें० मी०	११ (१–११)	७	२७	पू०	प्राचीन	इति रामायण पुरश्चरण विधि॥
२३·१ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	११	२४	पू०	प्राचीन	
३१·५ × १२·२ सें० मी०	४ (१–४)	६	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्रामायण विधिः………
२०·२ × १०·३ सें० मी०	६ (१५–२०)	६	२८	अपू०	प्राचीन	
२२·७ × १२·५ सें० मी०	६२ (१–६२)	१०	३३	पू०	प्राचीन सं०१९०४	इति रामार्चन चन्द्रिकाया पचम पटलः समाप्त. ॥…………संवत् १९०४…

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७२४	६१२४	रामार्चन पद्धति			दे० का०	दे०
७२५	१००३	रामार्चन विदीपिका	रामकृष्ण भट्ट		दे० का०	दे०
७२६	६२१७	रामार्चन विधि			दे० का०	दे०
७२७	३५३६	रामार्चा पद्धति			दे० का०	दे०
७२८	६२८६	रामार्चा विधि			दे० का०	दे०
७२६	७६११	रामार्चा विधि (द्वितीय अध्याय)			दे० का०	दे०
७३०	६४८३	रामार्चा विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२४ × ६.७ सें० मी०	५ (६–१३)	६	३३	अपू०	प्राचीन	
२५.५ × ८ सें० मी०	३४ (१–३४)	५	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री महाराष्ट रामकृष्ण भट्ट बिरचिता श्री रामचंद्र विदीपिका समाप्ता ॥
१८.८ × ७.५ सें० मी०	५ (१–५)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२४.५ × १०.५ सें० मी०	६ (१–६)	६	३८	पू०	प्राचीन	
३१.२ × १६.२ सें० मी०	७ (१–७)	१२	३५	पू०	प्राचीन सं० १६२३	इति श्री शिव सहिताया भविष्योत्तर खडेशिव पार्वती सवादे रामार्च्चा विधि सपूर्ण सं० १६२३ जेष्ट शुक्ल ८ भोमे ॥
२७.५ × ११.३ सें० मी०	१० (१–१०)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री शिव सहिताया भव्योत्तरखडे रामार्चा विधि कथने शिव सवादे द्वितीयोध्याय ॥ + + +
१४ × ६.२ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	१२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३१	१२५५	रुद्रजाप (प्रथम एवं द्वितीय अध्याय)			दे० का०	दे०
७३२	७१५८	रुद्रजाप			दे० का०	दे०
७३३	५७१३	रुद्रपद्धति	रंगनाथ		दे० का०	दे०
७३४	१४०५	रुद्रपाठ (अष्टम अध्याय)			दे० का०	दे०
७३५	४४२६	रुद्रपूजन विधि			दे० का०	दे०
७३६	२१३५	रुद्रप्रश्न			दे० का०	दे०
७३७	३००३	रुद्रप्रश्न			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२·५×६ सें० मी०	१४ (१-१४)	५	१२	पू०	प्राचीन	इति रुद्र जापे द्वितियोध्याय ॥२॥
६५×५·७ सें० मी०	७	६	१०	अपू०	प्राचीन	इति रुद्रजापे पंचमोध्यायः ॥
२७×१०८ सें० मी०	१५ ३-१७	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति रगनाथ कृते रुद्रपद्धती ॥
२०८×१०·५ सें० मी०	२१ (१-२,६-१३, १७-१८, २०-२७,२९	८	२४	अपू०	प्राचीन सं० १९१५	इति रुद्रपाठोऽष्टमोध्याय सं० १९१५ श्रावण कृष्ण दशम्या लिखित भवानी दत्तेन शुभ भूयात् ॥
२४·२×११ २ सें० मी०	८ (४३-५०)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	इति बौधायनोक्त रुद्र स्नान विधान समाप्त ॥··· ··· (पत्रसंख्या ५०)
२४३×६३ सें० मी०	१५	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
१८×५१ सें० मी०	१०	५	१३	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३८	७१०	रुद्रवस्तु स्थापनविधि			दे० का०	दे०
७३९	२३५५	रुद्राक्षधारण विधि	बृर्षसिंहदेव		दे० का०	दे०
७४०	५५५६	रुद्राक्षमाला संस्कार			दे० का०	दे०
७४१	६६३०	रुद्रानुष्ठान पद्धति	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
७४२	५००८	रुद्राभिषेक कल्प			दे० का०	दे०
७४३	२६६७	रुद्राभिषेक विधि			दे० का०	दे०
७४४	४७४२	रुद्रीजाप			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६.५ × ६.५ सें० मी०	३	१२	६४	पू०	प्राचीन	इति काशी खंडे रुद्रवाप्युं द्यापन विधान संपूर्ण ॥
२६ × १५ सें० मी०	५ (१–५)	१५	४२	अपू०	प्राचीन	
१८.५ × ८ सें० मी०	४ (१–४)	६	३३	पू०	प्राचीन	रुद्राक्षमाला संस्कारे'''मंत्रसिद्धि कामोऽमुक देवता माला संस्कारमहं करिष्ये ''' ''' (प्रथम पत्र)
२३.७ × १०.३ सें० मी०	५६ (१–५६)	६	३२	पू०	सं०१८०३	संवत् १८०३ मासे प्राश्विन कृष्ण पक्षे तिथि ३० वार गुरौ तद्दिने अवसत्थी माहेश्वरेण लिखित ॥
१९.३ × १२.५ सें० मी०	४५	७	२२	अपू०	आधुनिक	
१९.२ × ९.६ सें० मी०	४ (१–२७)	६	२०	अपू०	प्राचीन	
१७.४ × ९.७ सें० मी०	२२ (१–२२)	६	१७	पू०	प्राचीन सं०१७८१	इति रुद्रविधान समाप्त ॥ संवत् १७८१ ''' ' ॥

(सं०सू० ४०)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७४५	४६७७	लक्ष्मीपूजन विधि			दे० का०	दे०
७४६	१२५१/२	लघु आतुरसन्यास विधि			दे० का०	दे०
७४७	६४७२	लघुपद्धति			दे० का०	दे०
७४८	१८४६	लघु लक्ष्मीहवन विधि			दे० का०	दे०
७४९	६३१२/७	लघुशाति			दे० का०	दे०
७५०	४४७७	लिंगतोभद्रमडल देवता			दे० का०	दे०
७५१	६७३	लिंगतोभद्र होम			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.५×८.६ सें० मी०	३ (१–३)	७	२६	पू०	प्राचीन	
१२.३×७.८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	१३	पू०	प्राचीन	इति सन्यास ।
२३.३×७.२ सें० मी०	७९ (७.७७, ७९-८६)	५	३२	अपू०	प्राचीन	
१४.६×१० स० मी०	६ (१–६)	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति लघु लक्ष्मी हवन समाप्त इति श्री लिखत पुस्तग कन्हैया लाल स्वात्म पठनार्थ शुभमस्तु ।।
२०.८×१४.२ सें० मी०	२ (५–६)	१५	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री लघुशांति समाप्त ।।
२५.५×१०.६ सें० मी	१० (१–१०)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति देवता होमे समाप्त ।।
२०.२×८ सें० मी०	६	८	२२	पू०	सं०१६३६	इति लिंगतोभद्र देवता प्रधान होम समाप्त ।। इद होपुरोपाक वटुव-नार्थेन स्वपठनार्थ लिखित ।। स्वार्थं परार्थ च ।। यादृशं शुद्ध ८ म्या लिखित ।। सं० १६३६ ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७५२	७८०५	(शिव) लिंगप्रतिष्ठा पद्धति			दे० का०	दे०
७५३	३३२५	लिंगप्रतिष्ठा पद्धति	अनंतभट्ट		दे० का०	दे०
७५४	१००६	लिंगप्रतिष्ठापन विधि			दे० का०	दे०
७५५	१०६०	लिंगप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
७५६	५७२७	लिंगस्थापन विधि			दे० का०	दे०
७५७	६५६७	लिंगार्चाप्रतिष्ठा विधि	कमलाकर		दे० का०	दे०
७५८	१२०६	वश्योपासनप्रयोगानुष्ठान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	९	१०	११
२६.५×११.४ सें० मी०	१३ (१-१३)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति बौधायनोक्त लिंगप्रतिष्ठा पद्धति समाप्ता ॥
२६.३×१० सें० मी०	२० (१-२०)	६	३६	अपू०	प्राचीन सं० १९२३	इति श्रीमद्विद्वद्वृन्दमुकुटमणि श्रीमन्नागदेवात्मज श्रीमदनंत भट्ट विरचिता लिंगप्रतिष्ठा पद्धतिः समाप्ता ** इति लिपि कृत स्यामलालस्तरये य ग्रंथ सं० १९२३ मास माघ. शुक्ल. ११ ॥
२४×१०.३ सें० मी०	१४ (१-१४)	८	३१	पू०	प्राचीन	श्रीराम श्री काशी विश्वेश्वरार्पणमस्तु ॥ श्री अन्नपूर्णा देविभ्यो नमः श्री भैरवनाथ समर्थ श्री अष्टमातृका देवता नवग्रा देवतार्पणमस्तु । श्री राम ॥
२३.६×११.७ सें० मी०	६	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति वास्तुदेवता ॥ शुभमस्तु ॥
२०.२×६.३ सें० मी०	११ (१-११)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति बौधायनसूत्रोक्त लिंगस्थापन विधि ॥
२४×६.५ सें० मी०	७	६	५०	पू०	प्राचीन	इति भट्ट कमलाकर कृते लिंगार्चाप्रतिष्ठा विधिः ॥
३२×११ सें० मी०	१	७	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७५९	५७७४	वटुकदीपदान विधि			दे० का०	दे०
७६०	५२८१	वटुकबलि विधि	-		दे० का०	दे०
७६१	४८३०	वनप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
७६२	४८४६	वनप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
७६३	७७४०	बलिदान विधि			दे० का०	दे०
७६४	३८३१	बलिदान विधि			दे० का०	दे०
७६५	४८३१	बलिप्रदान विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२३ ८ × ८ ५ सें० मी०	१	३३	१७	पू०	प्राचीन	इति वटुकदिपदान विधि ॥ शुभ०
२६ २ × ११ सें० मी०	३ (१–२)	१२	३७	अपू०	प्राचीन	इति वटुक बलि विधि ॥
३० ३ × १२ ५ सें० मी०	११ (१–११)	१०	४०	पू०	सं०१८७४	इति श्रीवनोतराम जलोतसजी विधि सपूर्णम। सम्वत्सरा १८७४ साके १७३६ समय फाल्गुण मासे शुक्ल पक्षे पचम्या बुध वासरे वेलेपिरघुवगमन पुस्ककि समाप्तम ॥
२४ ६ × १० सें० मी०	१७ १–१७	८	२६	अपू०	प्राचीन सं०१७८१	× सम्वत्सरे १७८१ समय भाद्र शुक्ल स्यकादश्या वुधवासर ॥
१३ ७ × ६ २ सें० मी०	४ (१–४)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति बलिदान विधि ॥
३५ ६ × ६ २ सें० मी०	२	७	७६	पू०	प्राचीन	इति बलिदान प्रकरण समाप्त ॥
२७ ५ × ११ ५ सें० मी०	४ (१–४)	६	४१	पू०	सं०१९४०	इति बलिदान विधि समाप्तम् ॥ सं० १९४० शा १८०५ गौरि द्विज ॥

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की ग्रंथांक संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७६६	५२२८	बलिवैश्वदेव			दे० का०	दे०
७६७	५८४६	बलिवैश्वदेव			दे० का०	दे०
७६८	७५८०	बलिवैश्वदेव विधि			दे० का०	दे०
७६९	६८६२	वाजपेयहौत्रप्रयोग			दे० का०	दे०
७७०	२३५८	वापीकूपतडागादि-प्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
७७१	६६५०	वाल्मीकि रामायण पाठ प्रयोग			दे० का०	दे०
७७२	६६४६	वाल्मीकि रामायण-पाठ प्रयोग			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ स	८ द	६	१०	१०
२८×१२.५ सें० मी०	२ (१–२)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति बल वैश्वदेव क्रिया समाप्तम् ॥
२१.८×६.२ सें० मी०	२ (१–२)	११	४५	पू०	प्राचीन	
२६.३×११ सें० मी०	३ (१–३)	६	४५	पू०	प्राचीन	अथ वैश्वदेव लिख्यते (प्रारंभ)
२३.६×१० सें० मी०	२५ (१–२५)	१२	४५	पू०	प्राचीन	इति वाजपेय हौत्र समाप्त ॥
२७.५×१३ सें०मी०	११	१३	२६	अपू०	प्राचीन	
२२.३×१०.५ सें० मी०	८ (१–८)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति संक्षिप्त श्री वाल्मीकि रामायण-पाठप्रयोग ॥ अयं विधि. श्री काशीस्थ ठाकुरद्वारा समीपस्थ श्री विश्वनाथजी अग्निहोत्रीति प्रसिद्ध सोमयाजिना परम कारुणिकेन संगृहीत ॥ तथा श्री संवत् १६५० + + + + ॥
१६.२×६.६ सें० मी०	५ (१–५)	११	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री महाहंस प्रयाणे उमामहेश्वर-संवादेपंचम पटल ॥५॥ श्री संवत् १६५० श्रावण कृष्ण १२ द्वादश्या + + + + रामदासभट्टात्मजराम कृष्णे-नैतत् विग्रान सीतला घट्ट समीपस्थ-ठाकुर द्वारा समीप वासि श्रीविश्वनाथ अग्निहोत्री + + + + + +

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७७३	६६४८	वाल्मीकि रामायणपाठ विधान			दे० का०	दे०
७७४	६६९९	वाल्मीकीय रामायण संक्षेप पाठ प्रयोग			दे० का०	दे०
७७५	५३०१	वाशिष्टी			दे० का०	दे०
७७६	५८४७	वाशिष्ठी			दे० का०	दे०
७७७	१४	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७७८	२२५१	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७७९	२	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रतिपक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६.६×१०.४ सें० मी०	६	१२	२४	पू०	प्राचीन सं०१९४६	श्री वाल्मीकि रामायण पाठ विधान श्री रामभक्तार्य महता परिश्रमेण संगृह्य लिखित श्रीराम भट्टात्मज राम कृष्ण तैलङ्गेन । श्रीकाशीविश्वनाथ पुरी सवत् १९४६ × × ×
२८.६×११.६ सें० मी०	१२ (१–१२)	९	३६	पू०	सं०१९५०	इति श्री महाल्मीकि रामायण पारायणे सक्षेप प्रयोग ॥ श्री सवत् १९५० शके १८१५ विश्वावसुनाम सवत्सरे मार्गशीर्ष शुक्ल तृतीया
२१.४×११.५ सें० मी०	२९ (४–३२)	११	२४	अपू०	स०१९३२	इति वाशिष्टी समाप्त''' ·· · ··· ··· ·· '''सवदि १९३२ शाके१७९७ वारानाम ग्रामे लिख्यत पपरे पाठक ॥
२३.६×११ सें० मी०	५ (१०–१४)	६	२९	अपू०	प्राचीन सं०१८६६	इति श्री वासिष्ठीकौरिवा समाप्त ॥ श्री रस्तु ॥ मिति कार्तिक वदी ७ सवत् १८६६ ' '''॥
१५×१०.५ सें० मी०	११ (१–११)	७	१३	पूर्ण	प्राचीन	
१५.५×१० सें० मी०	२६ (१–२६)	६	१८	पू०	प्राचीन सं०१७८६	इति वासिष्ठी समाप्त ।। शुभ मगल ददातु ॥ कार्तिक वदि ४ वासरे सवत् १८७६ लिखत प० श्री पाठक जवाहिर सोप ग्रामे विहारी आश्रमे ॥ स्वस्ति । दीर्घायु भूयात ॥४॥
१७×१२.५ सें० मी०	१४	८	१९	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७८०	३५६८	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७८१	३५१५	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७८२	२०४६	वाशिष्ठी होम पद्धति			दे० का०	दे०
७८३	८३८	वाशिष्ठी होम पद्धति			दे० का०	दे०
७८४	६६७	वाशिष्ठी होम पद्धति			दे० का०	दे०
७८५	५००५	वाशिष्ठी होम विधि			दे० का०	दे०
७८६	६८२	वास्तुपूजा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२×११.५ सें० मी०	१४ (६–१२, १७–२२)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
२५.४×१५.१ सें० मी०	१६	१४	३०	अपू०	प्राचीन	
२४.२×११.५ सें० मी०	४० (१–३०, ३३–४२	७	२८	अपू०	प्राचीन सं०१६०७	इति श्री ब्रम्हप्रोक्त सहितायां वाशिष्ठी दुर्गोत्सव होम पद्धति समाप्तम् ॥ × × सवत १६०७ वैसापकृष्ण रवौ ॥
२३.७×१३.२ सें० मी०	७ (४६–५५)	६	२३	अपू०	प्राचीन सं०१६२३	इति श्री होम पद्धित वाशिष्टी सपूरन शुभमस्तु श्रीरस्तु मगल भूयात सवत् १६२३··· ··· ···लिखत मया यदि शुद्धमशुद्ध वाम मम दोशो न दीयते ॥
२०.५×१०.२ सें० मी०	२५ (२–२६)	६	२५	अपू०	प्राचीन	
२५.७×११ सें० मी०	४० (१–४०)	६	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मोक्त वशिष्टोक्त होम विधि समाप्त ॥
२०.८×११ सें० मी०	६	७	३०	पू०	सवत् १६३६	गौरी शकर शर्मा लिपित्वा · ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७८७	२९७६	वास्तुपूजा			दे० का०	दे०
७८८	७४७३	वास्तुपूजादि			दे० का०	दे०
७८९	९२७	वास्तुपूजा विधि			दे० का०	दे०
७९०	६०३६	वास्तुपूजा विधि			दे० का०	दे०
७९१	२१३८	वास्तुपूजा विधि			दे० का०	दे०
७९२	६४१३	वास्तुप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
७९३	१७७३	वास्तुप्रतिष्ठा पूजा-विधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२५ १ × १५ ५ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२४ ६ × ११ सें० मी०	१३ (२–१४)	८	२८	अपू०	प्राचीन	
२४ ८ × १० २ सें० मी०	५ (१–५)	८	३७	पू०	सं०१६४६	इति वास्तुपूजा विधि समाप्तम् सवत् १६४६ शाके १८११ माघ शुक्ल १ भौम लिखित्वा गौरी शर्मणे ॥
२४ १ × ६ २ सें० मी०	६ (१–६)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति वास्तु पूजा विधि ।
२० ५ × १० सें० मी०	१७	८	२१	अपू०	प्राचीन	
२१ ४ × ६ ६ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	अथ प्रतिष्ठावास्तुलिख्यते तत्र प्रकार । (प्रारभ)
२६ २ × १४ २ सें० मी०	२	१४	५०	पू० (जीर्ण क्षीण)	प्राचीन सं०१६०६	इति वास्तु पूजा विधि संपूर्ण सुभमास्तु-मगल ददात सवत् १६०६ कातिक कृष्ण १ बु

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रह विशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७९४	४८९६	वास्तुशांति (वास्तु पूजन पद्धति)			दे० का०	दे०
७९५	१००४	वास्तुशांति प्रयोग			दे० का०	दे०
७९६	६४२७	वास्तुशांति प्रयोग	रामकृष्ण भट्ट		दे० का०	दे०
७९७	५१३३	वास्तुशांति प्रयोग			दे० का०	दे०
७९८	२०३२	विजया दशमी पूजन विधि			दे० का०	दे०
७९९	२८४	विजया दशमी पूजा विधि			दे० का०	दे०
८००	६३४८	विष्णवपराध प्रायश्चित्त-विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ		स	द	९	१०	११
२५·८ × ११ ४ सें० मी०	११ (१–११)	८	२६	पू०	सं०१६०६	इति वास्तु पूजन पद्धति समाप्ता ॥ संवत् १६०६ ॥
२४ × १० ३ सें० मी०	११ (१–११)	११	३७	पू०	प्राचीन	अग्निरित्यादिप्रजापत्यंत ॥ एकैकयाज्याहुत्यायक्षे ॥
२२ २ × ६ ५ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भट्ट रामकृष्ण विरचिते आश्वलायन गृह्योक्त वास्तु शांति प्रयोग ॥
२१ ४ × १० ५ सें० मी०	३ (१–३)	१४	४५	पू०	प्राचीन	इति गृहवास्तु शांति प्रयोग ।
२७ ७ × १३ १ सें० मी०	४ (१–४)	१३	३७	पू०	प्राचीन सं०१८२३	इति श्री विजयादशमी पूजा समाप्त ॥ ·· ······संवत् १८२३ तत्र वर्षे माघ मासे कृष्ण पक्षे प्रतिपदायां १ गुरुदिन लिखित ·· ·····॥
१६ × ११ ५ सें० मी०	८ (१–८)	१६	१०	पू०	प्राचीन सं०१८३६	इति विजयदशमी कर्तव्यता संपूर्ण सं० १८३६ ॥
२३ ५ × १० ५ सें० मी०	११ (१–११)	१२	४४	पू०	प्राचीन	

(सं०सू०४२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८०१	७८१५	विनायक शांति			दे० का०	दे०
८०२	५४=१	विवाह			दे० का०	दे०
८०३	६११६ / ७	विवाह कर्म	रूपलाल गुसाईं		दे० का०	दे०
८०४	४३३७ / ८	विवाह कर्म			दे० का०	दे०
८०५	३२८३ / २	विवाह कर्म			दे० का०	दे०
८०६	५४२	विवाह कर्म			दे० का०	दे०
८०७	२२४३	विवाह कर्म			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६.८×११.१ सें० मी०	३ (१–३)	११	५०	पू०	प्राचीन	इति विनायक शांति ॥ शुभमस्तु
१८.९×१० सें० मी०	२० (२४–४३)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
१४.७×९.९ सें० मी०	४० (१–४०)	[illegible]	१८	पू०	प्राचीन	इति आचार रूपलाल गुसांई कृत संपूर्ण॥ + + इति ग्रह्यनोक्त विवाह कर्म संपूर्णम् ॥१॥
१६×१३.३ सें० मी०	२४ (७–३०)	१३	२५	अपू०	प्राचीन	इति ग्रह्यनोक्त वीवा कर्म संपूर्ण ॥
१८.५×१२.८ सें० मी०	१६ (१–१६)	१२	२३	पू०	प्राचीन सं०१८६५	इति विवाह कर्म समाप्त ॥ इति ॥ संवत् १८६५ मिति वैशाष शुदि शुक्र वासरे नम । लिषत तोतेराम ब्राह्मणे वहावदि मध्ये ॥
१६×१२.२ सें० मी०	१६ (१–१६)	१०	१८	पू०	प्राचीन सं०१९०८	इति श्री विवाह कर्म समाप्तम् । संवत् १९०८ श्रावण कृष्णा ४ गुरुवासरे लिषत सोति रम । पठनार्थं कन्हैयाराम । शुभमस्तु श्रीः ॥ श्रीरामचंद्र
२७×११.६ सें० मी०	२२ (१–२,४–८,१०,१२–२५)	६	३४	अपू०	प्राचीन	इति विवाहकर्म्म समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८०८	५११६	विवाहकर्म			दे० का०	दे०
८०९	१००२	विवाहकर्म			दे० का०	दे०
८१०	५५९६	विवाहकर्म (टीका सहित)	हलायुध		दे० का०	दे०
८११	४२८७	विवाहकर्म			दे० का०	
८१२	६०८३	विवाह टीका			मि० का०	
८१३	४०६५	विवाह दर्पण			दे० का०	
८१४	४६४	विवाह पद्धति	रामदत्त		दे० का०	

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१८७×१४७ सें० मी०	१५	११	२०	अपू०	प्राचीन	
२५ ५×११ सें० मी०	१० (१–६,११)	१०	४१	अपू०	सं०१८१३	इति विवाह क्रम ॥ सपूर्ण ॥ सवत् १८१३ मति वैसाष शुक्ल १० रवि वासरे ॥ यादृसि पुस्तक द्रष्टवा ॥ तादृस लिखित मयापजदि शुद्ध विशुद्ध वा मम दोषो न दियेते ॥ श्रीराम
३० ८×१४ ७ सें० मी०	१५ (४–१८)	१४	५२	अपू०	सं०१८८३	इति श्री विवाह कर्म मंत्र व्याख्या हलायुधन कृत विवाह सपूर्णम् ॰ ॰॰ सम्वत १८८३ श १७४८ फाल्गुण कृष्ण ६ सौम्य दिने लिपि कृत मिद।
२५ ३×११ २ सें० मी०	१७ (२–१८)	११	३१	अपू०	सं०१८४६	इति विवाहकम समाप्त ॥शुभमस्तु॥ सवत १८।४६ समय पाष कृष्ण एका दशया लिखित रामहित शुक्ल आदारे वंसे ॥ राम कृष्णायनम ॥
१६ ६×८ सें० मी०	१२ (१–१२)	५	१५	पू०	सं०१६०५	इति श्री विवाह टिका सपूर्णं सवत् १६०५ मीति भापाडवदि ११ वार मगलवार ॰ ॰॰॰
२३ ५×८८ सें० मी०	२३ (२५–४७)	७	३५	अपू०	प्राचीन	
२५ ५×११ ३ सें० मी०	३४ (१–३४)	१०	३५	पू०	स०१६३२	इति वाक्याथ इति चतुर्थीमंत्र व्याख्या विवाहकम समाप्तम् हलायुधन ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८१५	२४४	विवाह पद्धति	श्री रामदत्त		दे० का०	दे०
८१६	११८९	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८१७	११९४ / २	विवाह पद्धति	श्री रामदत्त आचार्य		दे० का०	दे०
८१८	४६२	विवाह पद्धति (संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
८१९	४६०९	विवाह पद्धति (कर्मकौमुद्यांतर्गत)	कृष्णदत्त अवस्थी		दे० का०	दे०
८२०	५२२१	विवाह पद्धति (सटीक)	रामदत्त		दे० का०	दे०
८२१	४०१०	विवाह पद्धति (सटीक)	प० गंगासहाय		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६.२×१२.६ सें० मी०	२२ (१–२२)	१२	१६	पू०	प्राचीन स०१०६७	इति चतुर्थी कम समाप्तम स० १०६७ तिथि ६ बुधवासर मार्गशीष ।
२२.५×८ सें० मी०	२२ (१–२२)	७	३२	पू०	सं०१७२७	अनेयिन पिरगोधर त्रिपाठी सिद पुस्तक सपूर्ण शुभ मस्तु ॥ सवत् १७२७ ॥ शाके ॥ १५६२ श्रावणे मासि कृष्ण पक्षे तिथौ चतुर्दश्या ॥१४॥ भौमवासरे
१५.२×१२.७ सें० मी०	३६ (३–४२)	१०	१७	अ० पू०	सं०१६१०	इति श्री रामदत्त आचार्य कृते विवाह पद्धति सपूर्णम् शुभ भूयात लिख्यनार्थे गगन आचार्य १६१० पौष शुक्ला ८ भृगु०......
३३×१४ सें० मी०	१६ (१–१६)	१४	५१	पू०	सं०१८६७	इति चतुर्थी कर्म प्रकारः समाप्तमिति श्रीरस्तु ॥
२३.१×११.८ सें० मी०	२६ (१–२६)	१०	२६	पू०	सं०१६०६	इत्यावस्थिक कृष्णदत्त विरचितायां कर्म कौमुद्या विवाह पद्धति प्रकर्ण समाप्त शुभमस्तु सवत ॥ १६०६ जेष्ट शुक्ल ॥ १३ ॥ सोमकौ लिख्यत प० श्री अउजरिया बिहारी स्वार्थम् ॥
३३.४×१२.६ सें० मी०	२२ (१–२२)	१०	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री रामछनि विरचितायां विवाह पद्धति ॥
३२.५×१८.४ सें० मी०	४२ (१–४२)	६	२७	पू०	स०१६५७	इति विवाह प्रकरणम् ॥ + + + + + सवत् १६५७ पडित गगा शहाय कृत ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८२२	१७७३	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२३	५२०३	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२४	२०२६	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२५	२२६२	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२६	३२४४	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२७	६५५५	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२८	१८६७	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.२ × १०.३ सें० मी०	२२	१०	३५	पू०	प्राचीन	
१४.६ × ९.२ सें० मी०	२०	१०	१७	अपू०	प्राचीन	अथ वर धर्मयिकामाय गौरी विवाहः विप्ये वर हिति सकल्पा पचभ् सस्कारा न्सुत्वा लौकिकाऽग्नि स्थापन ... (पत्र-सख्या ३)
३०.२ × १४.५ सें० मी०	९ (१–९)	१६	४२	पू०	सं० १८५८	इति विवाह कर्म समाप्तम् सवत् १८५८ फाल्गुन शुक्ला प्रतपदा भृगुवासरे विवाह पद्धति लिपितम्
१८.३ × १०.७ सें० मी०	२५ (१–६, ११–२९)	८	१८	अपू०	प्राचीन	
२५.५ × १५.२ सें० मी०	४ (६, ८-९, ११)	१९	२०	अपू०	प्राचीन	
२५.६ × १०.८ सें० मी०	४ (४–७)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति विवाह विधि ॥
१७.३ × १३.३ सें० मी०	३१	१०	१५	अपू०	सं० १९४३ कृमिकृंतित	इति विह कर्म्म समाप्त ॥ अथ चतुर्थी कर्म लिप्यतम् ॥ सं० १९४३ मासाना मासोत्मासे चैत्रमासे कृप्णपक्षे शुभतिथौ १३ त्रयोदश्या भौमवासरे लिप्यत मोथ्य वाहालराम ॥

(सं० सू० ४३)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८२६	१५४०	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३०	४५०५	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३१	४६२१/३	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३२	४२०४	विवाहपद्धति			मि० का०	दे०
८३३	७२०२	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३४	४१६०	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३५	२७०६	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ × १०·२ सें० मी०	१८ (१-७,९-१६ १८-२३)	७	२२	अपू०	प्राचीन	
२३·२ × ११.५ सें० मी०	२५ (१-२५)	८	२४	अपू०	प्राचीन	अथ क्रमप्राप्तो विवाह विधिमुच्यते (प्रारम्भ) × × ×
१६ × १०·७ सें० मी०	१३	९	१६	अपू०	प्राचीन	
२२.३ × १७·६ सें० मी०	१६	११	२३	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११·८ सें० मी०	१२ (१-१२)	[illegible]	३०	अपू०	प्राचीन	अथ विवाहपद्धति लिखते (प्रथमपत्र)
२१.१ × १०·३ सें० मी०	९ (१०-२०)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
१६ × १०·५ सें० मी०	११	९	१७	अपू०	सं० १८४६	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८३६	३५०४	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३७	१२२५	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३८	४०३६	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३९	६२६	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८४०	६२७	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८४१	१८०८	विवाहपद्धति (टीकासहित)			दे० का०	दे०
८४२	१६०४	विवाहपद्धति (सरहटीका)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	९	१०	११
१८.५ × १३ सें० मी०	२७ (१–२७)	११	२६	पू०	प्राचीन सं०१८७१	इति विवाहपद्धति कर्म समाप्तम् ॥ ......संवत् १८७१ आषाढ शुक्ल प्रतिपत्सनिवासरे लिपीपूर्ति...... ...।
२३.७ × १०.२ सें० मी०	१७ (१–१७)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति विवाह समाप्त ॥ मी पौषशुदी ८ शुभ
१६ × १०.२ सें० मी०	३० (१–३०)	७	२८	अपू०	प्राचीन	
१६.५ × १२.५ सें० मी०	२७	९	२२	अपू० कृमिकृतित	सं० १६२१	इति चतुर्थी कर्म समाप्तम् ॥ शुभमस्तु० मंगल ददातु ॥ श्री ॥ संवत् १६२१ मिति पौष वदि १३ चंद्रवार लिपत मिश्र हरगु (गुन)लाल ॥ पठनार्थ मिश्र लाल ॥ शुभ ॥
२३ × १६ सें० मी०	६ (१-२,७-१३)	२२	२०	अपू०	प्राचीन	
१२.७ × १२.५ सें० मी०	३८ (२-७,६-३८, ४३–४४)	८	४०	अपू०	प्राचीन	
२६.५ × १३.७ सें० मी०	११ (१-४,६-१२)	११	३६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८४३	३५१४	विवाहपद्धति (सटीक)			दे० का०	दे०
८४४	६६६८	विवाहप्रयोग	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
८४५	१६७४	विवाहमत व्याख्या			दे० का०	दे०
८४६	४०४०	विवाहविधि			दे० का०	दे०
८४७	४७१०	विवाहविधि			मि० का०	दे०
८४८	७५७१/२	विवाहविधि			दे० का०	दे०
८४९	४६२६	विवाहसूत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
३१.६ × १२.५ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	३७	अपू०	प्राचीन	
२२.३ × १०.३ सें० मी०	११ (१–११)	१०	३४	पू०	सं०१७८८	इति श्री राम कृष्ण भट्टात्मज कमलाकर भट्ट कृतौ विवाह प्रयोग ॥ सवत् १७८८ माघ कृष्ण ११ बुधे लिखित मिद रामहृदापनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकंठेन ॥
२२.५ × १४.५ सें० मी०	६ (१–२, ६, ११–१३)	२०	३०	अपू०	प्राचीन	
२७ × १०.५ सें० मी०	४३ (१–४३)	६	२६	पू०	सं०१६१७	इति विवाह विधि समाप्त ॥ सवत् १६१७ ॥ फाल्गुण मासे शुभे कृष्ण पक्षे ॥ तिथौ पंचमीयां ॥ शुक्रवासरे ॥ .. .. ..
२०.७ × १७.३ सें० मी०	११ (१–११)	८	२३	अपू०	आधुनिक	
२१ × १६.५ सें० मी०	३३ (१–३३)	१८	२१	अपू०	प्राचीन	
१५.२ × १०.२ सें० मी०	५ (१–५)	८	१८	पू०	सं०१८५०	इति विवाह सूत्र लिखित पंडित राम हित ॥ सवत् १८५० भादो वंदी मिति जेष्ठ शुक्ल पंचमी गुरु वासर के पुस्तक समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५०	३७६१	विश्वामित्रकल्प			दे० का०	दे०
८५१	६५७०	विष्णुबलि प्रयोग			दे० का०	दे०
८५२	६६४०	विष्णुबलिप्रयोग			दे० का०	दे०
८५३	१४८४	विष्णुशयनी स्थापन विधि			दे० का०	दे०
८५४	२७६०	विष्णु षोडश नाम			दे० का०	दे०
८५५	२७८३	विष्णु षोडशोपचार पूजा			दे० का०	दे०
८५६	५७५०	विष्णु सहस्रनाम पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ १ × १० ७ सें० मी०	४२ (२-४३)	६	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री विश्वामित्रकल्पे वानप्रस्थ-गृहस्थाश्रम धर्मपचमहायज्ञविधि समाप्त ॥ (पत्रसंख्या-३७) + + +
२४ ४ × ११ १ सें० मी०	४ (१-४)	१०	३८	पू०	सं० १८१६	इति विष्णुवलि प्रयोग ॥ पुस्तकमिद रामडोहकर विश्वनाथ भारमज भट्टात्मज नील कठभट्टेन लिखित स्वार्थं परार्थं च सवत् १८ १६ कार्तिक शुद्ध १०
२२ ६ × १० १ सें० मी०	४ (१-४)	६	४१	पू०	प्राचीन	इति विष्णुवलि प्रयोग ॥
१८ ८ × १० सें० मी०	५ (१,४-७)	६	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे विष्णु-शयनाद्युत्थापन विधि मराठी शुक्ला सपूर्ण शुभ भूयात् श्री कृष्णार्पणमस्तु
१२ ८ × ६ ६ सें० मी०	२ (१-२)	८	१२	पू०	प्राचीन	इति विष्णु पुराणे षोडस नाम समाप्त ॥
१४ × ८ ४ सें० मी०	३ (१,३ ४)	७	१६	अपू०	प्राचीन	
१७.३ × ६ ७ सें० मी०	३	४	१६	अपू०	प्राचीन	

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५७	६३१९/७	वृद्धि श्राति			दे० का०	दे०
८५८	९६९	वृषाक पद्धति			दे० का०	दे०
८५९	४१६०	वृषोत्सर्ग			दे० का०	दे०
८६०	११३०	वृषोत्सर्ग			दे० का०	दे०
८६१	५५०२	वृषोत्सर्ग			दे० का०	दे०
८६२	५२७७	बृहस्पतिमन्त्र न्यास			दे० का०	दे०
८६३	३७५८/२	वेणीमाधव पूजन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०८×१४२ सें० मी०	३ (६-८)	१४	३२	पू०	प्राचीन	इति वृद्धि श्राद्ध संपूर्ण ॥
३२५×१७६ सें० मी०	३	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
२२७×६ सें० मी०	७ (१-७)	१२	४४	पू०	सं०१८४५	श्री रस्तु ॥ संवत् १८४५ मिति श्रावण वद पंचमी लिखितं नारायणस्य हस्ताक्षर पुस्तक समाप्त ॥ इदं पुस्तकं वृषोत्सर्गस्येदं ॥
३१×१३१ सें० मी०	१३ (१-१३)	१२	४०	पू०	सं०१६४२	इति वृषोत्सर्ग गोदान संवत १६४२ आश्विने कृष्णपक्षे च द्वादश्यां चंद्र वासरे लिखितं फकीरचंद्रेण पुस्तक शुभदायक ॥ श्रीरीक्षिवायनम शुभभूयात् ॥
२७४×१७५ सें० मी०	१ खर्रा (१-४)	३६	३०	अपू०	जीर्ण प्राचीन	
१५६×११५ सें० मी०	१	१२	२०	पू०	प्राचीन	बृहस्पते गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप् छंद न्यासे विनि०··· ·· (प्रारंभ)
१५७×८५ सें० मी०	६ (२-१०)	११	२३	अपू०	प्राचीन सं०१६०४	इति श्री पद्मपुराणे पाताल खंडोक्त श्री वेणीमाधव पूजन समाप्त ॥०॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८६४	६३७२	वेदपरायण विधि			दे० का०	दे०
८६५	५०५४/१५	वेदपारायण विधि			दे० का०	दे०
८६६	१२१६	वेदोक्तशिवार्चन पद्धति			दे० का०	दे०
८६७	६६३१	वैदिकमंत्र संग्रह			दे० का०	दे०
८६८	६६२६	वैदिकमंत्र संग्रह			दे० का०	दे०
८६९	६४३३	वैधृतिशांति प्रयोग			दे० का०	दे०
८७०	५०५४/१५	वैशाखस्नान विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	ब	८	६	१०	११
२२.४×६.१ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति ऋग्विधानाद्युक्तो वेदपरायण विधि ॥
१६×७.८ सें० मी०	१३½	७	२१	अपू०	प्राचीन	
२३.१×१२.३ सें० मी०	४४ (१–४४)	४	१३	पू०	प्राचीन	इति शैवोक्तशिवार्चन पद्धति । शुभम् ।
२४.५×११.१ सें० मी०	४ (१–४)	[illegible]	२६	पू०	प्राचीन	
२४.३×११.१ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३५	पू०	प्राचीन	
२२.३×८.८ सें० मी०	३ (१–३)	७	२७	पू०	प्राचीन	
१६×७.८ सें० मी०	४½	७	२१	अपू०	प्राचीन	इतिस्तोत्रम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८७१	७६४७	वैशाखाद्यापन			दे० का०	दे०
८७२	४४८५	वैश्य सध्या			दे० का०	दे०
८७३	१६२०	वैश्व (वलिवैश्व)			दे० का०	दे०
८७४	६३६१	वैश्वदेव			दे० का०	दे०
८७५	५७५८	वैश्वदव विधि			दे० का०	दे०
८७६	५८१६	वैश्व विधि			दे० का०	दे०
८७७	६४२	व्यास पूजा	शकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ब	स	द	९	१०	११
२७ ३ × ११ ४ सें० मी०	२	६	३५	अपू०	प्राचीन	इति वैशाखोद्यापनविधि ॥
२५ × १० ४ सें० मी०	२ (१-२)	८	४२	पू०	सं० १९२३	इति वैश्य सध्या समाप्तिमगात स० १९२३ वैशाख शुक्ला ८ श० वा० ॥
२५ ५ × १० ७ सें० मी०	५ (१ ३-६)	१०	३५	पू०	प्राचीन सं० १८७३	इति वैश्वम समाप्तम पौषमासे असिते पक्षे दशम्या सनिवासरे ॥ मयन मिश्र द्विजे नेद लिपित पुस्तग् मिद ॥ सवत् १८७३ सकेश १७३८ शुभमस्तु ॥
१४·७ × ८ ३ सें० मी०	६ (१-६)	६	२४	अपू०	स० १९३५	इति वैश्वदेव समाप्त ॥ स्वार्थं परोपकाराय ॥ शिवाय गुरवे नम ॥ सवत् १९३५ शके १८०० ॥
२६ ४ × २१ ३ सें० मी०	१ (खर्रा)	२०	३३	पू०	स० १८८६	इति श्री वैस्वदेव पद्धति सपूर्णं ॥ समाप्त ॥ श्री रस्तु ॥ स० १८८६ के उपरात चै० ब० ७ मु० वेरेठी लिप्यत प० विदुवा सुपनाल ॥
२७ ३ × ११ ४ सें० मी०	२ (१-२)	११	३२	पू०	प्राचीन	इति वैश्व विधि ॥ स० १९३२ मा० मा० वृ० ४ लि० ॥
१३ × १० ५ सें० मी०	६ [(३-८)	१२	१५	अपू०	प्राचीन	इति छकराचार्य विरचित व्यास पूजा समाप्ता ॥ श्री हरहराण्यर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८७८	१८४२	व्रतबंध			दे० का०	दे०
८७९	४८१३	व्रतार्क			दे० का०	दे०
८८०	५९२६	व्रतार्क			दे० का०	दे०
८८१	६९४१	ब्रह्मचारीव्रतलोप-प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
८८२	१२४४	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
८८३	५२९६ / २	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
८८४	७०५२	ब्रह्मयज्ञ तर्पण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	ग	द	६	१०	११
१४ × १२·३ सें० मी०	२	१०,	१८	अपू०	प्राचीन (खंडित) जीर्ण	इति व्रतबंध व्रतादेश व्रतविसर्ग तृतीय कर्म समाप्तम्"" संवत् १६१५ ?मिति भाद्रपद वदि १ मृगवाशरे ॥ लिखित मिश्र नयन ॥ पठनार्थं नानक पचोलि ॥
२६.३ × १०.३ सें० मी०	१६ (१५–३०)	८	३७	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × १०·६ सें० मी०	१७ (१–१७)	१३	३६	अपू०	प्राचीन	
२२.७ × १०.२ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३६	पू०	सं० १७१८	लिखितमिदं रामहृदस्य विश्वनाथ भट्ट सुत नील कंठ भट्टेन वैशाख शु० ११ संवत् १७१८ ००
२०.८ × ६.२ सें० मी०	५ (१–५)	७	२५	पू०	प्राचीन	अथ ब्रह्मयज्ञ समाप्त ॥ ... . भिष्म युधिष्ठिर संवादे सहस्रगत रामायण समाप्त। श्री कृष्णार्पणमस्तु॥
१६ × ८ सें० मी०	२ (१–२)	६	२६	पू०	प्राचीन	ब्रह्मयज्ञ समाप्त । शुभमस्तु
२७.२ × १०.६ सें० मी०	११ (१–११)	६	३४	पू०	प्राचीन सं०१८६२	इति श्री ब्रह्मयज्ञतर्पण समाप्तम् शुभमस्तु मि० वै० सु० १२ मंगलवार समाप्तम् सं० १८६२ लिखित पुरुशोतम रलिराने रोवा बैठे ।
(सं० सू० ४५)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८८५	४८६६	ब्रह्मशापविमोचन			मि० का०	दे०
८८६	६८२८	ब्राह्मणाच्छंसी प्रयोग			दे० का०	दे०
८८७	६६६६	ब्राह्मविवहागभूत-वाग्दान विधि			मि० का०	दे०
८८८	२२६६	भकारार्चन दीपिका पद्धति	श्रीपति		दे० का०	दे०
८८६	४७२६	शमीपूजन			दे० का०	दे०
८६०	५०२२	शय्यादान			दे० का०	दे०
८६१	४२२७	शय्यादान प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१९·६×८·२ सें० मी०	३ (१–३)	६	२२	पू०	प्राचीन स०१९१८	इति श्री रुद्रया जामले षडिका ब्रह्म-शाप विमोचन सपूर्णम् ॥·· ······ स०१९१८ ॥
२३·४×१० सें० मी०	७ (१–७)	११	३०	पू०	प्राचीन	इति ब्राह्मणछसी प्रयोग समाप्त ॥
२२·३×१०·३ सें० मी०	३ (१–३)	९	३५	पू०	प्राचीन	
२५·३×९·५ सें० मी०	७१ (६–७६)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२०·६×१०·१ सें० मी०	४ (२–५)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	इति शमीपूजन समाप्त शुभ भूयात् ॥ राम······ . ······
२१·२×६·७ सें० मी०	१	८	४०	अपू०	प्राचीन	
२१·८×८·८ सें० मी०	३ (१–३)	६	३४	अपू०	प्राचीन	श्री गणेशायनम ॥ अथ शय्यादान ॥ (प्रारभ)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८९२	३००३	शांतिकर्म			दे० का०	दे०
८९३	६४१२	शांतिरत्न (ज्वरशांति प्रयोग)			दे० का०	दे०
८९४	५१	शांतिविधान			दे० का०	दे०
८९५	६३५१	शांतिविधि			मि० का०	दे०
८९६	६४२५	शांतिसार			दे० का०	दे०
८९७	२१२	शारदनवरात्र			दे० का०	दे०
८९८	६३८१	शालग्राम पंचायतन दान विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०.६×१५.१ सें० मी०	१३ (१–१३)	१२	३८	अपू०	प्राचीन	
२१.७×१० सें० मी०	२ (१–२)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति शांतिरत्ने ज्वरशांति प्रयोग ॥
२६.५×१३.२ सें० मी०	८	११	३०	अपू०	प्राचीन	
२४.२×१५.३ सें० मी०	८ (१–८)	१४	२६	अपू०	प्राचीन	
२२.७×१०.३ सें० मी०	१० (१–११) (पत्र १ पर दानवर)	१२	५०	पू०	प्राचीन	इति वैधृतिव्यतीपातसंक्रांतिजनन शांति ॥
२४२×११ सें० मी०	१४	११	३७	अपू०	प्राचीन	
२०.५×६ सें० मी०	१	१२	३३	अपू०	प्राचीन	इति पंचायतन दान विधि

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८९९	६३६२	शिलान्यास विधि			दे० का०	दे०
९००	४२८२	शिव पार्थिव पूजा			दे० का०	दे०
९०१	४०५१	शिवपूजन			दे० का०	दे०
९०२	२८३८	शिवपूजन			दे० का०	दे०
९०३	८१२	शिवपूजनन्यास			दे० का०	दे०
९०४	८११	शिवपूजनन्यास			दे० का०	दे०
९०५	४०३८	शिवपूजनपद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
१५×७२ सें० मी०	६ (१–६)	६	२५	पू०	सं० १८५४ शाके १७१९	इति शिलान्यास विधि ॥ श्री संवत् १८५४ विभवनाम संवत्सर फाल्गुन कृष्ण ७ शके १७१९ ॥
१५९×११६ सें० मी०	१४ (१–१० १३–१८)	८	१६	अपू०	प्राचीन	इति शिव पार्थिव पूजन संपूर्ण समाप्त शुभ मंगल मस्तु ।
२१×१०७ सें० मी०	५ (१२–१३ १५–१७)	७	२६	अपू०	सं०१९१२	इति शिवपूजन संपूर्णम् शुभ संवत १९१२ ॥
१४९×८६ सें० मी०	६ (१–६)	८	१७	अपू०	प्राचीन	
२२४×१०६ सें० मी०	९ (१,३,५–९,१०–११)	१२	२७	अपू०	प्राचीन सं० १८७२	इति श्री इतिहास्येन पूजा विधि समाप्तिमगमत ॥ संवत् १८७२ ॥
२२४×१०६ सें० मी०	९	१२	२८	अपू०	सं० १८७२	इति श्री इति हा स्येन पूजा विधि समाप्तिमगमत् ॥ संवत् १८७२ ॥
१५५×८२ सें० मी०	१५ (१–१५)	७	२२	पू०	सं० १९०८	इति शिवपूजन संपूर्णम् ……… पौषशुक्ल १० भृगौ संवत् १९०८ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६०६	१३३८	शिवपूजनपद्धति			दे० का०	दे०
६०७	३०४६/६	शिवपूजन विधि			दे० का०	दे०
६०८	१५१०	शिवपूजन विधि			दे० का०	दे०
६०९	४३३७/८	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६१०	२६८७	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६११	१६०४/४	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६१२	१४८३	शिवपूजा			दे० का०	दे०

पत्र या पृष्ठ का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१७×९५ सें० मी०	१५ (१–१५)	७	३२	पू०	प्राचीन सं०१८७१	इति श्री शिवपूजनपद्धतिसंपूर्णं शुभमस्तु संवत् १८७१ समेभाद्रपदकृष्ण पष्ठ्यां रविवासरे ॥
१९'७×१३ १ सें० मी०	३	२१	१५	पू०	प्राचीन	इति विसर्जनं ॥
१६×८ ५ सें० मी०	८ (२-४,७-११)	७	१८	पू०	प्राचीन	
१६×१३ ३ सें० मी०	१४ (४२–५५)	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति रुद्रयामल शिवपूजा संपूर्णं ॥
१९ ५×११ ५ सें० मी०	६	६	२१	पू०	प्राचीन सं०१६१८	इति शिवपूजा संपूर्णं संवत १६१८ ॥
१३ ६×७ ६ सें० मी०	२ (५–६)	८	१३	अपू०	प्राचीन	इति शान्तिस्तवम् ॥
१८ ८×११ २ सें० मी० (सं०पू०४६)	६ (५–१०)	७	१८	अपू०	प्राचीन सं०१८८८	इति शिव पूजा समाप्ति सं०१८८८ ॥ श्रावण वदी त्रयोदशी १३ ॥ शनिवासरे ॥ शुभ मंगल ददात् ·······

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६१३	७००५	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६१४	३६२५	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६१५	७८७७	(विश्वनाथ) शिवपूजा-तरगिणि			दे० का०	दे०
६१६	४०७१	शिवपूजाविधान			दे० का०	दे०
६१७	६६२	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
६१८	२४७१	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
६१६	४५३३	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१ ५।×१० ३ सें० मी०	८ (६–१३)	६	२५	अपू०	प्राचीन	इति रुद्रयामले शिवपूजावेदोक्त संपूर्णं। इद प्रति लिषत कार्तिक कृष्णा १० । चद्रवासरे इद प्रति लिषत रामग्रन मिश्र २ अहिरवा मध्ये आत्म पठनार्थं ॥+ + + +
१५ ८×७ ८ सें० मी०	६ (२–१०)	८	१६	अपू०	प्राचीन सं०१८५४	इति शिवपूजा समाप्त ॥ मंत्र हीनं० मंत्र जातिदेव गणा सर्व पूजा+ + + + + सं० १८५४
२१ ५।×६ ५ सें० मी०	१० (१-६, ८-१२)	६	२६	अपू०	प्राचीन	
१७ ४×८ ८ सें० मी०	६ (१–६)	१०	२०	पू०	प्राचीन सं०१६०२	इति श्री वेदोक्त सिव पूजा विधान सपूर्ण समाप्त जेष्ट सुदि २ सवतु १६०२ ' ''॥
३३×१३ सें० मी०	२	४८	२६	पू०	प्राचीन	इति पूजा विधि समाप्ता ॥
२३×१०७ सें० मी	३ (१,४ ५)	६	३७	अपू०८	प्राचीन	इति श्री शिवपद्धतौ शिवपूजा विधि ॥ सपूर्ण समाप्तम् ॥ शुभमस्तु मगल ददातु ॥
२४ ३×१० १ सें० मी०	६ (४–६)	८	३५	अपू०	प्राचीन सं०१६१७	इति शिवपूजाविधि समाप्त शुभमस्तु ज्येठे मासे त्रस्न पसे तिथौ १३ भृगु वासरे सवत १६१७ लिषत प श्री रिछारिया हर परसाद ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२०	१२५८	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
६२१	४६१७/२	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
६२२	४८८५	शिवपूजाविधि प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
६२३	४६७६/२	शिवप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
६२४	१२७५/२	शिव मानसपूजा			दे० का०	दे०
६२५	५२३	शिव रहस्यमहालिंगार्चन			दे० का०	दे०
६२६	१४८२	शिवलिंग (पूजा-तर्पणम्)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२६ × १४ सें० मी०	७	१३	३५	पू०	सं०१८३४ शके१७३६	इति हाम्येन पूजा विधि समाप्ति मगमत ॥ सवत् १८१४ शाके १७३६ वैशाख शुदि चतुर्दशी बुधवार पुस्तग लिखि है।
१५.१ × ६.६ सें० मी०	३	८	१५	अपू०	प्राचीन	इति शिवपूजा विधि. सपूर्ण ॥
२२.५ × १०.६ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	२८	पू०	सं०१८७२	इति श्री इतिहासेन शिव पूजा विधि प्रतिष्टा समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥ सवत् १८७२। पौष शुदि द्वितीया २ चद्र वासरे लिखितमिद पुस्तक लक्ष्मणाभिधानेन चडिपुरमध्ये शुभ ॥
१५.८ × ६.५ सें० मी०	१४ (८–१४)	१०	२४	पू०	प्राचीन सं०१८८४	इति शिव प्रतिष्ठा समाप्तम् शुभ भूयात यादृश पुस्तक दृष्ट्वा तादृश लिपत मया यदि शुद्ध वा मम दोषो न दियते १ सवत १८८४ तत्रवर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे
१५ × ६.५ सें० मी०	२	■	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री वेद वेदात परिकर्ण शिव मानसपूजा समाप्त ॥
११.२ × ११ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री शैव पुराणे शिव रहस्ये महालिंगार्चन विवर्णननामषड्विशोध्यायः। यादृश पुस्तक दृष्टा तादृश लिपितमया यदि शुद्धम शुद्धवामम दोषो नदीयते लेखक पाठकयार्मगल शुभमस्तु ।
२०.६ × ११.२ सें० मी०	३ (१–३)	६	२६	पू०	प्राचीन स१६०६	इति श्री पार्थिवेश्वर चिंता मनि शिव लिङ्ग पूजा तर्पण सपूरणम् ॥ स० १६०६ शाके १७७४ मधिक

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रावत सख्या वा सग्रहविशष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा हैं	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२७	६८२	शिवलिंगप्रतिष्ठा-प्रयोग			दे० का०	दे०
६२८	४०५२	शिवस्थापन पूजन विधि			दे० का०	दे०
६२९	६२१५	शिवार्चन पद्धति			दे० का०	दे०
६३०	४७६५	शिवार्चन विधि			दे० का०	दे०
६३१	५०२१	शिबिकादान			दे० का०	दे०
६३२	६६३७	शुक्लसूत्र परिशिष्ट			दे० का०	दे०
६३३	११७७	शुद्ध एकादशाह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
४२.२ × ६.२ सें० मी०	२ (१–२)	८	६६	अपू०	प्राचीन	
२२ × १० सें० मी०	४ (१–४)	१०	३२	पू०	सं०१९०८	इति शिवस्थापन पूजन विधि समाप्तम् ॥ श्रा० श० १४ रवौसंवत् १९०८ अस्थित " ......
१६.५ × ११ सें० मी०	२ (२–३)	१०	१८	अपू०	प्राचीन	इति शिवार्चन पद्धति ॥
३० × १४ सें० मी०	१ (खर्रा)	३८	१९	पू०	प्राचीन सं०१८६७	इति बौधायन सूत्रोक्त शिवार्चन विधि ॥ सं० ॥ १८६७ वैशाख शु ॥ ३ पराज्य इत्युनाम्ना अणा भट्टेन लिखित ॥
२१.२ × ६.७ सें० मी०	२ (१–२)	८	३६	अपू०	प्राचीन	
१७.१ × ७.५ सें० मी०	६ (१–६)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति कात्यायनोक्तं शुक्ल सूत्र परिशिष्ट समाप्त ॥ श्री रामचंद्रायनम । नीलकंठ ज्योतिवित्पुत्रेण गोविंदेन शुक्ल सूत्र पुस्तक लिखित + + + + ॥
२२.१ × १२.७ सें० मी०	६ (१–६)	१६	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३४	८२८	शुद्धिविवेक	रुद्रधर		दे० का०	दे०
६३५	५२६२	शौनककारिका			दे० का०	दे०
६३६	५२००	श्राद्धकर्म			दे० का०	दे०
६३७	१३२४	श्राद्धकर्म			दे० का०	दे०
६३८	१६७६	श्राद्धकर्म पद्धति			दे० का०	दे०
६३६	१६७	श्राद्ध काड	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
६४०	१४६३	श्राद्ध कारिका	दिवाकर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८४×९५ सें० मी०	१०० (१-१००)	■	४०	अपू०	प्राचीन	
२३×९६ सें० मी०	१	२०	३५	अपू०	प्राचीन	श्री गणेशायनम शौनक कारिका ॥ (प्रारंभ)
२२८×९६ सें० मी०	३ (१-३)	७	२९	पू०	प्राचीन सं०१८०२	श्राद्धाहनितु सम्प्राप्ते भवेन्निरशनोपि वेति ।""लिखितमिद पुस्तक रामहृदोपनामक नीलकंठेन पौष वदि १ संवत् १८०२"""""""""" ।
२१×११५ सें० मी०	१३ (२-१४)	११	२८	अपू०	प्राचीन	
३०×१३ सें० मी०	८ (६५-६६, ७४-७९)	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
२११×९ सें० मी०	२४ (१-२४)	१४	४३	पू०	प्राचीन सं०१६९७ श०१५६२	इति पदवाक्य प्रमाण श्री लक्ष्मीधर सूरे सूनुना भट्टोजिदीक्षितेनरचिताया श्री चतुरविंशति मुनिमत व्याख्या श्राद्ध काण्डम । सं०१६९७ शके १५६२ विरोधिनि सविता माघसित द्वादश्या प्रयागेयाज्ञवल्क्यो पेंडुभटोपाध्याय सूनुना भट्टोपाध्यायान तेना लेखीदम् ।
२०५×११ सें० मी०	२६	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री भारद्वाज महादेव भट्टात्मज सकल विद्या निधान श्री दिवाकर विरचिताया श्राद्ध चन्द्रिकाया महालय श्राद्धानि ॥

(सं०सू० ४७)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४१	६८४१	श्राद्धचंद्रिका प्रकाशानुक्रमणिका	वैजनाथ		दे० का०	दे०
६४२	३८३८	श्राद्धदीपिका			दे० का०	दे०
६४३	५५७४	श्राद्धनिर्णय			दे० का०	दे०
६४४	६५५७	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६४५	६६८८	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६४६	३४७१	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६४७	३६७२	श्राद्धपद्धति	क्षेमराम		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसख्या और प्रतिपंक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२७ ६×११'४ सैं० मी०	८१ (१–८१)	१०	४३	पू०	प्राचीन सं०१७८२	इति श्री दिवाकरात्मज वैजनाथ विरचिता श्राद्धचद्रिका प्रकाशानुक्रमणिका समाप्ता ॥ सवत् १७८२ श्रावण सुदि १२ × × × म०१७८६ जेष्ठवदि १ शोधितमदोभारद्वाज काशीनाथेन + ॥
२४'५×१२ २ सैं० मी०	१६ (१२–२७)	६	२४	अपू०	सं०१८१७	सपिंडी श्राद्ध कर्तव्य ॥ ·········· ··· ··· ···शुभमस्तु सवत् १८१७ ॥
२२ ८×११ सैं० मी०	३ (२०,२८,२६)	६	२७	अपू०	प्राचीन	
२२ ४×८ ८ सैं० मी०	८ (१–८)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति कौकिल ऋषिमत सकेत ॥ सवत् १६६६ वर्षे पौष मासे शुक्लपक्षे + + + + + ॥
२१'७×१६ ८ सैं० मी०	१२ (१–१२)	१४	२३	पू०	प्राचीन	
२१ ४×१२ सैं० मी०	७ (१–७)	१४	३६	पू०	सं०१८५६	इति श्री रूपरति समाप्त शुभमस्तु सवत् १८५६ अघनवदि १० सनीचर लिषतपुमानसुकल श्री जमुना येनम ···
२२'३×८ सैं० मी०	६३ (१–६३)	७	३८	पू०	प्राचीन स०१८७१	इति श्री क्षेमराम कृता श्राद्धपद्धति समाप्ता सुभमस्तु सुभभूयात् सवत् १८७१ शाके १७३६ अधिक माद्रे मासि शुक्ल पक्षे तिथौ त्रयोदश्या रविवासरे लिखित मिद पुस्तक वेणीप्रसाद त्रिपाठिना ·····

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९४८	५४६२	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
९४९	६७८७	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
९५०	७२९७	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
९५१	३४९०	श्राद्धपद्धति	रघुनाथ भट्ट		दे० वा०	दे०
९५२	४११५	श्राद्धपद्धति			दे० वा०	दे०
९५३	३९६५	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
९५४	५१७६	श्राद्धपद्धति			दे० मा०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.४×१०.६ सें० मी०	११ (१–११)	११	२२	पू०	जीर्ण सं० १८८८	इति श्री श्राद्धपद्धित समाप्त ॥ संवत १८८६ (८) मिति आश्वनवदी २ गुरुवार लिषत गंगाधर पाठ •••
२५.७×१०.५ सें० मी०	६ (१–६)	६	३७	पू०	प्राचीन सं० १६०४	इति श्राद्धपद्धति समाप्त ॥ माघकृष्ण ११ भौमक संवत् १६०४ क शाके १७६६॥
२२.२×९.२ सें० मी०	४० (१–३०, ३३–४२)	८	३१	अपू०	सं० १६२१	इति द पुस्तक श्राद्धपद्धति समाप्त संवत १६२१ मि० पौ० शु १ गुरुवार
१६.७×१० सें० मी०	६६ (२–७०)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्पदवाक्य प्रमाणज्ञ सूविवरविसरत्नातीरसरापाध्य भट्ट मराध्वात्मज भट रघुनाथ विरचिता श्राद्धपद्धति संपूर्ण ॥•• •••
२४.४×१०.६ सें० मी०	२२ (२–२१ ३८–३६)	६	२१	अपू०	प्राचीन सं० १८५८	ईत्ति श्राद्ध समाप्त ॥ समत १८५८ प्रमादनाम संवत्सरे वैसाष वदय पंचमित दिन समाप्त ॥ (पत्र सं० ३६)
२३.३×१०.२ सें० मी०	१६ (२२–३७)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२५.२×९.५ सें० मी०	१०	१०	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकर	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६५५	३८२६	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६५६	५७४१/२	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६५७	१६६६	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६५८	५१३१	श्राद्धप्रकार			दे० का०	दे०
६५९	४५१८	श्राद्धप्रकाश	इन्द्रदत्तोपाध्याय		दे० का०	दे०
६६०	३४८७	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
६६१	४६७४	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ ख	८	८ ग	८ घ	९	१०	११
१६३×६१ सें० मी०	८ (१,५–१०, १०)	७	२८	अपू०	प्राचीन	
१८१×११६ सें० मी०	२	१६	२१	अपू०	प्राचीन	
२१७×११२ सें० मी०	५ (१,३–६)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
१५८×६३ सें० मी०	३ (१–३)	८	२२	अपू०	प्राचीन	
३४४×१३६ सें० मी०	२६ (१–२६)	१०	३१	पू०	प्राचीन सं०१६२७	इति श्री श्राद्धप्रकाशे इन्द्रदत्तोपाध्या कृते अधुना श्राद्धाय सपिण्डन विधि तृतीय प्रकाश ।३। श्री संवत् १६२७। ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदा मंगल वासरे द्विज रामभरोशेन श्राद्धप्रकाश लिखते ॥
२१७×१०५ सें० मी०	२३ (१–२३)	११	२४	पू०	सं०१६५०	श्री संवत १६५० शाके १८१५ विश्वावसु नाम संवत्सरे अमांतमानेन आषाढ कृष्ण ६ षष्ठ्यां गुरुवासरे श्री क्षेत्र काश्यां रामदासराम भट्टात्मज रामकृष्ण तैलङ्गेन धार्मिक जनमोनल्हादनाया असाप्रदायिकोय श्राद्धप्रयोगो लिखित
२४१×१०१ सें० मी०	४ (१–४)	६	३८	पू०	प्राचीन	श्राद्ध संपूर्णता यातु प्रासादादभव + + + + + + +॥

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगमसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९९२	५५७९	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
९९३	७०१५	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
९९४	१७१३	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
९९५	६९१	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
९९६	५९५८	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
९९७	१६२२	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
९९८	५६३९	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७.६ × ११.२ सें० मी०	५६ (३-५,७-१०, १२-१६,२१-३४,३६-३७, ३९-६५,६७)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	......गरुड पुराणादौ श्राद्ध प्रयोग लिख्यते (पत्र सं० ३)
१७.८ × ९.५ सें० मी०	११ (१-११)	९	२४	अपू०	प्राचीन	
१७.४ × ९.४ सें० मी०	१० (१-१०)	७	२४	अपू०	प्राचीन	
१६.५ × ९.६ सें० मी०	१० (१-३, ५-११)	६	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्राद्ध सपूर्ण शुभम श्री गणेशायनमः सीताराम ॥
२१.८ × ८.७ सें० मी०	१० (१-१०)	७	२६	पू०	सं० १७४४	इति श्राद्ध विधि समाप्त शुभमस्तु सवत १७४४ आश्विन वदि १० मगल वासरे कस्य लिपितमिद...... ॥
२३.७ × ७.८ सें० मी०	१	१६	११	पू०	प्राचीन	
२८ × ११.८ सें० मी०	१३	१०	३६	अपू०	प्राचीन	

(सं०सू० ४८)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९६९	१४१८	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
९७०	२२९	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
९७१	२२३५	श्राद्धविवेच			दे० का०	दे०
९७२	४८५१	श्राद्धविवेक	रुद्रधर		दे० का०	दे०
९७३	४४२३	श्राद्धविवेक (प्रेतक्रिया)	कृष्णदत्त		दे० का०	दे०
९७४	२१८२	श्राद्धविवेर			दे० का०	दे०
९७५	३४८५	श्राद्धशकल			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८	८	९	१०	११
३०.६×१३ सें० मी०	२४	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
२७×११.७ सें० मी०	१० (१–१०)	११	४३	अपू०	प्राचीन	
२७.५×१०.३ सें० मी०	३ (१–३)	११	३२	पू०	प्राचीन सं०१६३५	संवत् १६३५ तमसे फलगणमसे कृष्न पक्षे शुभतिथौ १ लीखत हरसरण सहाय·· ········
२६.४×१०.६ सें० मी०	२० १–२०	८	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री भट्टोपाध्याय श्री रुद्रधर कृते श्राद्ध विवेक श्रीनारायणयतम + + + + + + ॥
२५.९×१०.७ सें० मी०	१५ (२९–४३)	११	३६	अपू०	प्राचीन सं०१९१५	इति श्री कृष्णदत्त प्रकाशिकायां पितृभक्तिलतायां श्रोर्द्ध देहीकेति कर्त्तव्या संपूर्णम्॥ चैत्रमासे कृष्णपक्षे अष्टम्यां शनिवासरे लिखित दत्तारामेण पठनार्थस्वमात्मने ॥ शुभमूयात् मंगल ददातु ॥ संवत्१९१५॥
२७.५×१४.२ सें० मी०	६७ (१–५१, ५३–६८)	१३	३०	अपू०	प्राचीन	
२०.२×६.५ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	३२	पू०	प्राचीन	भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा भृगुवासरे पुस्तक श्राद्ध सकल्प समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९७६	३४८६	श्राद्धसङ्कल्प			दे० का०	दे०
९७७	३४९८	श्राद्धसंकल्प			दे० का०	दे०
९७८	५५९८	श्राद्धसूत्र	कात्यायन		दे० का०	दे०
९७९	५५६६	श्राद्धसूत्र			दे० का०	दे०
९८०	४११३	श्री केशवकीर्त्यादि न्यास			दे० का०	दे०
९८१	४३३६	श्रीनाथादिश्लोक उद्धार			दे० का०	दे०
९८२	११९५	श्रीरामचन्द्र षोडशोप चार पूजा विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	६	१०	११
२१ ७ × ६·२ सें० मी०	१० (१–१०)	[illegible]	२६	पू०	प्राचीन सं०१८६७	यस्य स्म० श्राद्ध सङ्ख्या समाप्त ॥ संवत् १८६७ चैत्र कृष्ण षष्ठ्यां समाप्ति गदाधर वेतालेन लिखित ॥
२३ × ६ सें० मी०	१६ (१–११)	११	४१	पू०	प्राचीन	श्री काशी विश्वेश्वरार्पणमस्तु ॥
२१ × १० सें० मी०	३ (१–३)	६	४१	पू०	सं०१६३६	इति श्री कात्यायनकृत श्राद्ध सूत्र सम्पूर्णम् ॥ सं० १६३६ चैत्रसिते ५ बुधे बटुकनाथेनालखि ॥
२५ ६ × ११ ८ सें० मी०	४ (१–४)	११	४३	पू०	सं०१६०६	इति कात्यायनमुन्युक्त श्राद्ध सूत्र ॥ सं० १६०६ श्रावणवदि ७ गुरौ मिरजापुरे लिखित ॥
२२ १ × ६ ७ सें० मी०	२ (१–२)	८	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री केशव कीर्त्यादि न्यास ॥
२२ × १० ७ सें० मी०	५ (१–५)	८	३६	पू०	प्राचीन	इति श्रीनाथादिस्लोक उद्धार संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥
१५ ५ × ८ ५ सें० मी०	५	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री रामचंद्र षोडसोपचार पूजाविधि वसिष्ट हितायाम् सपूर्ण ॥ श्री रामयत ॥ सीताराम ॥ सीताराम

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९८३	२३०६	श्रीराम नित्यपूजा पद्धति			दे० का०	दे०
९८४	७८१७	श्रीराम पद्धति	रामानुजाचार्य		दे० का०	दे०
९८५	१२८५/८	श्रीराम पद्धति	श्री रामानुज		दे० का०	दे०
९८६	२०२०	श्रीराम मानसपूजा			दे० का०	दे०
९८७	७२३४	श्रीसूक्त जपविधि			दे० का०	दे०
९८८	११५९	श्रीसूक्त विधान			दे० का०	दे०
९८९	६५०२	श्रुतिलक्षण प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण का वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ ६ × ११ ३ सें० मी०	७२ (१–७२)	७	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मयामले तंत्रे हरगौरी संवादे श्रीराम नित्यपूजा पद्धतिः समाप्तम् शुभमस्तु ॥
१९ ६ × १० २ सें० मी०	२१ (१–२१)	८	२१	पू०	प्राचीन सं०१९०७	इति श्रीमद्रामानुजाचार्य कृत श्री राम पद्धति वेदोक्त सपूर्ण × × शुभमस्तु माघे मासे कृष्ण पक्षे १२ दसी सं० १९०७ ॥
१७ ५ × ६ ५ सें० मी०	२१ (१–२१)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री रामानुजा कृता वेदोक्त श्री राम पद्धति सपूर्ण ॥ श्रीरस्तुकल्याण-मस्तु ॥
१३ ४ × ८ ४ सें० मी०	१४	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री अगस्त्य संहितायां परमहस्ये श्री अगस्त्य सुतीक्ष्ण सवंदे श्रीराम-मानसीपूजा सपूर्ण समाप्तम् ॥ शुभ ॥ राम''' ''''
१४ २ × ८ ७ सें० मी०	११ (१–११)	९	२०	पू०	प्राचीन सं०१८३२	इति श्रीसूक्त विधि सपूर्ण ॥ श्री महालक्ष्मी देवतार्पणमस्तु ॥ सवत् १८३२ माघ शुध १५ रवौ इदं पुस्तकं समाप्तिमस्तु ॥ स्वार्थं परोपकारार्थं च ॥
१३ ६ × ८ ७ सें० मी०	२४	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति श्रीसूक्तविधान समाप्त'' ' श्री परमेश्वरार्पणमस्तु ॥
२२ ६ × ६ १ सें० मी०	२० (१–२०)	९	३५	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६०	८२६	श्लेपाशाति विधि			दे० का०	दे०
६६१	४३३७/८	षडंग रुद्रजाप्य			दे० का०	दे०
६६२	७३४६	षडग ,, ,,			दे० का०	दे०
६६३	३७४१	षडग ,, ,,			दे० का०	दे०
६६४	१३७६	षण्णवतीश्राद्ध निर्णय			दे० का०	दे०
६६५	२०५४	षष्टीका पूजाविधि			दे० का०	दे०
६६६	६५८८	षष्टीपूजा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ		स	द	६	१०	११
१६·६ × ६·२ सें० मी०	३ (१–३)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति श्लेपाक्षाति विधि ॥
१६ × १३ ३ सें० मी०	२१ (५६–७७)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति रूद्रजाप्येपडंग समाप्ता शुभमस्तु ॥
२१·२ × १२ सें० मी०	१५	६	२२	अपू०	प्राचीन	
१३ × ८ सें० मी०	१६ (१–११, २२–२६)	६	२४	अपू०	प्राचीन सं०१८३३	·· ···'''संवत् १८३३
२१ × १० सें० मी०	८	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति श्रीमच्चातुर्धर गोविंद सूरिसूनो शिवस्य कृतौ पद्मावती श्राद्ध निर्णयः समाप्त ॥
२० ५ × १० सें० मी०	१० (१–१०)	७	२०	पू०	प्राचीन सं०१८४१	इति षष्टिया पुजा समाप्ता शुभमस्तु संवत् १८ सें ४१ वेशखा चंद्रावदि अमावस्य रविवासरे न : लिपत सिद्धपारमद पंडेवे पुस्तक रापुराण सुभमस्तू ॥
२४ ६ × १० ५ सें० मी०	६ (१–६)	६	३४	पू०	प्राचीन	इति षष्टी पूजा समाप्ता ॥''''''
(सं०सू०४६)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९९७	५३६२	षष्टी पूजा			दे० का०	दे०
९९८	६६७१	षष्ठि पूजा			दे० का०	दे०
९९९	५५८७	षष्ठी पूजा विधि			दे० का०	दे०
१०००	६०१	षोडश कर्म			दे० का०	दे०
१००१	२७१	षोडशकर्म विधि			दे० का०	दे०
१००२	५०४७	षोडश पूजा			दे० का०	दे०
१००३	४४४० / १०	षोडश पूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.१×१० सें० मी०	३ (५–७)	९	३१	अपू०	स०१८५७	इति षष्ठी पुजन समाप्त शुभमस्तु सम्वत् १८५७ शाके १७२२ फाल्गुन मासि कृष्ण पक्षे.........
२०.५×१०.५ सें० मी०	३ (१–३)	१२	३४	पू०	सं० १८८७	इति श्री षष्ठि पूजा समाप्ता ।। सवत् १८८७ मिति अश्विन शुद्ध ३ सोमवासरे समाप्त ।।
२५×१२.५ सें० मी०	६	११	२८	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
२३×९ सें० मी०	२३ (१–२, ४–२४)	१४	४३	अपू०	प्राचीन	इति षोडश कर्माणि समाप्तानि ।।
२९×१४ सें० मी०	६	१२	३१	अपू०	प्राचीन	
२५.१×१२.९ सें० मी०	३ (१–३)	९	२७	अपू०	प्राचीन	
१२.४×६.१ सें० मी०	५	६	१६	पू०	प्राचीन	इति षोडश पूजा विधि संपूर्ण ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्तसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१००४	७७२	षोडशसंस्कार पद्धति			दे० का०	दे०
१००५	६१७	षोडससंस्कार विधि			दे० का०	दे०
१००६	४३१०	षोडशोपचार			दे० का०	दे०
१००७	५६०६	षोडशोपचार			दे० का०	दे०
१००८	६३६४	षोडशोप्रकार पूजाविधि			मि० का०	दे०
१००९	४५८७	संकष्ट चतुर्थी पूजा			दे० का०	दे०
१०१०	६४१४	संक्षिप्त चलार्चा-प्रतिष्ठाविधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२१२×६५ सें० मी०	२२ (२१-४२)	६	३०	अपू०	प्राचीन	
२४७×१०४ सें० मी०	३५	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२१४×११५ सें० मी०	३ (१-३)	▪	१८	पू०	प्राचीन	
१७३×६·५ सें० मी०	५ (१-५)	६	२०	अपू०	प्राचीन	
२३३×१०२ सें० मी०	३ (१-३)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति पाडशोप्रकारपूजा विधि सहस्र-शीषा समाप्तम् ॥
१६३×१२५ सें० मी०	६ (१-६)	१०	१२	पू०	प्राचीन	सकष्ट चतुथि पूजा समाप्त ॥
२१३×६२ सें० मी०	६ (१-६)	१६	३७	पू०	प्राचीन स०१७५३	इति सक्षिप्त चलार्चा प्रतिष्ठाविधिः ॥ ˮसवत् १७५३ समये मार्गशीर्ष शुद्ध ३ भौम लिखितमिद पुस्तक [illegible] विस्वनाथभट्ट राडाहृवरण ॥......

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०११	६६६३	संक्षिप्त शिवपूजा प्रयोग			दे० का०	दे०
१०१२	७०५५/४	संक्षिप्त संध्या प्रयोग			दे० का०	दे०
१०१३	५७३१	संक्षेप पार्थिवपूजन विधि			दे० का०	दे०
१०१४	४२६८	संतानगोपाल विधि	सत्यापाढ		दे० का०	दे०
१०१५	३३०१	संध्या			दे० का०	दे०
१०१६	३१०८	संध्या			दे० का०	दे०
१०१७	५५३०/३	संध्या			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ब	स	द	९	१०	११
३०×११ ६ सें० मी०	१	१४	३५	पू०	प्राचीन	ततो मूल जप्त्वा शिवाय जप समर्पये दिति संक्षिप्त शिवपूजा प्रयोग ॥
१३ ५×१३ सें० मी०	४ (१–४)	१६	१७	पू०	प्राचीन	
१५ ६×१० ६ सें० मी०	२ (१–२)	१०	२४	पू०	प्राचीन	इति संक्षेपत पार्थिव विधि ॥
२५ ७×११ ५ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री सत्यापाढ कृते अनपत्यत्व-हर संतान गोपाल विधि ॥
२२ ६×१५ सें० मी०	३ (१–३)	१७	३१	पू०	प्राचीन	इति साय संध्या समाप्ता ॥ × × ×
२६ ४×११ ३ सें० मी०	४ (१–४)	८	३६	पू०	प्राचीन	इति संध्या संपूर्ण ॥
२६×१४ ७ सें० मी०	७ (१–७)	८	२१	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०१८	५५६१	सन्ध्या			दे० का०	दे०
१०१९	६११३/१०	सन्ध्या			दे० का०	दे०
१०२०	५७५६	सन्ध्या			दे० का०	दे०
१०२१	२३६७	सन्ध्या			दे० का०	दे०
१०२२	२२६६	सन्ध्या			दे० का०	दे०
१०२३	६४०१	सन्ध्या			दे० का०	दे०
१०२४	६४४४	सन्ध्या			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो कहां तक का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
६	७	८		९	१०	११
२५·४ × ११·८ सें० मी०	८ (१–८)	७	३५	पू०	प्राचीन सं० १९४१	इति गायत्र्यार्थ सन्ध्या समाप्तम ॥ शुभं मगलदतात्'''संवत् १९४१ मुः सलेउ पुर।
१६·५ × ११ सें० मी०	१० (२७–३६)	८	१८	पू०	प्राचीन	इति त्रिकाल सन्ध्या समाप्ता ॥
१६·३ × १२·६ सें० मी०	८ (१–८)	१४	१७	पू०	प्राचीन	इति सायं सन्ध्या समाप्ता शुभमवति मगलदतात् ॥''' '''
२२ × ८·५ सें० मी०	६	७	३०	पू०	प्राचीन सं० १८६५	इति श्री यजुर्वेद सन्ध्या सपूर्णम् सम्वत् १८६५ ॥
२७·८ × ११·६ सें० मी०	६ (१–६)	६	२५	पू०	प्राचीन सं० १९११	इति सन्ध्या विधिप्रयोगः ''''''''''''''''''संवत् १९११ का फाल्गुण मासे दशम्या '''''' ॥
२१·५ × ६·३ सें० मी०	७ (१–२, ४–८)	६	२२	अपू०	प्राचीन	इति त्रिकाल सन्ध्या विधि + + + ॥
१५·६ × ८·४ सें० मी०	४ (४–६)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति गायत्री त्रिकाल सन्ध्या सपूर्णं शुभमस्तु संवत् १८६६ के साल मार्ग सुदि १२ क. लिपा दामोदरदास पंपपरा बैठे श्री तिवारी वस्ती राम पठनार्थक ॥

(सं० सू० ५०)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०२५	५५१२	सन्ध्या			दे० का०	दे०
१०२६	७३७७/२	सन्ध्या			दे० का०	दे०
१०२७	७७६८	सन्ध्या			मि० का०	दे०
१०२८	७६७४	सन्ध्या			दे० का०	दे०
१०२९	६२१६	सन्ध्या			दे० का०	दे०
१०३०	७७४/४	सन्ध्या			दे० का०	दे०
१०३१	७०२०	सन्ध्या			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ क	ख	ग	घ	९	१०	११
१८·४ × ८·६ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	२१	अपू०	प्राचीन	
९.९ × ४.१ सें० मी०	१२	४	१२	अपू०	प्राचीन	
१६·१ × ९·९ सें० मी०	५	७	१६	अपू०	अर्वाचीन	
१७·५ × ८·९ सें० मी०	३ (४, ५, १०)	५	१८	अपू०	प्राचीन	
१७·२ × ८·६ सें० मी०	३	८	२०	अपू०	प्राचीन	
१४·६ × ९·३ सें० मी०	६ (१५-२०)	८	१३	अपू०	प्राचीन	
१२·३ × ९·६ सें० मी०	६ (१–६)	८	१२	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०३२	३८३७	संध्या जप			मि० का०	दे०
१०३३	५०५१	संध्यातर्पणविधि			दे० का०	दे०
१०३४	७०७६	संध्या पद्धति			दे० का०	दे०
१०३५	६४६	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०३६	७७११	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०३७	७०२५/३	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०३८	२०५१	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·३ × १०·४ सें० मी०	४ (१–४)	▪	२७	पू०	आधुनिक	इति सस्छोजप । तीर्थेनिष्क्रम्य ॥
२४·६ × ११·८ सें० मी०	१८ (१–१७, १६)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	
२४·१ × ६·६ सें० मी०	४२ (५६–६१, ६३–१०२)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
२६·५ × ११ सें० मी०	४ (१–४)	६	३८	पू०	सं० १८७३	इति श्री *सध्यासमाप्तम्* ॥ शुभमस्तु सं० १८७३ तत्रवर्षे मासोत्तममासे चंद्रमासे कृष्णपक्षे अष्टम्या चद्रवसरे लिषितम् रामदियाल ब्रम्हणे स्वपठनार्थ हेतवे .. ..
२५·६ × ११·३ सें० मी०	५ (१–५)	६	३०	पू०	प्राचीन	इति सध्या प्रयोगसपूर्णम् लीपिकृत मिश्र दिवान श्रावण मासे कृष्णपक्षे तृतीयाया भोमवासर शुभमस्तु श्रीराम चद्रायनम + + ॥
१०·८ × १०·६ सें० मी०	६ (१–६)	७	१७	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
१४·१ × ६·५ सें० मी०	१० (१–१०)	८	१५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०३९	२९१७	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४०	३२९९	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४१	३९९५	संध्याविधि			दे० का०	दे०
१०४२	२६५६	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४३	३९२९/२	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४४	४३३५	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४५	१९१५	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ज	स	द	६	१०	११
२०६×११५ सें० मी०	६ (१–६)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
१३५×८६ सें० मी०	४	६	१६	अपू०	प्राचीन	
१५३×१०३ सें० मी०	६ (१–६)	१०	२४	पू०	प्राचीन	इति त्रिकाल सध्या समाप्ता ॥ × × × × × × ×
१६५×१०५ सें० मी०	६	६	२३	अपू०	प्राचीन	
१३४×१५.६ सें० मी०	११ (२–१२)	६	१३	अपू०	प्राचीन	इति यजुर्वेदी सध्या प्रयोग ॥
१५७×८ सें० मी०	११ (२–६, ११–१३)	१०	१६	अपू०	प्राचीन सं०१६२०	लिखित प श्री पुजारी कनइया लाल सवत १६२० कार्तिकवदि ॥
३१×६४ सें० मी०	४ (१–४)	७	४७	पू०	प्राचीन सं०१६११	इति सध्या प्रयोग समाप्त· सवत् १६११ चैत्र कृष्णे १५ सोमवासरे मु० कपु रगातरे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०४६	२८०१/४	सध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४७	५६७६	सध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४८	७००४/२	सध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४९	५२२६/४	सध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०५०	३५८६	मध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०५१	४४२०	सध्याभाष्य	दिनरामशर्मा		दे० का०	दे०
१४५२	५२०८	सध्याभाष्य			दे० का०	दे०

पन्ना या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७.५×१३.५ सें० मी०	७ (३–९)	९	१५	अपू०	प्राचीन	इति संध्याप्रयोग ॥
१४.८×१०.८ सें० मी०	८ (१–८)	९	१६	पू०	प्राचीन	इति संध्याप्रयोग ॥
१३.२×८.२ सें० मी०	११ (१५–२५)	५	१४	पू०	प्राचीन	इति संध्या संपूर्णम् ॥ शुभम् ॥
१६.५×११.२ सें० मी०	५ (५–९)	११	२०	पू०	प्राचीन	संध्या समाप्त ॥
२१.६×१२.७ सें० मी०	७ (१–७)	८	१८	पू०	प्राचीन सं०१६२१	"इति त्रैकालिक संध्योपासन समाप्तम् ॥ राम सम्वत् १६२१ गायत्री लिषत "॥
३५.२×१३.४ सें० मी०	२१ (१–२१)	१२	५७	पू०	प्राचीन	इति संध्याविधानम् ॥
२२.४×११.६ सें० मी०	३ (१६–१८)	९	३०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०५३	६५७१	सध्यामंत्र व्याख्या	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
१०५४	२७४६	सध्या महावाक्य पचीकरण			दे० का०	दे०
१०५५	१५४५	संध्याविधि			दे० का०	दे०
१०५६	३८८४	सध्याविधि			दे० का०	दे०
१०५७	४६२८	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०५८	४९६५	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०५९	७१२७/३	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	ट	९	१०	११
२२ ५ × ६ ६ सें० मी०	७ (१–७)	१२	३२	पू०	प्राचीन	भट्टो जी दीक्षित विरचित सध्या मंत्र व्याख्यान संपूर्णं ॥
१७ × ८ ५ सें० मी०	१२ (१–१२)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति परिव्राजकाना सध्या पचीकरण महावाक्यादिक समाप्त ।
११ ५ × ६ ७ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	१२	पू०	प्राचीन सं०१७६६	इति त्रिकाल संध्या विधि । सं०१७६६ वर्षे कार्तिक सु ७ शनौ लिषित सदा शिव देवेन वदन दुवे निमित्त ॥
१६ १ × ११ १ सें० मी०	८ (१–८)	१०	१४	पू०	प्राचीन	इति जप विधिः सध्याविधिः समाप्त ॥
१४ ७ × ११ १ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति सध्या प्रयोगस्समाप्त शुभ राम "
२७ ६ × १२ १ सें० मी०	६ (१–६)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री सध्याप्रयोग समाप्त ॥
१७ × १० ६ सें० मी०	७ (१–७)	१६	१२	पू०	प्राचीन सं०१७७६	इति सध्या प्रयोग ॥ शुभभवतु ॥ सवत् १७७६ चैतसुदी २ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६०	५२९८	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६१	३०८०	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६२	६९४	सध्या विधि प्रयोग			दे० पा०	दे०
१०६३	४६८८	सध्या विधि प्रयाग			दे० का०	दे०
१०६४	५५४३	सध्या विधि प्रयोग			मि० पा०	दे०
१०६५	१२४३	सध्या विधि प्रयोग			दे० पा०	दे०
१०६६	२२८८	सध्या विधि प्रयोग			दे० पा०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	▮	१०	१०
२४×१०·२ सें० मी०	८ (१–८)	६	२७	पू०	प्राचीन	इति संध्या प्रयाग शम्पूर्णम् ॥
१५·७×१०·३ सें० मी०	८	८	१८	पू०	प्राचीन	इति संध्या विधि प्रयोग समाप्त ॥ शुभ भूयात् । श्रीरामायनम ॥
२२·८×११ सें० मी०	७	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२३·८×१३·७ सें० मी०	११ (१–११)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति संध्या समाप्त ॥
२०×८·२ सें० मी०	६ (१–६)	७	२५	अपू०	आधुनिक	····अथ संध्या प्रयोग······ (आदि)
२११×६·४ सें० मी०	४ (१–४)	७	२७	अपू०	प्राचीन	
२१·८×६·५ सें० मी०	६ (१–६)	६	३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६७	६७७३	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६८	४६६४	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६९	४५१७	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०७०	१२८१/८	सध्योपासन			दे० का०	दे०
१०७१	४९६१	संध्योपासन			दे० का०	दे०
१०७२	५५०३	सध्योपासन			दे० का०	दे०
१०७३	१५१५	सध्योपासन			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७२×८६ सें० मी०	६ (१–६)	८	२७	अपू०	प्राचीन सं०१९०६	इति विसर्जनम् इति + + + + + सध्याविधि प्र० समाप्ता शुभमस्तु संवत् १९०६ ज्यष्ट कृष्ण पक्षा + + + ॥
१४६×७६ सें० मी०	२५ (१–२५)	५	१६	पू०	प्राचीन	इति सन्यासस्य सध्याविधि समाप्त ॥
२५२×१०४ सें० मी०	१४ (२,२–१४)	७	३२	अपू०	प्राचीन	इतिसायसध्या शपूर्ण ....॥
१७५×९५ सें० मी०	६ (१–६)	७	२१	पू०	प्राचीन	इति सामगात्रिवेत्रिकाल सध्योपासन समाप्त ॥१७॥६॥ ॥ ॐ ॥
२२६×८५ सें० मी०	८ (१–८)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति त्रिकाल गायत्री विधि समाप्त ॥ + + + + + ॥
२१७×१० सें० मी	५ (२–६)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति सामगाना सन्ध्योपासनम् ॥
१४८×८५ सें० मी०	१० (२–११)	६	२४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०७४	१८५१	संध्योपासन विधि			दे० का०	दे०
१०७५	२९२०	संध्योपासन विधि			दे० का०	दे०
१०७६	२४९६	सन्यास पद्धति			दे० का०	दे०
१०७७	३७०१	(आतुर) सन्यासविधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०७८	७२३९	संस्कार पद्धति			मि० का०	दे०
१०७९	२३६९	संस्कार विधि			दे० का०	दे०
१०८०	६२४१	संस्कार विधि (गर्भाधान से अन्नप्राशन तक)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ब	८	८	६	१०	११
११×८ सें० मी०	१४	८	११	पू०	प्राचीन सं०१८५३	इति संध्या संपूर्ण समाप्तं ॥ संवत् १८५३ भाद्र पद वदि आदित वार ॥ १० ॥
१५.७×७.५ सें० मी०	६ (१–६)	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२३.४×६.५ सें० मी०	३६ (१–३६)	७	२७	अपू०	प्राचीन	
२३.७×११.७ सें० मी०	४ (१–४)	८	२८	पू०	प्राचीन	अथ आतुर सन्यास विधि समाप्तः ॥
२२.५×१०.५ सें० मी०	४७ (१–८, १५–५३)	६	२७	अपू०	प्राचीन सं०१८६४	सरस्वतीं गुरु चैव कुर्वे सस्कार पद्धति ॥ (प्रारम्भ) + + + इत्यर्कविवाह ॥ सवत् १८६४ सके १६५(?) भाद्रपकृष्ण १० शुभवासरे टोपलोपनामक बाला जी नामकेन लीखीत स्वार्थ परार्थ च इय देव नाथि……
२३.२×६.४ सें० मी०	३४	१३	४१	अपू०	प्राचीन	
१६×११.३ सें० मी० (सं०सू०५२)	२५	६	२१	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०८१	६३५८	संस्कारविधि (चौलकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन आदि)			दे० का०	दे०
१०८२	२४१८	संस्कारविधि			दे० का०	दे०
१०८३	२१८५	सत्यनारायण पूजाविधि			दे० का०	दे०
१०८४	१८७८	सत्यनारायण पूजाविधि			दे० का०	दे०
१०८५	६२१	सपिंडकर्म			दे० का०	दे०
१०८६	३८६१	सपिंडी			दे० का०	दे०
१०८७	४७४१	सपिंडीकरण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१६ ४ × ८ ४ सें० मी०	१४		३२	पू०	प्राचीन	
३२ ६ × १३ ३ सें० मी०	७ (१३४–१३६, १४१)	११	४३	अपू०	प्राचीन	
१७ ५ × १० ३ सें० मी०	५ ,	८	२५	पू०	प्राचीन	
२२ ६ × १३ २ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२४	अपू०, क्रमिकृतिश	प्राचीन	इति प्रार्थना ॥०॥
१६ × १३ सें० मी०	३६ (१–६, १२–४१)	१०	१७	अपू०	प्राचीन	इतिसपिंडि कर्म समाप्तम ।
१६ १ × ८ ३ सें० मी०	२ (१–२)	१०	२३	पू०	प्राचीन	इति वाराहेपिंडकल्पे भगवच्छास्त्रे ॥
१६ १ × ६ ८ सें० मी०	४१ (१–४१)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति सपिंडी करणम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०८८	३६०७	सपिंडीकरण विधि	सोमणि मिश्र		गि० का०	दे०
१०८९	६४७९	सपिंडीकरण श्राद्ध			दे० का०	दे०
१०९०	१०६२	सपिंडीकरण श्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
१०९१	४६६४	सपिंडीकरण श्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
१०९२	६२२६ / ४	सप्तशतिका पूजा पद्धति			दे० का०	दे०
१०९३	६८०६	सप्तशती पाठविधान			दे० का०	दे०
१०९४	८९६	सरोजकलिका			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२ ५ × ११ ४ सें० मी०	१८ (१–६, ८–९, १२–१४, १६–२२)	९	२२	अपू०	प्राचीन सं०१९२२	इति श्री मत्पंडित घोपमणि मिश्र कृताया प्रेतप्रकाशिकाया निरग्निको··· हिक क्रिया सपिंडीकरण विधि समाप्त शुभमवतु सवत् १९२२ चैत्र मासे शुक्ल पक्षे तिथौ त्रयोदश्या ॥···
२१ ७ × १० ६ सें० मी०	१८ (५–१७, १९–२०, २२–२४, २६–२८)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	इति सपिंडीकरण श्राद्ध सपूर्ण ॥ सवत १९० चैत्र शुक्ला चतुर्थी शनिवासरे लिखत पचोली महताव सिंह स्वात्म पठनार्थं शुभ भूयात् ॥
३२ ५ × १२ ७ सें० मी०	४७ (१–४७)	१०	२९	पू०	प्राचीन सं०१९३७	इति सपिंडीकरण श्राद्ध पद्धति समाप्तम् ॥ सवत १९३७ ॥ शाके १८०२ ॥ मिति··· लखित फिकिरचद्रेण पुस्तक शुभदायक ॥ रामायनम ॥ लक्ष्मणायनम ॥
२५ ४ × १० ७ सें० मी०	२२ (१–३, ३–४ ४-५, ५ ७, ९, ११–२१)	९	३०	अपू०	प्राचीन सं०१९०४	इति सपिंडीकरणं श्राद्ध पद्धति ॥ श्रीरस्तु ॥ सं० १९०४ कार्तिक वदि ६ ॥
१६ ५ × ११ २ सें० मी०	५	७	१४	पू०	प्राचीन	सप्त सतका पूजा पध्यत समाप्ता ॥१॥
१५ ६ × ९ ८ सें० मी०	३ (१–३)	१०	१७	अपू०	प्राचीन	
२३ १ × १३ १ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	२६	पू०	प्राचीन सं०१८५८	इति मैथिल निबधे सरोज कलिका समाप्ता ॥ सवत् १८५८ ॥ पौष कृष्ण पष्ठी शनौ यात्त–ग्रामे ॥ शुभ० ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०९५	४००१	सर्वसंस्कार विधान			दे० का०	दे०
१०९६	५८२७	सर्वकर्मसाधारणांमपद्धति	देवभद्रपाठक		दे० का०	दे०
१०९७	४४३४	सर्वकर्मस्वभिनिर्णय	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
१०९८	५१९८	सर्वतोभद्रदेव स्थापन			मि० का०	दे०
१०९९	७६३२	सर्वतोभद्रपूजन			दे० का०	दे०
११००	३५०७	सर्वतोभद्रपूजनम्			दे० का०	दे०
११०१	२२४२	सर्वतोभद्रपूजनम्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८ ग	८ द	६	१०	११
२१ × ६ सें० मी०	२ (१–२)	१०	४३	पू०	प्राचीन	सर्व संस्कार विधान ॥
२३·२ × १०·४ सें० मी०	२५ (१–२५)	६	३६	पू०	प्राचीन सं० १६१२	इति श्री मन्महायाज्ञिक नागर ज्ञातीय पाठक श्री रामचंद्र सूनु गंगाधर पाठक श्रम श्रमृत पाठक श्रीवसभद्रात्मज देवभद्रकृत सर्वकर्मसाधारणाग पद्धतिर समाप्ता। संवत् १६१२ मिती ज्येष्ट वदी ५ रइवार लिखतं ॥
१८·७ × १०·७ सें० मी०	६ (१–६)	६	२०	अपू०	प्राचीन	इमि रामकृष्ण भट्टात्मज कमलाकर भट्ट कृतौ सर्वकर्मस्वनिर्णयः ॥ शुभमस्तु ॥
३२·५ × २०·७ सें० मी०	१ (चर्चा)	३३	१८	पू०	आधुनिक	
२२ × १० सें० मी०	४ (१–४)	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति सर्वतोभद्रदेवता ॥
३१ × १३ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	४०	पू०	प्राचीन सं० १६०४	इति सर्वतोभद्र पूजनम् ओं तत्सत् संवत् १६०४ मार्गशुक्ला ५ रवौ लिखित..........। ६
३१·२ × १६·१ सें० मी०	१२ (१–१२)	६	२६	पू०	प्राचीन सं० १६१३	इति सर्वतो भद्रपूजनम् श्रोम् तत्सत् संवत् १६१३ आषाढ कृष्णा......

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११०२	५३६४	सर्वतोभद्रपूजन विधि			दे० का०	दे०
११०३	२८२६	सर्वतोभद्रमंडल पूजाविधि			दे० का०	दे०
११०४	७५८८	सर्वतोभद्र लिंगतोभद्र			दे० का०	दे०
११०५	६७४१	सर्वदेवता प्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
११०६	३१५/२	सर्वदेवपूजन प्रकार			दे० का०	दे०
११०७	८२५	सर्वदेव प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
११०८	६७५४	सर्वपृष्ठाप्तोर्यामस्यप्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	९	१०	११
२८ ५ × १२ ४ सें० मी०	४ (१-४)	८	३२	पू०	प्राचीन सं०१९२९	इति सर्वतोभद्रपूजनविधि समाप्तं शुभमस्तु संवत् १९२९ शाल ॥ मोती मार्ग शिर्ष शुक्ल ९ ॥ रविवासरे ॥
२४ ७ × १५ ६ सें० मी०	५ (१-५)	१०	३१	पू०	प्राचीन सं०१९२५	इति सर्वतोभद्रमंडल पूजा विधि समाप्ता ॥ श्रावणे चसितेपक्षेपंचम्या भृगुवासरे ॥ शखाह्वकेंदुकेऽब्दे १९२५ लिख्यते पूजनमया।··· ···
२३ ७ × १० ३ सें० मी०	६ (१-६)	११	३७	पू०	प्राचीन सं०१८७४	इति सर्वतोभद्र लिंगतोभद्र समाप्त ॥ संवत १८७४ शके१७३६ सर्व धारिणा संवत्सरे भाद्र पद मासे शुक्लपक्षे + +
२१ ४ × १० सें० मी०	२ (१-२)	११	४०	पू०	प्राचीन	लिंगतोभद्र देवता समाप्ता ॥
१७ ७ × ११ ८ सें० मी०	४ (१-४)	१५	१२	पू०	प्राचीन	इति सर्वं देव पू०
२७ ७ × ११ ३ सें० मी०	७० (१-५१ ५१-६९)	९	४४	अपू०	प्राचीन	
२४ १ × ९ सें० मी०	७ (१-७)	१४	४३	पू०	प्राचीन	यत्र पृष्ठादि सर्व मति रात्रवत अप्तोर्या मेदयास्त्रिशच्छस्त्वाणिभवति एवा तृप्ति सर्वस्तोमस्य सर्वं पृष्ठाप्तोर्यामस्य समाप्ता ॥

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११०९	६७६०	सर्वपृष्ठाप्तोर्यामस्यो क्थ्यत प्रयोग			दे० का०	दे०
१११०	६५१५	सर्वपृष्ठेष्टि होत्र प्रयोग			दे० का०	दे०
११११	६५०६	सर्वपृष्ठेष्ठि माध्वर्यव प्रयोग			दे० का०	दे०
१११२	४७३७	सर्वप्रायश्चित प्रयोग			दे० का०	दे०
१११३	६६३८	सर्वस्तोम सर्वपृष्टाप्तो र्यामस्य ब्राह्मणाच्छमी प्रयोग			दे० का०	दे०
१११४	६१२ / ३	सर्वेषा वर्णानां शुद्धाशुद्धि			दे० का०	दे०
१११५	३६८४	सहस्रचंडी (होम) विधान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ स	८ द	९	१०	११
२०.८×८.८ सें० मी०	१७ (१, ४–१६)	७	३२	अपू०	प्राचीन	इति सर्वपृष्ठाप्तोर्यामस्योक्थ्यत प्रयोगः ॥······
२२.३×८.१ सें० मी०	४ (१–४)	८	३४	पू०	प्राचीन	इत्याश्वलायनोक्त सर्वपृष्ठेष्टिहोत्र प्रयोगः समाप्त. ॥ ···
२३×६.३ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३८	पू०	प्राचीन	इति सर्वं पृष्ठेष्ठिमाध्वर्यव प्रयोग ॥
२०.३×७.५ सें० मी०	६ (१–६)	७	३६	अपू०	प्राचीन	······अथ सर्वं प्रायश्चित प्रयोग ॥ ······ (प्रारम्भ) × × ×
२३.१×६.७ सें० मी०	११ (१–११)	६	३३	पू०	प्राचीन	सरोगवणाविर्णय ॥ सर्वस्तोम सर्वपृष्ठाप्तोर्यामस्य आह्रे ॥
१६½×११½ सें० मी०	२ (१–२)	१४	३०	अपू०	प्राचीन	
२५.६×८८ सें० मी०	१	७	३६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकर	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१११६	२६६०	सहस्त्रशीर्षा			दे० का०	दे०
१११७	६३७३	सागमंडलपवमान अनुष्ठान पद्धति प्रयोग			दे० का०	दे०
१११८	५४४०	सावत्सरिक श्राद्ध			दे० का०	दे०
१११९	५८१३	सापिंड्य प्रदीप	नागोजीभट्ट		दे० का०	दे०
११२०	४७२० / ३	साम सध्या			दे० का०	दे०
११२१	५४८५	सालाकर्म			दे० का०	दे०
११२२	७२०	सावित्रीव्रतकथोद्यापन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२२४×८६ सें० मी०	८ (२–३, ७, ६ १२–१४)	६	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री सहस्त्रगोपी संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु राम ॥
२०८×६८ सें० मी०	७ (१–७)	१०	३८	पू०	सं०१८२६	इति श्री महद्‌ग्निधान शौनकानुसारी साग मडल पवमानानुष्ठान पद्धति प्रयोग समाप्त । इद पुस्तक सदाशिवकवीश्वरेण पौष शुद्ध पौर्णमास्या लिखित ॥ सवत् १८२६ मिति ॥
२१×७८ सें० मी०	६ (१३–१८)	७	३३	अपू०	प्राचीन	इति सावत्सरीक श्राद्ध प्रयोग ॥
२८७×१२१ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	४५	पू०	प्राचीन सं०१८१०	इति श्री मरकालोपनाम शिव भट्ट सुत सतीगभज नागोजी भट्ट कृत सापिंड्य प्रदीप समाप्त शुभमस्तु । सवत् १८१० मीति सावनवदि अमावस्य १५
१७७×११ सें० मी०	३ (१८–२०)	७	१८	पू०	प्राचीन	
२२८×६४ सें० मी०	३ (१–३)	७	४०	पू०	प्राचीन	इति साला समाप्तम् ।
३४४×७७ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	३५	पू०	प्राचीन सं०१८७८	इति श्री भविष्योत्तर पुराण कृष्ण युधिष्ठिर सवादे वट सावित्री व्रत कथोद्यापन समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११२३	६११२	सिद्धिविनायक-पूजाविधि			दे० का०	दे०
११२४	५३३९	(श्री) सूक्तविधान			दे० का०	दे०
११२५	१२२६	(श्री) सूक्तविधान पुरश्चरण			दे० का०	दे०
११२६	४७२० / ३	सूत्रोक्त प्रातः संध्या	रघुनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
११२७	४७२० / ३	सूत्रोक्त मध्याह्नसंध्या			दे० का०	दे०
११२८	४७४४	सूत्रोक्त श्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
११२९	४१६५	सूत्रोक्त श्राद्ध संकल्प[1]			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·१ × १० ६ सें० मी०	७ (१–७)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति वरद चर्या सिद्धि विनायक पूजा विधि समाप्त ॥
२२ २ × ७ ४ सें० मी०	४ (१–४)	८	४८	पू०	प्राचीन	इतिश्री सूक्त विधान सपूर्ण ॥
२१ ५ × ८ ६ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री सूक्तस्य विधान पुरश्चरण प्रकार शुभमवतु ॥
१७ ७ × ११ सें० मी०	११ (१–११)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति सूत्रोक्त प्रात सध्या समाप्त ॥
१७ ७ × ११ सें० मी०	६ (१२–१७)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति सूत्रोक्तमध्यान्ह सध्या ॥
२४·८ × ११ २ सें० मी०	३ (१–३)	१२	३६	पू०	प्राचीन	समाप्तोय सूत्रानुसारी दश श्राद्धप्रयोग ॥ श्री सीताराम चद्र ॥
२१ ५ × ९ सें० मी०	३ (१–३)	१२	३६	पू०	प्राचीन	इति सूत्रोक्त श्राद्ध सकल्प ॥

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की ग्रागतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३०	६६२६	सोमभक्षविवेक			दे० का०	दे०
११३१	६६११	सोमभक्षविवेक			दे० का०	दे०
११३२	६७००	सौत्रामणि प्रयोग			दे० का०	दे०
११३३	६७२३	सौत्रामणी होम			दे० का०	दे०
११३४	६२७६	स्नान			दे० का०	दे०
११३५	२६६१	स्नान मत्र			दे० का०	दे०
११३६	२०६	स्मार्तकर्मानुष्ठान	भवदेव भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.८ × ८.६ सें० मी०	११ (१–११)	९	३२	पू०	प्राचीन सं०१८८८	संवत् १८८८ शुभ कृत् नाम संवत्सरे मिति वैशाख व १० गुरुवार ॥
१८.९ × ८.४ सें० मी०	२ (१–२)	९	२८	पू०	प्राचीन	इत्यग्निष्टोमे आश्वलायनाना सोम भक्ष विवेक ॥ + + +
२१.९ × ९ सें० मी०	३ (१–३)	८	२७	पू०	प्राचीन	इति सौत्रामणि प्रयोग ॥
२४ × १०.३ सें० मी०	३ (१–३)	९	३५	पू०	प्राचीन	
२१.९ × १०.८ सें० मी०	६ (३–५, ८–१०)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२७.५ × ११.२ सें० मी०	२ (१–२)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति स्नान मंत्र ।
१६ × ८.७ सें० मी०	१८ (१–१८)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति पिंड पितृ यज्ञ ॥ समाप्त ॥
(ग०मू० ५४)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रागतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३७	६७६	श्री स्मार्तपदार्थ संग्रह (गङ्गाधरी)	गङ्गाधर भट्ट		दे० का०	दे०
११३८	६६९२	स्मार्तपाकसप्रयोग	अनन्त दीक्षित		दे० का०	दे०
११३९	६३७४	स्मार्त प्रायश्चित्त	दिवाकर		दे० का०	दे०
११४०	४६६६	स्मार्तसंग्रह कारिका (आधान पद्धति)	गंगाधर भट्ट		दे० का०	दे०
११४०	७६४५	स्मार्ताग्न्यनुगमन प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
११४१	४१७६	स्वस्ति वाचन			दे० का०	दे०
११४०	४७०८	स्वस्तिक वाचन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.५ × ११.५ सें० मी०	५०	१०	३६	पू०	प्राचीन सं०१६८४	इति गगाधरी पुस्तक मिद संपूर्ण ॥ सवत १६८४ वर्षे आषाढ वदि ५ रवौ लेख ॥
२३.२ × १०.२ सें० मी०	२४ (१–२४)	१०	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री महायज्ञोपवीताभिधान श्री विश्वनाथ सूनुना दीक्षितानंतेन सर्वोपकाराय वशिष्टासमप्रकाश्वरणावर्मा याणाकू सप्रयोग समाप्त ॥ ...
२१ × ९.७ सें० मी०	६७ (१–६७)	८	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्कालोपनामक भट्टरामेश्वरात्मज भट्ट महादेव द्विज वर्य सूनु भट्ट दिवाकर विरचित स्मार्त प्रायश्चित्तानि प्रयोग रूपेण नित्यनैमित्तिक प्रायश्चित्तानिकारिकाद्युक्तानि निरूपितानि ॥ इतिस्मार्त प्रायश्चित्त समाप्त ॥
२७.४ × ११.१ सें० मी०	५४ (१–५४)	९	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री गगाधरभट्टविरचितेस्मार्तपदार्थ संग्रहेमणिकाबंधानसमाप्त ॥... (पत्रसंख्या ६) आधानपद्धतिपूर्वं स्मार्त सग्रह कारिका ॥१॥ (प्रारंभ)
२७.२ × ११.४ सें० मी०	४ (१–४)	७	३४	पू०	प्राचीन	इति स्मार्ताग्न्यनुगमन प्रायश्चित्त समाप्त ॥
१९ × ९.१२ सें० मी०	१० (२–११)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२५ × १०.१ सें० मी०	७ (१-२,४-८)	६	२७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
११४४	७०३६	स्वस्त्ययन			दे० का०	दे०
११४५	४६३६	स्वाहाप्राण			दे० का०	दे०
११४६	५४३	हृदविधानार्घ्यम्			दे० का०	दे०
११४७	७१७०	हनुमत्प्रतिष्ठा प्रयोग			दे० का०	दे०
११४८	६६४७	हरिवंशश्रवणविधि			दे० का०	दे०
११४९	५०८२	हरिसमाराधनसार संग्रह	रामप्रसाद		दे० का०	दे०
११५०	४६१२	हरिसमाराधनसार संग्रह	रामप्रसादमिश्र		दे० का०	दे०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ जिस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११५१	८६६६	हरिसमाराधनसारसंग्रह	रामप्रसादमिश्र		दे० का०	दे०
११५२	१४०१	हरिस्मृति			दे० का०	दे०
११५३	३५२४	हवनपद्धति			दे० का०	दे०
११५४	४७४६	हिरण्यश्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
११५५	४६३७	होम			दे० का०	दे०
११५६	६०५६	होमचिंतामणि			दे० का०	दे०
११५७	५३०	होमपद्धति	श्रीलंबोदर		दे० का०	दे०

क्रमांक ग्रौर विषय	पुस्तकालय की ग्रागतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११५८	२७४४	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११५९	४३२१	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६०	६७७	होमपद्धति	लम्बोदर		दे० का०	दे०
११६१	५०२६	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६२	७८६८	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६३	३०२१	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६४	४६८४	होमपद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२१७×१२६ सें० मी०	२८ (१–२८)	६	२३	पू०	प्राचीन सं०१८६५	इति स्वनारायन होमपद्धति समाप्त शुभ भूयात ॥ संवत १८६५ शके १७३० पौष शुक्ल नवम्या सोमवासरे पुस्तक लिखित मिश्र पुमान राम श्री श्रीराम चंद्राय नमः ॥
३०५×१२६ सें० मी०	५ (१–५)	१४	४६	पू०	सं०१९१३	सं० १९१३ आषाड कृष्ण १३ लिखिता मिश्र मुरलीधर स्वयं पठनार्थ यां तत्सत् ॥
२६६×११५ सें० मी०	२९ (१–२९)	६	३६	पू०	प्राचीन सं०१९३५	इति श्री लम्बोदर विरचित होम पद्धति समाप्तम् संवत् १९३५ चैत्र कृष्ण ६ रविवासरे लिखित गंगा सहायेन अहीलना मध्ये इद पुस्तक संपूर्णोजात शरर जयतु शुभा ददातु ॥
२४×१०३ सें० मी०	२ (९–१०)	१०	३७	अपू०	प्राचीन	
१४८×१३५ सें०मी०	२०	१२	१६	अपू०	प्राचीन सं०१८६५	इति श्रीवटूर्णाहुति होमस्य पद्धति समाप्ता ॥ मोता ज्येष्ठ सुदि २ संवत् १८६५
२४१×१०२ सें० मी०	१५	१०	३३	अपू०	प्राचीन	
२६×१२ सें० मी०	१९ (९५–११३)	६	३१	अपू०	प्राचा (जीर्ण)	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११६५	५२६७	होम पद्धति			दे० का०	दे०
११६६	२४२८	होम पद्धति			दे० का०	दे०
११६७	७५६६	होम विधि			दे० का०	दे०
११६८	५२४९	होम विधि (कुशकण्डिका)			दे० का०	दे०
११६९	७३११	होम विधि			दे० का०	दे०
११७०	७७४५	होम विधि			दे० का०	दे०
११७१	६४६५	होम प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·५ × १२·४ सें० मी०	५ (१-३, ५-६)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०·३ सें० मी०	८ (१-६, २७, २६)	१२	३५	पू०	प्राचीन	
३०·६ × १४·७ सें० मी०	४५ (१-४५)	११	३१	पू०	सं० १९३६	इति श्री होम समाप्त संवत् १९३६ के साल·········
३३·२ × ९·८ सें० मी०	४ (१-४)	६	४०	पू०	प्राचीन	इति होम समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
२४ × १२ सें० मी०	१० (१-१०)	१०	३७	अपू०	प्राचीन	
२६·१ × १०·३ सें० मी०	१० (१-१०)	४२	३६	अपू०	प्राचीन	
२२·६ × १०·४ सें० मी०	८	■	३२	पू०	प्राचीन	अथ पशुबंध होत्र प्रयोग ॥ (प्रारंभ)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
कोश १	१७६८	अनेकार्थ ध्वनि मंजरी	क्षपणक		दे० का०	दे०
२	४५२८	अनेकार्थ ध्वनि मंजरी	क्षपणक		दे० का०	दे०
३	५५९९	अनेकार्थ ध्वनि मंजरी			मि० का०	दे०
४	४४८७	अनेकार्थ मंजरी (१–४ अध्याय)			दे० का०	दे०
५	६०९९	अनेकार्थ मंजरी			दे० का०	दे०
६	३४७९	अभिधान चिंतामणि	हेमचंद्र		दे० का०	दे०
७	११७६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३.५ × १०.५ सें० मी०	६ (४–९)	१३	४०	अपू०	सं०१८७४	इति श्री काश्मीराम्नायेमहाक्षपणक विरचिते अनेकार्थध्वनिमंजर्यां पदाधिकार कांड शुभमस्तु ॥ संवत् १८०७४ ॥
२३.२ × ११.६ सें० मी०	■ (१–६, ८)	११	४८	अपू०	सं० १८६४	इति श्री काश्मीराम्नायेमहाक्षपण कविविरचितायामनेकार्थमंजर्यां न्दतो काधिकार प्रथमकांड । (पत्रसंख्या–४) × × × इतिऽनेकार्थ ध्वनिमंजर्यां तृतीयोध्याय ३ संवत् १८६४ वैशाष मास कृष्णपक्षे सप्तम्यां बुधवासरान्वितायां लिखितं मिश्रमहतावसिंह स्वात्मपठनार्थं शुभमस्तु ॥
२१ × ११.१ सें० मी०	९ (१–९)	११	४०	पू०	आधुनिक	इत्यनेकार्थध्वनि मंजर्यां द्वितीय कांडो र्ध श्लोकाधिकार साग एव सर्थित ॥ अनेकार्थ नाम समाप्त ·· ·· ·· ··
२७.८ × ११.५ सें० मी०	१४ (१–१४)	९	३२	पू०	सं० १९१४	इत्यनेकार्थमंजर्यां एकाक्षराधिकार श्चतुर्थोध्याय ॥ ४ माघमास शितेपक्षे चतुर्थीसामवासरेस्वलिपित्स्वात्मपाठार्थं बडवलीनगरस्थित १ संवत् १९१४ मंगल लखकानांच पाठकानांचमंगल
२२.२ × ९.७ सें० मी०	१५ (१, ३–१६)	८	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री लिंगशासन समाप्त ॥ महाराष्ट्रोपनामक गदाधर भट्टन माघे ससि शुक्ल पक्षेन दम्या लिखित ॥
३० × १०.९ सें० मी०	२५	१४	५४	अपू०	खंडित सं०१७६६	इत्याचार्य श्री हेमचंद्र विरचितायामभिधान चिंतामणौ नाममालायां सामान्य कांड षष्ठ समाप्त ॥ सं०१७६६ वर्षे
२५.७ × ११.९ सें० मी०	(४१, ९४–९९, १०६)	८	३६	अपू०	प्राचीन	

क्रमाव ग्रौर विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८	३०६४	अमरकोश (नामलिगानुशासन-भूमिकाड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६	७४६	अमरकोश			दे० का०	दे०
१०	७७५	अमरकोष (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
११	८५१	अमरकोश (स्वरादिकाड) (सस्कृतटीकासहित)	अमरसिंह	क्षीरस्वामी भट्ट	दे० का०	दे०
१२	८६६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१३	४३०७	अमरकोश (सटीक)	अमरसिंह	भानुजीदीक्षित	दे० का०	दे०
१४	४३८२	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२२८×१०५ सें० मी०	२१ (२२-४२)	११	३७	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिंगानुशासने ॥ भूमिकाण्डो द्वितीयाऽय साङ्गएव समर्थित ॥ तपसि शुक्लदले चतुर्दश्या कुजे दिने समाप्तोय द्वितीय' कण्ड लिखितमिद गुरुदयालेनेति शिवम् ॥
२१६×१०३ सें० मी०	६०	६	२८	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिंगानुशासने··· ···एव समर्थितः ? ॥
२२२×१०४ सें० मी०	२१	६	३०	पू०	सं० १६३७	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने-स्वरादि काड प्रथम १ सागएव समर्थित आषाढमासे कृष्ण पक्षं द्वितीया गुरुवासरे लिखित रामप्रसादेन पुस्तक वृद्धि दायक सवत् १६३७, राम राम
२७५×११·२ सें० मी०	५२ १,१-५३	११	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री भट्ट क्षीरस्वाम्युत्प्रेक्षितमर-कोशोद्‌घाटने स्वर्गादि काड प्रथम समाप्त ॥···
२६७×१०१ सें० मी०	६० (२-८०, ८४-६४)	७	३७	अपू०	प्राचीन सं० १७०२	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने काड तृतीय सामान्य' सागएव समर्थित शुभमस्तु शुभदिने ॥ सवत् १७०२ समये आषाढ सुदि प्रतिपदा गुरुवासरे ॥
२६६×१०८ सें० मी०	१०२ (१-८६, १-१६)	११	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री वघेल वशोद्भव श्री मँहर विषयाधिप श्री कीर्ति सिंह देवाज्ञया श्री भट्टो जी दीक्षितात्मज श्री भानु जी दीक्षित विरचितायाममर टीकायां व्याख्या सुधाख्याया पातालभोगिवर्ग विवरण समाप्त ॥ (पृ० ७१)
२४५×६६ सें० मी०	८३ (२६-३८, ४०-४४, ४६-५६, ५८, ६६-७८, ८०-१०७, १०६-१२३)	६	३३	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिंगानुशासने ॥ सामान्यकाण्डस्तृतीय सांगएव समर्थित शुभमस्तु ॥ श्री रस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५	७५७०	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१६	४३८४	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१७	१३०२	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१८	१६०२	अमरकोश (प्रथमसर्ग) (संस्कृतटीकासहित)	अमरसिंह	भानु दीक्षित	दे० का०	दे०
१९	१८०७	अमरकोश (प्रथमकांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२०	४२२६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२१	४१३०	अमरकोश			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.५ × ९.९ सें० मी०	६१ (१–६,१२–६३)	८	३२	अपू०	प्राचीन	
१६.८ × १३.६ सें० मी०	३३ (१,६–३५, ३७–३८)	९	१५	अपू०	प्राचीन	
२५.६ × १२ सें० मी०	४५	८	२५	अपू०	प्राचीन	
३३.७ × १५.४ सें० मी०	४१ (१–४१)	११	५७	पू०	प्राचीन	इति श्री बघेलवंशोद्भवश्रीमहीधर विद्याधिप श्री सिंहदेवशाया श्रीभट्टोजिदीक्षितात्मज श्री भानुदीक्षित विरचितायामरटीकायाव्याख्या सुध्यायाप्रथमः काड सपूर्णतामगमत्…… …… ……
२८.६ × १२.१ सें० मी०	१३ (१–१३)	११	३८	पू०	प्राचीन सं० १८८६	इति श्री अमराचार्य कृतौ प्रथमकांड समाप्त ॥ संवत् १८८६ मिती माघ कृष्ण सप्तम्या लिप्यी कृत स्थानेश्वर नगरमध्ये ॥
२५.१ × ११ सें० मी०	५	१०	३२	अपू०	प्राचीन (खंडित)	
२५.८ × ११.१ सें० मी०	११ (८५–९५)	८	३७	अपू०	प्राचीन	

क्रमाव और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२	४२२८	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२३	२७४६	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२४	३१२३	अमरकोश			दे० का०	दे०
२५	३५३०	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२६	३६४७	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२७	४०२१	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२८	२५४६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·७ × ६ सें० मी०	४४ (११३,१६-१८,१८-२३, २३,२४,२४-३२,३४-३५, ३७,३६-४३, ४५-५३,५६-११६३-६५)	८	२८	अपू०	प्राचीन (जीर्ण-शीर्ण) (खंडित)	समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः ॥ संपूर्णं मुच्यते वर्गनामलिंगानुशासनम् ॥ २ ॥ (प्रारंभ)
२५.२ × ११ सें० मी०	३४	८	३७	अपू०	प्राचीन	
२४.६ × १०.६ सें० मी०	२६ (३२-४३, ५४-६१, ६५-६६, ६७-६८)	७	३२	अपू०	प्राचीन	
२२·१ × ८.३ सें० मी०	५५ (१-५५)	७	३६	अपू०	प्राचीन सं०१६०८	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने भूमिकाद्यो द्वितीयोयं सांगएव समर्थित ॥२॥ समाप्तोयं द्वितीय कांड ॥ संवत् १६०८ मार्गशीर्ष शुक्र १५ "॥
२२.६ × ११.१ सें० मी०	२८ (१-१०, १२-२४, २६-३२)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२२.५ × १०·७ सें० मी०	२८ (१-६)	८	२४	अपू०	प्राचीन	अथ अमर लिख्यते ॥ (प्रारंभ)
२७ × १०·९ सें० मी०	३ (१-३)	७	३५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६	३३	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३०	३७	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३१	४२	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३२	१३२	अमरकोश (प्रथम कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३३	१३३	अमरकोश (तृतीय कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३४	४७१	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३५	४०२	अमरकोश (लिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०

...ों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	९	१०	११
२८.६ × १४.२ सें० मी०	१० (१–१०)	९	२९	अपू०	प्राचीन	
२८.५ × ११ सें० मी०	८६ (१–७, १२–९१)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२७.६ × १०.९ सें० मी०	९९ ६२–१६०	१०	२७	अपू०	प्राचीन स०१८५४	शुभभूयाल्लेखकपाठकयोः ॥ स०१८५४ ज्येष्ठ मासे शुक्ल ११ चन्द्र० रत्नाख्येन लिखितम् ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ श्री ॥
२५ × १२.५ सें० मी०	१८ (१–१८)	९	३०	पू०	प्राचीन स०१७१८	इत्यमर सिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने॥ स्वरादिकांड प्रथम सांग एव समर्पित ॥२॥ इति प्रथमकांड समाप्त ॥ शके १७१८ ** भाद्रपदशुक्ल तृतीया इद पुस्तक समाप्त ॥ गंगाधर महादेव काणेरया इद ॥ स्वार्थपरार्थं च ॥६॥
२३.३ × १०.७ सें० मी०	२९ (१–२९)	९	२८	पू०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नामलिंगानुशाने सामान्य कांड तृतीय सांग एव समर्पित ।
२५ × १०.३ सें० मी०	९४ (१–९४)	९	३४	पू०	प्राचीन कृमिकृ तित सं०१६८०	इति लिंगादि संग्रहवर्गं ॥ इत्यमरसिंह कृतौनामलिंगानुशासने ॥ सामान्य काण्डतृतीयः सांगएवसमर्पित ॥ शुभ मस्तु ॥ श्री विश्वेश्वरायनम ॥ श्री रामायनम ॥ संवत् १६८० ॥ *****
३३.५ × १३ सें० मी०	१५१	५	३२	पू०	प्राचीन स०१९०२	इत्य अमरसिंह कृतौनाम लिंगानुशानें कांडस्तृतीय सामान्य । सग राव समर्पित ॥३॥ संवत्१९०२ शाके१७६७॥ अश्वनमासे शुक्लपक्षे शुभ तिथौ ॥७॥ भौमवासरे ॥ लिषत बिहारिलाल ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६	२४५	अमरकोश (लिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३७	२५५	अमरकोष (लिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३८	२८१	अमरकोश (लिंगानुशासन) (तृतीय कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३९	३६१६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४०	३७९५	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४१	३८११	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४२	३०३२	अमरकोश (नामलिंगानुशासन) (भूमिकांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ ग	७	स	द	६	१०	११
२७.५ × ११ सें० मी०	१०	११	३६	पू०	प्राचीन (जीर्ण)	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिङ्गानुशासने स्वर्गादेकाण्ड, प्रथम साङ्गएव समर्थित ॥
२७.५ × ११ सें० मी०	३४ (१–३४)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौनामलिङ्गानुशासने भूमिकाण्डो द्वितीयोऽयसाङ्गएव समर्थितः ॥
२७.६ × ११.२ सें० मी०	२६ (१–२६)	१०	३६	पू०	प्राचीन सं० १८८५	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिङ्गानुशासने काण्डस्तृतीयः सामान्य साङ्गएव समर्पित ॥ शुभमस्तु लेखक पाठकयो श्री रस्तु सिद्धि श्री महाराजाधिराजे श्री महाराजा श्री राजा जै सिंहदेव राज्ये॰ शुभस्थाने रीवाणगरपुस्तकलित श्री चतुर्वेदयो घाली रामेण सं० १८८३ के प्रथिम शुक्ल ५ साने प्रात्मर्थवा शुभमवतु ॥
२६.७ × १५.२ सें० मी०	२६ (१-४, ६-५४, ५६–५७)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	
२४.७ × ११.३ सें० मी०	४१ (४–५, ११–४६)	८	२४	अपू०	प्राचीन	
२६.५ × १५ सें० मी०	३३ (१–१२, १–२१)	६	२६	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिंगानुशासने॰ स्वरादिकाड प्रथम साङ्गएव समर्पित ॥
२७.१ × ११.८ सें० मी०	६७ (१–६७)	७	३१	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिंगानुशासने भूमिकाडो द्वितीयोय सागएव समश्रित ॥ शुभमवतु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३	३०७८	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४४	४८५०	अमरकोश (लिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४५	४८३६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४६	४६४०	अमरकोश (नामलिंगानुशसन–१–२ कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४७	५३३४	अमरकोश (सटीक)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४८	४४३०	अमरकोश (प्रथमसर्ग) (अमरविवेक संस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह	महेश्वर	दे० का०	दे०
४९	६३३५	अमकोश (तृतीयकांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२४८×१०७ सें० मी०	११ (७३–८३)	८	३८	अपू०	प्राचीन	
३१×११३ सें० मी०	५२ (१–५२)	६	३६	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौनाम लिंगानुशासने भूतकाण्डो द्वितीय साग एव समर्थित × × × × × × × × ॥
३०३×१२८ सें० मी०	२७ (१–२७)	११	३६	अपू०	प्राचीन	
२५·७×१०५ सें० मी०	३८ (३–२४, २६–४१)	७	४२	अपू०	प्राचीन सं०१८६४	इति श्री इत्यमरासस्कृतौ नामलिंगानुशासनेद्वितीयो भमि काडोयसागएवसन्वित ॥ अगहसुदि दुइज सवत १८६४ श्रीकृष्ण प्रशाद ब्राह्मणेन लिखित समाप्त शुभमस्तु ''॥
२७३×१०४ सें० मी०	१३० (१–१३०)	६	४५	पू०	प्राचीन	श्रीमत्यमरविवेके महेश्वरेण विरचित्त-एवाय ॥ भूम्यादि द्वितीयकाड समाप्तिम गमच्छुभमवतु इति द्वितीय काड समाप्त ॥
२७२×११६ सें० मी०	७६ (१–४६)	६	३७	पू०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नामलिंगानुशासने ॥ स्वरादिकाण्ड प्रथम साग एव समर्पित
२२×१२५ सें० मी० (सं० सू० ५७)	१६ (११२१–२७,२६ ३६ ५२–५५ ५७, ५६,६२–६३ ८७)	८	२३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०	५०८५	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५१	४८६६	अमरकोश (तृतीय काड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५२	५००६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५३	५१८३	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५४	७२००	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५५	६६८६/३	अमरकोश (नामलिंगानशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५६	७०२६	अमरकोश			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४५×१२१ सें० मी०	२३ (२–११, १३–२५)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने स्वरादि काड प्रथम समाप्तः ॥
२२'८×८८ सें० मी०	३९ (१–३९)	६	३८	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने ··· ॥ इति श्री अमरकोश तृतीय काडः समाप्त ।
२३५×११ सें० मी०	३७ (४–२२, ३०,४७,४८)	७	२७	अपू०	प्राचीन	
२७८×११६ सें० मी०	३ (१–३)	९	३१	अपू०	प्राचीन	······समाहृत्यान्य तत्राणि सक्षिप्तै प्रति सस्कृतै ॥ सपूर्णमुच्यते वर्गनामलिगानुशासनम् ॥ २ ॥······ (प्रारभ)
२५३×१०८ सें० मी०	८ (१–८)	६	२६	अपू०	प्राचीन	
१७×१५७ सें० मी०	२२ (१–२२)	१२	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री अमरसिंह विरचिते नाम लिगानुशासने स्वरादिकाड प्रथम. समाप्तम् ॥
२११×१२३ सें० मी०	१	९	२७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७	२३४६	अमरकोश (नाम लिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५८	२३०२	अमरकोश (संस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५९	२३००	अमरकोश (संस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६०	४६३७	अमरकोश (सटीक) (प्रथम काड)	अमरसिंह	नरहरि भट्ट	दे० का०	दे०
६१	५६२५	अमरकोश (सटीक) (द्वितीय काड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६२	५५७५	अमरकोश			दे० का०	दे०
६३	५५२४	अमरकोश-टीका	अमरसिंह	भानुदीक्षित	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६×११ सें० मी०	५	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२६.६×११.६ सें० मी०	११० (१–२३, २५–१११)	१२	४६	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने ... . ॥
२८.५×११.२ सें० मी०	१५४ (१–१५४)	१०	४६	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिंगानुशासनो। सामान्य काण्डस्तृतीय साराएव समर्पित ॥ शुभमस्तु ॥
२२.५×६ सें० मी०	४३ (१–४३)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री नरहरि भट्ट विरचिते अमर ते प्रथम काड. ॥
२२.५×६ सें० मी०	३६ (१–२८,२८ २६,२६–३४)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
२७.५×११–४ सें० मी	४२ (२–४२)	८	३४	पू०	प्राचीन सं० १६४६	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने ॥ सामान्य काडस्तृतीय साग एव समर्पित ॥४७॥ सवत् १६४६ माघ शुक्ले षष्ठ्या रवौ समाप्तोऽयमत्तिम
२१.८×१२.४ सें० मी०	८१ १–३,४–५, ५–७८,१०७)	१३	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री बघेलवंशोद्भव श्री महीधर विषयाधिप श्री कीर्त्तिसिंह देवाज्ञया श्री भट्टोजि दीक्षितात्मज श्री भानु जी दीक्षित विरचितायाममरटीकया व्याख्या सुधाया प्रथम काण्ड संपूर्णतामगमत् ॥शुभमस्तु॥

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४	१६८०	अमरकोश (टीका)			दे० का०	दे०
६५	१६३६	अमरकोश (सटीक)			दे० का०	दे०
६६	२१२६	अमरकोश (संस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह	भानुजीदीक्षित	दे० का०	दे०
६७	२०६९	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६८	२०२५	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६९	५७९३	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७०	५७६७	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२२.५ × १२.३ सें० मी०	३९ (१–३८,४९)	१३	५७	अपू०	प्राचीन	
२२.५ × १२ सें० मी०	५६	१३	५०	अपू०	प्राचीन	
२८ × ११.५ सें० मी०	२७१ (१८–२८८)	११	४७	अपू०	सं०१७४७	इति श्रीवघेलवंशोद्भव श्रीमहीधर विषयाधिप श्रीमहाराजकुमार श्रीकीर्ति सिंह देवसाय। श्रीभट्टोजी दीक्षितात्मज श्रीभानुजी दीक्षित विरचितायाममरटीकायां व्याख्यासुधा द्वितीय काण्ड. सपूर्णतामगात्॥ शुभसवत् १७४७ समये……
२१.४ × ८.२ सें० मी०	८६ (१७,१४-१८, ३५-६६, १०१-११६)	६	३५	अपू०	प्राचीन सं०१७३७	इति लिंग संग्रवर्ग इत्यमर सिंह कृतौ तृतीय काड समाप्त शुभमस्तु सं० १७३७ समये पौष सुदि एकादश्या पुस्तक लेखित गयाराम वंदी जनेन लखायित श्री महाराज कुमार भगवतराय धर्माय ॥
२६ × ११.५ सें० मी०	१७ (७–२३)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति अमरसिंह कृते……
२७.५ × ११.४ सें० मी०	१५ (१–१५)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२३.१ × ११ सें० मी०	२८ (४–६ १०–३४)	६	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७१	५७३५	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७२	५९९९	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७३	६११५	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७४	६०४७	अमरकोश—सटीक (प्रथमकांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७५	६३१९	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७६	६३१८	अमरकोश (नामलिंगानुशासन, तृतीयखंड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७७	७६१६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७.३ × ११.५ सें० मी०	५७ (१–५७)	७	३१	पू०	प्राचीन	इति शूद्रवर्ग इत्यमर सिंह कृतौ नाम-लिंगानुशासने ॥ द्वितीय कांडो भूम्यादि सांगएव समर्थित ॥
२३ × ८.४ सें० मी०	६०	४	२७	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने स्वरादि कांड ········· ॥ (पृ० ४७)
२८ × ११.५ सें० मी०	२९ (१–२९)	५	२९	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिंगानुशासने स्वरादि कांड प्रथम सांग एव समर्थित ॥
२७.१ × ११.३ सें० मी०	३९ (१–३९)	८	३५	पू०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नामलिंगानुशासने ॥ स्वरादि कांडः प्रथम सांगएव समर्थित ॥१॥
२२.८ × ९.८ सें० मी०	९ (१, ६, १५–२१)	१२	२४	अपू०	प्राचीन	
२२.८ × १०.४ सें० मी०	३८ (१–३८)	१०	२७	पू०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नामलिंगानुशा-सने ॥ काण्डस्तृतीय सामान्य सांगएव समर्थित ॥
२९.७ × १०.३ सें० मी०	९	[illegible]	३८	अपू०	प्राचीन	महाराज कुमार श्री बाबू फत्तेसिंह देव राज्ये तस्मिन्काले वत्माने ॥ पुस्तक लिखित पण्डित भोपति × × ॥

(सं०सू०५८)

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की प्रापनसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७९	७७१०	अमरकोश (तृतीयकाड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
८०	७६६०	अमरकोश नामालिंगानुशासन			दे० का०	दे०
८१	७४७४	अमरकोश			दे० का०	दे०
८२	७३९८	अमरकोश (द्वितीय काड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
८३	११७३	एकाक्षरकोश	क्षपणक		दे० का०	दे०
८४	४७४६	एकाक्षरकोश			दे० का०	दे०
८५	५२६५	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	९	१०	११
२३.३ × १३.२ सें० मी०	२६ (१–२६)	११	२८	अपू०	प्राचीन	
२४.७ × १०.७ सें० मी०	३८ (१–३८)	७	३५	पू०	प्राचीन	इति लिंगादिशेषवर्ग इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने काण्डस्तृतीय × × × × × ॥
२३.२ × १०.६ सें० मी०	८ (५६–६६)	७	३०	अपू०	प्राचीन	
२६.५ × १४.४ सें० मी०	३४ (१–३, १५–३५)	१२	२६	अपू०	प्राचीन	
२६.१ × १४.८ सें० मी०	२ (१–२)	१३	३०	अपू०	प्राचीन सं० १६१८	इतीरवै काक्षर कोश कथित मुनिना पुरा इति श्री महा क्षपणक कवि विरचितमेकाक्षर नाम कोश ॥
२५.१ × ११.२ सें० मी०	३ (१–३)	११	२२	पू०	प्राचीन	इत्येकाक्षरि नाम समाप्ता ॥
२२.७ × १०.२ सें० मी०	३ (१–३)	६	३५	पू०	प्राचीन सं० १८६०	इत्येकाक्षर कोश समाप्त सवत १८६० शके १७२५ श्रावन सुदि १४ भौमे क पुस्तक लिखित सीतारामेणात्मकपठनार्थमपरार्थम्वा श्री गणेशायनम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ जिस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८६	६२३८	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०
८७	३८६६	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०
८८	७२७२	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०
८९	३०७८	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०
९०	१०११/२	एकाक्षरी कोश			दे० का०	दे०
९१	१६२६	एकाक्षरी कोश			दे० का०	दे०
९२	१७६६	एकाक्षरी कोश			दे० का०	दे०

ता या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	ग	द	६	१०	११
१७ ३ × ११ १ सें० मी०	२ (१–२)	६	३८	पू०	प्राचीन स० १६४३	इत्येकाक्षर कोश समाप्त संवत् १६४३ पौषवदि × × × × ।
२४ ६ × ११ २ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री महा रक रविराज विरचित एकाक्षनाम कोश ।।
२३ ८ × १३ ४ सें० मी०	६ (१–६)	१४	२६	अपू०	प्राचीन	
२३ ५ × ११ सें० मी०	६	६	२१	पू०	सं० १६३६	इति एकाक्षर कोश समाप्त ।। लिखित नवदाप्रसाद तिवारी सं० १६३६ के मिति माघ सुदि १४ ·········· ।।
२६ × १८ २ सें० मी०	३ (१–३)	६	२७	पू०	प्राचीन	इत्येकाक्षरकोश समाप्तम् ॥
२४ २ × ८ ३ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति एकाक्षरीकोश परिपूर्ण ॥ राम राम ॥
२४ १ × ११ सें० मी०	२ (१–२)	११	३६	पू०	प्राचीन सं० १८७५	इत्येकाक्षरकोश ॥ संवत् १८७५ ॥

क्रमांक ग्रौर विषय	पुस्तकालय की ग्रागतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३	४०७८	कोश			दे० का०	दे०
६४	१३४६	जगद्विजयी छदटीका	कवींद्राचार्य सरस्वती		दे० का०	दे०
६५	२३३	त्रिकांडकोश	श्री पुरुषोत्तमदेव		दे० का०	दे०
६६	६०१६	दीपिकोश मुक्तावली	कवींद्र		दे० का०	दे०
६७	२३९३	नाम माला	वल्लभ		दे० का०	दे०
६८	७५३६ / २	नाममालानिघटु	धनजय		दे० का०	दे०
६९	१७१६	नामलिंगानुशासन	ग्रमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२६.३×६.५ सें० मी०	१३ (२-११, १३-१४)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
२६×१२.५ सें० मी०	३२ (३-३८)	८	४३	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीसर्वविद्यानिधान कवीन्द्राचार्य सरस्वती विरचितायां बृहद्जगद्विजछन्दीका समाप्तं ॥
३०.७×१०.३ सें० मी०	२५	६	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री पुरुषोत्तम देव विरचित शेषामर समाप्त ॥ इद पुस्तक......... स्वस्ति श्री नृपशालि वह नशके १७७३ विरोधकृतनाम सवत्सरे श्रवणे शुक्ल द्वादश्यां भृगुवमरयुतायातद्दिन समाप्त॥
२७.४×११.२ सें० मी०	३ (१-३)	१८	५५	पू०	प्राचीन सं०१६२४	तस्यातिशायिनिश्चे पथिजागरुक धीलोचनस्य गृह शासन लोचनस्य नानाकवीन्द्र रचितानभिधानकोषानाकृष्य लोचनमिवोधमदीपिकेयं ॥३॥ * नागेन्द्र स प्रथित कोष समुद्रमध्ये नानाकवीन्द्र मुखसुक्ति समुद्धृतेय । विद्वद्गृहादमरनिर्मित पट्टसूत्र । मुक्तावली विरचिता हृदि संनिधातु ॥ इति ग्रंथस्यादि समाप्ता ॥ सवत १६२४ जेष्ठे ॥
२४.६×११.४ सें० मी०	२ (१-२)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इति वल्लभ कृत माला समाप्ता श्लोक संख्या पाठ ॥
२७×११.५ सें० मी०	१८ (१-१८)	■	२८	पू०	सं०१६३६	इति श्रीधनजयकृत नाममालानिघटु समाप्तम शुभम शुभमस्तुसिद्धिरस्तु श्री सवत १६३६ मार्गशीर्ष कृष्णे ५ पंचम्यमगुरो लिखित रामप्रसाद दिच्छित ॥
१६.५×६.७ सें० मी०	१४ (११२-११३ १३५,१४२, १४२ १४५-१५१,१५२-१५४)	■	२३	अपू०	प्राचीन सं०१८१२	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने सामान्य काण्ड तृतीय सागएव समर्थित शुभमस्तु लेखक पाठकयो सं०१८१२ ज्येष्ठसुदि ४ गुरऊ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥श्री॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१००	३६६६	निघंटु			दे० का०	दे०
१०१	२५७४	निघंटनाममाला			दे० का०	दे०
१०२	२६४३	निघंटमाला	धनंजय		दे० का०	दे०
१०३	११९२	श्री पारसीप्रकाश	कृष्णदास		दे० का०	दे०
१०४	६६८	पारसीप्रकाश	कृष्णदास		दे० का०	दे०
१०५	३२३६	मातृकाकोश			दे० का०	दे०
१०६	५१७०	मातृकाकोश			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१६×७७ सें० मी०	१६ (१-१६)	६	२३	पू०	प्राचीन सं०१८५८	इतिनिघटौ पंचमोध्याय समाप्त ॥ सं० १८५८ ॥ शके १७२३ मिती माघकृष्ण अमाया समाप्त ॥
२३×१०.३ सें० मी०	६	१०	४१	पू०	सं०१८७०	इति श्री धनंजय महाकाव्ये निघंटनाम माला समाप्ता, शुभमस्तु श्रीस्तु ॥ सं० १८७० पौष कृष्ण पंचमी रवि वासरे इद पुस्तक लिख्यते ॥ रामाय नम ··· ··· ··· ···
२२×६ सें० मी०	२० (१-२०)	७	३६	पू०	सं०१७८७	इति श्री धनंजय विरचितायां निघंट माला ॥ समाप्ता शुभमस्तु ॥ संवत् १७८७ शाल कार्तिक ······ ·· ··
२८८×११ सें० मी०	१९ (१-१६)	१०	४२	पू०	प्राचीन सं०१८३३	इति श्री महीमहेंद्र श्रीमदकबर शाहकारिते विहारि कृष्ण दास मिश्र कृते पारसी प्रकाशे कृत्प्रकरण समाप्त ॥ अग्नि राम वसु भूमि संयुते फाल्गुणे शिवतिथौ सितेतरे ॥ सूर्ये नंदनदिने हरिवंशो वंशरूप कृतये विलिलेख ॥
२८×११.३ सें० मी०	१० (१-१०)	१३	४४	पू०	प्राचीन सं०१८३४	इति श्री मही महेंद्र श्री मदकबरसाह कारिते कृष्णदास पारसी प्रकाशे शब्दार्थ कोश प्रकरणम् ॥ सं०१८३४ के साल चैत्र वदी ११ गरौक लिखि महापाल वशरू पेशा ।
२३.४×१०.३ सें० मी०	३ (१-३)	१२	३४	पू०	प्राचीन	इति मातृका कोश: संपूर्ण ।
१६.७×८.५ सें० मी०	६	६	२१	पू०	सं०१६१७	इति मातृका कोश समाप्त सं०१६१७ आश्विन कृष्ण १३ गुरौ ॥
(सं०सू०५६)						

मांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकर	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०७	६२०/२	मातृकाकोश			दे० का०	दे०
१०८	६७०/४	मातृका निघंटु			दे० का०	दे०
१०९	७५५६	मेदिनीकोश			दे० का०	दे०
११०	२६६०	मेदिनीकोष			दे० का०	दे०
१११	१३८३	मेदिनीकोश	मेदिनीकर		दे० का०	दे०
११२	१०४०	व्यजनैकाक्षरकोश			दे० का०	दे०
११३	२४३५	शुद्ध प्रदीप	सुरेश्वर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	श	द	९	१०	११
१६.६ × ९.८ सें० मी०	५	८	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मातृकाकोशसमाप्त ॥
१९.१ × १० सें० मी०	८	१०	२७	अपू०	प्राचीन	
३१.२ × ११.५ सें० मी०	७४ (१–७४)	१०	२६	अपू०	प्राचीन	
२२.४ × १०.६ सें० मी०	४	१३	३१	अपू०	प्राचीन	
२२.४ × १०.८ सें० मी०	१०२	११	३४	अपू०	प्राचीन	
३१ × ११.८ सें० मी०	६	[illegible]	३१	पू०	सं०१८८२	इति व्यंजनैकाक्षरे कोष समाप्त ।. श्रीकृष्ण गोकुल वासी संवत् १८८२ समय नाम कार्तिकमासे कृष्ण पक्षे द्वादश्यां सोमवासरे बुभावन शर्मणे लेख्यमिदं पुस्तक ॥
२४.३ × ८.५ सें० मी०	४३	६	४६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
गीता १	६००२	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
२	१७०७	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
३	२८१३	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
४	३४४८	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
५	३५७५	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
६	२५१२	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
७	२७३	अवधूत गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ ग	८	स	९	६	१०	११
१६.३ × १०.५ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	१६	पू०	सं० १९०६	इति श्री अर्जुन गीता श्री कृस्न अर्जुन संवादे तत्व ज्ञानदीपो संवत् १९०६ ॥ ...... ॥
२२.५ × ६.८ सें० मी०	६ (६–१७)	६	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्री कृष्णार्जुन संवादे अर्जुन गीता समाप्त। श्री शुभमस्तु। श्रीरामायनम
१२ × ८ सें० मी०	(४३ पृ० संस्कृत, १६ पृ० हिंदी) कुल ५९ पृ०	७	१२	पू०	सं० १८९३	इति श्री कृष्णमार्जुन संवादे अर्जुन गीता संपूर्ण, भाद्र शुक्ल पक्ष तिथौ ४ बुधवासरे संवत् ॥१८९३॥
१८.४ × ९.६ सें० मी०	११ (१–११)	६	२१	अपू०	प्राचीन सं० १८४७	इति श्री अर्जुन गीता संपूर्ण संवत् १८४७ कुवार वदि द्वतीया ॥
२१.३ × ११ सें० मी०	६ (१,५–८, १०, १२–१३, १७, १६)	६	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्रीकृष्णार्जुन संवादे अर्ज्जुन गीता समाप्त ॥
२१.३ × १४.१ सें० मी०	७ (१–७)	१२	२८	पू०	प्राचीन सं० १८८६	इति श्री कृष्णार्जन संवादे अर्ज्जुन गीता समाप्त शुभमस्तु सं० १८८६ प्र श्रवण वदि नवमी रविवासरे प्रति लिषित राधकृष्ण ब्रह्मन उपाध्या श्री कृष्णायनम राधकुंजविहारी की जैराम ॥
१६.५ × १२ सें० मी०	८ (१०–१३, २०–२३)	१२	२२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८	६७३१	अवधूत गीता	दत्तात्रेय		दे० का०	दे०
९	७८४५	अष्टादशश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
१०	३६६४	उत्तरगीता	गौडपादाचार्य		दे० का०	दे०
११	१६२६	उत्तरगीता			दे० का०	दे०
१२	२०२२	उत्तरगीता			दे० का०	दे०
१३	७७०२	उत्तरगीताभाषा (द्वितीय अध्याय)		गौडपादाचार्य	दे० का०	दे०
१४	४१५८	कपिलगीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·६ × १३·६ सें० मी०	१८ (१–१८)	१२	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री दत्तात्रेय विरचितायां अवधूत गीतायां ॥ स्वात्म संवित्युपदेशे चतुर्थं प्रकरण । (पत्र संख्या १३)
१६·६ × ६ सें० मी०	२	७	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे अष्टादश श्लोकी गीता संपूर्णम् श्री कृष्णार्पणमस्तु श्री गुरुदत्तात्रेयार्पणमस्तु शुभं भवतु ॥
२०·४ × ६·३ सें० मी०	२५ (१–२५)	१२	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री गौडपादाचार्य विरचितायां उत्तर गीतायां द्वितीयो० ॥ (पत्रसंख्या–२२)
१५·५ × ६·४ सें० मी०	१३ (१–१३)	५	१५	अपू०	प्राचीन	
१५·५ × ६·६ सें० मी०	१२ (१–१२)	५	१७	अपू०	प्राचीन	
२६·६ × १४·३ सें० मी०	२१ (१–२१)	१२	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री गौडपादाचार्य विरचितायां उत्तरगीता व्याख्या द्वितीयोध्यायः ॥ श्रीमदुत्तर गीतायां द्वितीयोध्याय ॥
१५·३ × ६ सें० मी०	२७	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति पद्म पुराणे सिद्धांत सारे कपिल ऋषि सिद्ध संवादे राजराजेश्वरयोग कथन नाम अष्टमोध्याय ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रंथसंख्या या ग्रंथविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५	३२८१	गणेशगीता			दे० का०	दे०
१६	५७१५	गर्भगीता			दे० का०	दे०
१७	१०६(अ)	गीता	व्यास		दे० का०	दे०
१८	२०५५	गीता (तृतीय अध्याय)			दे० का०	दे०
१९	३८८	गीता (संस्कृत टीका सहित)	व्यास		दे० का०	दे०
२०	३१७४	गीता			दे० का०	दे०
२१	५२३३/२१	गीता (दशम और एकादश स्कंध)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ × ८ ८ सें० मी०	५० (१–५०)	७	२५	पू०	सं०१८२०	इति श्री गणेशगीता संपूर्णं । संवत् १८२० शके १६८५ विजयनामसंवत्से अधिक ज्येष्ठवद्यतता देशीतदिन पुस्तक समाप्त ॥ श्री गजाननार्पणमस्तु ॥
१६.६ × ६.२ सें० मी०	५ (१–५)	६	१६	पू०	सं०१६३६	इति श्री गर्भगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे गर्भ गीता समाप्तम ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १६३६ के आषाढ सुदि १२ कालिपित श्री बाबा मंगलदास ॥
१२.५ × ७.५ सें० मी०	११३० (१ १३०)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्त्रा संहितायां भीष्मपर्वणि श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संन्यास योगो नामाष्टादशोध्याय ॥१८॥ समाप्ता श्री भगवद्गीता ॥
१५.५ × ६.६ सें० मी०	८ (१–८)	५	१८	पू०	प्राचीन	श्रीमदुत्तर गीता सूपनिषत्सु० यायोग शास्त्र० संवादे महाभारते अश्वमेध० शत सहस्त्र० ज्ञान विवरणनाम तृतीयोध्याय ३ ॥
३४.७ × १३.१ सें० मी०	१० (५, ६ १२–१६)	६	३७	अपू०	प्राचीन	
१५ × ७.४ सें० मी०	३६ (४८ ६६ ७१–८४)	८	२०	अपू०	प्राचीन	श्रीमद्भागवतद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संन्यास योगोनाम अष्टादशोध्याय ॥१८॥ × × ×
१५.५ × १०.३ सें० मी०	११	६	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे विश्वरूप दर्शन नाम एकादशो ऽध्याय ॥

(सं० सू० ६०)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की क्रमसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२	२८	गीताग़ूढार्थ दीपिका		मधुसूदनदास सरस्वती	दे० का०	दे०
२३	२१०२	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
२४	२१०३	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
२५	२१०४	गीतार्थगूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
२६	२३०८	गीतागूढार्थ दीपिका (अष्टम अध्याय)			दे० का०	दे०
२७	२३०७	गीतागूढार्थ दीपिका (अष्टम अध्याय)			दे० का०	दे०
२८	२११३	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य ज्ञातव्य विवरण
८ अ	८ ब	स	द	९	१०	११
२८.८×१३.३ सें० मी०	२८	१३	४६	अपू०	प्राचीन	
२८.३×१२ सें० मी०	१२	१०	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां षोडशोध्याय ॥१६॥
२८×१२ सें० मी०	१०	६	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूप निषत्सु ब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्ण मार्जुन संवादे गूढार्थ दीपिकायां चतुर्दशाध्याय ॥ श्री कृष्णाय गोविंदाय नमोनमः ॥श्री॥
२८.१×१२ सें० मी०	८	११	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सुपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्ण मार्जुन संवादे दीपिकायां द्वादशाध्याय ॥ श्री कृष्णाय गोविंदाय नमास्तुते ॥ श्री भवान्यै नम ॥
२८×११.७ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकाया मोध्याय ।
२८.४×१२.१ सें० मी०	३१ (१–३१)	११	५४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकाया षष्ठोध्याय समाप्त प्रथमकांड समाप्त ॥
२८.२×११.६ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	५४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकाया तृतीयोध्याय ॥शुभमस्तु॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६	२११२	गीतागूढार्थ दीपिका (चतुर्थ अध्याय)			दे० का०	दे०
३०	२१११	गीतागूढार्थ दीपिका (पचम अध्याय)		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
३१	२११०	गीतागूढार्थ दीपिका (सप्तम अध्याय)		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
३२	२१०८	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
३३	२१०६	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
३४	८३६	गीता शाकर भाष्य	शकराचार्य		दे० का०	दे०
३५	१६६५	गीता (संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ सम्बन्धी अन्य आवश्यक विवरण
८ घ	ब	स	द	६	१०	११
२८.२ × ११.६ सें० मी०	२४ (१–२४)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थदीपिकायां चतुर्थोऽध्याय. ॥
२८.२ × ११.६ सें० मी०	११ (१–११)	१०	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्म ··· ···गीता गूढार्थ दीपिकायां षष्ठमोध्याय ॥
२८.४ × १२ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सुपनिषत्सु ··· ··· गूढार्थ दीपिकायां सप्तमाध्याय. समाप्त. ॥ ७ ॥ शुभमस्तु ॥
२८.५ × १२ सें० मी०	४६	१०	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री मत परमहंस परिव्राजकाचार्य विश्वेश्वर सरस्वती श्री पाद शिष्य श्री मधुसूदन सरस्वती विरचितायां श्रीमद्भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां सर्व गीतार्थ सूत्रण नाम द्वितीयो ध्याय ॥ शुभमस्तु ॥ शुभ स्तु ॥
२८.५ × १२ सें० मी०	१३	१०	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य विश्वेश्वर सरस्वती श्री पाद शिष्य श्री मधुसूदन सरस्वती विरचितायां गीता गूढार्थ दीपिकायां प्रथमोध्यायः समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीकृष्णाय नम ॥ श्री गोपालाय नम ॥
२९.३ × १२ सें० मी०	१२३ (१–४४, ४६–१२४)	१५	४७	अपू०	प्राचीन	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्यस्य शंकरभगवत कृतो श्रीगीताभाष्ये पूपनिषत्स्वष्टा दशोध्याय समाप्ता ॥ ·········
२४.२ × १२.९ सें० मी०	५ (२–४, ४, २०)	८	१६	अपू०	प्राचीन	

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६	२६३५/७	गुरुगीता			दे० का०	दे०
३७	७५३२	गुरुगीता			दे० का०	दे०
३८	१७०१	गुरुगीता			दे० का०	दे०
३६	१७०८	गुरुगीता			दे० का०	दे०
४०	१११६/४	जन्मविपाकगीता			दे० का०	दे०
४१	७६०८	तत्वसागरगीता			दे० का०	दे०
४२	२४८४	भारतगीता			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ ५ × १४ ५ सें० मी०	२	२६	१७	अपू०	प्राचीन	
१८ २ × ६ ५ सें० मी०	११ (१–११)	६	२२	पू०	प्राचीन	श्री स्कद पुराणे ब्रह्मोत्तर खडे इश्वर पार्वती सवादे श्री गुरुगीतास्तोत्र मत्र सपूर्णं ॥ × × × × × ×
२२ × १० ५ सें० मी०	१० (३, ७–१६)	७	३०	अपू०	प्राचीन	
२३ ५ × ११ ३ सें० मी०	७ (३–९)	११	३१	अपू०	प्राचीन सं०१८३४	इति श्री स्कदपुराणे उमा महेश्वर सवादे गुर गीता सपर्णं ॥ शुभमस्तु ॥ ... सं०१८३४ मासानाकार्तिक मासे कृष्णपक्षे चतुर्दश्या १४ बुधवासरे लित गुसाईं ॥
२६ × १४ १ सें० मी०	२ (३–४)	१५	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवान अर्जुन सवादे जनम विपाक गीता समाप्त ॥
१३ १ × ८ ४ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	१४	अपू०	प्राचीन	
१६ ५ × ८ ३ सें० मी०	६ (१–६)	८	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री कृष्ण नारद सवादे नारद गीता सपूर्ण शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३	१६८३	नारदगीता			दे० का०	दे०
४४	३३४८ / ४६	नारदगीता			दे० का०	दे०
४५	१५००	नारदगीता			दे० का०	दे०
४६	७१७८	नारदगीता			दे० का०	दे०
४७	२६३१ / १२	पाडवगीता			दे० का०	दे०
४८	७७४५	पाडवगीता			दे० का०	दे०
४९	७७८८	पाडवगीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ स	८ द	९	१०	११
२६.६×११.५ सें० मी०	२ (२-३)	७	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री कृष्ण नारद संवादे नारद गीता संपूर्णम् ॥
१२.५×८.२ सें० मी०	६ (१-६)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री कृष्णनारद संवादे नारद गीता संपूर्णम् शुभमस्तु श्री राम

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०	६०००	पाडवगीता			दे० का०	दे०
५१	५६०६	पाडवगीता			दे० का०	दे०
५२	२३८६	पाडवगीता			दे० का०	दे०
५३	३२१२	पाडवगीता			दे० का०	दे०
५४	६५२० / १६	पाडवगीता			दे० का०	दे०
५५	३३४८ / ४६	पाडवगीता			दे० का०	दे०
५६	३२०७	पाडवगीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२३.४×११.७ सें० मी०	७ (१–७)	१२	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री पाण्डव गिता शुभ सपुन समाप्त ॥
२०.७×१०.६ सें० मी०	१४ (१–१४)	७	२०	पू०	प्राचीन सं०१८७१	इति श्री सकल महावैष्णव विरचनायां पाण्डवगीता स्तोत्र समप्त शुभ भवत मगल दद्यात् ॥ फागुन सुद १० ॥ संवत् १८७१ ॥ मु का ॥ वांद ॥ ••
२२×१० सें० मी०	१० (१–४, ६–११)	८	२८	अपू०	प्राचीन सं०१८१७	इति श्री महाभारते शांति पर्वणि भीष्म नारद सवादे पाडवगीता नाम विष्णु प्रस्तुति समाप्ता । शुभमस्तु ॥ संवत् १८१७ ॥ तत्र वर्षे श्रावण मासे शुक्ला सप्तम्या पक्षे भौमवासरे ॥ मिद पुस्तक समाप्त ॥
१५.३×१०.१ सें० मी०	७६	८	२०	अपू०	प्राचीन	
६.६×६.५ सें० मी०	१६ (१–१६)	१०	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री पाडवगीता समाप्त शुभमस्तू + + + ॥
१२.५×८.२ सें० मी०	२१ (१–२१)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री पाडवगीता स्तोत्र संपूर्णम् शुभमस्तु श्रीराम ॥
१६.५×८.३ सें० मी०	११ (१–११)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति पाडवगीता समाप्त श्री लक्ष्मी नारायणापणमस्तु ॥ शुभवतु ॥ यादृशा पुस्तकं दृष्ट्वातादृशो लिखित मया । यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न विद्यत ॥ १ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७	११२१	पाडवगीता			दे० का०	दे०
५८	३३६२	पाडवगीता			दे० का०	दे०
५९	४१३७	पाडवगीता			मि० का०	दे०
६०	२८३७	पाडवगीता			दे० का०	दे०
६१	२८६८	पाडवगीता			दे० का०	दे०
६२	४५१४	पाडवगीता			दे० का०	दे०
६३	१८६१/५	पाडवगीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६×१२.६ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते………राजसूय प्रकरणे शिशुपालवधे पाडवगीता समाप्ता ॥
१६×८.४ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री पाडवगीता समाप्ता।
१७.२×१०.३ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री पाडवगीता सपूर्णम् शुभ भूयात् मिती आषाढ सुदि ७ सवत् १६०७ रामायनम ………॥
१६.६×८.७ सें० मी०	१३ (१–१३)	८	२१	पू०	प्राचीन	इति पाडवगीता सपूर्ण ॥ समाप्त ॥ सं० १९२२ ॥ श्री श्री स्वामी जी सत………॥
१२.३×७.३ सें० मी०	१८ (१–१८)	७	१५	पू०	प्राचीन सं०१६१७	इति श्री पाडवगीता समाप्ता सं० १६१७ के मार्ग सुदी १० शुक्रेरा पुस्तक लिखित प० अमोरासिवदीन राम चतुर्वेदी उवहरा वेद ॥
२३.१×१०.७ सें० मी०	७ (१–७)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री पाडव गीता संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥
२८.४×१४ सें० मी०	३ (१–३)	१५	४४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४	१३६८	पाडव गीता			दे० का०	दे०
६५	४२७६	पांडव गीता			दे० का०	दे०
६६	६८६६	ब्रह्मगीता-सटीक			दे० का०	दे०
६७	६१	भगवतगीता	लालताप्रसाद मिश्र		दे० का०	दे०
६८	३६४	भगवतगीता	व्यास		दे० का०	दे०
६९	७२७६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७०	७४५२	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८×६ सें० मी०	६	८	३३	अपू०	सं० १८५४	इति पाडवगीता सपूर्णम् शुभमस्तु स० १८५४ वै० शु० ५ भृगु० लि० छदेरामेणशुभम् ।
२१.५×१०.५ सें० मी०	१४ (१-३,१४)	७	२५	३५०	स० १९१८	इति श्री पाडवगीता समाप्ताः ॥''' '''॥ सवत् १९१८ माघ कृष्ण ६ शनौ लिप्यत प० श्री दुवेराधे पठनार्थं ''' ।
२७.५×१२ सें० मी०	१५० (१-१२, १२-१४६)	११	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कदेपुराणे सूत सहितायां यज्ञवैभव खडस्योपरिभागे ब्रह्मगीतासूपनिषत्सुद्वादशोध्याय ॥
२१×११.७ सें० मी०	६६ (१-६६)	६	१६	पू०	प्राचीन	भाद्र कृष्ण १० गुरु वारे लिप्यत मिदं पुस्तक समाप्ता लिप्यत लालताप्रसाद मिसिर पलटन गोपन कपनी ८ रजमट
२८.३×१४.४ सें० मी०	२८ (२-२४, २६-२६, ३१)	१४	३७	अपू०	प्राचीन	६६ वनाजमालपुनदि कृष्ण पुल के निकट ॥ जद प्रक्षर पुस्तक द्रष्टातादस लिप्यत मया । यदि शुद्धम शुद्धवा मम दोषोन दीयते ।
२०.२×१०.४ सें० मी०	६३ (१-६३)	६	२६	पू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्री भगवद्गीता सपूर्ण सुभमस्तु सवत् १८८१ पे शुक्ल चैत सुदि नौमि गुरौ व :-
२०.६×६.१ सें० मी०	७१ (१-७१)	७	२८	पू०	प्राचीन सं० १८८१	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे मोक्ष योगोनामाष्टादशोध्यायः । शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७१	७४५०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७२	७२९८ / २	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७३	७६१५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७४	७६०१	भगवद्गीता टीका			दे० का०	दे०
७५	७६६६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७६	७८८६	भगवद्गीता-सटीक (सुबोधिनी टीका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
७७	७८९३	भगवद्गीता टीका		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१६.४ × १२.४ सें० मी०	७८ (२–७६)	६	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे गुणत्रयविभागयोगोनाम सप्तदशोध्याय ॥ (पृ० ७५)
१६.४ × १२.५ सें० मी०	३६ (१–३६)	१८	१३	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्षसन्यास योगोनामाष्टादशोध्याय १८ ॥ भगवद्गीता सपूर्णा ॥
२५.७ × १३.४ सें० मी०	४० (२–४१)	११	३०	अपू०	प्राचीन स०१८६६	इति श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे सन्यासयोगोनामा द्वादशोध्याय ॥ × × सवत् १८६६ वर्षे ॥ सके १७६४ ॥ वर्षे फाल्गुन मासे सुदि···
२३.५ × १२.४ सें० मी०	१६	६	२५	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
६.४ × ८.६ सें० मी०	४६	६	१३	अपू०	प्राचीन	
३३.८ × १५.७ सें० मी०	८१ (१–८१)	१३	५०	पू०	प्राचीन स०१८८३	इति श्रीभगवद्गीता टीकाया सुबोधिन्याश्रीधरस्वामि विरचिताया परमार्थ निर्णयोनामाष्टादशोध्याय १८ ॥ रामेभवसुभू सख्य १८८३ वर्षे पोषेसितेभृगौ ॥ पक्षेऽष्टम्या चरेवत्या मल्लिनाथोव्यलीलिखत ॥१॥ समाप्तोय ग्रथ सुभमस्तु श्रीराम ॥
३१.१ × १३.३ सें० मी०	११५ (१–११५)	११	४०	पू०	प्राचीन स०१८५३	इति श्रीभगवद्गीता टीकाया सुबोधिन्या श्रीधरस्वामि कृताया मोक्ष योगो नामाष्टादशोध्याय ॥ १८ ॥ समै मासे चैत्र शुक्ल पक्षे पचम्या भौमवासरे पुस्तक गीता टीका रामे लिषावा बाल कृष्ण रामभक्त समत १८५३ श्री पदुमपूर ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भ्रागतसख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७८	५८११	भगवद्गीता (द्वादश अध्याय)			दे० का०	दे०
७९	५८२९	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
८०	५८२५	भगवद्गीता (भाषा टीका)			दे० का०	दे०
८१	५९९४	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
८२	५९९१	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
८३	५९८२	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७४	५९७१	भगवद्गीता			दे० का०	[illegible]
	६					

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२२·८ × ११ सें० मी०	२ (१-२)	८	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याग योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे भक्तियोगो नाम द्वादशाऽध्याय १२॥
२० × १४ सें० मी०	६० (३३-६२)	६	१७	अपू०	प्राचीन स० १६२२ (कृमि-कृति)	इति श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्मविद्या यायागशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादेसन्यास मोक्षयोगो नाम अष्टादशोध्याय स० १६२२॥
२२·३ × १३·४ सें० मी०	६६	८	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री मनमहाभारते सतमहस्र सहितायावैयासिक्या भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसवादे ज्ञान-विज्ञान योगोनाम सप्तमोऽध्याय
१६·५ × ६·५ सें० मी०	३० (१-२,४-६,११-१६, २५, २८-३३, ६६, ६६-७३)	७	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे गुणकर्म दर्शना नाम सप्तदशोऽध्याय ॥
१३ × ६·१ सें० मी०	२२	५	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया यागशास्त्र श्रीकृष्णार्जुन सवादे विभूति योगोनाम दशमोऽध्याय ॥१०॥
१६·६ × ६·५ सें० मी०	१०३ (१-१०३)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योग शास्त्र श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्षसयोगो नाम अष्टादशोध्याय. ॥
१०·८ × ६·७ सें० मी०	१३५ (१-१३५)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारतेशत महस्य्र-सहितायावैयासिक्या भीष्म पर्वणि भगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायायोग शास्त्रे श्री कृष्णतत सवाद सन्यास योगो नामाऽष्टदशाध्याय ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५	६१२५	भगवद्गीता (दशम और एकादश अध्याय)			दे० का०	दे०
८६	६०७६/५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
८७	६२०८	भगवद्गीता (चतुर्थ, पंचम अध्याय)			दे० का०	दे०
८८	२२८१	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
८९	५५२०/५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
९०	२१९३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
९१	२१२३	भगवद्गीता (गूढार्थदीपिका)		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३.३×८.५ सें० मी०	१५ (१-१५)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे विश्वरूप दर्शनोनामैकादशोध्याय ॥११॥
१५.४×६.४ सें० मी०	१३५	६	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारतेशत सहस्त्रसंहितायां वैयासिक्यां भीष्म पर्वणि श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्ष सन्यास योगोनाम अष्टादशोध्याय सपूर्णम् ॥शुभम्॥
१७×७.६ सें० मी०	५ (३३-३७)	६	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे सन्यास योगो नाम चतुर्थोध्याय ।''' (पत्रसंख्या–३६)
१९.८×११.४ सें० मी०	२८ (१-२८)	५	१४	अपू०	प्राचीन सं० १८४४	
१३.६×७.९ सें० मी०	१४३ (१-१४४)	६	१४	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे मोक्षयोगोनामअष्टादशोध्याय ॥
१७.७×७.८ सें० मी०	१६ (८,११-१२,२५,२९-३९)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
२८×१२ सें० मी०	११ (१-११)	१०	४५	पू०	प्राचीन	इतिश्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे गूढार्थदीपिकायां सप्तदशोध्याय.॥ श्रीकृष्णाय गोविंदाय नमोस्तुते ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२	६४११	भगवद्गीता (हिन्दी-मराठी-टीका)		पार्थ सारथी	दे० का०	दे०
६३	७१५७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
६४	१३६	भगवद्गीता	व्यासजी		दे० का०	दे०
६५	३८६	भगवद्गीता (सटीक)	व्यास	रामानुजमुनि	दे० का०	दे०
६६	६६७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
६७	३३७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
६८	३८७१	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·३ × १५·२ सें० मी०	६०	१०	१५	अपू०	प्राचीन	इति टीका समश्लोकी अध्याय पंच भावरी श्री पार्थसारथी कर्ता जीवा मन मनोरथी ५ (पत्र सं० २८) (पत्रांक ३४)
१२·५ × ८·२ सें० मी०	१२६ (१-११५, १४१-१५१)	६	१५	अपू०	प्राचीन सं०१६१७	इति श्री महाभारते शत साहस्र्यं संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादेसंन्यास योगोनामष्टादशोध्यायः ॥···संवत् ॥ १६१७ ॥······
१६ × १० सें० मी०	७१ (१-७१)	७	२७	पू०	प्राचीन	शाके १७२३ शुभ कृष्णनामसंवत्सरे आषाढशुक्ल चतुर्दश्यां मंद वासरे आर्यावर्तांतर्गत ब्रह्मावर्तकदेशे उत्पसारण्येशरणी क्षेत्रेएतत्पुस्तक समाप्तिमं अगत् ॥
३३·६ × १६·२ सें० मी०	१६ (३५-५०)	१३	५५	अपू०	प्राचीन सं०१८३७	इति श्री भगवदंमानुज मुनिविरचिते अष्टादशोध्याय' ॥१८॥ भाद्रमासे शुक्ल पक्षे तिथौ १५ ॥ बुद्धवासरे तद्दिनशंपूर्ण समाप्त॥ संवद॥१८३७॥
२७·३ × ११·६ सें० मी०	१२७ (१,३-१२८)	[illegible]	२६	अपू०	प्राचीन सं०१८६३	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे भीष्मपर्वणि परममोच संन्यास योगोनाम अष्टादशोऽध्यायः ॥······ श्री सं० १८६३ ॥
२४·१ × १२·६ सें० मी०	२७ (१-२७)	१३	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सुपनिषत्सू ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यास यागोनाम अष्टादशोऽध्यायः ॥१६॥सं०॥१६॥
२५·६ × १५·६ सें० मी०	११ (६-१६)	१४	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सू ब्रह्म विद्याया योगसास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे कर्म सन्यास योगो नाम चतुर्थोध्याय ॥ + + + + (पृ० १५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रागतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९९	३६१८	भगवद्गीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१००	३६४६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०१	३६८६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०२	३६८८	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०३	३८६०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०४	३००९	भगवद्गीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१०५	३०७३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२६७×१५५ सें० मी०	१३१ (१–१३१)	१२	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री पचीवलीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेसन्यास योगोनामाष्टादशोध्याय १८ समाप्तिर्मंगमत् ॥ विक्रमादित्यराजस्यनागाभ्रनवभूस्मृत आषाढेऽ सितपक्षेतु तृतीया चन्द्रवासरे लिखित शिवन्लेन मुन्नालालस्यआत्मज ।
११५×७६ सें० मी०	११८ (१–११८)	८	१८	पू०	प्राचीन	......श्री भद्गवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यास योगो नाम अष्टमदशोध्याय ।
१८८×६६ सें० मी०	५० (१–५०)	१०	३२	पू०	प्राचीन	...श्री मद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्षसन्यास योगोनाम अष्टादशोध्याय समाप्त शुभ भूयात ..... ।
३११×१५२ सें० मी०	३६ (१–३६)	६	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म० यागशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे क्षेत्र सन्यासयोगो नामाष्टादशोध्याय॥१८॥ समाप्त शुभमस्तु ॥
२३५×१०३ सें० मी०	१३ (६–२१)	७	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपणिषत्सु ब्रह्म विद्या ।
३१३×१६३ सें० मी०	१६	१५	५२	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवाद योग शास्त्रे निर्णय सन्यास योगो नामऽष्टादशोध्याय ॥१८॥
२१८×८७ सें० मी० (मे०ग्र०६३)	७१ (१–७१)	६	३०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रावकसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६	८६९	भगवत्गीता (१ से १० ग्रध्याय तक)			दे० का०	दे०
१०७	६१५	भगवत्गीता (१ से १८ ग्रध्याय तक)			दे० का०	दे०
१०८	६४४	भगवत्गीता			दे० का०	दे०
१०९	६७३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११०	४८३८	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१११	४६२३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११२	४६१४	भगवद्गीता (अष्टादशाध्याय)			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्राख्या	प्रति पृष्ठ म पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति म अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२२८×१३३ सें० मी०	५४ (१–५४)	६	२७	पू०	प्राचीन सं० १६३	इति श्री भगवतगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे रत्न लाविनयमलब्धि गीता मर कोट नगर॥ नम श्रीकृष्ण य॥ सं० १६३२ वैशाख··· ·····
१६४×६२ सें० मी०	१२७ (१–७८, ७८–१२६)	५	२१	पू०	प्राचीन सं०१८८२	इति श्री भगवतगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्ण अर्जुन सवादे मोक्ष सन्यास योगो नामाष्टा-दशोध्याय ॥ १८॥ सं० १-८२ मुका मडोकमण्डमध्ये॥ पठनार्थ श्री महतरंगर गोरजी ॥ लिख्यत प० श्री चौवेकलुराम
१६७×७७ सें० मी०	६ (१, ८, ३७, ८३, ८६–६०, ११८)	६	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवतगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे मोक्ष सन्यास नामाष्टादशोध्यायः॥
२२४×१० सें० मी०	२५	६	३७	अपू०	प्राचीन सं०१७६१	इति श्री भगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म-विद्यायायोगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसवादे ष माथ निर्णयो नाम अष्टादशाध्याय ॥ १८॥··· ·· सवत् १७६१ दशमी वद पूष समाप ··॥
१८८×६४ सें० मी०	८७ (१–८६,८८)	८	२०	अपू०	सं०१६४४	···· शुभमवतु भूयात सवत् १६४४ शाक १८०६ भाद्र कृष्ण पचम्यां भौमवासरे॥
२३७×११३ सें० मी०	२१ (१ ३-६,१४ १६,२३,२७ ३३ ३४,३६-४३,४६-४८, ५०,५१ ५४-५७,५६-६१, ६३)	८	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म-विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे गुणत्रयविभाग योगोनाम सप्तदशो-ध्याय ॥ (पृ० ५७)
२२६×१२ सें० मी०	६६ १–६६	८	३४	पू०	प्राचीन	इति भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म-विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे म ध्यायं यो नामअष्टादशोध्याय सपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्तसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३	४६१०	भगवद्गीता			मि० का०	दे०
११४	४५२६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११५	५०६६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११६	४६१८ / २	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११७	५१३२	भगवद्गीता (१०-११ अ०)।			दे० का०	दे०
११८	६८७६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११९	६५२० / १६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति सख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·८×११·८ सें० मी०	४७ (१-८,१२-१६ १८-४१)	६	२२	अपू०	आधुनिक	
१६·६×१०·२ सें० मी०	६४ (१-६४)	८	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवदगीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया याग शास्त्रे श्री कृष्णा'' ''''
२२·६×१०·५ सें० मी०	२६	७	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे वर्म युण विभागदर्शनोनाम सप्तदशोऽध्याय + + + ॥ (पृ० ५५)
६·६×६·७ सें० मी०	६५ (१-६४ ६६)	५	९	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे कर्म योगोनामतृतीयोध्याय ॥ + + + ॥ (पृ० ८१)
२३·४×६·४ सें० मी०	१२ (१-१२)	६	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया यागशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे विश्व रूपदर्शनोनाम एकादशो ध्याय । १॥ लिखित नारायण भट्ट ब्राह्मन ॥
२६·५×१५·४ सें० मी०	३० (१६-४५)	१४	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे गुणत्रय विभागोनाम चतुर्दशो ध्याय ॥ (पृ० ४१)
६·६×६·५ सें० मी०	२० (१-२०)	१०	११	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे विश्वरूपदर्शन योगो नामकादसोध्याय ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्तसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२०	१७१७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२१	४४८८	भगवद्गीता (१–१८ अध्याय)			दे० का०	दे०
१२२	४४६३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२३	१०४६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२४	४२६२	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२५	४३६७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२६	४४४० / १०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्र या पृष्ठ का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		हस्तलेख पूर्ण है या अपूर्ण है या जीर्ण-शीर्ण का विवरण	लिपिकाल और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ ख	ब	ग	ट	६	१०	११
१६८×६१ सें० मी०	७ (५५–६१)	८	२०	अपू०	प्राचीन	
२१७×११ सें० मी०	७६ (१–७६)	७	२४	पू०	सं०१६१७	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यास योगोनामाष्टादशोऽध्यायः १८ ॥ संवत् १६१७ मार्गमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ एकादश्यां ११ भृगुवासरे लिखतं श्रीहरे रामेश्वर......
११.३×६८ सें० मी०	११८ (२–५,८,१०–४०,४६,४९–६२,६४–६५,६८–१३२)	६	१६	अपू०	(कृमि भुक्ति) सं०१६११	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यास योगोनामअष्टादशोऽध्याय ॥१८॥ फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे षष्ठ्यां बुधवासरे ॥ भगवद्दासलिखित भगवद्गीतापुस्तिका ॥ संवत् १६०११ श्रीरामचन्द्राय नमः ...
१५.३×१० सें० मी०	५७ (१-४५, ४७-५२,५४-५७,६१-६२,६५–६६)	१०	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यास योगो नामाष्टदशोऽध्याय ॥ १८ ॥
२३.७×११.१ सें० मी०	४३	७	२२	अपू०	प्राचीन	ॐ तत्सदिति श्रीमद्भागवतगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुनसंवादे... विभागयोगो नामत्रयदशोऽध्यायः ॥ (पत्रसंख्या ७६) + + +
३१.६×१३.८ सें० मी०	३० (१–३०)	१२	३८	अपू०	प्राचीन सं०१८७१	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यास योगोनामाष्टदशोध्यायः १८ श्री संवत् १८७१ पौष शुक्ल पौर्णमास्यां शुभ ।
१२.४×६.१ सें० मी०	६६	६	१५	अपू०	प्राचीन सं०१८६८	श्री मद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे संन्यासयोगो नामाष्टादशोध्याय + + + संवत १८६८ मधनी नाम संवत्सरे शाकमध्ये द्वितिया प्रायाग दास लिखत + + + ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगमनसंख्या या संग्रहविभाग की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२७	१३६८ / ५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२८	१३६७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२९	१६१०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३०	१८७०	भगवद्गीता (सुबोधिनी संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
१३१	१८२६	भगवद्गीता (संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
१३२	१५३२	भगवद्गीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१३३	१९६६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·७×७·८ सें० मी०	१२६ (८–१३३)	६	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवतगीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्ष सन्यासयोगो नामाष्टादशोध्याय ॥ १८ ॥ सपूर्णम् शुभ ॥
१४×८·५ सें० मी०	१८४ (१–१८४)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र सघातायां वैसासिका भीष्मपर्वणि श्री भगवद्गीता सूपनिषत् ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्षे " अष्टादशोध्याय ॥ १८ ॥
२६·५×१५·८ सें० मी०	१२२ (१–१२२)	४	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्रसहितायां वैयासिक्या भीष्मपर्वणि श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्षसन्यास योगो नामअष्टादशोध्याय समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥
२६·३×१४·७ सें० मी०	४२ (५८–७८, ८१–८६,९८-१०८,११२)	१५	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे······
२७·७×१४·५ सें० मी०	१३६ (१–१३६)	१४	४१	पू०	प्राचीन	सवत १८५८ भाद्रपदे मासे शुक्ले पक्षे तिथौ सप्तमी ॥ चद्रवासरे लिखित मिद पुस्तक सोलाद्यर लक्ष्मण वारुढ़ाणे ॥
३०×११ सें० मी०	३२	११	३४	अपू०	प्राचीन	
१६·३×१०·४ सें० मी०	६	८	१६	अपू०	प्राचीन	

(सं० सू० ६४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगमसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३४	२९८३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३५	२८४८	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३६	२८३५/२	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३७	२८१५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३८	१४४१	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३९	१२५६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४०	१२१५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५ ३×८ सें० मी०	८१ (१–८१)	७	२५	पू०	प्राचीन स०१८७४	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्र श्र कृष्णार्जुन सवादे मोक्ष सन्यास योगो नामाष्टा दशोध्य य ॥१८॥ भगवत्गीता सपूर्ण शुभमभूयात् ॥ सवत १८७४ क माल चत्र सुदि ८ भौमेव लिखा श्री वैद्य वसन दास ॥ सीताराम ॥ श्रीराम चन्द्रायनम ॥
२२ ६×११ सें० मी०	१२१	६	२७	अपू०	प्राचीन	
१४ २×८ ७ सें० मी०	१४१ (१३–१५३)	६	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्र सहि ताया वैयासिक्या भोष्म पर्वणि श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे " " ॥
१०×७ सें० मी०	२२ (१०७ १२८)	६	१०	अपू०	प्राचीन	
१८ ७×१० ३ सें० मी०	४० (१–४०)	५	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्र श्री कृष्णार्जुन सवादेकमयोगोनाम चतुर्थोऽध्याय ॥ (पृ० ३४)
१७×९ ३ सें० मी०	११९ (५–१२३)	६	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्र श्री कृष्णार्जुन सवादे परमार्थ विनिर्णय योगो नामा ऽष्टादशोध्याय ॥१८॥ वर्ष वैशाख वदि ३ शनिवाशरान्विताया लिखित प० नारायण दास मिहनपुरिया ॥ पोथी श्री महाराज कुमार आनद सिंहजू की ॥ श्री गोपाल जू ॥
१८ ५×९ सें० मी०	१०७ (२–१०८)	६	२१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक ग्रौर विषय	पुस्तकालय की ग्रागतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४१	११६३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४२	३१६३	भगवद्गीता (१–८ अध्याय)			दे० का०	दे०
१४३	३१७५	भगवद्गीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१४४	३१७८	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४५	३१८०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४६	३२८७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४७	२६३३ / ५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ ग्र	ब	स	द	९	१०	११
२१×११.५ सें० मी०	४०	८	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे परमार्थ निर्णयोनामाष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥ समाप्तम् ॥शुभमस्तु॥
२७×१३.३ सें० मी०	२५ (१–२५)	१८	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे अष्टादशोध्याय ।
३०×१३ सें० मी०	११३ (४–११६)	११	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योग शास्त्र श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्षसन्यास योगोनामाष्टादशोध्याय १८ नारायणाय × × ×
२०.६×८.६ सें० मी०	६६	५	२८	पू०	प्राचीन	श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षसन्यास योगोनाम अष्टादशोध्यायः ॥
२१.६×६.१ सें० मी०	७३ (२–७४)	८	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षयोगोनाम अष्टादशोध्याय ॥१८॥
१२.२×६.२ सें० मी०	१२५	७	१२	अपू०	प्राचीन	
१५.७×१०.६ सें० मी०	६७	७	२५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४८	३६७०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४९	६२८२ / ५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१५०	४४१७	भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका	मधुसूदन सरस्वती		दे० का०	दे०
१५१	२१०७	भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका	मधुसूदन सरस्वती		दे० का०	दे०
१५२	२१०६	भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका	मधुसूदन सरस्वती		दे० का०	दे०
१५३	२१०५	भगवद्गीता दीपिका गूढार्थ	मधुसूदन सरस्वती		दे० का०	दे०
१५४	८३०	याज्ञवल्क्य गीता (१-१२ अध्याय)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ म	८	स	द	६	१०	११
२१.२ × ४८ सें० मी०	१०५ (३–१०७)	५	२४	अपू०	प्राचीन सं०१८६६	इति श्री भगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यास योगोनाम अष्टादशोध्याय ॥ संवत् १८६६ इद पुस्तक केशवस्य हस्ताक्षर खड्ग अस्ति शुभ भूयात् ॥... ...
१६.१ × ११ सें० मी०	४ (१८–२१)	१०	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे विभूति योगोनाम दशमोध्याय ॥
३१.५ × १५.८ सें० मी०	२४३ (१–२४३)	१४	४५	पू०	प्राचीन सं०१८५५	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री विश्वेश्वर सरस्वती पूज्यपाद शिष्य श्री मधुसूदन सरस्वती विरचितायां श्री भगवदगीता गूढार्थ दीपिकायामष्टादशोध्याय १८ समाप्त संवत १८५५ मिति जेष्ट मासे कृष्णपक्षे ११ एकादश्यां शुक्रवासरे × × ॥
२८.३ × १२ सें० मी०	१२	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवदगीता गूढार्थ दीपिकायां दशमोध्याय ॥
२८.३ × १२ सें० मी०	११	१०	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे गूढार्थ दीपिकायामेकादशोध्याय ११॥
२८.३ × १२ सें० मी०	१३	११	५३	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवदगीता गूढार्थ दीपिकायां त्रयोदशोध्याय ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ ॥ श्री गोपालाय नमः ॥
२७.७ × १२ सें० मी०	१८ (१–१८)	११	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री याज्ञवल्क्यगीतासूपनिषत्सु द्वादशोध्याय ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५५	३६७२	रामगीता			दे० का०	दे०
१५६	३६७५	रामगीता			दे० का०	दे०
१५७	७०१४ / ६	रामगीता	रामानुज		दे० का०	दे०
१५८	३६८७	रामगीता			दे० का०	दे०
१५९	२७८२	रामगीता			दे० का०	दे०
१६०	३३४८ / ४६	रामगीता			दे० का०	दे०
१६१	१४४४ / ५	रामगीता (पंचम सर्ग)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६.३ × ८.३ सें० मी०	१२ (१–१२)	६	२६	पू०	सं०१८८२	इति श्री मदध्यात्मरामायने उत्तर कांडे रामगीता नाम पचमोध्याय ॥५॥ प्रथम सवन सुदि ॥२४॥ सवतु १८८२॥ मुका वदेउवह ॥
१३.८ × ९.६ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	१२	पू०	प्राचीन	इति श्रीमदध्यात्म रामायणे उत्तरकाडे रामगीत नाम पचमोध्याय ॥५॥'''
१८.१ × १६.१ सें० मी०	३	१५	८	पू०	प्राचीन	इति श्री रामनुज विरचत पटश्लोकी रामगीता सपूर्ण समाप्त ''
१९.३ × ७.५ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३९	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर सवादे उत्तर कांडे रामगीता नाम पचम सर्ग ॥
१५.८ × १०.५ सें० मी०	८ (१–८)	११	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्मरामायणे उत्तरकाडे उमा महेश्वर सवादे रामगीता समाप्ता ॥
१२.५ × ८.२ सें० मी०	१९ (१–१९)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर सवादे उत्तरकाडे श्रीरामगीता नाम पचम सर्ग ५॥
१८.७ × १२.७ सें० मी०	७ (१–१७)	१५	१५	पू०	प्राचीन (सं०१९१७)	इति श्री अध्यात्म रामायण उमामहेश्वर सवादे उत्तरकाडे श्रीरामगीता पचमसर्ग ५ बिहारि लालेन लिखत सं० १९१७ श्रा० शु० शु० ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६२	६८६०	रामगीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१६३	७५१३	रामगीता			दे० का०	दे०
१६४	६६७६	रामगीता			दे० का०	दे०
१६५	२२५६	रामगीता			दे० का०	दे०
१६६	७३७२	रामगीता			दे० का०	दे०
१६७	७३२५	रामगीता सटीक			दे० का०	दे०
१६८	७५५२	रामगीता सटीक (रामगीता व्याख्या)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	ट	९	१०	११
२५ ४×११ ५ सें० मी०	१६ (१–१६)	१२	४१	पू०	प्राचीन (कृमि कृतित)	इति श्री मत्सर्वत्र राज विपद्धर ॥ रामगीता टिप्पन समाप्ता ।
१६ १×६ ६ सें० मी०	२२ (१–२२)	१५	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री मध्यात्म रामायण उत्तरकाडे श्री रामगीता समाप्ता श्री रामार्पण मस्तु ॥
१८ २×११ ७ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	१९	अपू०	प्राचीन	
१४ ४×७ ३ सें० मी०	१८ १ ३, ४-१६	१५	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्म रामायण उमा महेश्वर संवादे श्री रामगीता संपूर्णम ॥
१२×६ ८ सें० मी०	६ (१–६)	६	३६	पू०	प्राचीन सं०१६३२	इति श्री मदध्यात्म रामायण उत्तर काडे उमा महेश्वर सवादे श्री राम गीता समाप्तम सम्वत १६ गत ३२ के शाह्य पुस्तक लिखितम् × × ×
२६ ६×११ ३ सें० मी०	३१ (१–३१)	७	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्म रामायणे उमामहेश्वर संवादे उत्तरकांडे रामगीता कथन नाम पचम सर्ग ॥ × × × इति टीकाया पचम सर्ग ॥५॥
२४ ६×११ २ सें० मी०	१४ (१,४–१६)	६	४६	अपू०	प्राचीन	"करिष्ये रामगीता व्याख्यान बालबुद्धये ॥१॥ (पत्रसंख्या १)

क्रमाव और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६९	३८३०	वैष्णव गीता			दे० का०	दे०
१७०	३६४६	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७१	४००२	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७२	३२४६	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७३	२१०१	श्रीभगवद्गीता गूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
१७४	२१६०	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७५	७१८२ / ५	श्रीभगवद्गीता			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ घ	ब	म	द	६	१०	११
१७.२ × ६.६ सें० मी०	६	८	२५	अपू०	प्राचीन सं० १७५०	इति श्री वैष्णव गीतायां श्रीकृष्णार्जुन संवादे वैष्णव दीक्षा निर्देशयामो नाम चतुर्थोध्याय समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ संवत १७५० ॥
१५.२ × ७.६ सें० मी०	११२ (१–११२)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे उत्तर खंडे श्रीमद् शिव गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म-विद्यायां श्री महादेव राघव संवादे मोक्षयोगोनाम षोडशोध्याय ॥
२३ × १५ सें० मी०	६	१६	१४	अपू०	प्राचीन सं० १६२२	इति श्री शिवगीता पंचदशोध्याय. × × × × सं० १६२२ ज्येष्ठे ॥
२३.६ × ६.७ सें० मी०	६ (१–६)	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
२८.३ × १२ सें० मी०	११	११	५८	पू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां नवमोध्याय ॥
१६.५ × ११.५ सें० मी०	१०२	८	१८	पू०	सं० १६१४	इति श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष योगोनामष्टादशोध्याय ॥ १८ ॥ संपूर्ण शुभमस्तु ॥ संवत् १६१४ के साल······
१६.६ × ६.३ सें० मी०	१२६ (१–१२६)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म-विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षसंन्यासयोगोनामाष्टादशोध्याय ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	३८३०	वैष्णव गीता			दे० का०	दे०
१७०	३६४६	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७१	४००२	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७२	३३४६	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७३	२१०१	श्रीभगवद्गीता गूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
१७४	२१६०	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७५	७१८२ / ५	श्रीभगवद्गीता			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थपूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	६	१०	११
१७२×६६ सें० मी०	६	८	२५	अपू०	प्राचीन सं०१७५९	इति श्री वैष्णव गीतायां श्रीकृष्णार्जुन संवादे वैष्णव दीक्षा निर्देशयोगो नाम चतुर्थोध्याय समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७५९ ॥
१५२×७६ सें० मी०	११२ (१–११२)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे उत्तर खंडे श्रीमद् शिव गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां श्री महादेव राघव संवादे मोक्षयोगोनाम षोडशोध्याय ॥
२३×१५ सें० मी०	६	१६	३४	अपू०	प्राचीन सं०१६२२	इति श्री शिवगीता पंचदशोध्याय· × × × × सं० १६२२ ज्येष्ठे ॥
२३६×१६७ सें० मी०	६ (१–६)	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
२८३×१२ सें० मी०	११	११	५८	पू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां नवमोध्याय ॥
१६५×११५ सें० मी०	१०२	८	१८	पू०	सं०१६१४	इति श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष योगोनामष्टादशोध्याय ॥ १८ ॥ संपूर्न शुभमस्तु ॥ संवत् १६१४ के साल……
१६६×६३ सें० मी०	१२६ (१–१२६)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षसन्यासयोगोनामाष्टादशोध्याय ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७६	५७	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७७	१२८५/८	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७८	१६१३	श्रीमद्भागवतगीता (संस्कृत सटीक)			दे० का०	दे०
१७९	४२८०	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८०	३३४८/४६	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८१	६३६	श्रीमद्भगवतगीता			दे० का०	दे०
१८२	११०	श्रीमद्भगवद्गीता	व्यासजी		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का ग्राकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या ग्रौर प्रति पक्ति मे ग्रक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? ग्रपूर्ण तो वर्तमान ग्रश का विवरण	ग्रवस्था ग्रौर प्राचीनता	ग्रन्य ग्रावश्यक विवरण
८ ग्र	ब	स	द	६	१०	११
२१·८×११·६ सें० मी०	१० (६–१५)	१३	३२	ग्रपू०	प्राचीन	
१७·५×६·५ सें० मी०	६६ (१–६५)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता सुपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे मोक्ष सन्यास योगोनामष्टादशोध्याय ॥६॥ ॥सम॥
३३×१५ सें० मी०	२६	१२	४५	ग्रपू०	प्राचीन	
२०×१०·५ सें० मी०	४५ (३-२१, २५-३६, ४६-४८ ५६-५७, ६६-६५)	६	२७	ग्रपू०	सं०१८४७	र्जुन सवादे मोक्ष सन्यास योगोनामाष्टादशोध्याय ॥१८॥ शुभ भूयात ॥ श्रीमद्भगवद्गीता सपूर्णा॥ श्रीरामचद्रायनम सवत ॥१८६४॥ मिति ग्रापाढ वदि ॥ लिखिते पन्नालाल भट्ट मथुरास्थेन ॥
१२·५×८·२ सें० मी०	१३८ (१-३६ (३४-३६)-१३५)	६	१७	पू०	सं०१८६६	ॐ तत्सदिति श्रीमन्महाभारते शतसाहस्र्या सहितायां वैयासिक्या भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे सन्यास योगोनामाष्टादशोध्याय १८ सवत १८६६ के मिती चैत्र सुदि ४ लिप्यतेय श्री गोसाई दलई राम पठनाय वैष्णव श्रीनदराम श्रीरामजी
२०·६×१०·६ सें० मी०	७०	८	२२	पू०	प्राचीन	श्री सवत् ॥१६॥ ॥६३। पौसवदि द्वितिया सानो वासर समाप्त······
१७×१०·५ सें० मी०	१२६	७	१७	पू०	प्राचीन	ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे सन्यासयोगो नामाष्टादशोध्याय ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८३	६६१/५	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८४	६७३२	श्रीमद्भगवद्गीता (सुबोधनी संस्कृतटीका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
१८५	६८२०	श्रीमद्भगवद्गीता (मराठी टीका सहित)			दे० का०	दे०
१८६	७०२४	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८७	७१७६	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८८	५७१२/५	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८९	६०६६	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२·६ × ७ १ सें० मी०	८१ (१२–१७, ३२–१०४, १०७–१०९)	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता ॥
२८ ५ × १२·६ सें० मी०	११२ (१ ११२)	१४	३८	पू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीताटीकायां सुबोधिन्यां श्रीधरस्वामिकृतायां मोक्षयोगो नाम अष्टादशोध्याय ॥······
२४ ४ × १४ ८ सें० मी०	६९ (२–७०)	१५	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र संहितायां वैय्यासिक्यां भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यास योगो नाम अष्टादशोध्याय १८ संवत् १८४० फाल्गुन कृष्ण १४ शुभमस्तु ॥
१५ १ × ११ २ सें० मी०	१९	१७	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री तत्सदिति श्री महाभारत शतसहस्रसंहितायां वैयासिक्यां शांति भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यासयोगो नाम अष्टादशोऽध्याय ॥ × × ×
२५ ५ × १२ ५ सें० मी०	५२ (१–५२)	९	३२	पू०	प्राचीन सं०१६३५	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यासयोगोनाम अष्टादशाध्याय ॥१८। संवत् १६३५ जेष्ठकृष्ण १५······
१४ १ × ७ ६ सें० मी०	१३५ (३–१३७)	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षसन्यासयोगानामाष्टादशोध्याय ॥ शुभमस्तु लेखक पाठकयो ॥
२१ × १० ७ सें० मी० (पं०मू०६६)	७८ (१–७८)	७	२६	पू०	सं०१८८६	हरि ॐ तत्सदिति श्री महाभारते शतसहस्रसंहितायां वैयासिक्यां भीष्म पर्वणि श्री मद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यास योगोनामाष्टादशाध्याय ॥१८॥···सं० १८८६···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९०	७८७७/३	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१९१	८११३/१०	षट्श्लोकीनामगीता			दे० का०	दे०
१९२	४६४५/५	सप्तश्लोकीगीता			दे० का०	दे०
१९३	४१४२	सप्तश्लोकीगीता			दे० का०	दे०
१९४	१२५२	सप्तश्लोकीगीता			दे० का०	दे०
१९५	३३१८	सप्तश्लोकीगीता			दे० का०	दे०
१९६	२३६/१२	सप्तश्लोकीगीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१२६×८१ सें० मी०	१४३ (१-१४३)	६	१६	पू०	प्राचीन	३। श्री। म।। भा।। तेश।।सा।।स।।हि।।या वैयासि क्या।।पमा।वर्णि।।न।दृगी।।सू।। नि।।त्सु।। ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे मो।।सा।।सा।।गो।। मा।।दशो १०ध्याय ।।१८।। समाप्तम् ।।
१६५×१३ सें० मी०	२ (३८-३९)	८	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे रामगीता सपूर्ण ॥
११२×८५ सें० मी०	४ (८-११)	५	११	पू०	प्राचीन	इति श्री सप्तश्लोकी गीता सपूर्ण समाप्त ॥ ·· ···
१३५×८·३ सें० मी०	२ (१-३)	६	१३	अपू०	सं०१९४०	इति श्री सप्तश्लोकी गीता समाप्तम् ॥ शुभमस्तु सवत् १९४० के अषाढ १९ ग० ॥
१०३×६१ सें० मी०	१६	४	१०	अपू०	प्राचीन सं०१८७५	इति श्री सप्तश्लोकी गीता संपूर्ण सः माप्त ।। लिप्योपित डोमग्रेम मत १८ ७५ ॥ का।। मीतीमाह सुधि ॥१०॥
१२१×६६ सें० मी०	४ (१-४)	४	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री सप्त
१६×१०५ सें० मी०	१ (५७)	१२	१२	पू०	प्राचीन	इति सप्तश्लोकी गीता सपूर्णम् ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९७	२२५२/५	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
१९८	४३९८	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
१९९	६०९८/२	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
२००	५७५६	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
२०१	५८६६/२	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
२०२	५६०८	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
२०३	७१७८/७	सप्तश्लोकी भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
१६.१ × ११ सें० मी०	२ (१५-१६)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री कृष्णार्जुन सवादे सप्तश्लोकी गीता सपूर्न ॥ सुभ मस्तु मगल ददातु ॥
१६.२ × ८.७ सें० मी०	१ (१-२)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री सप्तश्लोकीगीता सपूर्ण ॥
२२ × १०.१ सें० मी०	१	८	३८	पू०	प्राचीन	इति सप्तश्लोकी गीता समाप्ता ।
२० × १०.७ सें० मी०	३ (१-३)	७	२४	पू०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्री सप्तश्लोकी गीता समाप्त ॥ संवत् १८८४॥ पोस विद ७। हस्ताक्षर अमृतराव के होम
१४.३ × १०.६ सें० मी०	१	८	१७	अपू०	प्राचीन	
१७.६ × ६.८ सें० मी०	२	६	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री सप्तश्लोकी गीता समाप्ता॥ शुभमस्तु ॥
१६.६ × १० सें० मी०	३ (१-३)	५	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री सप्तश्लोक भगवद्‌गीता संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०४	१६५२	सारगीता			दे० का०	दे०
ज्योतिष						
✓ १	६६३५	अगप्रश्न			दे० का०	दे०
२	२४२	अनर्दशा फल			दे० का०	दे०
३	१७५८	अक्षरचिंतामणि			दे० का०	दे०
४	४५६१	अक्षरचूडामणि			दे० का०	दे०
५	६८१८	अमृतकुभ	नारायण		दे० का०	दे०
✓ ६	६६००	अर्घशाह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ घ	७	स	द	६	१०	११
१८×१०.५ सें० मी०	३ (१–३)	८	३२	अपू०	प्राचीन	
१८.२×१२.६ सें० मी०	२ (१–२)	१६	२७	पू०	प्राचीन	इत्यग प्रश्न ॥
२२.३×१०.८ सें० मी०	८ (१–८)	६	२८	अपू०	प्राचीन	
२६×१०.५ सें० मी०	११ (१–११)	६	३८	पू०	प्राचीन सं०१८३४	इति श्री प्रश्नचिंतामणि समाप्ता सवत् १८३४
२२.७×६.२ सें० मी०	६ (१–६)	७	२५	पू०	प्राचीन सं०१६३६	इत्याक्षर चुडामणि पुस्तक सम्पूर्ण सम्वत् १६३६ साके १८०१ समय आषाढ मासे कृष्न ३ शनी वासरे लिषित्वा गौरी शम्मणे ....
३२×१० सें० मी०	४२ (१–४२)	७	४५	पू०	सं०१६३१	इति श्री ज्योति श्री रामसुत नारायण विरचिते अमृत कुभे ग्रहण लिखनानुक्रम समाप्त ॥ सवत १६३१ आशोज मासे शुक्ल प्रतिपदा मदवासरे लिखित मिद पुस्तक शंकर दत्तात्रज पुत्र नद लाल नैव ॥
२७.२×११.२ सें० मी०	२ (१–२)	७	२३	अपू०	प्राचीन सं०१८१८	इत्यर्घ काड सपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविभाग की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७	४६०२	अघदीपक (हिंदी टीका सहित)			दे० का०	दे०
८	३८०३	अघप्रदेप			दे० का०	दे०
९	२४६	अवजदकेवली			दे० का०	दे०
१०	७१८८	अष्टकवग अरिष्टादि			दे० का०	दे०
११	६६०८	अष्टकवगजातक (प्रथम अध्याय)			दे० का०	दे०
१२	५२७५	अष्टग्रहयोग फल	नागेश्वर लाल पाठक		दे० का०	दे०
१३	२३७	अष्टवर्गाधिकार			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रंथ अवस्था विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ ५ × ११ २ सें० मी०	५३ (१–५३)	६	२६	पू०	सं०१६४२	इति वेतूदयफल संपूर्ण समाप्त मयात संवत १६४२ मासोतम मासे वैसाष मास कृष्णपक्षे चतुर्थियाया शनिवासरे कुममाश्वनिया लिखित पंडित राम सरूपजी यह पुस्तक ••
२३ × १० ६ सें० मी०	१६ (१–१६)	१०	२५	अपू०	प्राचीन	इति अर्घप्रदीपे गुरुमिश्रफल ॥ (पत्रसंख्या-११) × × ×
२८ ६ × ११ ५ सें० मी०	५ (१–५)	८	३६	पू०	प्राचीन सं०१६११	इति श्री अवजद केवली संपूर्णम् •• सं० १६११ मासो० •• आदित्य वासरे लिखिता मुकलम पुरामध्ये लिखि विहारित राम राम कृष्ण रा०॥
२३ × १० ६ सें० मी०	१० (१–१०)	६	२६	अपू०	प्राचीन	
२७ ५ × ११ ६ सें० मी०	४ (१–४)	६	४८	पू०	प्राचीन	इत्यष्टवर्ग जानके प्रथमोध्याय समाप्त ॥
२१ ५ × ८ २ सें० मी०	७ (१–७)	६	३२	पू०	आधुनिक	इति अष्टग्रहयोग फल समाप्त ॥ श्री शव त्वव के स्वर संविधो लिखीत नागश्वर तान पाठक गोपालनाना लिखीत ॥
२२ ५ × १० सें० मी०	६ (१–६)	१३	३८	पू०	प्राचीन	इत्यष्टक वर्गाधिकार समाप्तम ॥श्री॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४	७३६०	अष्टोत्तरीदशा (हिंदी टीका सहित)			दे० का०	दे०
१५	५१३२/८	ग्रहगण विधि			दे० का०	दे०
✓ १६	१५५२७	ग्रहि चक्र			दे० का०	दे०
१७	५२८६	ग्रहिवस चक्र (सटीक)			दे० का०	दे०
✓ १८	५०५४/१५	आखेटक चक्र			दे० का०	दे०
१६	४७७४	आयाप्रश्न			दे० का०	दे०
२०	६६०५	आयदायादि फल विचार (जैमिनि जातकोक्त)			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२११×१४६ सें० मी०	२६	२०	१८	अपू०	प्राचीन	
२१६×१४६ सें० मी०	२ (१–२)	१६	२२	पू०	प्राचीन	इति महर्गण विधि ॥
२६६×११८ सें० मी०	४	६	३६	अपू०	प्राचीन	
२७.३×११८ सें० मी०	५ (१–५)	१२	४१	पू०	प्राचीन सं०१६२१	इति नरपति जयचर्या स्वरोदये महिबल चक्रम् समाप्तम ॥ · ······ इति स्वरोदयविवृतौ महिचक्र विवरणम ॥ संवत १६२१ भाद्र शुक्ल षष्ठ्या बुधवासरे लिखिमिदम्०
१६×७८ सें० मी०	८ (१–८)	८	२४	पू०	प्राचीन	इति यामलीय संग्रहे प्राखेटक चक्र ॥
२१८×६ सें० मी०	७ (१–७)	६	२५	पू०	प्राचीन सं०१८६०	इति श्री अथ्या प्रश्न समाप्तम ॥ सम्वत् १८६० ॥ साके १७२५ ॥ समये चैत्र मासे शुल्कु पक्षे द्वादश्या रविवाशरे विलेखित रघुवर रामेन आत्मा पठाय पुस्तकि समाप्तम्॥ शुभमस्तु॥ सिद्धि मस्तु॥
२७४×११६	३ (१–३)	१५	६१	अपू०	प्राचीन	·········॥ अथ श्री मज्जैमिनि जातकानुसारेणायुदयादि फल विचार क्रीयते ॥ ······ (प्रारंभ)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१	३६२६	आयप्रश्न			दे० का०	दे०
२२	४१८७	आयप्रश्न			दे० का०	दे०
२३	३०८६ / ६	आर्याप्रश्न			दे० का०	दे०
२४	६६११	आर्यभट्टसिद्धांत	आर्यभट्ट		दे० का०	दे०
✓ २५	४८६६	आलोक मनोरमा प्रश्न	गर्ग		दे० का०	दे०
२६	५५६५	इष्टकाल शोधन पूर्वार्द्ध (सटीक)			दे० का०	दे०
२७	५५६४	इष्टकालशोधन उत्तरार्द्ध (सटीक)			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ ग्र	८	म	द	६	१०	११
१८.६×१०.७ सें० मी०	६ (१–६)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री दव कृत प्रश्न समाप्त × × × × × × ॥
२५.७×१२.८ सें० मी०	? (–४)	१२	३६	अपू०	प्राचीन सं०१८८	इति विघ्नराज कृत आय पृच्छा ग्रंथ समाप्त संवत् १८८३ ॥ × × ×
१९.७×१३.१ सें० मी०	५	२२	१५	अपू०	प्राचीन	
२६.२×१२ सें० मी०	२६ (१–२६)	११	३६	पू०	प्राचीन सं०१६५०	इति श्री मदार्य्याचार्य्ये भट विरचिते महासिद्धांत गोलाध्याये कुट्टकाधिकारो नामाष्टादश ॥ संपूर्ण ॥ संपूर्णोयमार्य्यभट सिद्धांत ॥ संवत् १६५० ॥
१७.७×१२ सें० मी०	६ (१–६)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री गर्ग विरचितालाभ मनोरमा प्रश्न विसमा समाप्तय ॥ (पृ० ३)
२६.६×११.६ सें० मी०	१० (१–१०)	१२	५३	पू०	प्राचीन सं०१६०८	इति श्री लग्नात् षटराशिमध्ये चंद्रे लग्नांत चंद्रसारणी। उदाहरण च समाप्त शुभमस्तु संवत् १६०८ माघ शुक्ल सोम लिखित छत्रपुर श्री ॥ पूर्वार्द्ध समाप्त।
२६.८×११.८ सें० मी०	७ (१–७)	१२	४६	पू०	प्राचीन सं०१६०८	इति लग्नात षटराशितोऽधिके चंद्रे सप्तमभावोनविधुसारण्युदाहरणे समाप्ते सं० १६०८ कार्तिक वदि १२ सोमे छत्रपुरलिपिते श्री ॥ उत्तरार्द्ध समाप्त ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८	१३६०	इष्ट सोधन			दे० का०	दे०
२९	४२९८	उड्डदशास्वल्पक्रम			दे० का०	दे०
३०	६८५१	उडुदाय प्रदीप			दे० का०	दे०
✓ ३१	२०७१	उत्पात लक्षण	यशोधर मिश्र		दे० का०	दे०
३२	६९२	ऋण-धन चक्र ?			दे० का०	दे०
✓ ३३	६५१	ऋतुमंजरी			दे० का०	दे०
३४	११८/२	कमलवधशकुन	विघ्नराज कृत		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२३ × १० ५ सें० मी०	६	८	२६	पू०	प्राचीन	
२६ १ × ११ ३ सें० मी०	६ (१–६)	११	२७	पू०	प्राचीन सं० १८१८	इति उडुदशास्त्र पक्रम श्री संवत १८१८ शाके १६८२ वैशाख कृष्ण गुरो लि० द्विवेदिन जगनाथस्य श्री "
२४ ५ × ११ सें० मी०	६ (१–६)	५	३६	पू०	प्राचीन सं० १९०१	इति पराशरीये उडुदाय प्रदीप समाप्तिमगमत ॥ संवत १९०१ श्रावण शु० १ गुरुवासरे ॥
३२ × ११ सें० मी०	८	९	४५	पू०	प्राचीन सं० १९१८	इति श्रीमत्कसारि मिश्रात्मज मिश्र यशोधर विरचिते दैवज्ञ चिंतामणौ उत्पात लक्षण समाप्तम शुभमस्तु संवत् १९१८ के आश्विनि शुक्ल १५ शुक्रेक
१३ २ × ८ सें० मी०	५ (१–५)	८	१८	पू०	प्राचीन	
२१ ६ × ६ २ सें० मी०	४	७	३१	पू०	प्राचीन सं० १८६०	इति श्रीतुंमजरी संपूर्ण स्वम्व १८६० साके १७२५
२८ × ६ सें० मी०	४	८	२६	पू०	प्राचीन	इति कमन वध शकुन समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ नपत पाठयो ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५	६६८७	करणकुतूहल	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
३६	६८१५	करणकुतूहल	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
३७	६४६४	*करणकुतूहल	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
३८	३६४१	करण कौतूहल टीका	विश्वनाथदैवज्ञ		दे० का०	दे०
३९	३१८६	करणप्रदीप	महादेव		दे० का०	दे०
४०	१६७२	करण फल			दे० का०	दे०
४१	३८३६	कर्मप्रकाश (कर्मप्रकाश विज्ञापन प्रकार)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ × १०·५ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	२८	पू०	प्राचीन सं०१६६६	इनि भास्वरीये करणे कुतूहले पर्वानयनोनाम दशमोध्याय. ॥सं०१६६६ वर्षे ˮ ˮ
२१ ८ × १० ७ सें० मी०	१६ (१–१६)	९	२६	पू०	सं०१९१०	इनिह भास्करोदिते ग्रहागमे कुतूहले ॥ विदग्धबुद्धिवल्लभे शशोक सूर्यपोग्रह ॥१०॥ सं० १९३०॥ शाके १७९५ मोनो वैशाख वदि १४ भृगौ ॥
२३ × ९·३ सें० मी०	१६ (१-७,९-१६, १८)	९	२६	अपू०	प्राचीन सं०१६६२	कर्ण कुतूहल समाप्त ॥सं० १६६२ वर्षे शाके १५२७ प्रवर्त्तमाने भाद्रपाद शुदि नवम्या रवौ लिखित''' ''' '''
२३ ८ × १० १ सें० मी०	६०	१०	३१	अपू०	सं०१८४२	इनि श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते ग्रहतुल्यस्योदाहरणे पाताधिकारस्योदाहरणम्॥श्रीविश्वनाथेन दिवाकरस्य सुतेन यत्माह्निचिता समाप्ता गोलाभिधग्राम निवासिनेयमुग्राहृति खेट कुतूहस्य ॥ सं० १८४२
२३ ८ × १०·१ सें० मी०	६ (२-४, ६-८)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
२० ८ × १० ८ सें० मी०	३	८	१६	अपू०	प्राचीन	
२२ ६ × १५ २ सें० मी०	२ (१–२)	१४	३१	पू०	प्राचीन	इतिश्री सूर्यारुण सवादे ज्ञानभास्करे० कर्मप्रकाश विज्ञापन प्रकार मुरलीधरेण लिखित ॥
(सं०सू०६८)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२	७५६०	कर्मपवागिरा			दे० का०	दे०
४३	१०६१	कल्पयलिनटीका			दे० का०	दे०
४४	४५६	कष्टावलि	रुद्र		दे० का०	दे०
४५	५१६८	काकभाषापिंड (सटीक)	गर्ग ऋषि		दे० का०	दे०
४६	६६०८	कालचक्र ज्ञानक			मि० का०	दे०
४७	६६४६	मानचनदशा टीका			मि० का०	दे०
४८	१७४६	कालज्ञानक			दे० का०	दे०

पत्र या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·६ × १२·६ सें० मी०	९ (३२–४०)	१५	१०	अपू०	प्राचीन	इति श्री कर्म प्रकाशिकायां जन्मकालाद्विपेककाल ज्ञान नामचतुर्थाधिकार * (पत्र संख्या ३२)
३०·४ × १४·८ सें० मी०	१७ (१–१७)	१५	४७	पू०	प्राचीन सं०१८६०	समाप्तेय वृत्तिटीका इति श्री ॥ संवत् १८६० शा० १७२५ ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्ष अमावास्या रविदिन लिखत मिश्र मुरलीधर स्वयं पठनार्थम् उमाशिवा जयंति मंगल्य कर्ता ॥
२६·१ × १२·५ सें० मी०	३ (१–३)	१२	३९	पू०	प्राचीन	इति रुद्रकुण्डकष्टादविसपूर्ण ॥१॥ कन्याकटक चैव मायस्य तास्रभाजने अस्वत्थे वटवृक्षे च भुक्ता चांद्रायण चरेत ॥१॥
२२·२ × १२·५ सें० मी०	४ (१–४)	११	२१	पू०	प्राचीन सं०१८३४	इति श्री गर्ग ऋष विरचिते कालान परिज्ञोपरिस्तं चतुर्विंशति प्रास्त संपूर्णमगात् सं० १८३४ वै० शु० ८ गु० नि० * *
२५ × १०·६ सें० मी०	१९ (१–१९)	९	४२	पू०	आधुनिक	इति श्री ईश्वर पार्वती संवादे कालचक्र जातक समाप्तम् ॥
२५·१ × १०·५ सें० मी०	१० (१–१०)	९	४२	पू०	प्राचीन	इति चक्रेश्वरदत्त वाचिमवेन श्राद्ध दार्थ पत्तण श्री वलान्त्यि गुन सूय नामधेय देशिकप्रियशिष्येण मन्त्र वाक्येन ईश्वरोक्त कालचक्र जातकायुर्दाय विधान दशाविपाक यर्तकचिद् याख्यात॥
२७·८ × ११·३ सें० मी०	५ (१–५)	८	३०	अपू०	प्राचीन सं० १९४४	इति कालजातक माघशुक्ला १२ बुधवार संवत् १९४४ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४९	५५८२	कालज्ञान			दे० का०	दे०
५०	४७७०	कालज्ञान			दे० का०	दे०
५१	४०६०	कालज्ञान			दे० का०	दे०
५२	४८८६	कालज्ञान			दे० का०	दे०
५३	३५३७	कालज्ञानाक्षरचिंतामणि शास्त्र	शिव		दे० का०	दे०
५४	४१७	कालमार्तंड ?	कृष्ण दैवज्ञ		दे० का०	दे०
५५	६६३३	कालसूत्र व्याख्यान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२५.६×१३.६ सें० मी०	२ (१-४)	१३	३२	अपू०	प्राचीन	
२१.७×८.६ सें० मी०	१० (१-१०)	६	२६	पू०	प्राचीन सं० १८५६	संवत् १-५६ शाक १७२४ समय मार्ग मास शुक्लपक्षे पंचम्यां भौमवासरे ॥ वितपिरघुवर रामेन काल ज्ञान समाप्तम् ॥ श्रीराम ···
२३×१२ सें० मी०	६ (१-६)	८	२४	पू०	प्राचीन सं०१८५७	इति आयः प्रश्न समाप्तम् ॥ संवत् १८५७ साके १७२२ ॥
२७.५×१२.३ सें० मी०	७ (१-७)	८	४८	पू०	सं०१९३६	इति रवेरत्नदंशासमाप्त चैत्रमासे कृष्ण पक्षे १३ दस्या बुधवासरे ॥ लिपीत्वा गौरीद्विजस्य ग्राम पठनाय हेतवे संवत १९३६ शाकाब्द १८०१ ॥
२६.३×१३.२ सें० मी०	१३ (३-१५)	११	२५	अपू०	प्राचीन सं०१८८६	इति श्री शिव विरचतायां कालज्ञानाक्षर-चिंतामणि शास्त्र समाप्त संवत् १८८६ साउन कृष्णे १ शुक्रे श्रीराम-चंद्राय नमोनमः ॥
२४×१० सें० मी०	३१ (१, २१-५०)	६	२८	अपू०	प्राचीन	
२८×११.६ सें० मी०	४ (२-५)	१०	५०	अपू०	प्राचीन	इति वास्तुसूत्र व्याख्याने तृतीयो-ध्याय ॥ ··· (पत्रसंख्या ४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६	२७६४	कुडमडपसिद्धि	विट्ठल दीक्षित		दे० का०	दे०
५७	१८८० / ९	कूपचक्रम			दे० का०	दे०
५८	११४३	कूपतडागचक्रम्			दे० का०	दे०
५९	७०५१	केरलप्रश्न	केशवप्रसाद		दे० का०	दे०
६०	७५५०	केरलप्रश्न			दे० का०	दे०
६१	४४६४	केरलीज्ञान			दे० का०	[illegible]
६२	१०३४	केशवपद्धति	केशव दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ स	८ द	६	१०	११
२४.३ × ८.३ सें० मी०	६ (२–१०)	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमत् ज्योतिर्वित विट्ठल दीक्षित विरचिता कुंडमंडप सिद्धि ॥ ......
२०.२ × १३.८ सें० मी०	३	१५	१२	अपू०	प्राचीन	
२५ × १० सें० मी०	२ (१–२)	८	२८	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मयामले तडाग चक्रम् ।
२१.२ × १२.२ सें० मी०	५ (१–५)	१६	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री केशव प्रसाद विरचिते केरल प्रश्न समाप्त । शुभम् ॥ लिखत मनभामनप्रसाद पठनर्थं मह वनखंडेस्वरवासी पुजारी · ·· ······
२४.१ × १०.५ सें० मी०	५ (१–५)	६	२४	अपू०	प्राचीन	
२५.६ × ११.५ सें० मी०	४ (१–४)	१४	४४	पू०	प्राचीन	इति केरली ज्ञानम् ॥ पार्वती······॥
२५.८ × १३.७ सें० मी०	८ (१–८)	७	३६	पू०	प्राचीन सं० १८८६	इति श्री केशव दैवज्ञविरचिते केशवीय पद्धति समाप्तम् ॥ संवत् १८८६ वैशाख वदि ८ चन्द्रे लिखितमिद मुरलीदत्त स्वय पठनार्थम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३	४१२५	केशवपद्धति (सटीक)	केशव दैवज्ञ	विश्वनाथ दैवज्ञ	दे० का०	दे०
६४	४७१३	केशवी टीका			दे० का०	दे०
६५	१६८८	केशवी पद्धति (संस्कृत टीका सहित)		विश्वनाथ	दे० का०	दे०
६६	२७८५	केशवी पद्धति	केशव दैवज्ञ		दे० का०	दे०
६७	१२८६	कोटचक्र			दे० का०	दे०
६८	१३७२	कौतुक चिन्तामणि			दे० का०	दे०
६९	१८३६	खंडतिथ्यादि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८.१×१४.२ सें० मी०	३४ (१–३१, ३७–३९)	१६	४३	अपू०	रचनाकाल शा १५४० लिपिकाल सं०१८८६	गगनवेदशरेंदुमिते शके १५४० नभसि-शुक्ल बुधेभगते तिथौ गणपतेर्हि कृत मुखदसतावितितवारमगाढरमापुरे ॥ इति संपूर्ण समाप्तम् ॥ श्री शिवायनम संवत् १८८६ शके १७५४ माधव मासि सितानवम्या ६ भौमवासरे लिखित-मिद पुस्तक मुरलीदत्त स्वय पठनार्थ गौडान्वयेलेखक पठित शुभमिति ॥
३०.५×१५.५ सें० मी०	४५ (१,६-७-१०, २२-२४-४२, ४४-४६, ४८-५५)	१३	४०	अपू०	सं०१९१०	इति संपूर्ण समाप्तम् ॥ श्री शिवाय-नम ॥ संवत् १९१० । शाके१७७५ पौषमासे सिते पक्षे एकादश्य विधु वासरे लिखत मिद पुस्तक मिश्र देवी सहाय स्वात्म पठनार्थमिति ॥
२२.४×१४.३ सें० मी०	२०	२१	३३	पू०	प्राचीन	इति केशवाचार्य कृते केशवी पद्धति समाप्त ॥
१९.७×८.३ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	२२	पू०	प्राचीन सं०१८२९	इति केशव दैवज्ञ विरचिता केशवपद्धति समाप्ता । संवत् १८२९ वरषे श्रावण वदी तृतीया ३ वार सनिश्चर पोथी लिखी देवी ब्राह्मण ॥
२३.८×११.१ सें० मी०	५ (१–५)	६	३०	अपू०	प्राचीन	
२०.४×१० सें० मी०	८३ (२–१८, १८–८३)	९	२१	अपू०	प्राचीन सं०१८०६	इति कौतुकचिंतामणि समाप्त ॥ श्रीरस्तु ॥ सवत १८०६ श्रावण कृष्ण २० ...
२२.५×१३.५ सें० मी०	८ (१–८)	११	२८	पू०	प्राचीन सं०१९३४	इति गङ्गात शान्ति संपूर्ण ॥ सवत् १९३४ प्रथम ज्येष्टवदि ६ दिन रविवार लिखत शिवनारायण ॥१॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा ग्रन्थविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
✓ ७०	७२३०	गणक भूषण	समरसिंह		दे० का०	दे०
७१	६६४४	गणित लता	वल्लभ गणक		दे० का०	दे०
७२	२६२६	गर्गमनोरमा	गर्ग मुनि		दे० का०	दे०
७३	२७२६	गर्ग मनोरमा			दे० का०	दे०
७४	१५३६	गर्ग मनोरमा (टीका सहित)			दे० का०	दे०
७५	६६३४	गर्ग संहिता	गर्ग		दे० का०	दे०
७६	६६१२	गर्भाधान जन्मपत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ × ११ ४ सें० मी०	२३ (१–२३)	१०	४०	अपू०	प्राचीन सं०१९१४	समर सिहेन··· ··युग नद्र नद बु मिते म॰ सूर्य शनिवार युक् तिथिद्वि के कर वेच ॥ निश्चित मया गएाक भूपग प्रश्न स्वहिल × × × ×
३० ६ × १२ ७ सें० मी०	६ (१–६)	११	५२	पू०	प्राचीन सं०१९१०	इति श्री वल्लभ गणक कृता गणित लता समाप्ता १ लि० उदीच्य पा० कृष्णलालेन संवत् १९१० मार्गशिरे द्वैरव तिथौ मन्दवासरे ॥
२७ ५ × ११ सें० मी०	६	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११ सें० मी०	४ (१–४)	१२	४३	पू०	प्राचीन	इति गर्ग मनोरमा भाषया समाप्ता।
२५ × ११ २ सें० मी०	५ (१–५)	११	३१	पू०	प्राचीन सं०१९१२	इति गर्ग मनोरमाया प्रश्न विद्याया गर्ग कृत टीका समाप्ता शुभ संवत् १९१२॥
२९ ८ × १२ ६ सें० मी०	५१ (१–५०, ५२)	७	४१	अपू०	प्राचीन	गार्गीये ज्योति शास्त्रे प्रथम०॥ ·· (पत्र संख्या १८)
२१ × १२'४ सें० मी०	१७ (१–१७)	११	२२	पू०	प्राचीन सं०१९२८	इति श्रीकालचक्रोपरिकृतमुदाहरणं समाप्तम फाल्गुन सं० १९२८ मार्गशिर्ष शुल्काष्टम्या भवतिका दौने शिष्यार्थ कृत मुदाहृतिः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७७	४५४६	गुरुकाष्ठ (राशिग्रह)			दे० का०	दे०
७८	६६४१	गुलिकादि फल			दे० का०	दे०
७९	६८५०	गुलिकासाधन			दे० का०	दे०
८०	३७२८	गोलखंड (गोलाध्याय)			दे० का०	दे०
८१	६४५३	गोलाध्याय	लल्लाचार्य		दे० का०	दे०
८२	५६२०	गौरी जातक			दे० का०	दे०
८३	६७१८	गौरीजातक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१७×६ सें० मी०	८ (१–८)	६	३१	पू०	प्राचीन सं० १८५६	इति श्री गुरकाण्ड समाप्तम् ॥ संवत् १८५६ शाके १७२४ समयमार्ग मासे कृष्णपक्ष एकादश्यां रविवासरे विलेपि० रघवरराजन आत्मपठार्थं पुस्तकि समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
२१२×११७ सें० मी०	५ (१–५)	१२	२६	पू०	प्राचीन	इति गुलिकादि फलम् ॥
२४·४×१०८ सें० मी०	१	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति प्राणद ॥
२१३×११ सें० मी०	२१ (१–२१)	११	३२	पू०	प्राचीन	
२७×१२५ सें० मी०	२२ (१–२२)	१०	३६	पू०	प्राचीन	सम्पूर्णेयं लल्लकृत गोलाध्याय ॥ यादवेन्द्र ज्योतिर्वित्सूनोर्माधवस्येदं पुस्तकम् ग्रंथसंख्या ॥४५०॥
३४६×१३५ सें० मी०	१३ (२–१४)	९	६६	अपू०	प्राचीन	
२३·६×१०१ सें० मी०	३ (१–३)	१०	१	अपू०	प्राचीन	इति गौरी जातके शुभाशुभं + + +

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रापतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८४	४२६२	गौरी जातक			दे० का०	दे०
८५	५३६६	गौरीजातक कर्म पद्धति	माधव		दे० का०	दे०
८६	६१८७	ग्रहणफल			दे० का०	दे०
८७	१३०४	ग्रहणफल			दे० का०	दे०
८८	४४६६	ग्रहदशातर्दशा			दे० का०	दे०
८९	६२५२	ग्रहदशाफल			दे० का०	दे०
९०	७०६२	ग्रह द्वादशभाव फल			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२७.६×११ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३४	पू०	प्राचीन सं०१६०२	इति श्री गौरि जातक शुभाशुभ फल समाप्तम ॥ श्री शुभसम्वत्सरा १६०२ शाकाब्दा १७६७ समय चैत्र कृष्ण ११
२६×१४.३ सें० मी०	३ (१–३)	१८	५२	पू०	प्राचीन	इति श्री मिश्र भट्टपतिमज माधव विरचिताया गौरि जातक कर्म पद्धितौ द्वाहाणादशातर्दशाफलाध्याय ॥
२४.७×१० सें० मी०	६ (१–६)	१३	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री राहुप्रकरणम् ॥ सवत् १८५७ जेष्ठ कृष्णे ११
२६.६×१०.८ सें० मी०	३ (१–३)	१७	४०	पू०	प्राचीन	इति ग्रहण फल मिति ॥
२५×११ सें० मी०	५ (१–५)	१२	३४	पू०	प्राचीन सं०१७६३	... ...सं० १७६३ श १६५८ माघ वदी १० भृगुवासरे लिखित .... ॥
२७×११.२ सें० मी०	४ (२–५)	८	३२	अपू०	प्राचीन	
२०.८×११ सें० मी०	७ (२–३,६–८,१०–११)	८	१६	अपू०	प्राचीन	नवग्रह पत्र सपूर्ण ॥..................

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की क्रमांकसंख्या या संग्रहविभाग की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६१	१७८२	ग्रहफल			दे० का०	दे०
६२	१८५६	ग्रहफलम्			दे० का०	दे०
६३	६३३८	ग्रहभावप्रकाश (हिंदी टीका)	कविरत्न	गोपाल	दे० का०	दे०
६४	६०८८	ग्रहभाव फल			दे० का०	दे०
६५	४३००	ग्रहलाघव	गणेशदैवज्ञ		दे० का०	दे०
६६	५३२८	ग्रहलाघव	गणेशदैवज्ञ		दे० का०	दे०
६७	५१५४	ग्रहलाघव	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	९	१०	११
२१×११ सें० मी०	९ (१–९)	६	३०	अपू०	प्राचीन	
२२.२×१०.२ सें० मी०	२७ (१–२७)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति विवाह ॥
२४×१२.२ सें० मी०	१३ (१,३,५ १५)	१७	२६	अपू०	प्राचीन	
१६.५×८.४ सें० मी०	६ (३, ८–११)	६	१५	अपू०	प्राचीन	
२१×१२ सें० मी०	१३	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
२०.७×११ सें० मी०	८ (५–८,१४–१६, ३३)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री गणेश दैवज्ञ विरचित गृह लाघवे चन्द्रसूर्य स्पष्टीकरणाधिकार + + + + + + ॥ (पृ० ७)
३३×१३.८ सें० मी० (सं०म०७०)	२०	१३	५१	अपू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्व नाथ दैवज्ञ विरचितायां ग्रहलाघवस्य भौमादिस्पष्टीकरण स्यादा ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगमसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९८	६६७१	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
९९	७२१६	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१००	७०३०	ग्रहलाघव	गणेशदैवज्ञ		मि० का०	दे०
१०१	७०३१	ग्रहलाघव	विश्वनाथदैवज्ञ		दे० का०	दे०
१०२	७०६१	ग्रहलाघव	गणेशदैवज्ञ		दे० का०	दे०
१०३	५७७१	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१०४	५०४३	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२० ८ × १० ५ सें० मी०	८ (२४–३१)	११	३०	अपू०	प्राचीन	
२५ २ × १० ५ सें० मी०	७	१०	२५	अपू० फुटकल पत्रे	प्राचीन सं० १८६०	इति श्री सकलागमाचार्य दैवज्ञ वत्सरिक्ष मत्र श्री गणेशदैवज्ञ विरचित ग्रहलाघव पंचतारा स्पष्टीकरण समाप्त शुभमस्तु ॥ संवत् ८६० माघे शुक्ले पक्षे चंद्रवासरे ... .
२० ६ × १० ८ सें० मी०	६ (२–४, १७–१९)	८	२६	अपू०	आधुनिक	इति श्री सकलागमाचार्य वर्य श्री केशवक सवत्सरात्म श्री गणेश दैवज्ञ विरचिते ग्रहलाघव त्रिप्रश्नाधिकार चतुर्थं ॥ (पृ० १९)
२१ २ × १० ३ सें० मी०	६२ (२–२९, ३१–६३) पत्र २१ दो	८	३३	अपू०	प्राचीन सं० १६६७	इति श्री सिद्धान्त दैवज्ञात्मज विश्वनाथ विरचिते ग्रहलाघव चंद्र ग्रहणाधिकार स्पष्ट वृत्ति समाप्ता । शकन् १६६७ शाके १५ २ मार्गशीर्ष कृष्णे ३० × × (पृ० ६१)
२२ ६ × ११ ७ सें० मी०	८ (१–८)	१२	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री गणेशदैवज्ञ विरचिते ग्रहलाघवाख्ये चन्द्र शृंगोन्नति द्वादश + +
२७ ४ × १० २ सें० मी०	२ (१–२)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२६ × ११ १ सें० मी०	६ (१–६)	८	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री ग्रहलाघवे सिद्धान्त रहस्ये गणेश दैवज्ञ विरचिते मध्यमाधिकार. + + + + ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०५	४२२३	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१०६	१७४४	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१०७	१७१०	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१०८	११६०	ग्रहलाघव	विश्वना - दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१०९	११६७	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
११०	११७४	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१११	११८२	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२×१६.५ सें० मी०	३५ (१–३५)	१५	४८	पू०	सं०१६१२	इति श्री ग्रहलाघवे ग्रहणाधिकार: समाप्त संवत १६१२ भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे १३ गद्वासरे लिखित पचोलीमहावाराणठनाथ ......
२८×११.२ सें० मी०	२१ (१–२, १–१६)	[illegible]	२६	अपू०	प्राचीन	
१६.४×११.५ सें० मी०	७ (५–११)	१०	२१	अपू०	प्राचीन	
२३.५×१२ सें० मी०	११ (८–१५, १७–१६)	१५	३६	अपू०	प्राचीन	इति दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचितग्रह लाघवस्यमाधिकारस्योपाहृति समाप्ता। ...मनेन रहित ..
२३.७×११ सें० मी०	६ (२–१०)	८	२३	अपू०	प्राचीन	
१७.१×१०.५ सें० मी०	[illegible] (३–६)	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२२.५×१२ सें० मी०	१७ (१–१७)	[illegible]	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११२	२६२८	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
११३	१६४०	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
११४	१६७२	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
११५	३६८०	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
११६	२३३०	ग्रहलाघव (सटीक)		गणेश दैवज्ञ	दे० का०	दे०
११७	४१२२	ग्रहलाघव	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
११८	२५५५	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण का वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ × १० ५ सें० मी०	२९ (१–२९)	११	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री सकलागमाचार्य केशव सांवत्सरिकात्मज गणेश दैवज्ञ विरचिते सिद्धान्त रहस्ये ग्रहलाघव संपूर्ण ॥
२२ ८ × ९ ३ सें० मी०	११ (१–११)	६	२९	पू०	प्राचीन	इति श्री गणेश दैवज्ञ कृते ग्रहलाघव तारा ग्रहस्य करणम् ॥ ······ ···
२५ ७ × ११ १ सें० मी०	३७ (१–२४, २६–३८)	८	३३	अपू०	प्राचीन	
१९ × ९ ५ सें० मी०	३१ (१–३१)	१०	२८	पू०	सं० १९३७	इति श्री ग्रहलाघवग्रंथ संपूर्णम् भवत् ॥ संवत् १९३७ शके १८०२ नंदननाम संवत्सर × × × ॥
२४ ३ × १ सें० मी०	१६ (१–१६)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२६ × १५ सें० मी०	७ (१, ५–१०)	१३	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते ग्रहलाघवस्पष्ट सूर्य चंद्र तिथ्यादि द्वितीय (पृ० १०)
२३ ८ × १२ १ सें० मी०	२० (१–२०)	११	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री केशव सांवत्सरात्मज गणेश दैवज्ञ विरचिते ग्रहलाघवे सिद्धांत रहस्ये ··· ··· ··समाप्त सप्तदश ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की क्रमसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११९	७५९७	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१२०	४७४	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२१	७६६१	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२२	९९७	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२३	९६९	ग्रहलाघवम्	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२४	७७१६	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२५	६०८३	ग्रहलाघव (उत्तरार्द्ध)	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार ८ अ	पत्रसंख्या ब	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या स	 द	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण ९	अवस्था और प्राचीनता १०	अन्य आवश्यक विवरण ११
२२×१२८ सें० मी०	३२ (१-३२)	६	१६	पू०	प्राचीन सं०१८०७	मा० ६ गुरौ सं० १९४२ शके १८०७ ॥ (17-9-1885 = १७-९-१८८५)
३०×१० सें० मी०	६ (१४-१८, २१)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
२०७×६८ सें० मी०	६ (१३,१८-१९,२२-२४)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	इति गणेशदैव० ग्रह० सिद्धा० पचांग समाप्त ॥
२७.२×११ सें० मी०	१३ (१-१३)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
३०५×१५ सें० मी०	१३	१३	४३	अपू०	प्राचीन	
२०७×६८ सें० मी०	८	९	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री गणेशदै० ग्रहला० सिद्धांतरह० तिथि पत्रादेव ग्रहणद्वयशाध्यम् × × × × (पृ० १६)
२४×१०२ सें० मी०	१५ (१-१५)	११	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकरदैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिता ग्रहलाघवस्य लग्नादि छाया यलभाग दिक्साधन नलिकावधाधिकारस्योदाहृति ॥ ... ... (पत्र सं० १५)

(सं० सू० ७१)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२६	२४७५	ग्रहलाघव (उत्तरार्द्ध)			दे० का०	दे०
१२७	३०१०	ग्रहलाघव (उत्तरार्द्ध)		विश्वनाथ	दे० का०	दे०
१२८	४३१७	ग्रहलाघवटीका		विश्वनाथ	दे० का०	दे०
१२९	११६१	ग्रहलाघवटीका		नृसिंहदैवज्ञ	दे० का०	दे०
१३०	५७१९	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ	नृसिंहदैवज्ञ	दे० का०	दे०
१३१	५७१४	ग्रहलाघवटीका	गणेशदैवज्ञ	मल्लारिदैवज्ञ	दे० का०	दे०
१३२	१०८०	ग्रहलाघवटीका			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठो या आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	८	८	९	१०	११
२५ २ × १० ४ सें० मी०	५४ (१-७,१०-३५, ३६-४१,४३-४७,५०-५३, ६६-७५)	८	३५	अपू०	प्राचीन	
२६ ५ × १५ ४ सें० मी०	३६ (१-३१, ३१-३५)	१३	२६	अपू०	प्राचीन	
३० ३ × १६ १ सें० मी०	३० (३४-६४)	१६	४१	अपू०	प्राचीन सं०१९०३	इति श्री ग्रहलाघवे करण सिद्धांत रहस्ये तद्विवरण दैवज्ञवर्य दिवाकरात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते सिद्धान्त रहस्योदाहरण समाप्ति × × संवत् १९०३ विक्रमात्समेमाघकृष्ण ''''''॥
३३ २ × १० ६ सें० मी०	८	८	२६	अपू० (खंडित)	प्राचीन	
२६ ५ × ११ ५ सें० मी०	३१ (१,२,४ ६, १५-४०)	८	४२	पू०	प्राचीन	श्रीमद्गुरुगणेशदैवज्ञेन ये ग्रंथा कृता स्ते तद्भ्रातृ पुत्रेण नृसिंह ज्योतिर्विदा स्व कृत ग्रहलाघव टीकाया ॥ (पत्र सं० १)
२७ १ × १३ ८ सें० मी०	५२	१४	४६	पू०	सं०१६१४	इति श्री मद्गणेश दैवज्ञकृत ग्रहलाघवस्य टीकाया मल्लारि दैवज्ञ विरचिताया मध्यम ग्रह साधनाधिकारः प्रथम ॥ (पृ० १२)
२८ ५ × ११ ५ सें० मी०	२८	११	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकर	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३३	१६८६	ग्रहलाघव (संस्कृतटीका)	गणेशदैवज्ञ	विश्वनाथदैवज्ञ	दे० का०	दे०
१३४	२३८५	ग्रहलाघव (संस्कृतटीका)	गणेश दैवज्ञ	नृसिंह ज्योतिर्विद	दे० का०	दे०
१३५	४७५२	ग्रहलाघवविवरण			दे० का०	दे०
१३६	६६४६	ग्रहलाघवव्याख्या	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१३७	५६०३	ग्रहलाघवसारणी			दे० का०	दे०
१३८	६२६	ग्रहलाघवसारणी			दे० का०	दे०
१३९	२६८६	ग्रहविचार			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रंथ सम्बन्धी विवरण
८ अ	८	म	द	९	१०	११
२२.२ × १४ सें० मी०	१० (१–७ ९, ३१)	१५	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञात्मज विश्वनाथ कृते सिद्धान्त रहस्य ...
२४.१ × १०.४ सें० मी०	५५ (१–५७)	११	३०	अपू०	प्राचीन	
२६.८ × ११.८ सें० मी०	३६ (१–३६)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	
२५.३ × १०.७ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	५३	पू०	सं० १६९४	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्म विश्वनाथ दैव विरचितायां ग्रहलाघो दाहृतौ स्पष्टीकरणं ॥ (पृ० ५)
३१.५ × १५ सें० मी०	१३ (१–१३)			पू०	प्राचीन	इति श्री ग्रहलाघवे सारणी समाप्त संवत १९०७ (?) चैत्र शुक्ला १२ लिखत मिश्र मुरलीधर
२६.६ × १३.२ सें० मी०	१५			अपू०	प्राचीन	
२३.४ × ९.३ सें० मी०	१३ (१ १२, १५)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रागतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४०	६२०६	ग्रहस्पष्टीकरण (ग्रह फल)			दे० का०	दे०
१४१	१७६०	ग्रहाधिकार			दे० का०	दे०
✓ १४२	६१२८	चंद्र ग्रवस्था			दे० का०	दे०
✓ १४३	८४५	चंद्रकुंडली			दे० का०	दे०
१४४	६२६५	चंद्रग्रहणार्थ श्लोक			दे० का०	दे०
१४५	६८०६	चंद्रोन्मीलन			मि० का०	दे०
१४६	३७५९	चंद्रोन्मीलन			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ स	८ द	९	१०	११
२१ × १२ ७ सें० मी०	१६	२२	१९	अपू०	प्राचीन	
३१ × १५ १ सें० मी०	३ (१४–१६)	१३	४२	अपू०	प्राचीन सं० १८ ९	इति ह्यव्धीद्राल्पेशके ग्रहानयनाधिकार इनि १चमाधिकार समाप्त श्री सवत १८९९ तत्र श्रावण कृष्णा १० चद्र वासरे दपुस्तक लिपत मिश्र हरनदस्वा रम पठनाथ शुभ मगल ददाति श्रीरस्तु ॥
११ × ८ ८ सें० मी०	६	९	१८	अपू०	प्राचीन	अथ चद्र अवस्था लिख्यते ॥ (आदि)
१८ ४ × १० ५ सें० मी०	८	८	१६	अपू०	प्राचीन	
२९ ५ × ११ १ सें० मी०	७	१३	४९	अपू०	प्राचीन	
२५ १ × १० ५ सें० मी०	४७ (१–४७)	९	३९	पू०	आधुनिक	इनि चद्रोमीलन समाप्तम ॥
२४ ८ × १२ १ सें० मी०	१०	१०	३१	अपू०	प्राचीन	इति चद्रामीलने महाशास्त्राणंव विनियते मूल तत्राथ सबध प्रथम प्रकरण ॥ (पत्र सं० २)

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आवतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४७	१८३६	चन्द्रोन्मीलन			दे० का०	दे०
१४८	६६१५	चन्द्रोन्मीलनटीका			दे० का०	दे०
१४९	६६८५	चन्द्रोन्मीलन दीपिका			दे० का०	दे०
✓ १५०	४२६७	* चक्ररत्नावली	वासुदेव		दे० का०	दे०
१५१	५१६२	चक्रावली			दे० का०	दे०
१५२	७६५७	चमत्कारचिन्तामणि	दैवज्ञरामभट्ट		दे० का०	दे०
१५३	२७८८	चमत्कार चिंतामणि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२३.३ × ११ सें० मी०	१० (१०-१६)	१०	२६	अपू०	प्राचीन	
२८.८ × १२ सें० मी०	१६ (१-१६)	१३	४५	पू०	प्राचीन	
३०.५ × १२ सें० मी०	१७ (१-१७)	१७	५६	पू०	प्राचीन	इति चन्द्रोमीलन टीकायां वाप्यादिषु जलनिर्णय सप्तविंशति पटलः ॥
२८.५ × १२.५ सें० मी०	४ (१-४)	१०	५३	पू०	सं०१७१६	इति श्री वासुदेव कृता चक्र रत्नावली समाप्ता ॥ संवत १६१६ समये ज्येष्ठ सुदि एकादश्या रविवासरे लिखित जगजीवन ब्रह्मचारिणा ॥
२६ × ११.४ सें० मी०	२ (१-२)	१७	५०	अपू०	प्राचीन	
१६ × १२.४ सें० मी०	४० (२-४१)	१०	१०	अपू०	प्राचीन सं०१६०३	इति श्रीमद्दैवज्ञरामभट्टनारायण विरचिते चमत्कार चिंतामणौ ग्रहभावफलाध्याय आषाढ मासे कृष्णपक्षे तिथौ ११ भृगुवासर संवत १६०३ शाके १७६८
२५.२ × १०.३ सें० मी०	१४ (१-१४)	८	२७	पू०	प्राचीन सं०१६२५	इति चिमत्कार चिंत्यामणि संपूर्ण सं० १६२५ मि० पौष वदि ५ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या ग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५४	८०१८	चमत्कार चिंतामणि	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
✓ १५५	५७६७	चमत्कार चिंतामणि	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
१५६	७८८१	चमत्कार चिंतामणि (सटीक)	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
✓ १५७	३६८२	चमगणित			दे० का०	दे०
१५८	२०६१	चिंतामणिटीका			दे० का०	दे०
१५९	२५३२/१७	चौरतामप्रश्न			दे० का०	दे०
१६०	१६७६	जन्मदीपक			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ ३ × ११ ३ सें० मी०	१३ (१–१३)	८	३३	पू०	सं०१९०२	इति श्री चमत्कार चिन्तामणि सम्पूर्णम श्री सवत १९०२ शाके १७६७ माघ मास शीत पक्ष षष्टम्या रविवासरे
२२ × १० ५ सें० मी०	११ (१–११)	११	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री राज ऋषि (नारायण) रचित चमत्कार चिंतामणि नाम भावाध्याय ॥सपूर्ण॥
२७ ३ × ११ ४ सें० मी०	२० (१–२०)	११	३७	अपू०	प्राचीन	
१९ ८ × १० ७ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२७	अपू०	प्राचीन सं०१८३४	
३२ × ६ सें० मी०	७४ (२–७५)	७	४७	अपू०	प्राचीन सं०१९३६	
१३ ७ × ११ ५ सें० मी०	१ (१–२)	११	२६	पू०	प्राचीन	इति चौरनामप्रश्न ॥
३० × ११ ५ सें० मी०	१०० (१२ १४ ८० ८३ १०३)	६	४१	अपू०	सं०१९१८	इति श्री जन्म दीपक शास्त्रकर श्री हरि सुत सुब्रह्मण्य विर विरचित सपूर्ण शुभमस्तु। सवत १९१८ के साल आषाढ सुदि ३

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६१	६७४	जन्मसमुद्र विवृत्ति	नरचन्द्रो पाध्याय		दे० का०	दे०
१६२	६७१	*जन्मसमुद्र विवृत्ति	नरचन्द्रोपाध्याय		दे० का०	दे०
१६३	७३७	जन्मागपत्रावलि			दे० का०	दे०
१६४	८८६	जन्मजातक			दे० का०	दे०
१६५	४६२६	जातकर्म			मी०का०	दे०
१६६	११५४	जातककर्म			दे० का०	दे०
१६७	४४१	*जातककर्म पद्धति (केशवी टीका)		केशव दैवज्ञ	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर-संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
८ ए	च	ह	द	६	१०	११
३२१×१६८ सें० मी०	६ (१-६)	१३	५८	अपू०	प्राचीन	इति तरच ।ाध्याय कृतायां जन्मसमुद्रावगुली वृत्ति गभ सभवादि लक्षण प्रथम-प्रथम प्रान अथाता जन्म विधिनाम। प्रनाला व्याग्यायत
३२५×१६८ सें० मी०	२४ (१ २४)	१३	५८	अपू०	प्राचीन सं०१८८१	इति श्री वागहृन्गद्दीया श्री सिंह सूनि सिप्प२२।गवर श्रीनरचद्रोपाध्याय कृतायां वृत्ति बद्धाया सनाया जन्म समुद्र ग्रश्न शतसरहारारायां अष्टमकल्लाल नाभ सादि यागदीक्षा प्रयोग लक्षणो नामष्टम कल्लाल समाप्ताम प्रथ शुभ सवत् १८८१ ।
३२५×१३ सें० मी०	१६ (२-१७)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति संक्षप जन्म पभावलोकनम शुभ मस्तु मगल ददातु निप्यत दैविसहाय विद्यार्थि पठनाय परपोत्र विष्नुदत्त का पौत्र भान सिंह का पुत्र बाहाद सिंह का सवत १६०५ मासातमास चत्र मासे कृष्णपक्ष शुभ तिथं एकादस्या ११ नित्रहूवी मध्य राम।
१४८×११ सें० मी०	१० (१-१०)	६	१४	पू०	प्राचीन सं०१६१२	इति जन्मजातक संपूर्ण समाप्तम ॥ भूपात स० १६१२ लिखित्या मीनेकु ।
२११६×८८ सें० मी०	१० (१-१०)	६	२४	पू०	प्राचीन सं०१८५९	इति श्रीजातकम समाप्तम ॥ सम्वत १८५९ शाक १७२४ शमयपोषमास कृष्णपक्ष त्रयोदश्यां बुधवासरे ॥
१६×१२५ सें० मी०	२६ (१-१४) १६-२७)	८	१८	अपू०	प्राचीन	
२४×१० सें० मी०	६६	११	३६	अपू०	प्राचीन	इति केशव पद्धति सोदाहरणा समाप्ता ॥ रचनाकाल—सं०१५४० लिपिकाल। १८३६ सम्मित विक्रमस्य

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६८	११४५	जातकचंद्रिका			दे० का०	दे०
१६९	७६०९	जातकपद्धति	केशव दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१७०	१०९२	जातकपद्धति	श्रीपति		दे० का०	दे०
१७१	३१९७	जातकपद्धति			दे० का०	दे०
१७२	२४४३	जातकपद्धति	केशव दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१७३	१४७४	जातकपद्धति	पाराशर		दे० का०	दे०
१७४	१७३१	जातकपद्धति	केशव दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ ग्र	ब	म	द	९	१०	११
१६ × १२ सें० मी०	१३	१०	१६	अपू०	प्राचीन	
२१.१ × ८.५ सें० मी०	६ (१–३ ६–८)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री केशव दैवज्ञ विरचिते जातक पद्धती भावाध्याय ॥ (पत्र १–२)
३१ × १४.८ सें० मी०	८६ (१–८३, ८६–८८)	१६	४८	अपू०	प्राचीन	
२२.५ × १०.३ सें० मी०	११ (५–१५)	६	२६	अपू०	प्राचीन	
२३.४ × १०.३ सें० मी०	२७ (३–१५, १७–३०)	८	३४	अपू०	प्राचीन	
२१.७ × १०.६ सें० मी०	११ (१–११)	१०	३०	पू०	प्राचीन सं०१८६०	इति पाराशर कृत जातक पद्धति समाप्ता ॥ सवत १८६० चैतसुदि १२ चद्रवासरे लिखित ॥ ·· ·· सुखग्रहायु ॥
२०.३ × १० सें० मी०	६ (१–६)	११	३३	पू०	प्राचीन सं०१८३६	इति श्री केशव दैवज्ञ विरचिता जातक पद्धति समाप्ता ॥ सवत् १८३६ शाके १७०४ वैशाख मास शुक्ल पक्ष तिथौ ३ चद्र वासरे शुभमस्तु मगलददातु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७५	३००	जातकपद्धति	केशव दैवज्ञ	नारायण	दे० का०	दे०
१७६	२०३०	जातकपद्धति	अनंत दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१७७	५८६२	जातकपद्धति उदाहरण	कृष्ण दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१७८	६२५१	जातकपद्धति व्याख्या			दे० का०	दे०
१७९	७०९७	जातकमंजरी	रघुनाथ		दे० का०	दे०
१८०	१०३३	जातकरत्नसार	वशिष्ठ		दे० का०	दे०
१८१	२७६४	जातक लग्नगुणप्रकरण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	ड	द	९	१०	११
२६ × ८.६ सें० मी०	४६ (१–४६)	१३	५२	पू०	प्राचीन सं०१७४५	इति श्री वल्लालदैवज्ञात्मज गोविंद दैवज्ञसुत दैवज्ञ नारायण कृता सोदाहृतिर्वे केशवीय जातक पद्धति व्याख्या समाप्ता ॥ सवत् १७४५ शके १६११ समये भाद्र पद ·····विश्वेश्वरभट्टेनेद पुस्तकम् लिखीति ॥ शुभ भूयाल्लेखक पाठयो ॥
३४ × १५.२ सें० मी०	१८ (१–१४, १५–१७)	१३	४१	अपू०	प्राचीन	
२४.२ × १०.३ सें० मी०	२५	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री वल्लाल दैवज्ञात्मज कृष्ण दैवज्ञविरचिते श्रीपति भट्टीय जातक पद्धत्युदाहरणे दृष्टि गणितोदाहरणम्। (पृ० १८)
२२.८ × १०.३ सें० मी०	२८ (१–२८)	६	३५	अपू०	प्राचीन	
२६ × ८.५ सें० मी०	१२ (१–१२)	६	३५	पू०	प्राचीन सं०१८३६	श्री रघुनाथ विरचिते जातकमञ्जर्या जातक प्रकरण प्रथम ॥ (पत्र सं० ३) सवत १८३६ साके १७०४ राम अषाढकृष्ण प्रतिपदा तिथौ बुधवासरे ॥ लिखित ठाकुर रामेण × × ×
२८.८ × १३.५ सें० मी०	१० (१–१०)	६	३२	पू०	सं०१९०३	इति श्रीवशिष्ठ कृत जातक भाग्योदय-विचार बालक ज्ञानफलद दशमोध्याय १० मिति श्रावण शुदि ८ सं०१९०३॥
२०.१ × १०.४ सें० मी०	४ (१–४)	११	२१	पू०	प्राचीन	इति जातक लग्न गुण प्रकरण ॥
(सं०सू०७३)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रन्थसंख्या या संग्रह विशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८२	६६३१	जातक विवरण			दे० का०	दे०
१८३	७०४१	जातकसार (सामुद्रिक)			दे० का०	दे०
१८४	६६५८	जातकसार			दे० का०	दे०
१८५	४०१२	जातकसारोद्धार			दे० का०	दे०
१८६	११९२	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१८७	३२९८	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१८८	२९८२	जातकाभरण			दे० का०	दे०

पत्र या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्ति संख्या	प्रतिपंक्ति में अक्षर संख्या	ग्रन्थ पूर्ण है या अपूर्ण विवरण	दशा और प्राचीनता	अन्य ज्ञातव्य विवरण
८ ब	५	६	७	९	१०	११
१६×६.३ सें० मी०	२ (१-२)	२८	४३	पू०	प्राचीन सं०१७२७	इति श्री [illegible] आत्म-[illegible] समाप्त सं० १७२७ फाल्गुन × × × × × ।।
२५.७×१० सें० मी०	१० (१-१०)	१२	४१	पू०	प्राचीन सं०१८८८	इति श्री ज्ञानसारे [illegible] निर्णयानाम षष्ठोऽध्याय ।। × × × × (पत्र सं० ८)
२१×१०.७ सें० मी०	३ (१-३)	१३	४७	पू०	प्राचीन	इति श्री उमामहेश्वर संवादे ज्ञान-सारे संपूर्णम् ।। शुभमस्तु ।। ......
२१.५×११.५ सें० मी०	८ (१-८)	१२	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मयामले उमामहेश्वर संवादे ज्ञान सारोद्धार संपूर्णम् ।। (पृ० ३)
२३.७×११ सें० मी०	५०	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२३.८×१०.६ सें० मी०	२०२	१०	३०	अपू०	सं०१८३६	इति श्री सर्वज्ञानसारोद्धार संग्रह समाप्त शुभमस्तु संवत् १८३६ प्र श्रावण शुक्ल ३ ।।
२८.३×१३.८ सें० मी०	६	१३	४५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८९	२९८५	जातकाभरण			दे० का०	दे०
१९०	५०३७	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१९१	६०१३	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१९२	२४७७	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१९३	३०८	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१९४	२९२४	जातकाभरण	ढुंढिराज दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१९५	४९९५	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०

पत्र या पृष्ठ का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		ग्रन्थ पूर्ण है या अपूर्ण, अपूर्ण अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ ख	ब	ग	ट	१०	१०	१०
२८·७×१०·३ सें० मी०	[illegible]	८	३८	अपू०	प्राचीन	
३१·१×११ सें० मी०	६ (१-६)	११	३६	अपू०	प्राचीन	
३१×११·५ सें० मी०	२८ (१-२८)	६	२७	अपू०	प्राचीन	
२३·८×१०·७ सें० मी०	६६	६	२८	अपू०	प्राचीन	
३१·५×१२·५ सें० मी०	३३	१२	४३	अपू०	प्राचीन	इति जातकाभरणे ध्वज वर्गस्त्राध्याय = ?
२४·३×१०·४ सें० मी०	२	८	२६	अपू०	प्राचीन	
३१·३×१५·५ सें० मी०	४४ (२-८, ११-१७, १६-४८)	१०	४७	अपू०	प्राचीन सं०१८६५	इति श्री दैवज्ञ ढुंढिराज विरचिते जातकाभरणे स्त्रीजातकाध्याय जातकाभरण संपूर्ण ॥ सं० १८६५ आषाढ कृष्ण १३ बुधवासरे लिखितमिदं पुस्तक मिश्रलक्ष्मण तत्सुत मुरलिधर स्वयं पठनार्थम् उमाशिवो-जयति ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९६	४७८४	जातकाभरण	दुंढिराज		दे० का०	दे०
१९७	४७८	जातकाभरण (ग्रहभावफलानि)	दुंढिराज		दे० का०	दे०
१९८	५०५६	जातकालंकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१९९	६७७२	जातकालंकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२००	३७८४	जातकालंकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०१	३०४६/६	जातकालंकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०२	५६५४	जातकालंकार	गणेश गणक		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ब	स	द	९	१०	११
२२.६ × ११.६ सें० मी०	५७ (२-१७, १९-२५, २७-२८, ३०-३१, ३५-३६, ४२, ४५-४७, ४९, ५१, ५३ ५६, ५८, ६३-६६, ६८ ७०, ७२, ८०-८३, ८६-८८, ९५, ९७)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञ दुंढराज विरचिते जातिका भरने हर्ष्यरनाध्याय ॥ (पत्रसं० ८०)

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०३	४३०३	जातकालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०४	१७३४	जातकालकार			दे० का०	दे०
२०५	४३६	जातकालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०६	२४२१	जातकालकार			दे० का०	दे०
२०७	२४०५	जातकालकार			दे० का०	दे०
२०८	६००४	जातकालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०९	३९८४	जातकालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·५ × ११·६ सें० मी०	१० (१–१०)	७	३७	अपू०	प्राचीन	
२४·२ × १०·६ सें० मी०	[illegible] (१०–१६)	१०	३७	अपू०	प्राचीन सं०१८७१	
३० × १२·[illegible] सें० मी०	१४ (५–१८)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०·५ सें० मी०	२१	७	३८	पू०	सं०१८६६	सवत १८६६ माघ वदि ६ ॥ श्री दुर्गायनम ॥
२५ × १२ सें० मी०	११ (१–११)	१२	३७	पू०	प्राचीन सं०१८८३	इति श्री जातकालकारे भार्वाध्याय: समाप्त भाद्रे मासिसिते पक्षेद्वादश्यां बुधवासरे संवत् १८८३ ॥
२१·८ × ११·१ सें० मी०	५ (१, ६, १७–१९)	६	२३	अपू०	प्राचीन	
२९ × १३·५ सें० मी०	६ (१–६)	६	३२	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१०	५११५	जातकालकार			दे० का०	दे०
२११	७०११	जातकालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१२	५४८०	जातकालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१३	६८१२	जातकालकार (टीका सहित)	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१४	६८५४	जातकालकार (दशाध्याय)	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१५	१०३७	जातकालकार (टीका सहित)	गणेश दैवज्ञ	हरिभानु शुक्ल	दे० का०	दे०
२१६	४१६७	जातकालकार (सटीक)	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.४ × १०.६ सें० मी०	९ (१–९)	९	३८	अपू०	प्राचीन	
२४.४ × १०.८ सें० मी०	२० (१–२०)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री गणेश दैवज्ञ विरचिते जातकालंकारे दशाध्याय सप्तम ॥ संवत् १८-५० शक १७१५ श्री मनिरत्नवर्धनम ॥
३०.४ × १४.२ सें० मी०	१० (१–१०)	८	४८	अपू०	प्राचीन	
२३.३ × १०.६ सें० मी०	२८ (१–८, १०–२५, २७–३०)	[illegible]	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री जातकालंकारे टीकायां दशाध्याय समाप्तोयं ग्रंथ ॥
२१.५ × ९.९ सें० मी०	२१ (१–२१)	९	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री गणेश दैवज्ञ विरचिते जातकालंकारे दशाध्याय ॥
३१ × १४.२ सें० मी०	२५ (१–२५)	१४	५०	पू०	प्राचीन सं०१८९६	इति श्रीमच्चतुरनाथ[illegible]भाषिता जातकालंकारटीका सं०१८९६ शाके १७६१ फाल्गुण कृष्ण सप्तमि ॥ चंद्रवासरे दशपुस्तक लिखित मुरलीधर व्यास पठनार्थम् उमाशिरो जयति शिवायनमः ॥
३४.५ × १३.५ सें० मी०	१० (१–१०)	१२	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री जातकालंकारे दशाध्यायः प्रथमः । (पत्रसं० १–३) × × ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१७	७६६६	जातकालंकार सटीक	गणेश दैवज्ञ	हरिभानु शुक्ल	दे० का०	दे०
२१८	७४१२	जातकालंकार टीका	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१९	३५३५	जातकालंकार टीका		हरिभानु	दे० का०	दे०
२२०	६९४३	जातकालंकार टीका	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२२१	३८१५	जातकालंकार सूचीपत्र			दे० का०	दे०
२२२	६६०४	जैमिनि उपदेशसूत्र			दे० का०	दे०
२२१	२५६३	जैमिनि उपदेशसूत्र	जैमिनी		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
३२.३ × १४.४ सें० मी०	२८ (१–२८)	११	४४	पू०	प्राचीन सं० १८८०	इति हरिभानु शुक्ल कृता जातकालंकार व्याख्या समाप्ता शुभमस्तु संवत् १८८० फाल्गुण कृष्णा १२ गुरौ श्री ॥
२६.५ × १०.३ सें० मी०	२०	१५	४०	पू०	प्राचीन (कृमि कृतित)	इति श्री जातकालंकारे टीकाया वशाध्याय समाप्तोऽयं शुभमस्तु संवत् १८६७ शाके १७६२ पौष ■ × ॥
२६.२ × १२.६ सें० मी०	२७ (१–२७)	१३	५०	अपू०	प्राचीन सं० १८८३	इति श्री मच्छुक्लोपनामक हरिभानु-भाविता जातकालंकार टीका समाप्ता संवत् १८८३ शाके १७४६ अश्विन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ११ बुधवासरे ॥
२६.४ × ११.२ सें० मी०	३४ (१–३४)	१०	४५	पू०	सं० १६०८	इति श्री गणेश दैवज्ञविरचिते जातक सकारैवशाध्याय समाप्तः श्री ॥ संवत् १६०८ माघेमासी कृष्णप॰ गुरवासरे लिखितं ..... ॥
२७.७ × १४ सें० मी०	१० (१–१०)	१६	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री ग्रथालंकार प्रकरण समाप्त शुभमस्तु मंगलं ददातु ॥
२७.१ × ११.५ सें० मी०	१६ (१–१६)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति जैमिन्युपदेश सूत्रे चतुर्थाध्याये चतुर्थ पाद ॥४॥ ...
२६.२ × १२.२ सें० मी०	११	१०	३६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२४	७९६७	जैमिनि सूत्र			दे० का०	दे०
२२५	६६१३	जैमिनि सूत्र (सटीक)		नीलकंठ दैवज्ञ	दे० का०	दे०
२२६	६६०६	जैमिनि सूत्र (सटीक)			दे० का०	दे०
२२७	३०२८	जैमिनि सूत्र वृत्ति		कृष्णानंद सरस्वती	दे० का०	दे०
२२८	४२५७	जैमिनि सूत्र व्याख्या		नीलकंठ (व्याख्याकार)	दे० का०	दे०
२२९	६५४४	ज्ञानदीपिका			दे० का०	दे०
२३०	६६०६	ज्ञान प्रदीप			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का ग्राकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या ग्रोर प्रति पक्ति मे ग्रक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	ग्रवस्था ग्रोर प्राचीनता	ग्रन्य ग्रावश्यक विवरण
८ ग्र	८	स	द	९	१०	११
१७.२×११.१ सें० मी०	२	१०	२०	अपू०	प्राचीन	इति जैमिनिसूत्रम्० ॥
२७.२×११ सें० मी०	३१ (१–३१)	१३	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री नीलकंठ ज्योतिर्विद्विरचितायां जैमिनि सूत्र व्याख्यायां सुबोधिन्यां द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थ पाद समाप्त ॥ श्री शाक रस सप्तभूपतिमिते नपाल खड़े वरे श्री श्रीमद्रणजिन्नृपात्त वरे राज्य प्रकुर्वत्यमी ॥ रेग्मी श्री जय शर्म सूरि तनुज श्री नीलकंठोद्विज शास्त्रे जैमिनिना कृते सुविवृति भूपाज्ञया व्यारोत् ॥
२७.७×११.८ सें० मी०	२४ (१–२४)	१७	४७	पू०	प्राचीन	इति जैमिनि सूत्रे तृतीयाध्यायस्य तृतीय पाद ॥३॥
२६.३×१०.४ सें० मी०	८१ (६–८६)	६	४२	अपू०	प्राचीन	
३२×१२ सें० मी०	१४ (१–१४)	१४	५६	अपू०	प्राचीन	इति श्री नीलकंठज्योतिर्विद्विरचितायां जैमिनिसूत्र व्याख्यायां सुबोधिन्यां प्रथमाध्यायस्य चतुर्थ पाद समाप्त ॥ × × ×
२१.२×७.६ सें० मी०	२१ (१–२१)	८	२४	पू०	प्राचीन	ज्ञान दीपिका समाप्ता ॥
२७.४×११.७ सें० मी०	२५ (१–२४) (एक विशिष्ट पत्र)	६	४०	पू०	प्राचीन सं०१९२६	इति श्री ज्ञान प्रदीप वैरनोद कार्य सिद्धि वचनाम काण्ड समाप्त ॥ सं० १९२६ ना १९६४ मार्ग शीर्ष कृष्ण ५ × × ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३१	४७९८	ज्ञानप्रदीपक			दे० का०	दे०
२३२	४५३४/२	ज्ञानबोधिनी	नंदलाल		दे० का०	दे०
२३३	१९७७	ज्ञानभास्कर			दे० का०	दे०
२३४	६५४५	ज्ञानमंजरी	ऋषि शर्माचार्य		दे० का०	दे०
२३५	१२८६	ज्ञानमंजरी			दे० का०	दे०
२३६	६४३६	ज्ञानस्वरोदय			दे० का०	दे०
२३७	६७०	ज्यौतिष सार जातक			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५४×१० सें० मी०	२९ (१–२९)	८	३३	पू०	सं०१७५४	इति ज्ञान प्रदिपके समाप्त ॥ ... ... संवत् १७५४ समये कार्तिके ...
३०×१२२ सें० मी०	५९ (१–५९)	१०	५७	पू०	सं०१८१६	इति श्री मिश्रशिवरामसुतनदलाल विरचिताया ज्ञानबोधन्या सव सरनाम ॥ ज्ञानबोधनी समाप्ता शुभमस्तु श्री कृष्णार्पण मस्तु संवत् १८१६ मार्गवदि ३० खोवहलिखित्तमिद पुस्तक कालू चतुर्वेदिन राम ॥
३०५×१२ सें० मी०	४८	१०	२८	पू०	सं०१९१८	संवत् १९१८ के साल ··· १४ का ॥ लिखित लाल बुर्ज लाल ॥ ·· ··· ·
२४०७×९५ सें० मी०	२१ (१–२१)	१२	३५	पू०	प्राचीन	इति ऋषि शर्माचार्य विरचिताया ज्ञानसंजयसिक्षर प्रश्न विद्या समाप्ता ॥१॥
२२६×११ सें० मी०	३२ (२–३३)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री ज्ञानमंजरी समाप्ता ॥
२३२×१२८ सें० मी०	२२ (१–२२)	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री उमामहेश्वरसंवादे ज्ञान स्वरोदय समाप्तम ॥ मीति [illegible] आषाढ कृष्ण ११ एकादश्य इतवासर संवत् १९८४ बीकरी नाम संवत्सरे उत्तरायन ग्रीष्म ऋतु सन्निपुनर्क समाप्त मुकाम [illegible]
२५३×१२५ सें० मी०	४ (१,२,५,६)	६	१२	अपू०	प्राचीन	जावा । इति श्री ज्योतिर्विसार ज्ञानक समाप्तलिखित लक्ष्मी नाथ भट्ट [illegible] ॥

(म० गु० ७५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३८	७८८०	ज्योति प्रबोध	केशव		दे० का०	दे०
२३९	३५२१	ज्योतिर्विदाभरण			दे० का०	दे०
२४०	२९६३	ज्योतिष कल्पतरु			दे० का०	दे०
२४१	११९०	ज्योतिषकल्पतरु			दे० का०	दे०
२४२	३०११	ज्योतिषकल्पतरु	चूडामणि		दे० का०	दे०
२४३	३०१६	ज्योतिषकल्पतरु			दे० का०	दे०
२४४	३०१७	ज्योतिषकल्पतरु			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ य	व	स	द	९	१०	११
२७ ७ × ११ ३ सें० मी०	७ (१–७)	८	४३	पू०	प्राचीन	
३० ८ × १५ ८ सें० मी०	९	११	४९	अपू०	प्राचीन	
२४ ३ × १२ ६ सें० मी०	४१	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२४ × ९ ७ सें० मी०	७७	८	३८	अपू०	प्राचीन	
२८ १ × ११ ९ सें० मी०	८३ (१–८३)	९	३४	पू०	प्राचीन शाक१५५०	शाके शून्य सरेषु शीन किरणे १५५० वैशाषमासे '' इति श्री कवि चूडा मणि यशरवि विरचित ज्योतिषकल्प तरौ जातक स्कधे द्वात्रिंशोध्याय ३२ शुभमस्तु ॥
२७ ६ × ११ ५ सें० मी०	२२५ (१–५५)	९	३१	पू०	प्राचीन सं०१८८२	इति श्री ज्योतिष कल्पतरौ जातक स्कध विदशा योगिनीदशा कथन नाम षड्विशतिमोध्याय श्री सवत १८८२ माघ मासे कृष्णपक्षे तिथौ १ सोम-वासर लिपिकृतिद पुस्तक छत्रपुर मध्य '' ''॥
२५ ८ × १३ १ सें० मी०	१८ (१–१८)	१३	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री ज्योतिष कल्पतरौ मूल ग्रमदे तृतीयाध्याय ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४५	३४२२	ज्योतिष कल्पतरु	चूडामणि		दे० का०	दे०
२४६	७३२४	ज्योतिषकौमुदी (प्रश्नप्रकरण)	नीलकंठ		दे० का०	दे०
२४७	१२२६	ज्योतिषकौमुदी	नीलकंठ		दे० का०	दे०
२४८	२०५३	ज्योतिष ग्रंथ			दे० का०	दे०
२४९	१६६६	ज्योतिषचंद्रिका			दे० का०	दे०
२५०	१०१५	ज्योतिष जातक			दे० का०	दे०
२५१	३४८६	ज्योतिषतत्व (ज्योतिष प्रश्न)	चिंतामणि		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ब	स	द	९	१०	११
२३.७×१० सें० मी०	६२१	॥	३७	अपू०	शाके १५६५	शाके पचांग बाणदी १५६५ वैशाखे मुखमरे ॥ पचम्या शुक्ल पक्षेतु श्री मद वृदावनान्ते ॥ ... ... इति श्री हरि चूड़ामणि विरचिते ज्योतिषकल्पतरौमिश्र स्कंधे उपसहारो नाम पर्वविशो समाप्तश्चाय स्कंध ॥श्री॥
२४.४×१०.३ सें० मी०	३	८	३०	अपू०	प्राचीन सं०१८३६	इति श्री नीलकंठविरचित ज्योतिष कौमुधा प्रश्न प्रकरण ॥सं०१८३६ मिती वैशाख कृष्ण द्वितीया २ शनौ लिखित हरीराम दीक्षित × × × ॥
२४.५×१०.६ सें० मी०	३७ (१–३७)	८	३३	पू०	सं०१८०७	इति श्री नीलकंठरचित ज्योतिषकौमुद्या प्रश्नप्रकरण समाप्तम ॥ संवत १८४७॥ मिति आषाढ शुदि द्वितीया सोमवासर ॥श्री॥
२१.२×८.१ सें० मी०	५ (१–५)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति ज्योतिष ॥ ... ...
२०×१० सें० मी०	६	८	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री ज्योतिष चंद्रिकायां पचागा-ख्यो प्रथम प्रकाश ॥ ॥श्री रस्तु॥
२५.५×११.६ सें० मी०	२३	६	२६	पू०	सं०१९८८	सवत सम्वत १९८८ समैनाममनीति जेठ सुकुला अष्ठम्या रविवासर ॥
२७.६×१२.५ सें० मी०	२० (१–२०)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञ चूडामणि श्री मन्महा-राज वदित पादाबुज सिष्य जनानान-दकारि सर्वविद्याकुशलशास्त्रपुकृतश्यम श्रीचिन्तामणि पंडितवर्यै विरचितायां ज्योतिः शास्त्रे प्रथम तंत्र संपूर्णम ॥ (पृष्ठ संख्या–१२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५२	२५१४	ज्योतिष प्रश्न			दे० का०	दे०
२५३	९६५	ज्योतिष प्रश्न			दे० का०	दे०
२५४	२०६५	ज्योतिष यंत्र संग्रह			दे० का०	दे०
२५५	६८४८	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२५६	५०८१	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२५७	२८६७	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपतिभट्ट		दे० का०	दे०
२५८	४४३७	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपतिभट्ट		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.५×९.५ सें० मी०	२०	१०	४१	अपू०	प्राचीन	
३०×१३ सें० मी०	४ (१–४)	११	३५	पू०	प्राचीन	
१३.८×८.७ सें० मी०	२५	११	१६	पू०	प्राचीन	
२४.८×१०.६ सें० मी०	२६ (१–२६)	११	५३	पू०	प्राचीन	इति श्री श्रीपति भट विरचितायां ज्योतिषरत्नमाला समाप्त "
२३.४×११.४ सें० मी०	६ (३ ६ १२ २०)	१३	३८	अपू०	आधुनिक	इति श्री श्रीपत भट विरचितायां ज्योतिरत्नमालायां महूर्त प्रकरण × × × (पृ० १०)
२३.४×८.३ सें० मी०	५२ (१–५२)	[illegible]	२८	पू०	प्राचीन सं०१७७५	इति श्री पति भट्टविरचितायां ज्योतिष रत्नमालायां देवप्रतिष्ठा प्रकरण विंशतिम समाप्त ॥ शुभ मस्तु ॥ समत १७७५ शाके ॥१६४०॥ समये पोष शुदि ७ सप्तमी गुरौस्ह ॥ राम ॥ राम ॥
२६×१०.४ सें० मी०	३५(२ ८ १३ १८ २२ ३० ३० ४१ ४१ ४३ ४५ ४७ ४९ ५३ ५४ ५६)	५	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री श्रीपति विरचितायां ज्योतिष रत्नमालायां योग प्रकरण चतुर्थ × × (पृ० १४)

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५६	१३७१	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६०	३१५०	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६१	५३०८	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६२	६५४६	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६३	७३६	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६४	४८१०	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६५	४८३२	ज्योतिष रत्नमाला (लग्नप्रकरण)	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
२४.५×११.५ सें० मी०	२६ (२–२७)	१४	३८	अपू०	प्राचीन	
२४×१०.३ सें० मी०	२५ (१–२५)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	
२३.८×११.५ सें० मी०	८ (२-७,८-१५, १६)	१३	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिष॰ शास्त्रमालाया लग्न प्रकर्णं ॥ (प० १६)
२६.८×१०.२ सें० मी०	३१ (१–३१)	६	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिषरत्नमालाया लग्न प्रकरण द्वादश ॥
२५.३×११.५ सें० मी०	६६ (२–६७)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
२२×८.४ सें० मी०	४७ (२–४५ ५०–५२)	६	३३	अपू०	सं०१८२७	इति श्री श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिष रत्नमालाया सुर प्रतिष्ठा प्रकरण ॥ संवत १८२७ मार्ग सुदि १२ वृधेक पुस्तक लिखित मोढरामेण स्वपाठार्थं ।
२७.५×११.५ सें० मी० (द०सू०७६)	३६ (१–३६)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिष रत्न मालाया लग्न प्रकर्णम् द्वादशम् ॥

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६६	६१३७	ज्योतिषसंग्रह			दे० का०	दे०
२६७	७०५३	ज्योतिषसंग्रह			दे० का०	दे०
२६८	१६२०	ज्योतिषसंग्राहिका			दे० का०	दे०
२६९	६१६३	ज्योतिषसार	नरचंद्र		दे० का०	दे०
२७०	४६०८	ज्योतिषसार			दे० का०	दे०
२७१	१७७४	ज्योतिषसार			दे० का०	दे०
२७२	४२७६	ज्योतिषसारसंग्रह (बालबोधर)	मुंजादित्य		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	ग्रन्थ की प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१६.८×७.८ सें० मी०	६	७	२०	अपू०	प्राचीन	
१७.७×८.६ सें० मी०	६१	८	१८	पू०	प्राचीन	
२१×१६ सें० मी०	३२	१६	१५	अपू०	कृमि लित	
२५.२×१०.३ सें० मी०	८	१६	४५	अपू०	प्राचीन	अहत जिन नत्वा नारचद्रगणीमता सार भूधराते किंचि ज्यातिष क्षीर नारध ॥१॥ स्वरस्वती प्रसादनय लक्का द्वार रूप्यन्त । वरिष्य नरचद्रोह । मुग्धाना वाध हेतव ॥२॥ (प्रारभ)
२२.८×१६.३ सें० मी०	■ (१–७)	१२	२२	अपू०	प्राचीन सं०१६११	इति जावनोसारसास्त्र समाप्त सवत् १६११ पोषमुदाद्वताम गुरु वासर तादिन समाप्त सुभमस्तु मगल ददात ।
२४×१२.४ सें० मी०	५ (२–६)	११	३८	अपू०	प्राचीन सं०१८७६	इति श्री जातिकसार सास्त्र समाप्त सपूर्ण चैत्र शुक्ल पक्ष तिथी ७ भृगु वासरे संवत १८७६ लिप्यत प श्रार छरिया जुगन परमाद सेवक कृष्ण के ॥
२३×६.७ सें० मी०	१२ (२–७, १३, २१–२५)	८	३१	अपू०	प्राचीन सं०१८५३	इति श्री मुजादित्येन विप्रेन ॥ विरचित जातिप सार सग्रहा बालबोधकावसारसग्रह संपूर्ण । सवत ॥१८॥५३॥ प्रभीनाम सवत्सरे ॥क्वार माश शुभ्ये शुक्ल पक्ष त्रियादसी शुक्रवासर ... ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रन्थसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२७३	८७२६	ज्योतिष सारसंग्रह			दे० का०	दे०
२७४	१६३६	ज्योतिषादि संग्रह			दे० का०	दे०
२७५	७१३४	ताजकसार			दे० का०	दे०
२७६	६६२६	ताजिक (द्वादश ग्रहफल)			दे० का०	दे०
२७७	५५२५	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ		दे० का०	दे०
२७८	२०४५	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२७९	५८८३	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३७×११ सें० मी०	१७ (१–१७)	८	४५	अपू०	प्राचीन	इति ज्योतिष सार संग्रह नाम नक्षत्र गोचार गुरु रवि शुद्धिनाम द्वितीयास्तवक ॥२॥ (पत्र संख्या–७)
१७ ५×१२ सें० मी०	२२	१६	१५	अपू०	प्राचीन	
२४४×१० १ सें० मी०	३१ (१–३१)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	
१६×६३ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	२०	पू०	प्राचीन सं०१७५३	ईति राहुफल ईति ताजिक द्वादश भुवन पटान फल स्माप्त श्री शुभमस्तु यादृष्ट पुस्क दृष्टवा तादृष्ट लीपति मया × संवत् १७५३ मास सा० ॥
२४८×१० ७ सें० मी०	४४ (१–४४)	८	३४	अपू०	प्राचीन	
३३ १५×२ सें० मी०	३	१३	४१	अपू०	प्राचीन	
२२ ५×१० ५ सें० मी०	१० (१–२, ४–११)	६	४३	अपू०	प्राचीन	

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८०	६८१०	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२८१	६६६२	ताजिक नीलकंठी	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२८२	२७२०	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ		दे० का०	दे०
२८३	२७२८	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ भट्ट		दे० का०	दे०
२८४	१२८०	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२८५	४६०	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२८६	२४६३	ताजिक नीलकंठी			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.२×१०.६ सें० मी०	२८ (१–२८)	९०	३८	अपू०	प्राचीन	
३२.०×१२.५ सें० मी०	५६ (१–५६)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	इति दैवज्ञवर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचित नीलकंठ ज्योतिर्वित् कृत समातत्र षोडशयोगाध्यायस्य व्याख्यो दाहृति समाप्ता ॥ (पृ ४६)
२३.३×११.६ सें० मी०	२५ (१–२५)	९	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री नीलकंठाचार्य विरचिते नील-कंठीताजक संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥
२४.२×१२.४ सें० मी०	२१ (१–२१)	११	३८	अपू०	प्राचीन	
३१.५×१२ सें० मी०	६ (१–६)	९	४५	अपू०	प्राचीन	
२८.६×१५.२ सें० मी०	२९ (१–२९)	१३	३४	पू०	सं०१९०९	इति श्री नीलकंठ विरचितताजक समाप्त ॥ शुभमस्तु मंगल ददातु संवत १९०९ शाके १७७४ पौष कृष्ण अष्टम्यां चंद्रवासरे लिखित मिश्र शिवदयाल श्री ॥
२४.५×९.८ सें० मी०	३१ (३४७९ २९ ३१ ३३)	८	२९	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८७	३३०६	ताजिक नीलकंठी			दे० का०	दे०
२८८	४१२४	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ भट्ट		दे० का०	दे०
२८९	१७४१	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२९०	५२४५	ताजिक नीलकंठी (वर्षतंत्र)	नीलकंठ		दे० का०	दे०
२९१	६५४८	ताजिक नीलकंठी (वर्षतंत्र)	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२९२	४८५	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२९३	७०१३	ताजिक नीलकंठी (गणनातंत्र)	नीलकंठ		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२३ ६ × ११ २ सें० मी॰	१८ (१–१८)	१३	३५	पू०	प्राचीन सं०१७७८	शके नदाश्रमणेंदुमित आश्विन मासके। शुक्लेष्टम्या···· ···संवत् १७७८ शाके १६४३ कार्तिक शुक्ल पचमी रवि वासरे समाप्त पुस्तक ॥ ताजक नील कठी लिखित··· ··· ······ ···॥
२६ × १३ सें० मी०	३७ (३–३७, ३६–४२)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२५ ३ × ११ सें० मी०	७०(१-२२, २५-२६,३०-३२,३५ ५०, ५६-६२,६६-७२,७६,७६-८८,६२-६६)	५	२८	अपू०	प्राचीन	
२७ × १३ ६ सें० मी०	२५ (१–२५)	११	३०	पू०	रचनाकाल—शाके—१५०६ लिपिकाल—संवत्—१८६६	शाके नदाभ्रबाणेंदु ॥१५०६॥ मिति अश्विन मासिके शुक्लेष्टम्यामनुग्रय नीलकठ वधाकरोत ॥ इति श्री काशी निवासि नालकठ विरचित वष तन्त्र द्वितीय समाप्त ॥ श्री स० १८६६॥ तत्रवर्षे महामागल्यप्रदे मासोत्तमे मासे फाल्गुनमास शुक्ले पक्षे शुभ तिथौ एकादश्या ११ शुक्रवासरा ·· ···
२४ ७ × १० ५ सें० मी०	२८ (१–२८)	[illegible]	३०	पू०	प्राचीन	शके नदा बाणदूमित आश्विन मासके शुक्लोष्टम्या वष तत्र नीलकंठबुधो ऽकरोत ॥५॥ शुभभवतु लीखीत वास देव ह्मय ॥
३० × ११ ५ सें० मी०	२७	११	५०	पू०	सं०१८३८	इति वष तत्र सपूर्ण ॥स० १८३७ शाके ७०२ मासोत्तमेमासे अस्वन मासे। शुक्ल पक्ष। पुष तिथौ दसम्याया ।१०। रव वासरे। लिपत जोत गराय पुत्र राम प्रसादना। नाग बाण। शुभ। शुभ श्रीरामजी सदा सहाय। सरस्वति नम ॥शुभ॥
२४ ६ × ११ १ सें० मी० (म०स०७७)	१८ (१–१८)	६	३०	पू०	प्राचीन स०१८८२	इति श्री नीलकण्ठ्या सज्ञातत्र समाप्तं + + स० १८८२ समाप्त + ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२९४	४६६	ताजिक (संज्ञा तंत्र) (सटीक)		समरसिंह	दे० का०	दे०
२९५	६१,४७	ताजिक नीलकंठी (संज्ञा तंत्र)	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२९६	१४६	* ताजिक नीलकंठी (संज्ञातंत्र प्रकाशिका टीका) उत्तरार्ध	नीलकंठ दैवज्ञ	विश्वनाथ	दे० का०	दे०
२९७	२६४	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ	दिवाकर दैवज्ञ	दे० का०	दे०
२९८	२६८१	ताजिक नीलकंठी (संस्कृतटीका)	नीलकंठ दैवज्ञ	विश्वनाथ दैवज्ञ	दे० का०	दे०
२९९	५८०	ताजिक नीलकंठी (संस्कृतटीका)			दे० का०	दे०
३००	२६९	ताजिकनीलकंठी (सं० टीका) विभुदायिनी	नीलकंठ दैवज्ञ	माधव	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२.५ × १४.५ सें० मी०	१३ (२–१४)	१४	४४	अपू०	सं०१९०७	""समरसिंह कृत ताजिक तंत्रे स्फुट प्रकटार्थमुक्तमस्ति" (पृ० ६) इति हर्षस्थान विचारयेत् लीख्यत राम गोपाल चुलढघं कापडयावासमध्य सं० १९०७ पौ० कृ० १३ ॥
२५ × १०.४ सें० मी०	२३ (१–२३)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंतसुत नीलकंठी विरचित संज्ञा तंत्र समाप्त ॥ इद पुस्तक दिक्षि तमाएा थेश्वर ज्योतिर्विदो
२४.५ × १०.१ सें० मी०	७४	१२	३१	पू०	प्राचीन शक सं० १५५१	प्रकारिविश्वनाथेन सज्ञातंत्र प्रकाशिका ॥ टीकाटीकाकृता कृपारिसज्जालज्जानुबधनम् ॥१॥ चन्द्रवाण शरचन्द्र १५५१ सम्मिते हायनेनृपतिशलिवाहन । मार्गशीर्षसित पञ्चमी तिथौ विश्वनाथ विदुषा समापिता ॥२॥ गोदावरीतटे भाति गोलग्रामोऽति सुन्दर ॥
३१.७ × १२.७ सें० मी०	२२ (१–२२)	११	४१	पू०	प्राचीन सं०१९१९	इति श्री दिवाकर दैवज्ञ विरचिते श्री नीलकंठ ज्योतिर्वित कृत सज्ञातंत्रे पचाशत्सहम सहित समाप्तम् तीयाध्याय संवत् १९१९ मार्गशिर शुक्ला ३ चद्र वासरे लिपि कृत मानदि रामात्मज विहारिणा मोरखाघ्य वासिना शुभम् ॥
२७.२ × १५.६ सें० मी०	१३	१६	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचित नीलकठ ज्योतिर्विद्कृत सज्ञातंत्रे सहमाध्यायस्य व्याख्योदाहृति समाप्ता ॥
२७ × ११.७ सें० मी०	१२ (१–१२)	१३	४०	अपू०	प्राचीन	
३१.७ × १२.८ सें० मी०	३३ (१–३३)	१३	४५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगमनसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०१	२२८	ताजिक नीलकंठी (१–२ तंत्रम्)	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
३०२	२७१०	ताजिक भाव विचार			दे० का०	दे०
३०३	१०६	ताजिक भूषण	गणेश गणक		दे० का०	दे०
३०४	६६	ताजिक भूषण	गणेश गणक		दे० का०	दे०
३०५	५२३७	ताजिकसार	हरिभट्ट		दे० का०	दे०
३०६	७८६	ताजिकसार			दे० का०	दे०
३०७	७५७	ताजिकसार			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	६	१०	११
२७ × ११ सें० मी०	२६ (१–१२, १–१७)	१२	४३	पू०	प्राचीन	इति नीलकण्ठ्यां द्वितीयतंत्रं समाप्तं लिखितं हरिराम दीक्षितमराठले करेण स्वार्थ ॥ शुभमभूयात्लेखक पाठकानां॥
२५.४ × ११.६ सें० मी०	२३ (१–२३)	८	३५	पू०	प्राचीन सं० १८२६ श० १६९१	... संवत् १८२६ शाके १६९१ वैशाख सुदि १ ॥
२५ × ९.१ सें० मी०	५४ (१–५४)	८	२६	पू०	प्राचीन सं० १७५५ श० १६२०	इति श्री मदर्दवज्ञ ढुंढिराजात्मज गणेश दैवज्ञविरचितेतां जिक भूषणे भोजन चिन्ताध्वंस ॥ समाप्ता यं ग्रंथ ॥ समाप्त । शुभमस्तु ॥ संवत् १७५५ शके १६२० प्रथम ज्येष्ठ वदि १३ गुरुवासरे मुकुंदपुर नगरे श्रीमहाराजा अवधूतसिंह देवस्य पुस्तक लिखित मिद । श्रीमिश्रन्त हनुमनेन ॥
२६.८ × १४ सें० मी०	१७ (१–१७)	१५	४४	पू०	प्राचीन सं० १८८६	इति श्री मद्दैवज्ञ ढुंढिराजात्मज गणेशगणक विरचिते ताजिक भूषणे भोजन चिंता विचाराध्याय ॥ समाप्तोयं ग्रंथ उमाशियोजयति भ्रातसतु संवत् १८८६ चैत्र शुक्ला १३ चंद्रदिने लिखितमिदं पुस्तक मिश्र मुरलिधर स्वयं पठनार्थम् श्री ॥
२६.७ × ११.१ सें० मी०	३५ (१–३५)	६	३७	पू०	सं० १७७८	इति श्री हरिभट्ट विरच्यते ताजिकसारे दिनप्रकरणं समाप्त संवत् १७७८ ज्येष्ट मासे शुक्ल पक्षे १ प्रतिपदायां ताजिक सार ....
३४.४ × १२.८ सें० मी०	१६ (७, ६–२०)	६	६२	अपू०	प्राचीन	
२६ × १०.३ सें० मी०	८ (२,६,११, १५-१७,३२, ३४)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०८	४२७२	ताजिकसार	हरिहर भट्ट		दे० का०	दे०
३०९	७५९८	ताजिकसार			दे० का०	दे०
३१०	७६२६	ताजिकसार	हरिभट्ट		दे० का०	दे०
३११	१०५५/२	तिथि ज्ञानम्	काशीनाथ		दे० का०	दे०
३१२	५६००	तिथितत्व दर्शन (तिथि निर्णय)	शिवगोविंद पंडित		दे० का०	दे०
३१३	५१११	तिथिनिर्णय			दे० का०	दे०
३१४	२५३२/१७	तिथिनिर्णय			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रतिपक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४×१० सें० मी०	४ (१–४)	६	३७	अपू०	प्राचीन	
२०.५×९ सें० मी०	४६ (१–४६)	९	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्रीताजक सारे मिश्रभावाध्याय ... .. (पत्र सख्या ४६)
१९.७×११.८ सें० मी०	२७ (१–२७)	१५	२६	पू०	प्राचीन सं०१८४१	इति श्री हरिभट्ट विरचित ताजिकसार सपूर्णम् स० १८४१ शाके १७०६ मिति आषाढ कृष्णामाया गुरु वासरे
२०.३×१०.८ सें० मी०	४ (१–४)	९	२५	अपू०	प्राचीन	
३०.७×१२.३ सें० मी०	११ (१–११)	९	३७	पू०	प्राचीन सं०१९१६	इति श्री मद्रामचद्र चरणारविंद मजिमकरद मधुपेन शिवगोविंद पडितेन विरचित तिथितत्व दर्शन नाम तिथि निर्णय समाप्त शुभमस्तु शुभमूयात् स० १९१६ के साल अश्विन वदि "
२२×१० सें० मी०	४ (४–६,९)	८	२१	अपू०	प्राचीन	
१३.७×११.५ सें० मी०	२३	९	२४	पू०	प्राचीन सं०१९०२	सं०१९०२ के साल मिति चैत्रवदि ३० ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३१५	२३१	तिथिपत्र			दे० का०	दे०
३१६	२५३२/१७	तिथि प्रकाश			दे० का०	दे०
३१७	७६४६	तिथिप्रकाश निर्णय	गदाधर		दे० का०	दे०
३१८	७३५०	तिथिराशि शुभाशुभ विचार			दे० का०	दे०
३१९	२४७	* तिविक्रमशतम्	त्रिविक्रमाचार्य		दे० का०	दे०
३२०	६६५४	त्रिशद् श्लोकी टीका	राम		दे० का०	दे०
३२१	७८१४	दर्पण	वराह मिहिर		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६×९.५ सें० मी०	५२	१६	२७	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
१३.७×११.५ सें० मी०	१०	१२	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री तिथि प्रकाश समाप्त शुभमस्तु ॥
६१×८९ सें० मी०	५ (१–५)	८	३२	पू०	प्राचीन सं०१८७४	इति श्री द्विवेद गंगाधरकृतौ तिथिप्रकाश निर्णय समाप्त शुभमस्तु ॥ सं०१८७४ चैत्र सुदि ३ गुरौक पुस्तक लिखित × × ×
२२.३×१०.४ सें० मी०	५	६	२५	अपू०	प्राचीन	
२६.८×१०.७ सें० मी०	५ (१–५)	१२	३६	पू०	प्राचीन सं१८३७	इति श्री त्रिविक्रमाचार्य विरचित त्रिविक्रमशतं संपूर्ण ॥ सं० १८३७ ॥ शाके ॥ १७०२ ॥
२६.१×११.३ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	४३	पू०	प्राचीन सं०१६१७	इति सित विश्रम वर्यर्णया कृष्णके मंजरी निवद्धा कर्न वालुकाया वशे गोरक्षपुर स्थिति सुरजनुपा रामेण कृत ॥ सं० १६१७ माघे मास ॥
२४.६×१०.६ सें० मी०	१० (१-८-१०-११)	६	२७	अपू०	प्राचीन	इति दर्पणल समाप्त ॥ श्री ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२२	४४११	दशाचक्र			दे० का०	दे०
३२३	६६५०	दशाचिंतामणि			दे० का०	दे०
३२४	७६८८	दशाचिंतामणि			दे० का०	दे०
३२५	४८३५	दशाफल			दे० का०	दे०
३२६	२५३२/१७	दिवामुहूर्त			दे० का०	दे०
३२७	२६२२	दैवज्ञचिंतामणि			दे० का०	दे०
३२८	४०१२	दैवज्ञ जीवन	श्रीलक्ष्मण त्रिपाठी		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२६ ७ × ११ ४ सें० मी०	५ (२–६)	६	४२	अपू०	प्राचीन	
२४ ३ × १० ४ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति दशाचिंतामणि समाप्त ॥
२७ ३ × ११ ४ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	३४	पू०	प्राचीन	
२३ ५ × ६ सें० मी०	१२ (१–१२)	७	३२	अपू०	प्राचीन	
१३ ७ × ११ ५ सें० मी०	१३३	६	२३	पू०	सं०१९२४	अथ शुभ सं० १९२४ के शाके १७८९ कार्तिक वदि १५ समाप्ति दिन लिपि तेद पुस्तक श्री पंडित गगारामेपु
३२ × १२ ८ सें० मी०	६ (१–५, ७)	७	३४	अपू०	प्राचीन	
३४ × १५ १ सें० मी०	३३	१७	२८	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्री द्विज दिनकरात्मजत्रिपाठी श्री लक्ष्मण वृहत्तावत्सराय विरजितास्त्रिगुण संहिता ··· (पुष्पिका)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२९	७५३३/३	दीपज्ञान			दे० का०	दे०
३३०	६२८२	द्वादशराशिपत्र			दे० पा०	दे०
३३१	७५०५	द्वादशराशिफल प्रश्नावली			दे० पा०	दे०
३३२	५३३२/८	ढ़िघटिका मुहूत			दे० का०	दे०
३३३	४०८५	ढ़िघटिका मुहूत			दे० का०	दे०
३३४	२६३२/१७	ढ़िघटिका मुहूत			दे० का०	दे०
३३५	७३७६	धीकोट (पवनपरिक्षानाधिकार)	श्रीपति		दे० पा०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१७२×१०५ सें० मी०	२	८	१६	पू०	प्राचीन	इति दीपज्ञान ॥
२०५×११ सें० मी०	७ (१–७)	१३	३२	पू०	प्राचीन सं०१६१५	इति श्री राशी मण्डल द्वादश राशी फल ॥ समत १६१५ शाके ७७८० भादा शुक्ल त्रयोदशी॰ ...
२१८×१२ सें० मी०	८ (१–)	६	२७	पू०	प्राचीन सं०१८५८	इति द्वादश रासिफल लिप्यते ॥ शुभ-मस्तु सिद्धिरस्तु संवत १८५८ फालगुन वदि ...
२१६×१५६ सें० मी०	३	१३	२३	पू०	प्राचीन	इति शिवशिवा विरचित दुघटीया मूहूर्त सपूर्ण ॥ श्री ॥
२३×३८ सें० मी०	१६ (१–१६)	४	३७	पू०	प्राचीन सं०१८५६	इति श्री ज्योतिः शास्त्रसारे पार्वती शिव सवादे शिव प्रोक्त द्विघतिकासमाप्त ॥ सवत १८५६ शाके १७२१ ... ॥
११७×१५५ सें० मी०	१६ (१–१६)	१४	२८	पू०	सं०१६२४	इति श्री सिव कृतद्विघटिकामुहूर्तं सपूर्ण शुभमस्तु ॥ सवत् १६२४......
२१८×११० सें० मी०	५	६	२४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३६	२४८१	नक्षत्र कष्टावली			दे० का०	दे०
३३७	६८०८	नक्षत्र चूडामणि			दे० का०	दे०
३३८	७०१२	नक्षत्र विधान			दे० का०	दे०
३३९	१०४१	नक्षत्रायुर्दशाफलम्			दे० का०	दे०
३४०	५८६१	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०
३४१	२५८४	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०
३४२	६८७३	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है। अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१६.२×८.३ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति नक्षत्र अष्टावलि संपूर्णा ॥
२३.६×१०.३ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	३३	पू०	प्राचीन	॥ इति श ॥
२२.८×६.६ सें० मी०	५ (१–५)	६	३६	पू०	प्राचीन	इति नक्षत्र विधान संपूर्ण ॥ × ×
२६.२×१०.८ सें० मी०	११ (१–११)	८	२८	पू०	प्राचीन सं०१८१२	इति श्री मणि श्रब्दर्म्यारिमअमा(घ) व रचितेनक्षत्रापुद्गणा प्रश्नविभागा-नयानफल समाप्तम ॥
२४.१×१०.२ सें० मी०	१३ (१–१३)	१२	४१	अपू०	प्राचीन	इति नरपति जयचर्यायां स्वरोदये षड्‌ङ्गे सप्ताध्याये शास्त्र संग्रहो नाम प्रथमाध्याय ॥ (पृ० ४)
३२.१×१२.२ सं० मी०	६१ (३०–५६, ५६–८३, १३१–१४१)	१३	४७	अपू०	प्राचीन सं० १८७०	इति श्री नरपति कवि विरचितायां नरपति जयचर्या ग्रंथ संपूर्ण ॥ सं० १८७० ।
२७.६×१३.६ सें० मी०	२२७ (१–२२७)	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री पंडित नरपति विरचितेयां यात्राप्रकर्णानिमित्तशकुनानिमाध्यानि × × ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रागतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३४३	६६०१	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०
३४४	३७५०	नरपतिजयचर्या			दे० का०	दे०
३४५	७३४०	नरपतिजयचर्या-स्वरोदय	नरपति		दे० का०	दे०
३४६	१६२१	नरपतिजयचर्या-स्वरोदय			दे० का०	दे०
३४७	५०५४/१५	नवार तिथिनक्षत्रयोग			दे० का०	दे०
३४८	६६२१	नष्टजन्म पटल			दे० का०	दे०
३४९	६१८	नष्टजन्माध्याय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९.९ × ११.२ सें० मी०	९४	९	३५	अपू०	प्राचीन	इति नर प० रज्जुवधे चक्र ॥
३३ × १२.५ सें० मी०	३० (५-३०,१२७, १२९,१३१, १३२)	१३	४४	अपू०	प्राचीन	
३१.७ × १३.३ सें० मी०	६५ (१-६५)	१२	५२	पू०	प्राचीन स०१८६५	इति श्री नरपति जयचर्य्याया स्वरोदये तात्कालिक पचाग समाप्तम् ॥······ शाके १७३० । स० १८६५ ·· ···
२५ × १२ सें० मी०	२३	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
१६ × ७.८ सें० मी०	८	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२०.७ × ९.३ सें० मी०	२ (१-२)	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्र सहितायां हर पार्वती सवादेनष्टजन्म पटलाध्याय समाप्त ॥ श्री शिवार्पण मस्तु ॥
२३.९ × १०.५ सें० मी०	१० (१-१०)	१४	३८	अपू०	प्राचीन	
(म०सू०७६)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५०	६६१७	नष्टजातक			दे० का०	दे०
३५१	७७६८	नष्टजातक			दे० का०	दे०
३५२	२८०३	नष्टजातक			दे० का०	दे०
३५३	६६२६	नष्टजातक प्रश्न			मि० का०	दे०
३५४	२२७६	नरचंद्रटिप्पन	श्रीसागरचंद्र सूरि		दे० का०	दे०
३५५	२६७६/२	नारायण प्रश्न			दे० का०	दे०
३५६	६६१०	निषेककालशुद्धि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	६	१०	११
२७·३ × ११·२ सें० मी०	३ (१–३)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति प्रश्न मार्गे नष्ट प्रकाराध्याय-स्समाप्तिमगमत् ॥ · ··· ··
२०·३ × १६ सें० मी०	३ (१–३)	१७	२५	अपू०	प्राचीन	
२७ ३ × ११·६ सें० मी०	२ (१–२)	८	२६	पू०	प्राचीन	इति नष्टजातकाध्याय ॥
१६ ८ × ६·५ सें० मी०	४	११	३५	पू०	प्राचीन	इति प्रश्नमार्गेनष्टप्रश्नराध्याय ॥
२४ १ × १२ ५ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	२६	पू०	प्राचीन स०१८०७	इति नारचन्द्रटिप्पनके श्रीसागर-चन्द्र सूरि कृते प्रथम प्रकीर्णक सवत् १८०७ वर्षे श्रावणवदि तृतीया-३ बुधवासरे लिखित व्यास जय शङ्करेण ॥
१७ ८ × १२ ५ सें० मी०	१५½	१२	२४	अपू०	प्राचीन	
२७ ६ × ११·६ सें० मी०	६	१३	४४	पू०	प्राचीन स०१६२६	स० १६२६ आषाढ व १३ बुधे विनायक वेतालस्याय लेखः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५७	१९०५	नीलकंठी	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
३५८	२५३२/१७	नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
३५९	६६६३	नीलकंठी (उत्तरार्द्ध)	नीलकंठ	विश्वनाथ दैवज्ञ	दे० का०	दे०
३६०	२६१७	नीलकंठी (उत्तरार्द्ध)	नीलकंठ	विश्वनाथ दैवज्ञ	दे० का०	दे०
३६१	६८७७	नीलकंठी (टीकासहित)	नीलकंठ		दे० का०	दे०
३६२	७३३४	नीलकंठी (सज्ञातक)	नीलकंठ		दे० का०	दे०
३६३	७४७	नृपान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	९	१०	११
२१ ६ × १४·३ सें० मी०	४० (१–४०)	१२	३७	पू०	प्राचीन सं०१६१७	इति श्री दैवज्ञानंतसुत दैवज्ञ राम विरचित वर्षफल ···मासफले च दिनफले नीलकंठ नाम ग्रंथ सपूर्णं ॥ समाप्त शुभमगल दद्यात ॥ सवत् १६१७ । मिति फगुन वदि ॥३॥ शुक्रे···
१३ ७ × १४ ५ सें० मी०	१२	१५	२६	पू०	प्राचीन	इति नीलकंठा तत्रे प्रश्न समाप्त ॥
३१ × ११ ६ सें० मी०	२१	६	४४	अपू०	प्राचीन जीर्ण	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मविजा विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते नीलकंठ-ज्योतिर्वित्कृत सज्ञा तत्रे सहमाध्यायस्य व्याख्योदाहृति समाप्ति सपूर्ण ॥
२३ ७ × १२ ३ सें० मी०	३१ (२२–५२)	१०	३८	अपू०	स०१८६६	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मविजा विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते नीलकंठ-ज्योतिर्विन्न कृत सज्ञा तत्रे सहमाध्यायस्य व्याख्योदाहृति समाप्ति सपूर्ण ॥सवत् १८६६ शाके १७३४॥
२४ ३ × १० २ सें० मी०	२६ (१–२६)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	
२७ १ × ११·४ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	३८	पू०	प्राचीन सं०१६१२	इति श्री नीलकंठ कृत सज्ञाविवेके सहमानिव्यदद्यात् ॥ प्रथमतत्र समाप्त । × × × ॥
२५ १ × १० ६ सें० मी०	६ (१–६)	११	२६	पू०	प्राचीन सं०१६०७	इति श्री नुयान पुस्तक समाप्त श्रावन मासे कृष्णपक्षे कृष्ण चतुर्दस्यबुधवासरे सवत् १६०७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६४	४६८७	पचपक्षी			दे० का०	दे०
३६५	५०९६	पचपक्षी			दे० का०	दे०
३६६	४०३२	पचपक्षी			मि० का०	दे०
३६७	३००७,	पचपक्षी प्रश्न			दे० का०	दे०
३६८	६७३९	पचपक्षी प्रश्न			दे० का०	दे०
३६९	५३३२/८	पचम भाव विचार			दे० का०	दे०
३७०	२८६४	पचशरा	परमेश्वर उपाध्याय		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८.५×१२.५ सें० मी०	६ (१–६)	११	४४	पू०	सं०१९०९	इति श्री शीवोक्त पचपक्षि समाप्तम् । शुभ सम्वत १९०९ ॥ शाके १७७४ ... ...
२०×७.६ सें० मी०	२५ (१–९,१–७,१–९)	६	३३	अपू०	प्राचीन	अथ पचपक्षिणा सख्या विधीयते ॥ (प्रारम्भ) ... ...
२०×७.७ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	३९	पू०	स०१९२५	इति पचपक्षी समाप्ता ॥ सवत १९२५ मार्गशीर्षवद्य शुक्रवार हर्डीकरोपनाक राम चद्रेण लिखित स्वा० ॥
२४×१५ सें० मी०	२	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति पचपक्षी प्रश्न सपूर्ण ॥
३३.२×१०.२ सें० मी०	३ (१–३)	१२	५३	पू०	प्राचीन	इति रत्नाकर खडे स्कन्दागस्त्य सवादे पचपक्षी प्रश्न' समाप्त' ॥ लिखितमिद विनायक वेतालेन ॥
२१.६×१४.६ सें० मी०	२	११	२८	पू०	प्राचीन	अथ पचम भाव विचार + + (प्रारम)
२४.५×१३.५ सें० मी०	२ (१–२)	९	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री सना कुला वतशपरमगुरयोपाध्याय कृते पचशरा ग्रथे आयुर्दायो द्वितीयोध्याय समाप्त ० जयशिव ०: जयराम जानकी ॥ जयगौरी शकर

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७१	७३७८	पचस्वरनिर्णय (सुबोधिनी टीका)	गगाप्रसाददैवज्ञ	प्रजापतिदास	दे० का०	दे०
३७२	२६६७	पचस्वरनिर्णय	प्रजापतिदास		दे० का०	दे०
३७३	४७१४	पचस्वरा	प्रजापतिदास		दे० का०	दे०
३७४	६८५३	पचस्वरा			दे० का०	दे०
३७५	६६२०	पचस्वरा	प्रजापतिदास		दे० का०	दे०
३७६	६६१२	पचस्वराजातक (सटीक)	प्रजापतिदास		दे० का०	दे०
३७७	६८१७	पचस्वरानिर्णय	प्रजापतिदास		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६·८ × ११·२ सें० मी०	२६ (१–२६)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री मदुर्दनियोपनामक अक्षर मणिसुत गंगाप्रसा विरचितायां पचस्वर निर्णयेसप्तमोऽध्याय: ॥७॥ पौषेमासे कृष्णपक्षे × × × × × ॥
२७ × ११·१ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३६	पू०	प्राचीन	
३४·४ × १७·५ सें० मी०	७ (१–७)	१५	५२	पू०	प्राचीन	इति प्रजापतिदास कृत पंचस्वरा समाप्तं ॥
२४·२ × १०·७ सें० मी०	१० (१–१०)	६	३०	पू०	प्राचीन	
२७·३ × ११·५ सें० मी०	१३ (१–१३)	९	४३	पू०	प्राचीन	इति प्रजापतिदास विरचिते पंच स्वरायां सप्तमोऽध्याय ॥७॥
२६·२ × ११·४ सें० मी०	१७ (१–१७)	११	३४	पू०	प्राचीन	इति पच स्वराजातके वालारिष्टम्॥१॥ (पत्र-सख्या ५) इति श्री गौड न(प)दाचार्य वि० पचस्वर टिपण समाप्तम् ॥ (पत्र-सख्या १६)
३२·५ × ९·८ सें० मी०	१० (१–१०)	११	५५	पू०	स०१९४६	इति प्रजापतिदास कृत: पंचस्वरा निर्णय. समाप्तम् ॥ सम्वत् १९४६ ॥ शाके १८१४ तिथिम् पंचदशमि गुरु वासरान्विताया ॥

(सं० मू० ८०)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७८	४०३१	पंचांग वर्णन			मि० का०	दे०
३७९	२९२७	पक्षिपंचक			दे० का०	दे०
३८०	७३९६	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८१	७४६	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८२	४२५६	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८३	१८१२	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८४	१०६७	पद्मकोश	गोवर्द्धन ज्योतिश		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२० × ७ ७ सें० मी०	८ (१–८)	७	३६	पू०	प्राचीन	इति पारिजात रत्नाकरे पंचागवर्णनोनाम प्रथमाध्याय ॥
२७ ३ × १० ८ सें० मी०	५ (१–५)	८	४३	अपू०	प्राचीन	
१८ २ × १० ६ सें० मी०	२६	७	१६	अपू०	प्राचीन	
२६·१ × ११ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	२६	पू०	प्राचीन सं०१६०६	इति पद्मकोश भाव फलम् समाप्तम् ॥ स०१६०६·· ··· स्वस्ती श्री रघुवर त्रिपाठी तस्य आत्मज दाताराम त्रिपाठी तस्य पुत्र्य भार्जीया रा लाचन रामेन ······मडपमेंधे ॥
२३ × १० सें० मी०	१२ (१–१२)	८	३५	पू०	प्राचीन सं०१६११	इति श्री ताजकीय पदमकोश व्यग्रंथ समाप्तोयम् वैशाख शुक्ला ४ चद्रवासरे सं० १६११ ॥
२५ १ × १० ६ सें० मी०	६ (१–६)	६	३१	अपू०	प्राचीन	
२७ ६ × १० ७ सें० मी०	११	८	३४	पू०	प्राचीन सं०१८८६	इति पदमकोस स० १८८६ महासोत्मासे चैत्रशुक्ला ७ ॥

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८५	३५८	पदमकोश			दे० का०	दे०
३८६	१६२८	पदमकोष जातक			दे० का०	दे०
॰८७	५६६	पदमकोश सपफल			दे० का०	दे०
३८८	४६०६	पद्मपचाशिका			दे० का०	दे०
३८९	१५१४	पद्मपचाशिका			दे० का०	दे०
३९०	२८२३	पद्मपचाशिका	श्रीपति		दे० का०	दे०
३९१	३६४२	पद्मपचाशिका			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१७.५ × १३.२ सैं० मी०	१२	७०	२०	पू०	प्राचीन स०१६ ४	इति राहुफल इति ताजकीय पदम व शाव्यग्रथ समाप्तोयम मीग शिर कृष्णा - बुधवासर सवत १९३४ शुभम् लिखित वनवारि लाल स्वय पठनाय ।
२०.८ × १०.८ स० मी०	२५	८	२६	अपू०	प्राचीन स०१९५१	
२४.६ × १०.३ सैं० मी०	६ (१–६)	८	४१	पू०	प्राचीन स०१९३५	इति श्री पदमकोश वर्षफल नवग्रहादि फल सपूर्णम ॥ सवत् १९३५ वैशाख कृष्ण प्रतिपदा १ वार वृहस्पतवार मथाद्यावथलग्नके १ ॥
२३.५ × ११ सैं० मी०	१० (१–१०)	८	३४	पू०	प्राचीन स०१९०८	काश स्या गौड विप्र हररस कवि व शवक सज्जनाना कुर्वे सिद्धात सार मुन मनुजनत पद्य पचासकीय २ पाद्वि पचावास पुन समापति ॥ सवतु १९०८ ॥ (पत्र सख्या–१)
२३.८ × १०.७ सैं० मी०	७	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०.६ सैं० मी०	१४ (१–१४)	६	२८	पू०	प्राचीन सं०१८६६	इति श्री कविद्रक विभूषण पद्विति श्रीपति विरचिताया पद्यपचासिकीय ॥ समाप्त सुभमस्तु ॥ सवत १८६६ ॥ साके १७३१ श्रीरामायनम । श्रीराम चन्द्र नम श्रीगणेशायनम ॥
२५.५ × १३ सैं० मी०	१० (१–१०)	६	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री पदम पचाशिका समाप्ता ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६२	३६८९	पद्यपचाशिका	श्री पति		दे० का०	दे०
३६३	६८०७	पद्यपचाशिका			दे० का०	दे०
३६४	२१३०	पद्मप्रदीप जातक	श्रीपति	हीरालाल	दे० का०	दे०
३६५	६८६	पल्लिपतट विचार			दे० का०	दे०
३६६	२८११	पल्लीपतन			दे० का०	दे०
३६७	१४६८	पल्लीपतन			दे० का०	दे०
३६८	२४३२/१७	पल्लीपतन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२२ × १२ सें० मी०	४	१७	३६	अपू०	सं० १८७७	इति श्री कवीन्द्रकुलभूषणपंडित श्रीपति रचितायां पद्यपवासवाय समाप्तम् ॥ संवत् १८७७ भाद्रपद कृष्णपक्षे ५ रवि लिष्यत यस्य छोटेलालऽस्थित मिरपुरे गंगानिकटे विंध्यक्षेत्रे
२४.१ × १०.५ सें० मी०	१० (१–१०)	७	३१	अपू०	प्राचीन	
३२.१ × १२.३ सें० मी०	२० (१–२०)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री कवीन्द्र कुलकमलपंडित श्रीपति विरचिते पद्यप्रदीपाख्यजातकं समाप्तम्
२२.६ × ११.७ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२६	पू०	प्राचीन सं० १६०८	इति श्री पल्लि पत सपट प्ररोहण विचारः शुभ स० १६०८ शाके १७७३ अश्विनमासेशुक्ल पक्षे नवम्यां भृगु वासेर लिखतरामदिहनि प्रेण अप-मार्थन् पुस्तकि मिदम् ।
२७.१ × ११.१ सें० मी०	२ (१–२)	६	४१	पू०	प्राचीन	इति परिदा पल्ली पतन पञ्चास्त्र शान्ति विधि ग्रहृणम तिथिवार नक्षत्र सन्न भृगु ... ... ॥
१६.७ × ६.३ सें० मी०	३ (२–३–४)	११	२६	अपू०	प्राचीन सं० १८३७	इति पल्ली पतन समाप्तम् ॥ मिश्र जीवन राय पठनार्थ सं० १८३७ मार्ग शिर शु० २ मियतं रूपचंदो लिख वर्तां॥
११.७ × ११.२ सें० मी०	१०	११	२४	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३९९	७२५१/२	पल्लीपतनविचार			दे० का०	दे०
४००	६९७३	पल्लीपतनविचार (दु स्वप्नदर्शन)			दे० का०	दे०
४०१	१७३२	पल्लीशरट विधान	कमलाकरभट्ट		दे० का०	दे०
४०२	१८६०/४ (घ)	पल्लीशरटविधानम्			दे० का०	दे०
४०३	६६५१	पल्लीसरटयोविधान	गर्ग उपाध्याय		दे० का०	दे०
४०४	६६१६	पवनविजय			दे० का०	दे०
४०५	६३०५	पवनविज्यस्वरोदय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ घ	च	स	द	९	१०	११
१४ ६ × ८ १ सें० मी०	६ (१–६)	७	१६	पू०	प्राचीन स०१९३८	इति श्री पल्लीविचारोध्याय समाप्तम् ॥ स० १९३८॥ फाल्गुण मासेसित पक्षे पष्टम्या गुरुवासरे ॥ × × × ×
२० ५ × १५ १ सें० मी०	१ पत्रा	२६	२७	पू०	प्राचीन	इति श्रीमूतवचनात् पल्लीपतनविचार समाप्त ॥
२५ ८ × १०·७ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इति श्रीब्रम्हवंवर्तें महापुराणेनारायण-नारद सवादे श्रीकृष्णखडेभगवन्नदसवादे दुस्वप्नदर्शनकथन नाम द्वाशीतितमो-ध्याय ॥ शुभमस्तु ॥
१२ ३ × ८ ८ सें० मी०	६ (१–६)	८	१३	अपू०		इति पल्ली शरट विधान समाप्तम् शुभमस्तु ॥
२१ ७ × १० १ सें० मी०	२ (१–२)	११	४८	पू०	प्राचीन	इति गर्गोपाध्याय विरचित पल्ली सरटयो विधान समाप्त ॥
१४ ३ × ८ २ सें० मी०	७ (१–७)	११	२२	पू०	प्राचीन स०१७७५	इति श्री पवन विजय नाम प्रथमसाप्त शुभमूयात् ॥ सं० १७७५ कार्तिक शुक्ला सप्तमी ७ रवौ लिखत मनसा रामगौड ब्राह्मन जसेमर नगरमध्ये शुभ भूयात् ॥
२२ १ × १८·४ सें० मी०	११ (१–११)	६	२४	पू०	प्राचीन स०१८६६	इति ॐ तत्सदिति शिव उमासवादे-क्तो नव प्रकरणार्गित पवन विजय नाम स्वरोदयं समाप्तम् ॥ ■० १८६६ माघ मास कृष्णपक्षे '' ·

(ध०मू०८१)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
✓ ४०६	६३०४	पवनविजय स्वरोदय			दे० का०	दे०
✓ ४०७	६६५६	पातसाधन विवृति	विश्वनाथ		दे० का०	दे०
४०८	३०१८	पाराशर जातक			दे० का०	दे०
४०९	७०४७	पाराशर होरा सुश्लोकीशतक			दे० का०	दे०
४१०	५६६३	पाराशरीय जातक (सटीक)			दे० का०	दे०
४११	५६७२	पाराशरीय जातक			दे० का०	दे०
४१२	३१८७	पाराशरीय जातक (सटीक)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२.२×१३.६ सें० मी०	२४ (१–२४)	६	१८	पू०	प्राचीन सं०१८६६	ॐ तत्सदिति उमामाहेश्वर संवादे नव प्रकरणान्वित पवनविजय नाम स्वरोदय समाप्तम् संपूर्ण संवत् १८६६ मासाना मासे माघ शुक्ला ५ शनौ लिखित ·· ··· ··
२६.६×११.५ सें० मी०	८ (१-६,६-७)	१५	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ विरचिता पातसाधन विवृति समाप्ता ॥
२७.३×११.५ सें० मी	१५ (१–१५)	७	३१	पू०	प्राचीन सं०१९०७	इति पाराशरि जातक सं० १९०७ शाके १७७२ ज्यष्ठ शुक्ल पक्षे ३ गुरुवासरे ···
२७.८×१०.६ सें० मी०	६ (१–३, ५-६,८)	७	३०	अपू०	प्राचीन	
३१.२×१४.८ सें० मी०	६ (२–७)	१४	४५	अपू०	प्राचीन सं०१८९९	
२५.६×१०.४ सें० मी०	२ (१–२)	६	३६	अपू०	प्राचीन सं०१९००	इति पाराशरीये जातके उडुदायप्रदीपाख्येदशातदशाध्याय समाप्त ॥ ४ ॥ समाप्तोय ग्रंथ ॥ श्री रस्तु सं० १९०० शाके १७६५ × × ॥
२५.६×१२.५ सें० मी०	६ (१–६)	११	४३	पू०	प्राचीन	इति पाराशरी जातकस्य टीका या संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१३	६६१८	पाराशरी होरा			दे० का०	दे०
४१४	६२८५	पाशकेवली			दे० का०	दे०
४१५	३७५८	पाशकेवली	गौतम		दे० का०	दे०
४१६	२८६७	पाशकेवली	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
४१७	७०८५	पाशकेवली			दे० का०	दे०
४१८	६६७६	पीयूषधारा (मुहूर्तचिंतामणिटीका, गोचर प्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४१६	६६७६	पीयूषधारा (मुहूर्त चिंतामणि टीका, तिथि, वार, नक्षत्रप्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ ग्र	ब	स	द	९	१०	११
२७ ५ × ११ ५ सें० मी०	६ (१–६)	६	३०	पू०	प्राचीन	इति पराशरीये केरलमारे कारक प्रकरण ॥ ' ···
२६·२ × १२ ८ सें० मी०	७	१४	३३	अपू०	प्राचीन स०१७६२	इति पाशकेवली समप्ता ॥ मुहूर्ते शुभ वेलाया पाशन बार म छुभ × × × × × सवत् १७६२ पौष शुक्ल प्रतिपदा तोर्मराजे लिखिता ॥
१६ × १२ सें० मी०	१० (१–७, ७–६)	६	१६	पू०	प्राचीन स०१६१७	इति श्री गोत्तम कृता पाशाकेवली समाप्ता ॥ सवत् १६१७ मिश्र सेढ मल्ल जी तस्यात्मज छजुरामेण लिपिकृता पाशाकेवली विष्णो प्रसादात्शुभमस्तु श्रीकृष्णायनम ॥
२३ ८ × ११ सें० मी०	५ (४–६, ८–६)	१०	२८	अपू०	प्राचीन स०१८३६	इति गर्गाचार्य विरचित पाशाकेवली समाप्त ॥ शुभमस्तु समाप्त ॥ सवत् १८३६ फाल्गुणे मासि शुक्ले प्रतिपदाया भौमवासरे शुभ ॥
१४ ६ × १०·३ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	१८	पू०	प्राचीन	पासाकेवली समापिता ॥ श्री शुभ भुया ॥
२५ ८ × १२ २ सें० मी०	४४ (१–४४)	७	३३	पू०	स०१८८८	इति श्री दैवज्ञानतसुत दैवज्ञ राम विरचिते मुहूर्त चिन्तामणौ गोचर प्रकरण ··· ···गोविदेन विनिर्मिते नवनिधौ पीयूषधाराभिधे व्याख्याते खलु गोचर प्रकरणे सपूर्णता · ··· ···· सवत् १८८८········· ॥
२५·६ × १२·३ सें० मी०	१६२ (१–१६०) पत्र २६ एव ५३ दो,दो	७	३२	पू०	स०१८८८	इति श्री विद्वद्दैवज्ञ मुकुटालकारनीलकठ ज्योतिर्वित्पुत्रगोविदज्योतिर्विद्विरचिताया मुहूर्त चिंतामणि टीकाया पीयूषधाराभिधाया सविचार विधिवारनक्षत्र प्रकरण समाप्ति स० १८८८ ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२०	६६७५	पीयूषधारा (मुहूर्तचिंतामणिटीका राज्याभिषेक प्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४२१	६६७८	पीयूषधारा (मुहूर्तचिंतामणि टीका, विवाह प्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४२२	६६६६	पीयूषधारा (मुहूर्तचिंतामणि टीका, शुभाशुभप्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४२३	६६७७	पीयूषधारा (मुहूर्तचिंतामणि टीका, संक्रांतिप्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४२४	६६६७	पीयूषधारा (मुहूर्तचिंतामणि टीका, संस्कारप्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४२५	६८७१	पैतामहसिद्धांत			दे० का०	दे०
४२६	२७३६	प्रपंच निर्णय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·७ × १२·१ सें० मी०	२५ (१–२५)	७	३५	पू०	स०१८८८	...मुकुटालंकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्र-गोविंद ज्योतिर्विद्विरचिताया मुहूर्त चितामणि टीकाया पीयूषधाराभिधायां राजाभिषेक प्रकरण समाप्तिमगमत्... स० १८८८ ... ... ॥
२६ × १२·१ सें० मी०	१७६ (१–१७६)	७	३६	पू०	स०१८८८	इति श्री विद्वदैवज्ञ मुकुटालंकारनीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्रगोविंद ज्योतिर्विद्विरचिताया मुहूर्त चितामणि टीकाया पीयूषधाराभिधायां विवाह प्रकरण समप्तिमगात्॥ स० १८८८ ॥
२५·८ × १२·२ सें० मी०	१०० (१७-११६)	७	३०	अपू०	स०१८८८	इति श्री विद्वदैवज्ञमुकुटालंकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्र गोविंदज्योतिर्विद्विरचिताया मुहूर्तचितामणिटीकायां पीयूषधाराभिधायां शुभाशुभ प्रकरण समाप्तं समाप्त ॥ स० १८८८ ॥
२६ × १२·२ सें० मी०	४२ (१–४२)	७	३१	पू०	प्राचीन	इति श्रीदैवज्ञ मुकुटालंकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्र गोविंद ज्योतिर्विरचितायां मुहूर्त चितामणि टीकाया पीयूषधाराभिधायां संक्रांति प्रकरण समाप्ति।
२५·७ × १२·१ सें० मी०	११६ (१–११६)	७	३३	पू०	स०१८८८	इति श्री विद्वदैवज्ञ मुकुटालंकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्रगोविंद ज्योतिर्विद्विरचितायां मुहूर्त चितामणौ टीकायां पीयूषधाराभिधायां सपरिकर गृहप्रकरण समाप्ति मगमत् सं० १८८८ आश्विन ६।
२७·८ × ११·६ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	४०	पू०	प्राचीन सं०१८८७	इति श्री विष्णुधर्मोत्तरे पैतामह सिद्धांत समाप्त [illegible] १५६३ × ■ संवत् १८८७ फाल्गुन कृष्ण १० [illegible] समाप्त इद पुस्तक पठत् जी श्री [illegible] जी की [illegible] राम [illegible] श्री [illegible] जी री [illegible] मध्ये + ✢
२७ × ११·३ सें० मी०	१४	१०	३७	पू०	सं०१६१७	इति प्रथम निर्णय, शुभ भूयात् संवत् १६१७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२७	१९६	प्रश्न ग्रंथ			दे० का०	दे०
४२८	३००८	प्रश्न ग्रंथ (हिंदी टीका)			दे० का०	दे०
४२९	४२१९	प्रश्नग्रंथ			दे० का०	दे०
४३०	४३४२	प्रश्नचंडेश्वर			दे० का०	दे०
४३१	२५३२/१७	प्रश्नचिंतामणि			दे० का०	दे०
४३२	५८२८	प्रश्नज्ञान			दे० का०	दे०
४३३	१०२५/३	प्रश्न ज्ञानम्	काशीनाथ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०२×९५ सें० मी०	५ (३–७)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
१५१×९ सें० मी०	४ (१–४)	८	१८	अपू०	प्राचीन	
२१६×१०६ सें० मी०	५ (१–५)	१२	२८	पू०	प्राचीन	अथ प्रश्नग्रंथ लिख्यते (प्रारंभ) शुभमस्तु सम्पूर्णम्। ··· ··· (अंत)
३०५×१४ सें० मी०	१८ (१–१८)	१६	५७	अपू०	सं०१८६४	इति श्री चक्रेश्वर ब्रह्मविद्यायांगमागमी-लक्ष्मायो एकादश × × उमाशंकराय नम सम्वत १८६४ ··· पृ० (१८)
११७×११५ सें० मी०	२६	१८	१२	पू०	प्राचीन	इति प्रश्नचिंतामणि समाप्त ॥
१४२×१०३ सें० मी०	२ (३–४)	६	२१	अपू०	प्राचीन	
२०३×१०८ सें० मी०	७ (१–७)	६	२६	अपू०	प्राचीन	

(सं० पृ० ८२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३४	४४७६	प्रश्नतत्त्व	नीलकंठ		दे० का०	दे०
४३५	६८४४	प्रश्नदीप			दे० का०	दे०
४३६	१७५३	प्रश्नदीपक	काशीनाथ		दे० का०	दे०
४३७	३६२०	प्रश्नपारिजात			दे० का०	दे०
४३८	३०००/३	प्रश्नप्रकरण			दे० का०	दे०
४३९	१८३	*प्रश्नप्रकाश			दे० का०	दे०
४४०	४०८०	प्रश्नप्रदीप	काशीनाथ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०.३ × १५.५ सें० मी०	१८ (२-३, ७-२२)	१५	४७	अपू०	प्राचीन सं० १६०४	इति श्री निलकंठ विरचित ज्योतिषि कौमुद्या प्रश्नतंत्र करण समाप्ताय ... सं० १६०४ शाके १७६९ चंद्र कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां भृगुदिने ..
२१.५ × १०.१ सें० मी०	१	११	४२	अपू०	प्राचीन	
२७ × १०.२ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	३७	पू०	प्राचीन सं० १८७०	इति श्री काशीनाथ कृतो प्रश्नदीपक समाप्त ॥ अथ शुभ संवत्सरे श्री नृपति विक्रमादित्यराजे संवत् १८७० वर्षे माहामांगल्यमासे पौषमासे शुक्ल पक्षे तिथौ दशमाय (दशम्यां) शनिश्चर वारे लिखं .... स्वात्मं पठनाय ॥ शुभं भवतु ॥
२३.८ × ११.२ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	
१७.२ × ११.८ सें० मी०	१६३	१६	२४	अपू०	प्राचीन	
२१ × ८.६ सें० मी०	१२	८	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री ज्योतिष शास्त्र सारे प्रश्न शास्त्र प्रश्न प्रकरणम् समाप्त ॥
२१.२ × ८.७ सें० मी०	१३ (१, ३–१४)	६	२८	पू०	प्राचीन सं० १७६४	इति काशीनाथ विरचित प्रश्न शास्त्र समाप्त शुभमस्तु ... ॥ संवत् १७६४ शाके १६२९ ... कार्तिक सुदि २ ... लिखितं ... ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४१	७३६४	प्रश्नप्रदीप			दे० का०	दे०
४४२	७४६४	प्रश्नप्रदीप			दे० का०	दे०
४४३	३३११	प्रश्नप्रदीप	काशीनाथ		दे० का०	दे०
४४४	२८४६	प्रश्नप्रदीप	काशीनाथ		दे० का०	दे०
४४५	११३२	प्रश्नप्रदीप जातक (सटीक)	प० श्रीपति	हीरालाल	दे०, का०	दे०
४४६	१०७९	प्रश्नप्रदीपिका	काशीनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
४४७	५४३	*प्रश्नभैरव	गंगाधर दैवज्ञ		दे० का०	

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
११×७'४ सें० मी०	१२	१०	१८	अपू०	प्राचीन	
२४ २ × ११ २ सें० मी०	८ (३३–३७, ३६–४१)	६	३०	अपू०	प्राचीन	
२२ ५ × १२ ७ सें० मी०	८ (१–८)	१६	३४	पू०	प्राचीन सं०१८४५	इति काशीनाथ कृतौ प्रश्नप्रदीपक समाप्त शुभमस्तु मंगल ददातु संवत् १८४५ पौषशुक्ल ■ ॥
२३ ३ × १० ५ सें० मी०	१७	७	२८	पू०	सं०१९१८	इति श्री काशीनाथ विरचिते प्रश्न-प्रदीपोयं समाप्त ॥ सं० १९१८ ॥
३३ ३ × १२ ८ सें० मी०	२०	६	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री कवीन्द्रकुलकमल पंडित श्रीपति विरचिते प्रश्न प्रदीपाख्य शतक समाप्तम् ।
२० ५ × १० सें० मी०	१६	८	३२	पू०	सं०१९१४	इति श्री सर्व विद्या विशारद काशी-नाथ कृतौ प्रश्न प्रदीपिक समाप्त ॥ संवत १९१४ शाके १७७९ वैशाख कृष्ण चतुर्दश्यां १४ बृहस्पति वासरे । शुभमस्तु श्री राम लिखित मिश्र देवी-सहाय ॥ श्री रस्तु ॥ शुभ मस्तु ॥
२४ ६ × १२ ६ सें० मी०	२१	११	१८	अपू०	सं०१८२०	इति श्री भैरव दैवज्ञात्मज गंगाधर दैवज्ञ विरचित प्रश्नभैरव समाप्त सं० १८२० ज्येष्ठ १४ पूर्णिमा भृगु समाप्तम् लिखतं भैरव राय आत्म-पठनार्थ ॥ श्रीमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतमसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४८	५०१४	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
४४९	१४२१	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
४५०	११२२	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
४५१	६६१८	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
४५२	७३०७	प्रश्नमहोदधि (सटीक)			दे० का०	दे०
४५३	६६४७	प्रश्नरत्न	मदराम		दे० का०	दे०
४५४	३२७२	प्रश्नरत्न	मदराम		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ब	स	द	६	१०	११
२६·१ × १०·६ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति गर्गाचार्य विरचिता प्रश्नमनोरमा समाप्ता ॥ लिखितं सेवाराम स्वबोधार्थ ॥ राम शुभमूयात् ॥
२४·४ × १३·४ सें० मी०	६ (१–६)	१४	३८	पू०	सं०१८८५	सवत् १८८५ सरोहृदतिभूवत्सरेभक्तज्येष्टमिशनीमुरलिदत्तेन लेप्यम भार। द्वाज कुले शुभे ॥ लक्ष्मण सुताभव. ।- शुभंभूयात् ॥
२०·२ × १०·१ सें० मी०	७ (१–७)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति गर्गाचार्य विरचिता श्लोक प्रश्नमनोरमा प्रश्न विद्या समाप्ता ॥ ... ... लेखिता पुस्तकी सु दरमनोरमप ......॥
१९·६ × ८·१ सें० मी०	२	६	२६	अपू०	प्राचीन	इति प्रश्न मनोरमा समाप्ता ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥
२३·१ × ११·४ सें० मी०	८ (१–८)	१३	३५	अपू०	प्राचीन	
२६·७ × ११·५ सें० मी०	६ (१–६)	१६	६२	पू०	सं०१६३१	इति प्रश्नरत्न सपूर्णं ॥ सवत् १६३१ भाद्रपद शुक्ल १४ शुक्रवारे लिखित ॥
३३·५ × १३ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	४५	पू०	सं०१६०१	इति श्री मिश्र नदराम कृत केरलि शास्त्रे प्रश्नरत्न नाम ग्रंथ समाप्तम् सवत् १६०१ मिति जेठ शुक्ला नवम्यां रविवासराविन्तायां समाप्तोय लिपितं वासुदेव सर्मण धरीपग्रामे ॥ शुभं भूयात् ॥ श्री ॥ श्री ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५५	८१४	प्रश्नरत्नटिप्पणी			दे० का०	दे०
४५६	१८६७	प्रश्नरहस्य	विघ्नराज		दे० का०	दे०
४५७	७२७३	प्रश्नविचार	देवल		दे० का०	दे०
४५८	१३८६	प्रश्नविनिश्चय			दे० का०	दे०
४५९	१४७१	प्रश्नविनोद			दे० का०	दे०
४६०	१४५५	प्रश्नवैष्णव	नारायणदास		दे० का०	दे०
४६१	१६२०	प्रश्नवैष्णव			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ब	■	द	९	१०	११
२७ ६ × १२ २ सें० मी०	४४ (१–४४)	११	३४	पू०	प्राचीन सं०१८६५	इति श्री स्वकृत प्रश्न रत्नस्य टिप्पणी संपूर्ण ॥ संवत १८६५ आश्विन कृष्ण १० गुरुदिने महापुन्य क्षत्र कनखलेय लिपि कृत पठनार्थस्य शुभ ॥
२४ × ६ ५ सें० मी०	५	६	३०	पू०	सं०१९२१	इति श्री विघ्नराज निर्मित प्रश्नरहस्य समाप्त । इद पुस्तक लिखित गौरीदत्तेन शिव दियाल आत्मज शुभ मस्तु सिद्धि रस्तु शुभ संवत् १९२१ चैत्र शुक्ल पक्ष अष्टम्या ८ रविवासरे ·····
२५ ८ × १२ ७ सें० मी०	३ (१–३)	११	३७	पू०	प्राचीन	इति देवल कृत प्रश्न संपूर्णमस्तु ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की क्रमान्संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६२	३४०१	प्रश्नवैष्णव	नारायण दास		दे० का०	दे०
४६३	६६२४	प्रश्नसंग्रह			दे० का०	दे०
४६४	२६७८	प्रश्नसंग्रह	शिव		दे० का०	दे०
४६५	३७४६	प्रश्नसंग्रह			दे० का०	दे०
४६६	६१५०	प्रश्नसंग्रह			दे० का०	दे०
४६७	७००१	प्रश्नसार	गोविन्द देवज्ञ		दे० का०	दे०
४६८	६८३६	प्रश्नसार	हयग्रीव		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३·८ × १५·७ सें० मी०	३१ (१–३१)	१३	५३	पू०	सं० १७५५	इति ब्रह्मदासपुत्र श्रीनारायणदास सिंह विरचिते प्रश्न वैष्णव शास्त्रे पंचदशोध्याय. १५ श्री संवत् १८७४ भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे तिथौ ४ रववासरे शुभमस्तु मंगलदाति लिपित मिद पथी दुवगिरधारा। ....
२१·३ × ८·७ सें० मी०	८ (१–८)	११	३०	पू०	प्राचीन शाके १७५३	इति प्रश्न संग्रह. समाप्ता ॥ श्रीराम चंद्रार्पणमस्तु ॥ शके १७५३ खर-संवत्सरे गुजरोपनामक रामचंद्रेण लिखित ॥ श्री गजानन ॥
३१·२ × १४ सें० मी०	६ (१–६)	१३	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री शिव विरचित प्रश्नसंग्रह समाप्त ॥ शुभमस्तु मंगल ददातु... ......
१६ × १३·५ सें० मी०	६ (१–६)	६	१६	पू०	सं० १,००	इनि प्रश्नसाग्र॥ सवत् ॥ १६०० चैत वदिमावास्या ॥
२२·५ × १०·३ सें० मी०	४ (१–४)	६	२८	अपू०	प्राचीन	श्री गणेश नमस्कृत्य श्रीगुरु गिरिजापति देवज्ञान हितार्थाय क्रियते प्रश्न संग्रहे . ... —(आदि)
२०·६ × १६·५ सें० मी०	४ (१–४)	१८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्पूर्ण स्तव नियाश्रित पाचाप वशाद्भव विष्णु दैवज्ञात्मज गोविंद दैवज्ञ विरचिते प्रश्नसार संपूर्णः ॥
२१४ × १२·५ सें० मी०	१२ (१–१२)			पू०	प्राचीन सं० १९०५	हयग्रीव विरचित प्रश्नसारः समाप्तिमगमत् ॥ सं० १९०५ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६९	४६०१	प्रश्नसार	गणेश		मि० का०	दे०
४७०	५०७६	प्रश्नसार	जीवज्योति		दे० का०	दे०
४७१	२१६४	प्रश्नसार	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४७२	२६०३	प्रश्नसार	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४७३	१२६४	प्रश्नस्वरोदय			दे० का०	दे०
४७४	१८२० / २	प्रश्नावली			दे० का०	दे०
४७५	८४६	प्रश्नावली	जडभरत		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१	११
१९ ८×९ सें० मी०	७ (१–७)	७	२८	पू०	सं०१९२	इति श्री रुद्रयामले गणेश निर्मित प्रश्नसार ग्रंथ समाप्तम् १९२७ द्वितीय वैशाख शुक्ला १५ ॥
२३ ५×११ सें० मी०	३ (६–८)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति यात्रिक नरहरि सुत जीव ज्योति विरचित प्रश्नसार समाप्त ॥× ×
२२ ५×९ ५ सें० मी०	६ (१, ३–७)	१०	२८	अपू०	सं०१९३	इति प्रश्नसार समाप्तम् ॥ सं० १९३६ पूर्णवदि ४ था ॥
२६ ५×११ ४ सें० मी०	६	९	३०	अपू०	सं०१९१३	इति श्री विष्णु दैवज्ञात्मज गोविंद दैवज्ञ विरचित प्रश्नसार समाप्त ॥ श्रीकृष्णार्पणम ॥ संवत १९१३ शाके १७७४ मासनाम मास प्रथाद्र मास शुभे कृष्णपक्ष तिथौ १४ चतुर्दश्या भौमवासर ॰ ॰॰
१६×९ २ सें० मी०	९ (३–११)	८	१६	अपू०	प्राचीन	इति साधारण प्रश्नस्वरोदय लिखित गणोद्भव ॰ ॰॰
१८×१३ २ सें० मी०	१०	८	१३	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकर	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७६	६६५८	प्राणपद-साधन प्रकार			दे० का०	दे०
४७७	२६३०	फलविचार			दे० का०	दे०
४७८	७०७३	फारसी कार्व्याधिकार	हीरानन्द		दे० का०	दे०
४७९	६५४२	बालवुद्धि प्रकाशिका	गोविंदाचार्य		दे० का०	दे०
४८०	७०३७	बालवुद्धि-प्रकाशिनी	गोविंदाचार्य		दे० का०	दे०
४८१	६८६८	बालवुद्धि-प्रकाशिनी	गोविंदाचार्य		दे० का०	दे०
४८२	३०१४	बालबोध	मुंजादित्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७.५ × १२ सें० मी०	४ (१–४)	१२	३२	पू०	प्राचीन	
२४ × १२.१ सें० मी०	२२			अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रंथसंख्या या गड्डविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४८३	११८८	बालबोध	मुजादित्यविप्र		दे० का०	दे०
४८४	६८११	बालबोध	मुजादित्य		दे० का०	दे०
४८५	२११८	बालबोध	मुजादित्य		दे० का०	दे०
४८६	२७३६	बालबोध व्याख्या	मुजादित्य		दे० का०	दे०
४८७	७०४३/४	बालबोध (सारसंग्रह)	मुजादित्य		दे० का०	दे०
४८८	७४७८/२	बालबोध सारसंग्रह	मुजादित्य		दे० का०	दे०
४८९	४२२	बालबोधक (सारसंग्रह)	मुजादित्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२८×१३·३ सें० मी०	१७ (३–१७, १९–२०)	११	२८	अपू०	सं०१८४७	इति श्री मु जादित्यविप्रविरचित बालबोध ग्र समाप्तम् शुभमस्तु संवत् १८४७ शाके १७१२ आषाढ वदि ६ शुभमस्तु राम ॥
२३×१०.६ सें० मी०	१७ (१–१३, १६–१९)	१०	३४	अपू०	सं०१८६५	इति श्री मुञ्जा दित्येन विरचिते ज्योतिष शास्त्र बालबोधनाख्या सार संग्रह समाप्तम् ॥ १८६५ शुभम्भूयात् ॥
२४.५×११ सें० मी०	१४ (१–११, १३–१५)	६	३४	अपू०	सं०१७४४	इति श्री मुंजादित्येनविरचितं ज्योतिष शास्त्र बालबोधाख्या सारसंग्रह समाप्त संवत् १७४४ ज्येष्ठ सुदि भौमे···
२१·५×१९ सें० मी०	१२	१३	१३	पू०	सं०१८१४	इति श्री मु जादित्येन विरचित ज्योतिष शास्त्र बालबोध व्याख्या समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ श्री रस्तु । संवत् १८१४ पौष वदि ३० ॥
१४७×१२ ३ सें० मी०	१९	११	१५	अपू०	प्राचीन	